विलोम गति

गुरुदत्त

भारती साहित्य सदन

विलोम गति

गुरुदत्त एम० एस-सी०

भारती साहित्य सदन
नई-देहली

दिसम्बर १९५४

प्रकाशक :
भारती साहित्य सदन,
३०/९० कनाट सर्कस, नई दिल्ली—१

मूल्य : ५)

मुद्रक :
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

आधार-भूमि

कोष में 'विलोम' शब्द के अर्थ हैं, प्रतिकूल, विपरीत, उलटा, संगीत में स्वर का अवरोह या उतार। विलोम-गति प्रगति से विपरीत अर्थ रखती है।

इस युग में एक ऐसा वाद चल गया है, जिसको उस वाद के मानने वाले 'प्रगतिवाद' कहते हैं; परन्तु जैसे केवल सुन्दर नाम रख लेने से कोई कुरूप रूपवान नहीं बन जाता, उसी प्रकार प्रगतिवाद कहने मात्र से कोई मत उन्नतिशील नहीं कहा जा सकता।

अतएव इस कथित प्रगतिवाद की जाँच-पड़ताल करनी आवश्यक थी। यह पुस्तक उसी जाँच का परिणाम है। जाँच करने से प्रगति केवल विलोम गति ही प्रतीत हुई है।

प्रगतिवादी कम्युनिस्ट विचार-धारा के मानने वाले ही हैं। कम्यू-निज़्म के प्रवर्त्तक कार्ल मार्क्स और उस के साथी एंजिल कम्युनिज़्म के तीन स्तम्भ मानते हैं। एक, वर्ग-युद्ध में विश्वास, अर्थात् सांसारिक वस्तुओं पर श्रमिकों का अधिकार लाना। दूसरा, उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सब साधनों की उपादेयता और तीसरा, उद्देश्य की प्राप्ति, युक्ति अथवा समझौते से न मानकर, केवल रक्त-रंजित क्रान्ति से ही सम्भव समझना।

इन तीन बातों के आधार पर प्रगतिवाद का ढांचा खड़ा किया गया है। युक्ति और अनुभव इन तीनों आधारों को निरर्थक, असफल और

मानवता के लिए अहितकर सिद्ध करते हैं। आज तक संसार में उन्नति इन आधारों पर नहीं हुई। इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार के बड़े-बड़े तथा सफल आन्दोलन, जिनसे मनुष्य का कुछ भी कल्याण हुआ है, वे विचार-परिवर्तन के आन्दोलन हुए हैं, विचार थोपने के नहीं। विचार-परिवर्तन प्रचार, आग्रह और कटु अनुभवों के परिणाम से होते हैं।

संसार में कुछ पन्थों ने अपने विचार दूसरों पर बलपूर्वक थोपने का यत्न किया है, परन्तु वे पन्थ सदैव असफल रहे हैं। बल से शासन हो सकता है, परन्तु विचार-परिवर्तन नहीं हो सकता। वह शासन, जो विचार थोपने के लिए प्रयुक्त होता है, स्वयं विनाश को प्राप्त होता है। भारत वर्ष में इस का उदाहरण इस्लामी राज्य है। यहाँ इस्लाम का राज्य बल द्वारा स्थापित हुआ। साथ ही राज्य-बल से इस्लाम-मत का प्रचार आरम्भ हुआ। शासन के बल से हिन्दू समाज दब गया, परन्तु जब विचार-संघर्ष हुआ और जब बुद्धि इस्लाम की सहायक नहीं हो सकी, तो बल अर्थात् शासन इस्लाम का प्रचार नहीं कर सका। इस्लामी शासन पलट गया, परन्तु हिन्दू विचारधारा जीवित रही।

भारत में बल से इस्लाम का प्रचार नहीं हो सका; परन्तु ईरान, मिश्र, टर्की इत्यादि अन्य देशों में इस्लामी शासन होने के साथ इस्लामी-विचारधारा का प्रचार भी हो गया। इस में कारण यह था कि उन देशों में पराजित विचार-धारा युक्ति से भी इस्लामी विचार-धारा से हीन थी। ईरान के अग्नि-पूजक पूर्ण रूप में मिट गये। कारण यह था कि उनकी अग्नि-पूजा का आधार युक्तियुक्त नहीं, प्रत्युत् अंधविश्वास था। इस अन्ध-विश्वास से ख़ुदा पर इस्लामी विश्वास अधिक युक्तियुक्त सिद्ध हुआ। इस के विपरीत भारत में, जब इस्लामी शासन स्थापित हुआ तो यहाँ भी अशिक्षित और निम्न बुद्धि के लोगों पर इस्लामी विचार-धारा का प्रभाव आरम्भ हुआ, परन्तु यहाँ की विचार-धारा ने गुरु नानक, कबीर, तुलसी, समर्थ गुरु रामदास इत्यादि अनेकों विचारक उत्पन्न कर दिये, जिन्होंने इस्लामी विचार-धारा के दाँत खट्टे कर

दिये। इस कारण यहाँ परिणाम ईरान इत्यादि देशों से भिन्न हुआ। भारत की राजनीतिक दुर्बलता के कारण इस्लामी शासन स्थापित हुआ, परन्तु हिन्दू विचार-धारा से हीन सिद्ध होकर, इस्लामी विचार-धारा असफल सिद्ध हुई।

यही बात कम्युनिज़्म की हो रही है। रूस में भी ज़ार का शासन परास्त हुआ। वह राजनीतिक दृष्टिकोण से हीन वस्तु थी। ज़ार के पश्चात् शासन कम्यूनिस्टों के हाथ में आया, परन्तु वे कम्युनिस्ट विचार-धारा को वहाँ पर स्थापित नहीं कर सके। लेनिन के राज्य के आरम्भ में वहाँ के शासकों ने कम्युनिज़्म को स्थापित करने का यत्न किया, परन्तु वहाँ पर धीरे-धीरे यह लोप हो गया है। कार्ल मार्क्स और ऐंजिल का श्रमिकों का शासन स्वप्न-मात्र रह गया है। वहाँ शासन कुछ धूर्त, चतुर, क्रूर और स्वार्थ-लोलुप कम्युनिस्टों का रह गया है।

यह कहा जाता है कि उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीयकरण रूस इत्यादि कम्युनिस्ट देशों में बहुत है, जिससे कम्युनिज़्म की सफलता प्रकट होती है। यह केवल भ्रम है। राष्ट्रीयकरण श्रमिकों के श्रम से उपज पर उनके अधिकार का पर्याय वाचक नहीं। राष्ट्रीयकरण का अर्थ तो केवल यह है कि देश के धन, सम्पद् और श्रम के स्वामी देश के शासक लोग हैं। वे शासक कौन हैं, यह राष्ट्रीयकरण-मात्र से पता नहीं चलता। रूस में, जहाँ विचार-स्वातन्त्रय नहीं, जहाँ बोलशिविक पार्टी के अतिरिक्त कोई अन्य पार्टी स्थापित नहीं हो सकती, जहाँ शासन की समालोचना नहीं की जा सकती, जहाँ अन्य देशों के समाचार-पत्र, पुस्तकें और विचार-पत्र-पत्रक पढ़ने पर प्रतिबन्ध है, वहाँ यह कहना कि शासन जनता का है और जनता प्रगति की ओर जा रही है, केवल मात्र भ्रम है।

राष्ट्रीयकरण ठीक है अथवा गलत, इससे देश का कल्याण होगा अथवा नहीं, इन प्रश्नों का विवेचन इस पुस्तक का विषय नहीं। राष्ट्रीयकरण को ठीक मान भी लें, तब भी इतने मात्र से श्रमिकों का अपने श्रम की उपज पर अधिकार हो गया मानना असत्य है। राष्ट्रीयकरण

से केवल यह सिद्ध होता है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति के श्रम से, जो कुछ उत्पन्न हुआ है, वह शासकों के अधीन हो गया है। ये शासक जनता का एक तुच्छ अंश-मात्र भी हो सकते हैं। वे बिरला, नेहरू अथवा किसी भी परिवार के हो सकते हैं।

राष्ट्रीयकरण श्रमिकों के अधिकार का सूचक नहीं, यह निम्न उदाहरण से भली भाँति स्पष्ट हो जायेगा। स्कोडा का महान कारख़ाना कम्युनिस्ट राष्ट्रीयकरण का उदाहरण है। पिछले वर्ष एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग इस कारख़ाने को देखने गया। स्कोडा के मोटर के कारख़ाने के बाहर तीन बहुत सुन्दर मोटर-गाड़ियाँ खड़ी थीं। आयोग के पूछने पर एक श्रमिक ने बताया कि यह कारख़ाना श्रमिकों का है और यह श्रमिकों के लाभ के लिए है; परन्तु उन तीन मोटर-गाड़ियों के विषय में पूछने पर उसने बताया कि एक गाड़ी तो रूस के राजदूत की है, दूसरी फैक्टरी के जनरल-मैनेजर की और तीसरी वह थी, जिस में वह आयोग कारख़ाना देखने आया था। इस के विपरीत जब वही आयोग अमरीका में फोर्ड फैक्टरी देखने गया, तो वहाँ कारख़ाने के बाहर बीस हज़ार मोटर-गाड़ियाँ खड़ी थीं। आयोग से पूछे जाने पर, वहाँ के एक श्रमिक ने बताया कि फैक्टरी का स्वामी मिस्टर फोर्ड है, वहाँ का लाभ उसी को मिलता है; परन्तु जब वहाँ पर खड़ी मोटरों के विषय में पूछा गया तो उसी श्रमिक ने गर्व से बताया कि मोटरें कारख़ाने में काम करने वाले श्रमिकों की हैं।

कार्ल मार्क्स से प्रतिपादित कम्यूनिज़्म के ये आधार कि उद्देश्यों की पूर्ति में कोई भी साधन प्रयोग में लाये जा सकते हैं और रक्त-रंजित क्रान्ति के बिना उद्देश्य-पूर्ति हो नहीं सकती, केवल-मात्र एक बिगड़े मस्तिष्क की उपज है। ये मानवता को अवनति की ओर ले जाने वाले हैं और संसार में घोर उपद्रव उत्पन्न करने में योग्य हैं। इस का स्पष्ट अर्थ यह है कि संसार में संगठित गुण्डों का शासन और प्रभुत्व स्थापित करने की योजना की गई है। यह प्रगति नहीं प्रत्युत् पशुपन की

ओर चलने वाले सिद्धान्त हैं।

यही विलोम गति है।

पुस्तक उपन्यास है। इस में आये पात्र तथा स्थानों का नाम काल्पनिक है। विषय की विवेचना ठीक होते हुए भी, किसी व्यक्ति-विशेष के मान-अपमान से कोई सरोकार नहीं।

—गुरुदत्त

एक

: १ :

"बाबू ! एक पैसा, भगवान् के लिए एक पैसा !"

कनॉट सरकस से पहाड़गंज रेल के स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क के किनारे पर खड़ी एक स्त्री भीख माँग रही थी। वह स्त्री मैली-सी ओढ़नी ओढ़े, एक फटा, मैल से चपड़ा हो रहा कुर्ता और बीसियों स्थानों पर लगी टाकियों वाला घागरा पहने हुई थी। मैली ओढ़नी के नीचे से धूल से भरे हुए बाल इधर-उधर लटक रहे थे। वह पाँव से नंगी थी और उन पर मिट्टी चिपटी हुई थी।

इस स्त्री के समीप एक लड़का, पाँच-छः वर्ष की आयु का, जो उसकी ही भाँति मैले-फटे कपड़े पहने हुआ था, खड़ा था। लड़के के सिर पर घुँघराले बाल, धूरि से भरे होने पर भी भले मालूम पड़ रहे थे। लड़का गौर-वर्ण परन्तु मिट्टी से लथपथ था। मोटी-मोटी आँखें थीं। मुख न धुलने के कारण आँखें कीच से भरी थीं और उसका नाक बह रहा था।

जब कोई मनुष्य अच्छे धुले हुए वस्त्र पहने आता दिखाई देता और वह औरत कहती, "बाबू ! एक पैसा···" तो वह लड़का उत्सुकता और दीनता से आने वाले के मुख पर देखने लगता। इतना तो वह समझने लगा था कि उसकी माँ के हाथ में पकड़े प्याले में डाला हुआ एक-एक पैसा उसके लिए रोटी और मिठाई का सूचक है।

बीस-तीस लोग निकल जाते तो एक दयालु ऐसा भी निकल आता,

जो एक-आध पैसा उसके प्याले में डाल जाता। इस प्रकार काम चल रहा था। आज नित्य से कुछ अधिक भिक्षा मिल रही थी। मंगल का दिन था। लोग नई दिल्ली में हनुमान जी के दर्शन को आ रहे थे। आते-जाते प्रायः लोग कुछ-न-कुछ भीख देते ही थे।

आज लड़के के मस्तिष्क में कुछ विशेष विचार उत्पन्न हो रहे थे। पहले तो वह यह समझता था कि भीख माँगना उसका काम है और भीख देना लोगों का। परन्तु किसी-किसी दिन भीख बहुत कम मिलती थी और आज बहुत से लोग प्याले में पैसा-दो-पैसे डालते हुए चले जा रहे थे। यह क्यों? साथ ही वह विचार करता था कि उसकी माँ माँगती क्यों है और आने-जाने वाली औरतें देती क्यों हैं? उनके पास देने के लिए पैसे कहाँ से आते हैं? वहीं से उसकी माँ के लिए पैसे क्यों नहीं आते? साथ ही वह यह सोचता था कि लोग सफेद, बढ़िया कपड़े पहनते हैं और वह तथा उसकी माँ नहीं पहनती। ये प्रश्न उसके मन में चक्कर काटने लगे थे। वह लड़का, अपने आसपास चलते-फिरते लोगों को देख, अनुभव करता था कि वे उससे और उसकी माँ से श्रेष्ठ हैं। पर यह क्यों? उसके नन्हे-से मन में यह बात पहले भी उठती थी, परन्तु वह इसको माँ से पूछने में संकोच अनुभव करता था। आज उससे रहा नहीं गया।

दोपहर के बारह बजे, भिखारिन ने प्याले से सब पैसे निकाले और अपनी आँटी में बाँध लिये। उसने लड़के की उँगली पकड़ी और पहाड़-गंज की ओर चल पड़ी। लड़के को अब पूछने का अवसर मिला। उसने पूछा,

"माँ! आज बहुत पैसे मिले हैं?"

"हाँ!"

"ये लोग हमको क्यों देते हैं?"

"अपने भगवान् को प्रसन्न करने के लिए।"

"तो हमको पैसे देने से भगवान् प्रसन्न होता है क्या?"

"हाँ!"

"भगवान् हमारा क्या लगता है ?"

"बाप ।"

"और इनको पैसे कौन देता है ?"

"भगवान् ।"

"तो भगवान् स्वयं हमको क्यों नहीं दे देता ?"

"भगवान् उनको देता है, जो मेहनत-मजदूरी कर धन पैदा करते हैं ।"

"हम मेहनत-मजदूरी क्यों नहीं करते ?"

औरत लड़के के इन प्रश्नों से खीझ गई और चुप कर रही। परन्तु माँ का लाडला पुत्र होने से लड़के ने हठकर फिर कहा, "माँ ! मैं भी मेहनत-मजदूरी कर धन कमाऊँगा और फिर तुमको भीख दूँगा ।"

माँ हँस पड़ी । लड़के ने विस्मय से माँ का मुख देखते हुए पूछा, "यह ठीक नहीं है क्या ?"

"ठीक है, पर इसके लिए बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं। तुम पढ़ोगे कैसे ? कौन पढ़ायेगा तुमको ?"

ये प्रश्न लड़के की बुद्धि से ऊपर के थे। वह नहीं जानता था कि यह होगा कैसे। वह अपनी छोटी सी बुद्धि से इनका अर्थ समझने का यत्न करने लगा।

इस समय वे पहाड़गंज के बाजार के किनारे पर पहुँच गए थे। वहाँ एक मुसलमानी धाबा था। वह औरत वहाँ जा खड़ी हुई और आँटी से पैसे निकाल, गिनकर पाँच आने धाबे वाले को दिखाकर बोली, "तीन रोटी और शोरबा दे दो ।"

तन्दूर वाले ने भिखारिन को देखा और कहा, "मोटे माँस का है। कौन हो तुम ?"

वह औरत लड़के का हाथ पकड़े खड़ी थी। मोटे माँस का नाम सुन बोली, "बकरे का शोरबा दो न ।"

"वह यहाँ नहीं मिलता ।"

"कल जो दिया था !"

धावे वाला हँस पड़ा और बोला, "अब तुम मुसलमान हो गई हो। किसी से नक़ाह पढ़ा लो। अच्छी खासी खूबसूरत मालूम होती हो।"

औरत का मुख विवर्ण हो गया और उसके मुख पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। उसके हाथ में पैसे पकड़े रह गए। दुकानदार ने एक और ग्राहक को प्लेट में माँस रखकर दिया और टेढ़ी दृष्टि से उसकी ओर देखता गया। इस पर उस औरत ने अति दयनीय दृष्टि से देखते हुए कहा, "भैया! हँसी मत करो। कल क्या दिया था मुझको?"

"बताया तो है। हमारे यहाँ मोटा माँस बनता है।"

"तो तुमने कल क्यों नहीं बताया?"

"मुझको क्या मालूम था कि तुम हिन्दू हो। आज शक हुआ तो कह दिया है।"

औरत के सिर में चक्कर आने लगे। वह वहीं पर सड़क के किनारे बैठ गई। लड़का विस्मय में माँ का मुख देखने लगा। कितनी देर तक वह बैठी रही और उसके मस्तिष्क में ये शब्द गूँजते रहे, "तुम मुसलमान हो गई हो! तुम मुसलमान हो गई हो!!..."

लड़के को भूख लग रही थी। जब माँ घुटनों में सिर दिए बैठी रही तो उसने तंग हो कह दिया, "माँ! भूख लगी है।"

इससे उसको चेतनता हुई। वह लड़खड़ाती हुई उठ पड़ी और पहाड़गंज पुल की ओर चल पड़ी। पुल पर से होकर वह अजमेरी गेट और वहाँ से काज़ी हौज़ की ओर गई। लड़का थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कहता गया, "माँ! भूख लगी है।"

काज़ी हौज़ पहुँच, वह चावड़ी बाज़ार पार कर गई और जामा मस्जिद के पिछवाड़े से निकल फव्वारे की ओर चल पड़ी। वहाँ वह एक सिक्खों के धावे पर जा पहुँची। वहाँ से उसने चार रोटी खरीदीं। चने की दाल उन रोटियों के साथ बिना दाम के मिल गई। उसने एक रोटी और दाल लड़के को दे दी और शेष स्वयं ले, वहीं सड़क के किनारे पर बैठकर खालीं। रोटी खा, सड़क के किनारे लगे नल से पानी पी, धावे के सामने वाले खुले

मैदान में एक पेड़ के नीचे जा बैठी। इस समय लड़के का मस्तिष्क फिर काम करने लगा। उसने पूछा, "माँ! उसने माँस क्यों नहीं दिया?"

"देता तो था। परन्तु मैंने नहीं लिया।"

"क्यों? पैसे नहीं थे पास?"

"थे क्यों नहीं? पर···पर नहीं लिया।"

वह आगे कुछ कह न सकी। उसके मन में फिर वह बात आ गई कि वह गाय का माँस खा चुकी है। इस विचार से उसका दिल बैठने लगा। वह भूमि पर बैठ गई और लड़के से बोली, "बेटा! चुप कर रहो। मुझको नींद आ रही है।"

लड़का भूमि पर लेट गया और रोटी की खुमारी में सो गया, परन्तु वह औरत सो नहीं सकी। बेचैनी में करवटें लेती रही।

इस प्रकार दो घण्टे व्यतीत हो गए। इस समय एक अन्य भिखारी उसके पास आकर बैठ गया और उसे जागी देख बोला, "कमली! ओ कमली!!"

उसे देख औरत उठकर बैठ गई और बुलाने वाले से पूछने लगी, "तो आ गए हो? रोटी खाई है?"

"खा ली है। आज मैं हनुमान जी के बाहर गया था। दो रुपये से ऊपर कमाये हैं!"

"मेरे कल वाले पैसे वापस कर दो।"

"कितने थे?"

"आठ आने दिए थे। उस पर दो आने सूद। कुल दस आने हुए।"

"यह सूद की बात तुम खूब करती हो। बहुत मेहनत की कमाई है जो चार आना रुपया सूद लेना चाहती हो।"

"मैं माँगती नहीं भैया! तुम देते हो। जब भूख लगती है और पास पैसे नहीं होते तो मिन्नत भी तो तुम करते हो।"

"अच्छा बाबा! झगड़ा न करो। लो जो मन में आये ले लो।"

उस भिखारी ने अपने फटे कुरते की जेब में से एक मैले चिथड़े को

निकाला और उस में बँधे पैसे खोल, गिनकर उस औरत के हाथ में रख दिए। औरत ने गिने। नौ आने थे। उसने गिनकर फिर हाथ फैला दिया और कहा, "एक आना और लाओ।"

"तो तुम नहीं मानोगी ?"

"यदि फिर कभी लेने हैं तो पूरा सूद दे दो।"

"अच्छा लो।" उसने पोटली में से चार पैसे और निकालकर उसे दे दिए।

औरत ने अपनी आँटी में लपेटे हुए पैसे निकालकर गिन डाले। सब पैसे मिलाकर तीन रुपये हो गए थे। उसने ओढ़नी में से एक टुकड़ा फाड़कर पैसे बाँध लिये और पुनः आँटी में ठूँस लिये। इस पर उस भीख माँगने वाले ने कहा, "कमली ! तुम मुझको बहुत भली लगती हो।"

"फिर वही बात। देखो कान्हू ! मैं तुमको भाई कह चुकी हूँ। इससे मेरे साथ ऐसी-वैसी बातें न किया करो।"

"उस शराबी के लिए अपनी जवानी खराब कर रही हो।"

"खराब कर रही हूँ तो अपनी जवानी न ? तुम्हारा तो कुछ बिगाड़ नहीं रही।"

"अच्छा बाबा ! मैं तो तुमको कहता रहूँगा, तुम न करती रहना।"

"अच्छा भैया ! सुनो !" कमली ने बात बदलकर कहा, "यदि कोई हिन्दू भूल से गाय का माँस खाले तो क्या होता है ?"

"मैं क्या जानूँ। मैं पण्डित तो हूँ नहीं।"

"एक कहता था कि वह मुसलमान हो जाता है।"

"हो जाता होगा। हम भिखारी तो न मुसलमान हैं और न हिन्दू। मुसलमान को कहते हैं, 'मौला भला करेगा, खुदा तुम्हारी सुनेगा' और हिन्दू को कहते हैं, 'भगवान के नाम पर एक पैसा दे दो।' "

कमली ने कहा, "गाय का माँस खाना तो अच्छा नहीं ?"

"मैंने कभी खाया नहीं। कहाँ मिलता है वह ?"

"वही पहाड़गंज के किनारे वाले ढाबे में।"

"मैं तो वहाँ से कई बार खा चुका हूँ।"

"वही कहता था कि मैं मुसलमान हो गई हूँ ?"

"देखो कमली ! मैं तो मुसलमान नहीं हुआ। फिर भी कहो तो दोनों माँगते-माँगते हरिद्वार स्नान कर आवें। गंगा में तो सब पाप छूट जाते हैं।"

कमली फिर विचारमग्न हो गई।

: २ :

कमली का असली नाम बनतो था। वह दिल्ली में एक कपड़ा मिल में काम करने वाले एक कर्मचारी की पत्नी थी। उसके पति का नाम मोहन था। विवाह के कुछ ही पीछे मोहन को मद्यपान की लत पड़ गई। मोहन शराब पीकर घर आता था और कोई-न-कोई झगड़ा खड़ाकर बनतो को खूब पीटता था। एक दिन उसने उसे इतना पीटा कि वह पड़ोसियों के घर में छिपकर ही जान बचा सकी। अगले दिन मोहन के पड़ोसी उसकी पत्नी को साथ लेकर उसके पास आये तो मोहन पड़ोसियों को गाली देने लगा और अपनी स्त्री को व्यभिचारिणी बताने लगा। इससे पड़ोसियों ने पति-पत्नी के झगड़े में न पड़ना ही उचित समझा और बनतो को वहीं छोड़-कर चले गए। इसके पश्चात् पड़ोसियों ने बनतो की सहायता करनी ही छोड़ दी।

मोहन को बनतो पर सन्देह था कि वह दुराचारिणी है। उस रात पड़ोसियों के घर रहने पर वह उसके चरित्र पर रहा-सहा विश्वास भी खो बैठा। इस पर वह उसकी पिटाई किसी-न-किसी बहाने नित्य करने लगा।

मद्य-सेवन से मोहन, घर का खर्च देने में असमर्थ हो गया और भूख से, दुःखित हो बनतो भीख माँगने लगी। पहले पड़ोसिनों से, फिर दुकानदारों से और फिर खुले बाजारमें। इसमें उसे सफलता भी मिली। वह कुरूप नहीं थी। अच्छी चमकदार आँखें और गोल कपोल रखती थी। फिर अभी उसकी आयु भी कम ही थी।

एक दिन मोहन ने उसके पास कुछ रुपये, जो उसने भीख माँगकर

एकत्रित किए थे, देख लिये। मोहन ने मद्य पीने के लिए माँग लिये। बनतो ने न कर दी। इस पर मोहन को क्रोध आ गया और उसने क्रोध में ही कहा, "दे दो। मैं जहाँ चाहूँगा खर्च करूँगा।"

"पर ये तुम्हारे नहीं हैं।"

"तो किसके हैं?"

"मेरे हैं।"

"कहाँ से लाई हो तुम?"

"भीख माँगकर लाई हूँ।"

"झूठ बोलती है। तुम व्यभिचारिणी हो। वेश्या हो और पेशा कर यह रुपये लाई हो। निकल जाओ मेरे घर से।"

मोहन ने सब रुपये छीन लिये और उसको धक्के मारकर घर से बाहर निकाल दिया। पौष का महीना था। वर्षा हो रही थी। बनतो गर्भवती थी। उसके पति का कच्चा मकान ईदगाह के पीछे, पहाड़ी के नीचे बना था। वहाँ और भी बहुत से ऐसे मकान थे। इन मकानों का भाड़ा दो रुपया मासिक था।

बनतो मकान के बाहर वर्षा में भीगती हुई बहुत देर तक खड़ी रही। उसका विचार था कि उसका घर वाला अन्त में दया कर उसे अन्दर ले लेगा, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। वर्षा और ठण्डी हवा जब असह्य हो गई, तो वह वहाँ से चल पड़ी। वह चली तो शरीर को गरम करने के लिए थी परन्तु भाग्य उसे ले गया पहाड़गंज के पुल के नीचे। वहाँ बहुत से भिखारी पुल की दीवार के साथ सटे हुए वर्षा तथा हवा के झोंके से अपने को बचाने के लिए एकत्रित थे और आग ताप रहे थे। बनतो वहाँ पहुँची तो भिखारियों में से एक ने कहा, "ओ औरत! आग तापोगी?"

वह सरदी से ठिठुर रही थी। इस कारण बिना कुछ विचार किए वहाँ बैठ गई। किसी ने पूछा, "कौन हो?"

"भिखारिन।"

"कहाँ भीख माँगती हो?"

"जहाँ मिल जाय।"

"तो तुम भिखारिन नहीं हो। शौकिया भीख माँगती हो।"

बनतो इसके अर्थ नहीं समझी। "भिखारिन नहीं हो! शौकिया भीख माँगती हो।" ये वाक्य उसके लिए निरर्थक थे। उसे विस्मय में चुप देख उसी भिखारी ने फिर कहा, "देखो। हमने नगर को इलाकों में बाँटा हुआ है और अपने इलाके को छोड़कर किसी दूसरे के इलाके में नहीं जाते। जो यह भी नहीं जानता वह भला भिखारी कैसे है ?"

"जहाँ भीख मिलेगी, वहीं तो जाया जायेगा ?"

"पर जो वहाँ सदा से भीख माँगते हैं, उनको कौन देगा ?"

"जिस पर दाता की दया हो जाय, उसी को तो भीख मिलेगी ?"

"दाता की ऐसी की तैसी। हम भूखे मरें और वह देखे कि कौन उसके मनको पसीजता है। यह तो अन्याय है।"

बनतो चुप रही। उस समय उसके मन में अनेकानेक विचार उठ रहे थे। उससे बातें करने वाले का नाम कान्हू था। आयु तो कुछ अधिक नहीं थी, परन्तु सुल्फा अधिक पीने के कारण उसका शरीर सूख-सा गया था। वह अपनी पिचकी गालों में से अपने मैले दाँत निकालते हुए पूछने लगा, "यह काम नया आरम्भ किया है, तुमने ?"

"क्या काम ?"

"भीख माँगने का।"

"यह काम है क्या ? मैं तो दुःख की मारी भीख माँगती हूँ।"

"दुख से कहो, सुख से कहो। पर कमली! है तो यह भी काम। इसमें पैसा मिलता है और नौकरी से अधिक मिलता है।"

बनतो को इसका अनुभव था। वह चुप रही। इस समय कान्हू की दृष्टि उसके पेट की ओर चली गई। उसने पूछा, "इसके लिए क्या मिला था तुमको ?"

"किसके लिए ?"

"यह जो आगे लटक रहा है।" उसने उसके पेट की ओर उंगली कर

दी। सब हँसने लगे। जब सब हँस चुके तो कान्हू ने फिर पूछा, "दस-बीस तो मिले ही होंगे ?"

"नहीं भैया !" बनतो ने कहा, "इसके लिए मिली हैं लातों की बौछार। यह मेरे घर वाले ने दिया है और अब लातों और मुक्कों से पीट-कर घर से निकाल दिया है।"

सब चुप कर गए। इस रात्रि के पश्चात् बनतो नियमित रूप से भिखा-रिन बन गई और कान्हू ने उसका नाम कमली रख दिया। सबने मिलकर उसके लिए भिक्षा का स्थान निश्चित कर दिया।

कमली का परिचय लाला घनश्याम से करा दिया गया। यह सेठ इन भिखारियों का 'बैंकर' था। सब भिखारी खा-पीकर बचा पैसा उसके पास जमा करा देते थे और आवश्यकता पड़ने पर एकत्रित धन ले लेते थे। लाला रुपये रखने की 'कमीशन' लेता था।

कमली के लड़का हुआ। जमुना के तट पर, विराने में, एक पेड़ के नीचे, उसने प्रसव किया। कान्हू और उसकी तीन वर्ष की बच्ची रामी उसके पास थी। और अन्य कोई नहीं था। घनश्याम से कमली के हिसाब में से दस रुपये लेकर उसके लिए एक चादर और थोड़ा गुड़-घी ला दिया गया। तीन दिन तक वे जंगल में पड़े रहे। कान्हू भी भीख माँगने नहीं गया। तीन दिन में कमली चलने-फिरने योग्य हो गई तो वे लोग शहर लौट आये। माँ ने लड़के का नाम विमल रखा।

मोहन एक और औरत घर ले आया था। वह बनतो को मस्तिष्क में से निकाल चुका था। यूँ तो इस नई पत्नी की भी वही दुर्दशा होती थी। अन्तर केवल यह था कि नई पत्नी भी मद्य पीती थी और जब मोहन उसको पीटता था तो वह मोहन को पीटती थी। परिणाम यह होता कि अगले दिन दोनों अपनी करतूत पर पश्चाताप करते और जब फिर मद्य पीते तो पुनः लड़ पड़ते।

कभी मोहन बनतो को, चिथड़ों में, बाजार में घूमते देखता तो मुख मोड़कर निकल जाता। बनतो को भी उससे कोई मोह नहीं रहा था। इस

प्रकार छः वर्ष व्यतीत हो चुके थे। विमल पाँच वर्ष से ऊपर की आयु का हो गया था।

इस दिन तक वह भीख माँगती हुई अपना और विमल का पालन करती रही, परन्तु आज विमल ने कहा था, "माँ! मैं भी बाबू बनूँगा और तुमको भीख दूँगा।" इस बात को सुन वह स्वप्न से जागी। उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ कि क्या उसका बेटा भी जीवन-भर भीख माँगता रहेगा। यह बात उसको पसन्द नहीं थी। उसने समझ लिया कि भीख माँगना बन्द करना पड़ेगा। साथ ही कान्हू अब उसको अपनी पत्नी बनाने का हठ करने लगा था। इस पर गोमाँस की घटना घटी और वह अपने से घृणा करने लगी। वह दिन-भर इससे बाहर निकलने का उपाय सोचती रही।

सायंकाल तक उसने अपने मन में एक योजना बना ली। वह भिक्षा-कार्य छोड़ पनवाड़ी की दुकान करने का निश्चय कर बैठी। उसने निश्चय कर लिया कि घनश्याम से अपना रुपया लेकर दुकान करेगी। यह विचार कर वह पहाड़गंज के पुल के नीचे लौटी। वह प्रायः वहीं सोया करती थी, परन्तु जब कभी कान्हू उसको तंग करने लगता तो वह विमल को लेकर यमुना-किनारे जंगल में सोने चली जाती थी। आज जब वह पुल के नीचे भिखारियों के अड्डे पर पहुँची तो कान्हू ने प्रसन्नता से उसका अभिवादन किया। उसने उसको हाथ से संकेत कर बुलाया, "ओ कमली! इधर आओ।" कमली विमल को लिये हुए वहाँ पहुँची।

कान्हू ने पूछा, "हरिद्वार चलोगी?"

"विचार तो है।"

"तो चलो आज ही चल दें। रात जहाँ थक जायँगे सो रहेंगे।"

"आज नहीं। अभी कुछ दिन पीछे। मैं लाला से रुपये लेने जा रही हूँ।"

"जीती रहो कमली! मैं सच कहता हूँ कि जिस दिन तुम मेरी बीवी बनने के लिए मानोगी मैं चरस पीना बन्द कर दूँगा।"

"चुप ! बहन को बीवी बनाते लज्जा नहीं लगती ?"

"सब मजा किरकिरा कर देती हो तुम। कब मेरी माँ ने तुम्हें जन्म दिया था, जो बहन बन रही हो ?"

"अच्छा देखो भैया !" कमली ने बात बदलकर कहा, "यह विमल यहाँ सो रहा है। मैं लाला से रुपये का हिसाब करके अभी आती हूँ।"

कान्हू रात-भर कमली की प्रतीक्षा करता रहा। वह नहीं लौटी।

: ३ :

कमली ने जब घनश्याम से हिसाब पूछा तो उसको पता चला कि उसका एक हजार दो सौ रुपया एकत्रित हो चुका है। जब उसने लाला से कहा कि उसको रुपये की आवश्यकता है तो लाला पूछने लगा, "इतना रुपया लेकर क्या करोगी ?"

"मैं कहीं पान की दुकान करूँगी।"

"उससे क्या होगा ?"

"भीख माँगते-माँगते जी ऊब गया है।"

"पान की दुकान करने से तो यार लोग लूट ले जायेंगे ! कहीं घर-गृहस्थी कर लो न।"

"भाग्य में बदा होता तो घर से निकाली ही क्यों जाती ?"

"किसी ने तुम्हारा नाम कमली ठीक ही रखा है। एक बार बात ठीक नहीं बैठी तो पुनः यत्न क्यों नहीं करती ?"

"कौन करेगा मुझसे विवाह ?"

"हाँ, विवाह तो कठिन है। परन्तु वैसे ही किसी के यहाँ रहना चाहो तो रह सकती हो। पीछे आपस में प्रेम हो जाने से विवाह से भी ऊपर की बात हो जायगी।"

"प्रेम क्या होगा ? रस चूसकर फेंक देगा और फिर न घर की रहूँगी न घाट की।"

"अब भी कौन घर-घाट है तुम्हारा ?"

"वही तो बनाने जा रही हूँ। लड़के को पढ़ाऊँगी, बाबू बनाऊँगी और फिर उसके लिए बहू लाऊँगी। मेरा भी घर और ठिकाना होगा।"

लाला हँस पड़ा और बोला, "बहुत दूर के स्वप्न देखती हो कमली! पर पनवाड़ी की दुकान इस स्वप्न को पूरा नहीं होने देगी। दुकान खोलते-ही भँवरे रस चूसने के लिए तुम्हारे ऊपर मंडराने लगेंगे। रस चूसेंगे और डंक मारेंगे और फिर कली खिलने से पूर्व ही डाल से गिरकर धूल में मिल जायगी।"

इस चित्र का अनुमान कर कमली चिन्तित हो गई। उसके मुख से बात नहीं निकली। उसे चुप देख घनश्याम ने कहा, "देखो कमली! पनवाड़िन का लड़का पढ़े-लिखेगा कुछ नहीं। आवारा हो जायगा और तुम्हारा घर-घाट का स्वप्न, स्वप्न ही रह जायगा। किसी भले पुरुष का घर बसाओगी तो वह तुमको बसायेगा और तुम्हारे लड़के का पालन-पोषण भी करेगा।"

"कौन करेगा मेरे साथ यह सब कुछ?" कमली ने अनिश्चित मन से कहा।

लाला घनश्याम कुछ देर तक विचार करता रहा। पश्चात् उसने आले पर से दीया उठाया और कमली के मुख के समीप ले जाकर उसकी आँखें देखने लगा। पहले तो कमली को यह पता ही नहीं चला कि वह क्या करने लगा है। पश्चात् जब उसे ज्ञान हुआ कि वह उसकी रूप-रेखा परख रहा है तो उसने आँखें मूँद लीं। घनश्याम हँस पड़ा। उसने दीया पुनः आले पर रख दिया और कहा, "तो बताओ क्या विचार है?"

"कहाँ करोगे प्रबन्ध?"

"यहीं इसी घर में।"

"और तुम्हारी पहली बीवी?"

"उसको मरे कई वर्ष हो चुके हैं।"

"पर यहाँ कोई रहती तो थी?"

"वह चौका बासन करती थी। अब रूठकर चली गई है।"

"तो तुम मेरे लड़के को पढ़ाओगे ?"

"कितना बड़ा है वह ?"

"पाँच वर्ष से कुछ ऊपर का है।"

"और कोई बच्चा नहीं है क्या ?"

"मेरे घरवाले ने मुझे घर से निकाल दिया हुआ है।"

"तो और कोई नहीं मिला तुमको ?"

"आवश्यकता नहीं पड़ी।"

"तब ठीक है। यहीं रह जाओ। तुम सुखी रहोगी और तुम्हारे नाम इतना धन लिख दूँगा कि मरण-पर्यन्त सुख से जीवन व्यतीत कर सकोगी।"

कमली के मन में संघर्ष चल पड़ा था। बिगड़ी बनाने की उत्कण्ठा जाग उठी थी। परन्तु उसके मन में एक संस्कार था कि परपुरुष से संसर्ग पाप है। वह मन-ही-मन सोचती थी कि परपुरुष कौन है ? उसके विवाहित पति ने उसको लातों से मार-मारकर घर से निकाल दिया था। उसकी गर्भावस्था की भी चिन्ता नहीं की थी। पीछे उसको भीख माँगते हुए देख मुख मोड़कर चला जाता था। वह पुरुष कैसे अपना हो गया। इस पर भी घनश्याम उससे कैसा व्यवहार करेगा वह नहीं जानती थी। क्या वह भी उसका भोगकर उसी प्रकार उसे घर से निकाल देगा। घनश्याम को इस समय आवश्यकता है। सम्भव है वह वैसा व्यवहार न करे। वह शराब भी नहीं पीता। साथ ही उसकी बात कि पनवाड़िन का लड़का पढ़ नहीं सकेगा उसे उचित ही प्रतीत हुई। एक पुरुष के आश्रय के बिना वह अपने लड़के के लिए कुछ कर सकेगी, कहना कठिन है। फिर घनश्याम से अच्छा पुरुष उसकी दृष्टि में और कोई नहीं था।

घनश्याम उसे चुप बैठे देख समझ रहा था कि वह मान रही है। इस कारण उसने फिर कहा, "देखो कमली ! यह बगल में स्नानागार है। इसमें जाकर स्नान करो। वहाँ साबुन और तेल रखा है। भली भाँति मैल उतारो ! सिर धोकर तेल लगाओ और पश्चात् विचार करना। इस

अवस्था में तो तुम ठीक-ठीक विचार भी नहीं कर सकती।"

"क्यों?" कमली ने मुस्कराते हुए पूछा। वह मन में निर्णय कर चुकी थी।

"कितने दिन हो चुके हैं तुमको सिर धोये?"

"याद नहीं। महीना दो महीने तो हो ही गए होंगे।"

"सिर में जूएँ नहीं पड़ीं तुम्हारे?"

"पड़ी होंगी।"

"तो ऐसे सिर से कुछ समझ भी सकोगी क्या?"

"मैं तो यही सोच रही हूँ कि एकने लातों-घूँसों से मार-मार कर निकाला था और क्या जाने दूसरा जान से ही मार डाले।"

"तुम बिलकुल मूर्ख हो। मैं तुमको कहता हूँ कि पहले स्नान करो और फिर साफ-सुथरे कपड़े पहनो। अच्छा भोजन करो और आराम से सो जाओ। कल प्रातःकाल तुम्हारे लड़के को यहाँ बुला लिया जायगा। वह पढ़ेगा और बाबू बनेगा और तुम बनोगी बाबू की माँ।"

कमली रात वहीं रह गई। अगले दिन प्रातः वह साफ-सुथरी धोती और कपड़े पहन जब विमल को लेने पहाड़गंज की पुल के नीचे जा पहुँची, तो सब भिखारी आँखें फाड़-फाड़ उसकी ओर देखने लगे। विमल कान्हू की लड़की रामी के साथ सो रहा था। बचपन से ही वह उसको अपने साथ सुलाती रही थी।

कान्हू ने उसको इस अवस्था में देखा तो खिलखिलाकर हँस पड़ा। कमली मुस्कराई तो उसने कहा, "कमली, थाह पा गई हो न?"

"हाँ भैया!" उसने विमल को जगाते हुए कहा।

"कहाँ?"

"लाला के घर में।"

"ओह! लालायिन बन गई हो। बहुत-बहुत बधाई हो। मुँह मीठा नहीं कराओगी क्या?"

"कराऊँगी। आज आना।"

विमल जागा तो कितनी देर तक मां को पहचान नहीं सका। मां ने उसकी नींद खुलने तक कान्हू को सब बात, जो घनश्याम से हुई थी, बता दी। कान्हू ने सुना, समझा, सोचा और मन में सन्तोष अनुभव कर कहा, "कमली बहिन ! बहुत प्रसन्न हो?"

"हाँ। भैया ! बहुत प्रसन्न हूं। तुमने मुझको बहिन कहा है, यह बहुत बड़ी बात है।"

"हाँ ! कल तक तुम कटी पतंग की तरह थी। मैं सोचता था किसी के भी हाथ पड़ सकती हो। इससे मेरे ही हाथ में क्यों न आ जाओ। आज तुम्हारे इस संसार-सागर में पाँव लग गए हैं। मैं प्रसन्न हूं। भगवान् तुम्हारा भला करेगा।"

विमल माँ की उंगली पकड़े हुए जब घनश्याम के घर की ओर आ रहा था तो वह मां के मुख की ओर देख विस्मय कर रहा था। कमली उसको ऐसा करते देख मन में उसके विचारों का अनुमान लगा रही थी। विमल तो विस्मय में कुछ कह नहीं रहा था। इस पर कमली की हँसी निकल गई और उसने पूछा, "क्या देख रहे हो विमल?"

"मां ! तुम बहुत अच्छी लग रही हो। मेरे हाथ बहुत मैले हैं।"

"तुमने कहा था न कि तुम बाबू बनोगे?"

"हाँ मां !"

"तो तुमको बाबू बनाने के लिए मुझे पहले बाबू की माँ बनना पड़ा है। एक भिखारिन का लड़का बाबू नहीं बन सकता।"

विमल इस कथन के गूढ़ रहस्य को समझ नहीं सका। वह मन में अच्छे कपड़े पहनने, अच्छा भोजन करने की आशा बनाने लगा।

: ४ :

इस परिवर्तन को हुए एक वर्ष हो चुका था। विमल बेयर्ड रोड पर एक स्कूल में बिठा दिया गया था। कमली उसको नहला-धुला, अच्छे वस्त्र पहना नित्य स्कूल छोड़ने जाती और फिर स्कूल बन्द होने के समय उसको

लिवाने जाती। मुहल्ले के लोग उसको घनश्याम की पत्नी मानने लगे थे। घनश्याम उससे बहुत प्यार करता था और मुहल्ले के लोग घनश्याम को कमली का आदर करते देख स्वयं उसका आदर करने लगे थे।

विमल ने एक वर्ष में दो श्रेणियों की परीक्षा पास की तो घनश्याम बहुत प्रसन्न हुआ। उसने लड़के को प्यार किया, उसका मुख चूमा और मुहल्ले-भर में मिठाई बाँटी। इससे मुहल्ले के उन लोगों का, जो लड़के के कोई अन्य पिता होने की चर्चा किया करते थे, मुख बन्द कर दिया। 'मियाँ-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी', की कहावत सब मानते थे और उनकी निन्दा करने में लाभ नहीं समझते थे।

नई श्रेणी की पुस्तकें खरीद, कमली विमल को स्कूल छोड़कर घर आ रही थी कि उसे रास्ते में मोहन आता दिखाई दिया। कमली रेशमी साड़ी, जम्पर और चमचमाते सैण्डल पहने हुए थी। उसके होठों पर सुर्खी और चेहरे पर पाऊडर लगा हुआ था। इस प्रकार सजधज कर वह पँच-कुइयाँ रोड पर चली आ रही थी जब मोहन ने भी उसे देखा। कमली सड़क के दूसरे किनारे पर थी। मोहन ने उसे पहचाना तो सड़क पार कर उसके सामने जा पहुँचा। कमली मुख दूसरी ओर कर निकल जाना चाहती थी परन्तु मोहन उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह उसके बनाव-शृंगार को देखकर विस्मय कर रहा था और सोच रहा था कि वह किसके पास रहती है, जो उसे यह सब कुछ दे रहा है। कमली के हाथ में सोने की चूड़ियाँ भी थीं। इस सबको देख उसके मनमें उससे कुछ रुपये ऐंठने का विचार आया। कमली एक ओर हटकर निकल जाना चाहती थी कि मोहन ने उसको बाँह से पकड़ लिया और कहा, "कहाँ भागी जाती हो?"

"मुझको छोड़ दो!" कमली ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा।

"क्यों?"

"क्यों का क्या मतलब? एक गरीब अबला को....।"

मोहन ने बात बीच में ही काटकर कहा, "गरीब? हाँ बहुत गरीब हो न? बेचारी रेशमी साड़ी पहनती हो। हाथों में सोने की चूड़ियाँ हैं।

ओह ! बहुत गरीब हो । अच्छा बताओ किस हरामजादे के पास रहती हो ?"

इतना कह उसने कमली को घसीटकर अपने साथ ले चलने के लिए यत्न किया । कमली चीखें मारने लगी और वहीं सड़क पर लेट गई । मोहन ने स्वभाववश पाँव की ठोकर मारकर उसे उठाना चाहा । वह लोहे की नोक वाला बूट पहने था और ठोकर कमली की कनपटी पर लगी । कमली के पूर्ण शरीर में कँपकँपी उठी और वह वहीं अचेत हो गई ।

मोहन ने समझा कि वह मर गई है । इस कारण उसने उसकी बाँह छोड़ दी और भाग जाना चाहा । परन्तु कमली की चीख-पुकार से एकत्रित लोगों में से एक ने उसको पकड़ लिया । मोहन भाग जाने के लिए छट-पटाने लगा और उसे पकड़ने वाला चिल्लाने लगा, "पकड़ो इस हत्यारे को ! पकड़ो इस हत्यारे को !!"

रास्ता चलने वालों को एकत्रित होते देख मोहन घबराने लगा । उसने अपनी जेब में से एक चाकू, जिसका फल नौ इंच से कम लम्बा नहीं था, निकाल लिया और पकड़ने वाले की कुक्षी में घोंप दिया । उस व्यक्ति की पकड़ शिथिल पड़ गई और वह भूमि पर गिरकर मूर्च्छित हो गया । मोहन ने अपने को मुक्त पा भागने का यत्न किया, परन्तु अब उसके सामने एक सिपाही आ गया था । उस सिपाही ने उसका मार्ग रोक लिया । मोहन ने चाकू घुमाया, जो सिपाही ने अपनी बाँह आगे कर रोका । चाकू उसकी बाँह में लग गया परन्तु उसको दूसरी भुजा की पकड़ में मोहन आ गया । मोहन का चाकू वाला हाथ अभी भी खुला था । उसने अबकी सिपाही के हृदयस्थल पर वार किया । सिपाही भूमि पर लुढ़क गया । मोहन ने अपने चारों ओर खड़े लोगों को आतंकित करने के लिए रक्त से लथ-पथ चाकू ऊपर उठाकर कहा, "एक ओर हट जाओ, नहीं तो मार डालूँगा ।"

मोहन के दुर्भाग्य से एक लठैत वहाँ आ निकला । उसने अपनी लाठी से उसके चाकू वाले हाथ पर वार किया और झन्न से चाकू मोहन के हाथ से दूर जा गिरा । चाकू के गिरते ही देखने वालों ने उसे लपककर पकड़ लिया ।

बेयर्ड रोड के मोड़ पर खड़ा सिपाही वहाँ आया और मोहन के हाथ-पैर बाँध लेडी हार्डिंग अस्पताल में ले गया। घायलों को भी वहीं पहुँचा दिया गया। सिपाही ने वहां से थाने में टेलीफोन किया। थाने से पुलिस-वैन आई और मोहन को बैठाकर ले गई।

डाक्टरों ने घायलों की परीक्षा की। उनमें से दो तो मर चुके थे। कमला जीवित थी परन्तु उसके जीवित रहने की आशा कम थी। इस कारण उसको इर्विन अस्पताल पहुँचा दिया गया।

उस दिन जब स्कूल बन्द हुआ तो विमल को लेने उसकी माँ नहीं आई। इस पर हैडमास्टर ने चपरासी के हाथ विमल को उसके घर भिजवा दिया।

चपरासी विमल को लिये हुए घनश्याम के घर पहुँचा तो घनश्याम भिखारियों का लेखा ठीक कर रहा था। घनश्याम ने कमली को प्रातःकाल विमल को छोड़ वापस न आते देख समझ लिया था कि वह लड़के को लेकर कहीं भाग गई है। यद्यपि उस दिन प्रातःकाल तक कमली में लेश-मात्र भी असन्तोष का चिह्न नहीं था, इस पर भी वह सोचता था कि औरतों का क्या भरोसा। परन्तु शाम को विमल जब चपरासी के साथ आया तो उसका माथा ठनका। उसको विश्वास था कि कमली अपने पुत्र से इतना प्रेम करती है कि वह उसको छोड़ कहीं जा नहीं सकती। उसके मन में बैठ गया कि अवश्य कोई दुर्घटना घट गई है।

उसने विमल को खाने के लिए रोटी और पीने के लिए दूध दिया और स्वयं कमली का पता करने के लिए चल पड़ा। कमली बाजार से स्वयं सब्जी आदि खरीदने के लिए जाया करती थी। वह सब्जी वाले की दुकान पर जाकर पूछने लगा, "भाई! हमारी घरवाली आज सब्जी लेने आई थी क्या?"

घनश्याम और कमली को बाजार में प्रायः सभी जानते थे। सब्जी वाले ने तुरन्त उत्तर दिया, "हाँ लाला! वह सवेरे आई थी। शलजम ले गई थी। क्यों क्या हुआ है?"

"वह प्रातःकाल लड़के को स्कूल छोड़ने गई थी। अभी तक लौटी नहीं।"

"किधर गई थी?" दुकानदार ने उत्सुकता से पूछा।

"गोलमार्केट के पास स्कूल है।"

"ओह!" दुकानदार के मुख से निकल गया। उसने कहा, "लाला! आज दिन के समय पंचकुइयाँ रोड पर एक आदमी ने तीन हत्याएँ कर दी हैं। हतों में एक औरत भी थी।"

"सत्य?" घनश्याम का मुख विवर्ण हो गया। वह चिरकाल तक किंकर्त्तव्य विमूढ़ वहीं खड़ा रहा। इस पर दुकानदार ने कहा, "लाला! थाने में पता करो।"

घनश्याम थाने में जा पहुँचा। वहाँ उसको इस घटना का कुछ और विवरण मिला। उसको बताया गया कि औरत की मृत्यु अभी तक नहीं हुई। इस पर भी वह मरणासन्न इर्विन अस्पताल में पड़ी है।

घनश्याम विमल को साथ ले इर्विन अस्पताल जा पहुँचा। कमली अभी भी अचेत पड़ी थी। डॉक्टर राधाकृष्ण एम० डी० लन्दन, मस्तिष्क-विशेषज्ञ उसकी देख-रेख कर रहा था। वहाँ वह परीक्षण कर रहा था कि मस्तिष्क के किस स्थान अथवा परत पर कितनी चोट लगी है, जिससे वह अचेत हो गई है।

घनश्याम ने जब परिचय दिया कि वह उसका पति है और वह लड़का उस स्त्री का पुत्र, तो डॉक्टर घनश्याम से कमली का पूर्व-इतिहास जानने का यत्न करने लगा। कमली की चारपाई के समीप खड़ा वह पूछ रहा था, "इस औरत की मित्रता किसी अन्य से थी क्या?"

"मेरी जानकारी में यह आवारा नहीं थी।"

"पर तुम्हारी आयु पचास के लगभग है और औरत चौबीस-पच्चीस की प्रतीत हो रही है। इससे यह असन्तुष्ट नहीं थी क्या?"

"मुझको तो सर्वथा सन्तुष्ट प्रतीत होती थी।"

"एक मोहन ने इसकी हत्या करनी चाही थी। तुम उसको जानते

हो क्या ?"

मोहन का नाम सुन घनश्याम के मुख का रंग उड़ने लगा। डॉक्टर उसे ध्यान से देख रहा था। उसको भयभीत देख डॉक्टर ने पूछा, "क्या बात है अब बताओ।" इस पर घनश्याम ने कमला का पूर्ण इतिहास, जो वह जानता था, बता दिया। डॉक्टर यह सुन गम्भीर हो गया। उसने कुछ नहीं कहा। कुछ देर पश्चात् उसने केवल इतना कहा, "यह औरत बचेगी अथवा नहीं कह नहीं सकता। परन्तु मोहन फाँसी पायेगा। उसने दो और हत्याएँ भी की हैं।"

डॉक्टर ने विमल के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"विमल बाबू !"

डॉक्टर मुस्कराया। घनश्याम ने कहा, "इसकी माँ इसको ऐसे ही पुकारती थी।"

घनश्याम और विमल लौट आये। अगले दिन वे फिर अस्पताल गए। वहाँ कमली अभी भी अचेत थी। डॉक्टर दूध इत्यादि भोज्य-पदार्थ रबड़ की नाली द्वारा उसके पेट में पहुँचा रहे थे।

दिन-पर-दिन व्यतीत होते गए, परन्तु कमली सचेत नहीं हुई। टट्टी-पेशाब तो होने लगा था, परन्तु चेतनता नहीं हुई। डॉक्टर राधाकृष्ण के लिए कमली एक विशेष परीक्षण का विषय बन गई। वह उसकी प्रत्येक बात की जाँच-पड़ताल करने लगा।

जब कमली को अचेत हुए पन्द्रह दिन से भी ऊपर हो गए तो घनश्याम ने उसके बचने की आशा छोड़ दी। वह उसकी ओर से लापरवाह हो गया। विमल में भी उसकी रुचि नहीं रही। अब विमल अकेला माँ का समाचार लेने अस्पताल में आता था। इससे उसका स्कूल जाना भी छूट गया।

: ५ :

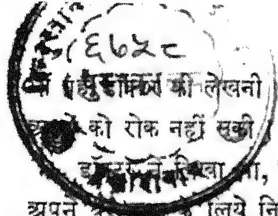
डॉक्टर राधाकृष्ण लन्दन से एम० डी० पास करके आया था। वह

मस्तिष्क और स्नायु-मण्डल के रोगों का विशेषज्ञ था। यूँ तो घर पर चिकित्सा करता था, परन्तु अपना अनुभव बढ़ाने के विचार से और जनता की सेवा करने के लिए इर्विन अस्पताल में उसने अपनी सेवा निःशुल्क दे रखी थीं। डॉक्टर राधाकृष्ण की नगर में बहुत ख्याति थी। धनी-मानी लोग उससे चिकित्सा कराने आते थे और उसके घर रुपयों की वर्षा करते थे।

राधाकृष्ण कुछ झिझकी स्वभाव का व्यक्ति था। मस्तिष्क के रोगों की चिकित्सा करने वाला स्वयं एक विशेष मस्तिष्क रखता था। उसकी विचार-धारा एक विशेष मार्ग में ही चलती थी। वह मनुष्य को संस्कारों का पुञ्ज-मात्र मानता था। उसका विश्वास था कि मस्तिष्क एक फोटो की प्लेट के समान है, जिस पर गर्भाधान होने के काल से लेकर मरणपर्यन्त बाहरी घटनाओं के चित्र खिंचते रहते हैं। इन चित्रों का ग्रामोफोन के रिकार्ड की भाँति मनुष्य की बातों और कामों में प्रकटीकरण होता रहता है।

अपने इस विचार की पुष्टि में वह मनुष्यों पर परीक्षण करता रहता था। भाँति-भाँति के मनुष्यों से सम्पर्क उत्पन्न कर वह उनके जीवन की बातों को अपनी डायरी में लिखता और फिर उन बातों को श्रेणी-बद्ध कर उनका विश्लेषण करता और उनसे परिणाम निकाल अपनी विचारधारा की पुष्टि अथवा खण्डन होने की परीक्षा करता रहता। कभी वह किसी स्कूल में जा पहुँचता। वहाँ भिन्न-भिन्न आयु के लड़कों के अन्तरात्मा की बातों को जानने का यत्न करता। कभी जिलाधीश की स्वीकृति से जेल में जा पहुँचता और वहाँ बन्दियों के मनोभावों को जानने का यत्न करता। अस्पताल में भी वह रोगियों के पूर्व-इतिहास जानने पर अधिक बल देता था।

उसके इस विशेष आचरण का उसके परिवार पर भी प्रभाव हो रहा था। उसकी स्त्री स्वरूप रानी उसके इस प्रकार दूसरों के अन्तरात्मा में झाँक-झाँककर देखने को पसन्द नहीं करती थी। एक दिन उसको डॉक्टर की डायरी पढ़ने का अवसर मिला और उसमें अपने विषय में भी लिखा पढ़ वह विस्मय, क्रोध और लज्जा के भिन्न-भिन्न भावों से भर गई। इस पर



[illegible] की लेखनी से लिखी हुई अपने मन की बातों को पढ़ने से [illegible] को रोक नहीं सकी।

[illegible] लिखा था, "प्रेमनारायण सप्र, भ्रम रोग के रोगी, आज मुझे अपने [illegible] के लिये निमन्त्रण दे गए। मैं विचार करता था कि इसमें कुछ विशेष कारण अवश्य होना चाहिए। मैं चाय पीने गया। वहाँ जाते ही मुझको कारण समझ आ गया। प्रेमनारायण की विवाह-योग्य दो लड़कियाँ हैं। और लड़कियों के पिता के लिए यह स्वाभाविक ही है कि अविवाहित युवकों को इन लड़कियों के सम्पर्क में लावे।

"मेरे मन में यह जानने की इच्छा हुई कि प्रेमनारायण का यह कार्य अर्ध-चेतन-मन की प्रेरणा से हुआ है अथवा जाग्रत मन की योजना से। इसके जानने के लिए मैंने यत्न भी किया। बातचीत लड़कियों के विषय में चल पड़ी। प्रेमनारायण को यूँ तो इस बात का भान भी नहीं था कि उनकी बड़ी लड़की स्वरूप रानी विवाह-योग्य हो गई है। मैंने पूछा, 'कहीं पढ़ती है ?' उसने उत्तर दिया, "नहीं ! अभी तो गुड़ियों से खेलती है।' उसके इस कथन पर मुझे सन्देह हुआ कि यह बनावटी बात है, परन्तु जब प्रेमनारायण लड़कियों से पिंगपौंग खेलने लगा तो मुझको विश्वास हो गया कि मुझको जाग्रत मन की योजनानुसार नहीं बुलाया गया।

"परन्तु स्वरूप रानी उन्नीस वर्ष की युवती थी। उसके अंग-अंग की गति-विधि से प्रतीत होता था कि वह जीवनसाथी की खोज में है। जैसे चुम्बक की ओर लोहा खिन्च जाता है वैसे ही वह युवकों की ओर खिन्च रही थी। मुझसे मिली और घुल-मिलकर बातें करने लगी। मेरे इस प्रश्न के उत्तर में, कि एम० ए० करने के पीछे उसका क्या करने का विचार है, उसका मुख लाल हो गया। इस सरल प्रश्न के उत्तर में मुख लाल कर लेना तो केवल एक बात का सूचक था कि वह अपने यौन-सम्बन्धी अभावों की पूर्ति करना चाहती थी।

"मैं बात को वहाँ ही छोड़ने वाला नहीं था। मैंने कहा कि वह मुझको सुन्दर प्रतीत होती है। उसका पसीना छूटने लगा। मैंने जब उसको

रूमाल निकाल गरदन का पसीना पोंछते देखा तो समझ गया कि उसके मन में क्या विचार उठ रहा है।

"इसके कई दिन पश्चात् जब हमारी सगाई हो चुकी थी, मैंने उसके भावों को जानने के लिए पूछा, 'एक बात पूछूँ ?'

'पूछिये।'

'विचारकर सत्य बताओगी ?'

'हाँ ! विश्वास रखिये। सत्य ही बताऊँगी।'

'तुम में विवाह करने की इच्छा कब पैदा हुई थी ?'

"वह हँस पड़ी। पश्चात् कुछ विचारकर बोली, 'जब मैं गुड़ियों का खेल खेलती थी। तब विवाह का अभिप्राय मेरे लिए अच्छे-अच्छे कपड़े तथा भूषण पहनना-मात्र था।'

'और अब विवाह के अर्थ क्या समझती हो ?'

"इस पर वह लज्जा से लाल हो उठी। मैंने पूछा, 'विवाह की, इन अर्थों में, इच्छा कब से उत्पन्न हुई ?'

"स्वरूप रानी इस प्रश्न से रुष्ट हो गई और उठकर चली गई। इसका अर्थ मैं समझता हूँ कि वह यौन सम्बन्ध के लिए व्याकुल थी।"

इस प्रकार डॉक्टर राधाकृष्ण अपनी स्त्री, लड़कियों और लड़के के कार्य, विचारों और बातों का वृत्तान्त डायरी में लिखता रहता था। कई बार उसका इस डायरी के सम्बन्ध में अपनी स्त्री से झगड़ा भी हो गया था। इस झगड़े को भी वह मन में किसी बात की प्रतिक्रिया-मात्र मानता था और स्वयं न रुष्ट होता न प्रसन्न होता था।

जब अचेत कमली को उसके सामने उपस्थित किया गया तो उसने इसे एक साधारण-सी चोट समझी थी। केवल शरीर-विज्ञान की बात समझ, उसको चैतन्य प्रदान करने का यत्न करने लगा। परन्तु जब उसे कमली के पूर्व इतिहास का पता चला तो वह इसमें अपने मनोवैज्ञानिक खोज के लिए भी सामग्री पा गया। वह नित्य घनश्याम और विमल से उनके मन की जाँच-पड़ताल करने के लिए उनसे बातें पूछता रहता था। विमल तो डॉक्टर

से घुलमिल गया था।

कमली को अचेत हुए एक मास से ऊपर हो चुका था। वह सन्देह करने लगा था कि शायद मस्तिष्क को ऐसी चोट लगी है, जो उसको स्वाभाविक स्थिति में आने नहीं देती। वह कमली को जीवन-भर के लिए अचेत हो गई समझने लगा था।

इस समय घनश्याम का अस्पताल आना बन्द हो गया और विमल नित्य दो बार अस्पताल में आता और माँ के पीत-वर्ण मुख को देखता रहता। डॉक्टर कमली से निराश हो घनश्याम से कहना चाहता था कि वह अब ठीक नहीं होगी और उसको हटाने का प्रबन्ध करे। परन्तु जब काफी दिनों तक वह नहीं आया तो एक दिन विमल से पूछ बैठा, "लाला कहाँ है?"

"घर पर हैं।"

"यहाँ कब आयेंगे?"

"कहते हैं, मां के बचने की आशा नहीं, आकर क्या करेंगे।"

"तो तुम क्यों आते हो?" डॉक्टर ने कुछ रुष्ट हो पूछा।

विमल ने बिना विचारे कह दिया, "यह मेरी मां है।"

ये तीन शब्द अपार अर्थों के सूचक थे। विमल स्वयं नहीं जानता था कि उसने कितनी गम्भीर बात कह दी है। डॉक्टर इस मनोद्गार को समझता था। इस कारण उसने सहानुभूति की मुद्रा बनाकर कहा, "यदि यह मर गई तो क्या करोगे?"

विमल की आँखें तरल हो गई। उसके मुख से कोई बात नहीं निकली। इस पर डॉक्टर ने पूछा, "लाला तुम्हारा पालन-पोषण करेगा?"

"मैं उसके पास नहीं रहूँगा।"

"तो कहाँ जाओगे?"

वह कहने वाला था कि भीख माँगने लगेगा, परन्तु यह बात उसके मुख से नहीं निकल सकी। वह भीख माँगने और एक गृहस्थी के घर में रहने के अन्तर को देख चुका था और अनुभव कर चुका था। इस कारण

वह अनिश्चित मन तथा दयनीय दृष्टि से डाक्टर की ओर देखता रहा। डाक्टर ने फिर पूछा, "तुम स्कूल पढ़ने जाते हो?"

विमल ने सिर हिला कर न करदी। इस पर डाक्टर ने पूछा, "क्यों?"

"लाला ने इस मास की फीस नहीं दी और मास्टर ने स्कूल से निकाल दिया है।"

इस पर डाक्टर गम्भीर हो गया। उसने कुछ काल तक विचार कर कहा, "हमारे घर पर चलकर रहोगे?"

विमल का मुख खिल उठा। उसने केवल इतना कहा, "मैं पढ़ूँगा।"

"तो चलो। मेरे साथ घर चलो। मैं तुम्हें अपनी मोटर में ले चलूँगा।"

: ६ :

विमल को घर पर लाकर डाक्टर ने उसका अपनी छोटी लड़की नीला से परिचय करा दिया, "देखो नीला! यह विमल है। तुम्हारा एक और भाई। तुम्हारा बड़ा भाई व्रज है न? यह दूसरा है विमल। यह तुम्हारे साथ स्कूल पढ़ने जाया करेगा।"

स्वरूप रानी, जो डाक्टर की ऐसी बेतुकी बातों से पहले ही ऊब चुकी थी, बोली, "यह कौन है?"

"एक भिखारिन का लड़का।"

"इसे यहाँ क्यों लाये हैं?"

"अपने परीक्षणों का क्षेत्र बढ़ाने के लिए।"

"क्या होगा इस सबसे? वह किसी दिन चोरी कर भाग जायगा।"

"यह तो हमारा लड़का व्रजभूषण भी कर सकता है। अनेक लड़के अपने माँ-बाप का धन चुराकर सैर-सपाटे के लिए भाग जाते हैं।"

"उनकी बात दूसरी है। माता-पिता का धन उनका अपना होता है। ले जाते हैं तो इतना बुरा नहीं। परन्तु यह भिखारिन का लड़का अपने माता-पिता की नहीं प्रत्युत् किसी दूसरे की चोरी करेगा।"

"मैं इसे अपना बना लूँगा, तब तो इसकी चोरी कुछ अधिक बुरी नहीं रहेगी ?"

"कैसी बातें करते हैं आप ? क्या बेटा कहने-मात्र से बन जाता है ?"

"जहाँ तक जायदाद और चोरी का सम्बन्ध है, कहने-मात्र से भी हो सकता है।"

डाक्टर राधाकृष्ण की बड़ी लड़की का नाम रीता था। वह सेंट स्टीफ़न्स कालेज में एफ० ए० में पढ़ती थी। वह कालेज से लौटी तो 'लान' में विमल को नीला से खेलते देख विस्मय करती रह गई। वह बिमल को जानती थी। उसे तथा उसकी माँ को भीख मांगते देख चुकी थी। इस पर भी विमल को साफ सुथरे वस्त्रों में देख वह अपनी पहचान पर संदेह करने लगी। लान में जाकर बिमल को ध्यान से देख पूछने लगी, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"विमल।"

"कहाँ रहते हो ?"

बिमल ने कोठी की ओर उँगली से संकेत कर कह दिया "इस कोठी में। आज ही आया हूँ।"

रीता की हँसी निकल गई। इस पर नीला ने समीप आकर कहा, "दीदी ! इसे पिताजी मेरे साथ खेलने और पढ़ने के लिए लाये हैं।"

रीता ने नीला की बात अनसुनी कर कहा, "तुम भीख मांगा करते थे न ?"

"अब हम भीख नहीं माँगते।"

"तुम्हारी मां थी न, जो तुम्हारे साथ होती थीं ?"

बिमल की आँखों में आँसू ढुलकने लगे। रीता ने समझा कि वह मर गई है। बिमल ने कुछ कहा नहीं और रीता कोठी में चली गई।

रीता, डाक्टर के परीक्षणों में, एक विशेष स्थान रखती थी। वह बचपन से उसके कामों की जानकारी रखता चला आ रहा था। रीता की बातों को लिखकर उसने एक पुस्तक-सी बना ली थी और वह नित्य उसके

कामों की देख-भाल रखता था और लिखता रहता था। आज उसने लिखा, "रीता को विमल को देख विस्मय हुआ। वह मेरे कार्यालय में आई। मुझको अकेला देख पूछने लगी :

'डैडी! इस भिखारी को क्यों ले आये हैं आप?'

'मुझे इस पर दया आ गई थी।'

'यह एक भिखारिन का लड़का है। स्वयं भी भीख माँगता रहा है।'

'वह अब भीख नहीं माँगेगा।'

'श्योर (निश्चय से कहते हैं)?'

'इतना ही निश्चय से, जितना तुम्हारे विषय में कि तुम भीख नहीं माँगोगी।'

'वट? डैडी डीयर! आप मुझको क्या समझते हैं?'

'मैं तुमको डॉक्टर राधाकृष्ण की लड़की समझता हूँ। बहुत ही कोमल हृदय रखने वाली, परन्तु बचपन की-सी बुद्धि रखने वाली।'

'डैडी! मैं इंटरमीडिएट में पढ़ती हूँ।'

'जानता हूँ। अभी तुमने बुद्धि खोने की पहली श्रेणी में प्रवेश किया है। पाँच वर्ष में समूल बुद्धि खो बैठोगी।'

"इससे रीता के क्रोध की सीमा नहीं रही। वह उठी और अपने कमरे में चली गई। कमरे में पहुँच अपने पलंग पर लेट गई और क्रोध और विवशता में पलंग पर टाँगें पटकती रही। मैंने उसकी माँ से जाकर कहा, 'ज़रा देखो रीता को क्या हो गया है।' वह उसके कमरे में गई और उससे बातें करने लगी। क्या बातें हुईं पता नहीं चला, पर रीता शान्त हो गई। रात खाने के समय मैं क्लब में था। प्रातःकाल वह ब्रेक-फास्ट के लिए आई तो मैं भी था। विमल, नीला, ब्रजभूषण भी मेज पर बैठे थे। नीला विमल को छुरी-काँटे से खाने का तरीका बता रही थी। रीता यह सब देख हँस पड़ी। विमल अपनी अनभिज्ञता पर लज्जित नहीं हुआ। उसने दीनता के भाव से रीता की ओर देखकर कहा, "दीदी! लाला के यहाँ खाना ऐसे नहीं खाया जाता, जैसे आप लोग खाते हैं। हम तो

हाथ से खाते थे।"

"मैंने हँसते हुए कहा, 'कोई बात नहीं विमल ! यह भी सीख जाओगे। सीखने से सब कुछ आ जाता है।'

'इस पर विमल साहस कर पुनः छुरी-काँटे से खाने का प्रयत्न करने लगा। मैंने रीता से कहा, 'जब तुम छोटी थीं, तब तुम छुरी-काँटे से खाते-खाते अपना सब मुख जाम से गंदा कर लिया करती थीं और जब तुमको कहा जाता था कि ऐसा न करो तो तुम कहा करती थी कि तुम जरूर करोगी। जब खाते समय तुमको नैपकिन बाँधने को कहा जाता था तो तुम उतारकर फेंक दिया करती थीं। परन्तु अब तुम यह सब कुछ सीख गई हो।'

"मेरा अनुमान है कि मेरा यह कहना रीता को अपने विरुद्ध पक्षपात प्रतीत हुआ।"

उस दिन डॉक्टर विमल को लेकर अस्पताल जा पहुँचा। विमल को अपनी माँ के समीप बैठाकर वह अपने अन्य रोगियों को देखने चला गया। विमल को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी माँ शान्तिपूर्वक सो रही है। इससे अपने स्वभावानुकूल वह माँ के समीप हो माँ को बुलाने लगा, "माँ ! माँ !! उठो !"

यद्यपि वह बहुत धीरे-धीरे बुला रहा था, इस पर भी नर्स को यह भला प्रतीत नहीं हुआ ! वह भागती हुई उसके पास आई और कहने लगी, "देखो लड़के ! शोर न मचाओ।"

विमल ने कहा, "माँ को जगाऊँ नहीं ?"

"वह सोई हुई नहीं है। वह अचेत है।"

विमल इन दोनों की अवस्थाओं में अन्तर समझने लगा था, परन्तु जब वह अपनी माँ के मुख पर देखता था, तो वह नींद में मुस्करा रही प्रतीत होती थी। इससे नर्स के चले जाने पर वह पुनः माँ को पुकारने से अपने आपको रोक नहीं सका। उसने पुनः अपना मुख अपनी माँ के समीप ले जाकर कहा, "माँ ! माँ !! मैं विमल हूँ।"

कमली वैसेही अचेत पड़ी थी। इससे विमल की आँखों में से आँसू छलकने लगे। उसकी दृष्टि नर्स पर पड़ी, जो उसकी ओर ही आ रही थी। विमल पीछे हट गया और कमीज की बाँह से अपनी आँखें पूँछने लगा।

नर्स ने उसके समीप आकर उसको फिर डाँटा, "ओ लड़के! आराम से नहीं बैठ सकते तो चले जाओ यहाँ से।"

"कहाँ जाऊँ?"

"अपने घर। यह अस्पताल है। यहाँ रोना-धोना नहीं चल सकता।"

विमल सहम गया, परन्तु उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि माँ के माथे पर त्योरी चढ़ी है। उसने कहा, "देखो! देखो!! माँ जाग रही है।"

नर्स बाँह से पकड़ उसे कमरे से बाहर धकेलने ही वाली थी कि उसकी दृष्टि रोगी पर चली गई। उसको भी अनुभव हुआ कि रोगी के होंठ फड़क रहे हैं। वह विस्मय में खड़ी रह गई। पश्चात् विमल को छोड़, भागकर कमरे से बाहर निकल गई। वह डॉक्टर को बुलाने गई थी।

कमली धीरे-धीरे सचेत होने लगी। डॉक्टर समझ गया कि विमल की उपस्थिति उसके सचेत होने में कारण बन रही है। उस दिन कमली के जीवन ने करवट ली। इस पर भी उसे ठीक होने में एक मास और लग गया। डॉक्टर नित्य विमल को कमली के पास बैठा जाता। पहले-पहल माँ ने बेटे को पहचाना। कई दिनों के उपरान्त वह विमल को सिर पर हाथ फेर प्यार दे सकी और फिर बातचीत करने लगी। कई दिनों पश्चात् विमल माँ को बतला सका कि वह लाला के घर से चला आया है और अब डॉक्टर के घर पर रहता है। डॉक्टर उसके साथ अपने बच्चों-जैसा ही व्यवहार करता है।

"पर लाला क्यों नहीं आता?"

"उसका विचार था कि तुम मर जाओगी।"

"अच्छा उसके घर जाओ और उसे बुला लाओ।"

"क्यों?" विमल विस्मय में पूछने लगा।

"मेरी कुछ वस्तुएँ उसके पास रह गई हैं। मैं वह वापस पाना

चाहती हूँ ।"

"क्या है, वे ?"

"तुम नहीं समझ सकते विमल ! जाओ उसे बुला लाओ ।"

विमल गया और लाला से बोला, "लाला ! माँ बुलाती हैं ।"

"माँ ? वह ठीक हो गई है क्या ?"

"हाँ ! और तुमसे अपनी अमानत वापस माँगती हैं ।"

"क्या रखा है उसका यहाँ ?" लाला ने कुछ रुष्ट होकर पूछा, "और क्या वह यहाँ वापिस नहीं आ रही ?"

"यह तो उसने नहीं बताया ?"

"और तुम कहाँ रहे हो इतने दिन ?"

"डॉक्टर के घर ।"

लाला कमली को देखने गया। जब वह उसके समीप पहुँचा तो कमली को चेतनावस्था में देख प्रसन्न हुआ और बोला, "तो तुम ठीक हो न ?"

"हाँ। भगवान् का धन्यवाद है। पर तुम खबर लेने तक नहीं आये ?"

"मुझको डॉक्टर ने कहा था कि तुम रात तक मर जाओगी। मैंने सोचा कि फिर क्या करूँगा आकर।"

कमली ने क्रोध में कहा, "लाला ! तुम बहुत ही पाजी हो। क्या-क्या वचन दिए थे तुमने ?"

"वह सब तो अब भी पालन करूँगा। वचन जीवित कमली से थे। तुम्हारे मृत शव के साथ नहीं।"

"पर तुमने लड़के की भी सुध नहीं रखी ?"

"कमली ! मैं तुम्हारी कसम खाकर कह सकता हूँ कि यह लड़का मुझको बताये बिना चला गया था। मुझको आज ही पता चला है कि वह कहाँ रहता रहा है।"

कमली ने कहा, "मैं तो तुम्हारे घर नहीं जाती परन्तु अब तो तुमने मेरा सतीत्व हरण कर लिया है और मैं तुम्हें अपना पति मान

चुकी हूँ। बताओ मुझको घर ले चलोगे या नहीं ?"

"मैंने कभी न की है क्या ? तुमने बुला भेजा और मैं भागा हुआ चला आया हूँ।"

: ७ :

विमल को नीला वाले, कॉन्वैन्ट स्कूल में भरती करवा दिया गया। दोनों स्कूल की बस में जाते और इकट्ठे ही घर लौटते। स्कूल में विमल नीला का 'कज़न ब्रदर' समझा जाता था। विमल नीला के साथ फिर प्रथम श्रेणी में पढ़ने लगा।

ब्रजभूषण मॉडल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता था और रीता इण्टरमीडिएट में। कालेज में रीता के साथ उसकी बैंच पर एक मुसलमान लड़की सुलताना बैठती थी। दोनों में परिचय हुआ, मैत्री हुई और फिर घनिष्ठता हो गई। सुलताना रीता के घर आने लगी और रीता उसके घर जाने लगी।

सुलताना से मित्रता तो एक साधारण-सी घटना थी, परन्तु इसने रीता का जीवन-मार्ग बदल डाला, जो रीता को अन्त में बहुत दूर ले गया। सुलताना का एक भाई मजीद था, जो इंग्लैण्ड से बैरिस्टरी पास करके आया था। रीता का सुलताना के घर में उससे सामना हो गया और मजीद की दृष्टि में रीता एक सुन्दर लड़की जँची।

मजीद किसी-न-किसी बहाने रीता के मार्ग में आने लगा और दोनों में 'हौ डू यू डू' से आरम्भ होकर रीता देवी और मजीद साहब कहने तक स्थिति पहुँच गई। अब मजीद, रीता और सुलताना को अपनी मोटर में घुमाने के लिए ले जाने लगा। सप्ताह में एक-दो बार सिनेमा और 'शौपिंग' भी होने लगी।

मजीद का अपना एक मित्र-मण्डल था। रीता का परिचय उस मित्र-मण्डल से भी हो गया। इसमें लड़के और लड़कियाँ दोनों थीं। इस मण्डली का अधिक परिचय रीता को एक दिन मजीद के घर में मिला।

वह सुलताना के साथ कालेज से आई थी। दोनों का विचार कुछ नाश्ता कर सिनेमा देखने जाने का था। जब वे कोठी पर पहुँचीं तो मजीद, जिसको वे सिनेमा के लिए साथ ले जाना चाहती थीं, अपनी मित्र-मण्डली में बैठा हुआ था। रीता और सुलताना मजीद से सिनेमा के लिए कहने आईं। मजीद ने उठकर दोनों का स्वागत किया और उनको भी गोष्ठी में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दे दिया। मित्र-मण्डली में एक पारसी युवक ने, जिसका नाम कोटलवाल था, कहा, "रीता देवी! तनिक इस स्त्री की बात आप भी सुन लें। इन पैसे वालों की करतूत का कुछ ज्ञान तो आपको भी हो जायगा।"

रीता उनकी बातों में रुचि रखती थी इस कारण उस गोष्ठी में बैठ गई और सुलताना यह कह कि वह चाय लाती है, कोठी के भीतर चली गई। मजीद का कार्यालय इसी कोठी में था और उसके कार्यालय के बाहर ही वे लोग बैठे हुए थे।

एक बाहर की स्त्री भी वहाँ थी। वह अपनी कथा मजीद को सुनाने आई थी। उसने कहा, "यह मोहन मेरा खाविन्द है। लगभग छः वर्षों से मैं इसके घर रहती हूँ। मोहन की, मेरे आने से पहले, एक बीवी थी, जिसका नाम बनतो था। मोहन ने उसे बदचलन समझ घर से बाहर निकाल दिया था। कुछ समय तक मोहन और अन्य परिचितों की आँखों में धूल झोंकने के लिए बनतो बाजारों में भीख माँगती फिरी और फिर एक लाला के घर बैठ गई और उसकी पत्नी बन रहने लगी।

"एक दिन वह मोहन को बाजार में मिल गई। उसने उसका रंग-ढंग देखा और क्रोध में आकर उसको घर घसीटकर ले जाने लगा। वह सड़क पर लेट गई। मोहन के पाँव की ठोकर से वह अचेत हो गई। इस पर चलते-फिरते आदमियों ने मोहन को पकड़ना चाहा। एक आदमी छुरे से वार करने के लिए उस पर लपका। मोहन ने उस आदमी से छुरी छीन ली और अपने बचाव के लिए दो आदमियों को घायल कर दिया। वे दोनों अस्पताल जाते-जाते मर गए। बनतो एक मास से ऊपर बेहोश रह

कर अब लगभग ठीक हो गई है।

"अब मोहन पर मुकद्दमा होने वाला है। मिल में काम करने वाले मोहन के साथियों ने मुझे इनके पास भेजा है।" इतना कहकर उसने कोटलवाल की ओर संकेत कर दिया।

जब वह स्त्री अपनी कथा बता चुकी तो रीता ने कोटलवाल से पूछा, "इसमें पैसे वालों की बात कहाँ से आ गई ?"

"आ तो गई। बनतो एक गरीब मजदूर की बीवी थी। घनश्याम एक पैसे वाला आदमी है। वह उसकी बीवी उड़ाकर ले गया। न वह ले जाता और न उसे रेशमी कपड़े पहने देख मोहन को क्रोध आता और न ही वह ये कत्ल करता। सब झगड़े की जड़ घनश्याम ही तो है।"

इस पर मजीद ने कहा, "इस तमाम कहानी में एक बात खास है। वह यह कि जब तक बनतो भीख मांगती थी मोहन ने उसको घर ले जाने की कोशिश नहीं की। जब उसने उसे रेशमी कपड़े पहने देखा तो मोहन को उसे घर लेजाना याद आ गया। इसका तो एक ही मतलब है कि मोहन घनश्याम से अपनी स्त्री द्वारा धन कमाना चाहता था।"

"नहीं नहीं! मजीद साहब! यह बात नहीं है।" कोटलवाल ने कहा, "वास्तव में उसको रेशमी वस्त्र और सोने की चूड़ियां पहने तथा शृंगार किए सड़क पर घूमते हुए देख मोहन को इतना क्रोध आ गया कि वह अपने को वश में नहीं रख सका। इस क्रोध में वह ये हत्याएँ कर बैठा है। इसकी सहायता अवश्य करनी चाहिए। इस कपड़ा मिल में हम कर्मचारियों की यूनियन बना रहे हैं। यदि हम मोहन को मुकद्दमे में सहायता देंगे तो हमारी प्रतिष्ठा कर्मचारियों में बहुत बढ़ जायगी और हमें यूनियन बनाने में सहायता मिलेगी।"

मजीद को मुकद्दमा बहुत दुर्बल प्रतीत हुआ। वह अभी नई-नई प्रेक्टिस करने लगा था और नहीं चाहता था कि आरम्भ में ही हार जाने वाले मुकद्दमे ले। इस कारण उसने कहा, "देखो दादा! इस आदमी को फाँसी होगी और यदि हम लोगों ने इसकी सहायता की तो हम अपनी इज्जत

बढ़ाने के स्थान कुछ कम ही कर बैठेंगे।"

इस पर अन्य उपस्थित लोग मजीद को समझाने लगे। कोटलवाल ने जब मजीद को अपने विचार पर दृढ़ देखा तो वह उठकर रीता के समीप आ बैठा। वह रीता से धीरे-धीरे बातें करने लगा। उसने पूछा, "रीता देवी! आप क्या समझती हैं कि मोहन की सहायता करनी चाहिए अथवा नहीं?"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती।"

"एक इन्सान की जान बचाने के लिए क्या हमको कुछ नहीं करना चाहिए?"

"पर उसने हत्याएँ जो की हैं?"

"रीता देवी! ये हत्याएँ तो 'अंडर प्रोवोकेशन' हुई हैं। साथ ही उसकी स्त्री पर दया करनी चाहिए।"

"ठीक है। यदि सहायता हो सकती हो तो की जाय।"

इस पर कोटलवाल ने मजीद को सम्बोधन कर कहा, "मजीद भाई! इधर देखो, रीता देवी क्या कह रही हैं।"

मजीद ने रीता की ओर घूमकर कहा, "क्या कहती हैं देवी जी?"

"ये कह रही हैं कि उसकी औरत पर रहम कर मोहन को छुड़ाने की कोशिश करना हमारा फ़र्ज़ है।"

"यह ठीक है, पर मेरी बदनामी की तरफ भी तो ग़ौर करना चाहिए।"

"नेक काम में बदनामी भी सही जा सकती है।" रीता ने युक्ति दी।

इस पर मजीद कुछ गम्भीर हो बोला, "अगर रीता देवी का यही हुक्म है तो मैं बसरे चश्म बजा लाऊँगा। मैं यह मुकद्दमा लड़ूँगा और मोहन को छुड़ाने की सिरतोड़ कोशिश करूँगा।"

पूर्व इसके कि रीता यह कहती कि वह हुक्म देने वाली कौन है, सबने ताली बजाकर मजीद की दाद दी और कोटलवाल तथा अन्य कई सदस्य रीता को घेर कर उसका धन्यवाद करने लगे।

इस घटना के पश्चात् मजीद अपने को रीता के बहुत समीप अनुभव करने लगा। उस सायंकाल सिनेमा हाल में उसने पहली बार रीता के हाथ को एक विशेष दबाव के साथ पकड़ा। रीता ने अपना हाथ खींचा नहीं। वह पिक्चर देखने में बहुत लीन थी। उसका इस ओर कुछ ध्यान नहीं था।

इसके साथ ही कोटलवाल को यह समझ आई कि रीता का नव विकसित सौंदर्य पार्टी के लाभ में प्रयोग किया जा सकता है। इस कारण वह भी प्रायः रीता से मिलने-जुलने लगा।

कई दिन पश्चात् की बात है कि रीता और सुलताना बाजार से अपनी कोठी की ओर जा रही थीं जब कि एक भिखारी एक लड़की के साथ भीख माँगता हुआ दिखाई दिया। भिखारी ने कहा, "मेम साहब ! गरीब पर दया करो। दो दिन से रोटी नहीं खाई। बच्चे भूख से बिलख-बिलखकर रो रहे हैं।" रीता मुख ऊँचा किए समीप से निकल जाने वाली थी कि सुलताना ठहर गई। उसने अपनी पर्स में से एक चवन्नी निकाली और भिखारी के प्याले में डाल दी। रीता ने देखा तो विस्मय प्रकट कर बोली, "यह क्या, चार आना दे दिया ?"

"हाँ !" सुलताना ने पर्स बन्द करते हुए कहा।

"इन भीख माँगने वालों को तो लज्जा भी नहीं आती कि सरे बाजार भीख माँगते फिरते हैं।"

"सब उस परवरदिग़ार ख़ालिक की कुदरत है।"

"अजीब कुदरत है उसकी !"

"हाँ, इसमें भी वह हम सब की भलाई का ख्याल रखे हुए है।"

"भला इसमें क्या भलाई हो सकती है ?"

"हो क्यों नहीं सकती ? इनको देखकर और फिर इनको खैरायत देकर हमारे दिल में रहम का जजबा पैदा होता है। यह क्या कम बात है !"

रीता खिलखिलाकर हँस पड़ी। सुलताना को उसके हँसने पर विस्मय हुआ। इस पर रीता ने कहा, "किसी को लंगड़ा, लुंजा, गरीब, आलसी इस कारण बनाया गया है कि इसमें खुदा परवरदिग़ार की कुदरत का

पता चले और इनको देखकर हम में रहम का जज़बा पैदा हो, यही कहा है न तुमने ? यह तो उस बनाने वाले को मूर्ख कहने के बराबर है।"

"उसकी कुदरत को हम समझ नहीं सकते। हमें तो उसकी अबादत करनी चाहिए।"

"अबादत करने से और चाहे कुछ हो, परन्तु उसकी अक्लमन्दी सिद्ध नहीं हो सकती।"

सुलताना चुप रही। वह इस युक्ति का उत्तर नहीं जानती थी। सुलताना के स्थान पर उसके भाई मजीद की युक्ति रीता को पसन्द आई। एक दिन गीता ने सुलताना की हँसी उड़ाने के विचार से उक्त वार्तालाप मजीद को सुना दिया। इस पर मजीद ने कहा, "ठीक तो कहती है यह। जो कुछ इसने अपनी अम्मी से सीखा है, वही तो यह बता सकती है। मुसीबत यह है कि जो कुछ यह कालेज में पढ़कर आती है वह वहीं छोड़ आती है। घर तो अम्मी की शागिर्दी करती है। पाँच बार नमाज़ पढ़ती है। दो बार कुरान की तलावत करती है और रात-भर खुदा से डरती रहती है।

"कई बार इससे कह चुका हूँ कि इस दुनिया में कोई खुदा नहीं। कुदरत खुद ही सब कुछ है। कभी उसकी एक शक्ल बनती है और कभी दूसरी।"

"तो फिर हम दान-पुण्य क्यों करते हैं?"

"एक वहम के मातहत, आदत पड़ जाने से।"

"कभी हम अपनी हानि करके भी तो सत्य बोलते हैं?"

"यह भी एक वहम का नतीजा है। सब मज़हबी जमायतों ने इन्सान के दिमागों में एक ख्याली डर बैठा रखा है। वे कहती हैं—'एक खुदा है, जो सबके कामों को देखता रहता है। उससे डरो और सच बोलो, चोरी न करो।' इसी तरह की दीगर बातें कही जाती हैं, जिनकी कुछ भी हकीकत नहीं।"

"एक बात तो है। अगर इस किस्म का डर न रहे तो दुनिया में भारी गड़बड़ मच जायगी।"

"जरूर मन्न जायगी। लेकिन इसको दूर करने का यह इलाज नहीं। यहाँ अमनोअमान रखने के लिए खुदा का मानना लाजमी नहीं। उससे डरने की जरूरत नहीं। निडर होकर हमें अपने फायदे की बात करनी चाहिए। इससे ही चोर, डाकू, ठग वगैरह खतम हो जायेंगे।"

रीता को और तो सब समझ आ गया परन्तु यह अन्तिम बात समझ नहीं आई। उसने कहा, "भला यह कैसे होगा? डाकू का फायदा डाका डालने में है, चोर का चोरी करने में और ठग का ठगी करने में। यह फायदे की बात करने से कैसे शान्ति हो सकेगी? इससे तो लोग परिन्दों की भाँति एक-दूसरे को नोच-नोच खाने लगेंगे।"

"अगर हकूमत ठीक होगी तो सबका फायदा उस हकूमत का कहना मानने में होगा।"

"पर हकूमत करने वालों का फायदा तो इस बात में होगा कि लोग लड़ते-झगड़ते रहें और उनकी हकूमत कायम रहे।"

"पर हकूमत होगी अवाम की और अवाम की हकूमत कैसे अवाम में झगड़ा कराने में फायदा मानेगी?"

इस प्रकार के वाद-विवादों से रीता मजीद के समीप आती गई और सुलताना रीता से दूर होती गई।

: ८ :

"आपका विवाह कब होगा?" रीता ने एक दिन अचानक मजीद से पूछ लिया।

"जब रीता देवी का होगा।" मजीद का उत्तर था।

"मेरे विवाह के साथ आपका भी होगा, यह आपको किसने बताया है?"

"मेरे मन ने।"

"तो मेरा विवाह नहीं होगा।"

"क्यों?" मजीद ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं घर-गृहस्थी नहीं कर सकती। मुझसे पति की गुलामी नहीं हो

सकेगी।'

पर कोई विवाह इसलिए नहीं करता कि किसी को खाविन्द की गुलामी पसन्द है। विवाह करने के लिए इन्सान की फितरत उसे मजबूर करती है। परिवार और बच्चे तो बिना इच्छा और इन्तजाम के आ जाते हैं।"

"मैं उस फितरत को अपने काबू में रख सकती हूँ। मुझको विवाह की कुछ भी जरूरत नहीं।"

मजीद खिलखिलाकर हँस पड़ा। पश्चात् बात बदल कर बोला, "मोहन का मुकद्मा नाकामयाब रहा है। उसको फाँसी की सजा हो गई है।"

"तो इस फैसले की अपील नहीं हो सकती क्या ?"

"यह मेरे बस की बात नहीं।"

"यूँ तो इस अदालत में मुकद्मा भी आपके बस की बात नहीं थी। मेरे कहने पर ही तो आपने मुकद्मे की पैरवी की थी।"

"तो क्या देवी जी इसकी अपील करने का भी हुक्म देती हैं ?"

"मेरा तो विचार है कि हाईकोर्ट में अपील कर देनी चाहिए।"

"तो कर दूँगा। आपके हुक्म की तामील तो करनी ही है।"

"कोटलवाल का कहना था कि फल चाहे कुछ भी हो मुकद्मा लड़ने से पार्टी की नेकनामी होगी।"

"कोटलवाल मेरा मित्र जरूर है, मगर मुझको उसकी पार्टी से बढ़कर आपके हुक्म की कद्र है।"

रीता ने घर पर नहीं बताया कि वह विमल के पिता को बचाने का यत्न कर रही है। वह नहीं जानती थी कि विमल की क्या मनोभावना है। विमल जब से डॉक्टर राधाकृष्ण के घर आया था, तब से ही वह सबको प्रसन्न रखने का यत्न करता रहा था। अपने भिखारी जीवन से उसको दिल्ली की सड़कों का ज्ञान बहुत था। इस कारण वह आने-जाने, चिट्ठी-पत्री आदि के काम को बहुत कुशलता से कर सकता था। डॉक्टर उसको

अपने बिल देकर अपने ग्राहकों के घर भेजा करता था और उसके ठीक-ठीक स्थान पर पहुँचाने से बहुत प्रसन्न था। स्वरूप रानी और रीता और कभी-कभी व्रजभूषण भी कोठी से बाहर का काम उससे करवाते रहते थे। इस पर भी उसका विशेष सम्पर्क नीला से था। वे दोनों इकट्ठे स्कूल जाते थे और वहाँ से इकट्ठे वापस आते थे। नीला विमल से एक श्रेणी नीचे रह गई थी। विमल आयु में भी नीला से बड़ा था।

डॉक्टर की कोठी के बाहर एक बरसाती नाला था, जिसके ऊपर एक छोटी-सी पुलिया बनी थी और उस पुलिया पर से कोठी के अन्दर रास्ता जाता था। पुलिया के दोनों पहलुओं में डेढ़ फुट ऊँची दीवार बनी थी।

विमल जब भी खाली होता तो अकेला अथवा नीला के साथ कोठी से निकल एक दीवार पर बैठ सड़क पर आने-जाने वालों को देख मन बहलाया करता था।

एक दिन सायंकाल जलपान कर वे दोनों पुलिया की एक दीवार पर बैठे थे और सड़क पर आने-जाने वालों को तथा मोटर-तांगों को देख रहे थे। सड़क पर एक भिखारी एक लड़की के साथ चला जा रहा था। विमल का ध्यान उस ओर नहीं था। इस कारण उसने पहचाना नहीं कि वे कौन हैं। परन्तु लड़की ने पहचान लिया कि वह विमल बैठा है। उसने अपने साथ वाले भिखारी को खड़ा कर विमल की ओर उँगली कर कहा, "बाबा! वह देखो विमल बैठा है।"

यह कान्हू और उसकी लड़की रामी थी। कान्हू की आँखें लगातार सुल्फा पीते रहने से कुछ धुँधली पड़ गई थीं। इस कारण वह कोठी के बाहर पुलिया की दीवार पर बैठे विमल को पहचान नहीं सका। उसने पूछा, "कौन विमल?"

"कमली का विमल!" वह इसी प्रकार भिखारी समाज में विख्यात था।

"ओह! कहाँ?" कान्हू ने पूछा।

रामी बाबा की लाठी पकड़ उसको विमल के सामने ले आई। इस समय तक विमल ने भी देख लिया था। बाबा ने भी उसको पहचान लिया।

विमल उसे देख खड़ा होकर पूछने लगा, "रामी! किधर आ गई हो आज?"

रामी ने उसके प्रश्न का उत्तर न दे अपने मन की बात कह दी, "बहुत अच्छे कपड़े पहने हो विमल!"

इतना कहते-कहते उसने अपनी नंगी टाँगों और घुटनों पर चढ़ी धूल की ओर देखा।

यह देख उसका मन भीतर ही भीतर बैठने लगा।

विमल ने उसके मन के भावों का विचार किए बिना कह दिया, "हाँ! अब मैं इस कोठी में रहता हूँ।"

"और तुम्हारी माँ?" कान्हू ने पूछा।

"लाला घनश्याम के घर।"

"और यह किसका घर है?"

"डॉक्टर साहब का, जिन्होंने मेरी माँ की चिकित्सा की थी। वे इसके पिता हैं। यह नीला है।"

रामी ने कोठी के भीतर झाँककर देखा। कोठी बहुत बड़ी थी। बहुत कमरे थे। चौड़े-चौड़े बरामदे, शीशे वाली खिड़कियाँ और कोठी के आस-पास फूलों की क्यारियाँ और विशाल घास का मैदान था। कोठी की हद-बन्दी के साथ-साथ शहतूत के पेड़ लगे थे, जिनके नीचे घना साया था।

रामी इतनी बड़ी कोठी देख चकित रह गई। इसी समय मजीद और रीता मोटर में वहाँ आ पहुँचे। मजीद ने मोटर कोठी के बाहर ही खड़ी करदी। रीता मोटर से उतरी तो उसकी दृष्टि विमल पर पड़ी। इससे उसने मजीद से कहा, "मोहन के लड़के को देखना चाहते हैं आप?"

"कौन मोहन?" मजीद मुकद्दमे के विषय में भूल ही गया था।

"वही जिसको फाँसी का हुक्म हुआ है।"

"कमली का लड़का?"

"हाँ कमली का और मोहन का। जब यह गर्भ में था तब इसके पिता ने इसकी माँ को घर से निकाल दिया था।"

मजीद मोटर से नीचे उतर आया और बोला, "हाँ, कमली ने कुछ ऐसा ही बयान दिया था। कहाँ है वह लड़का ?"

रीता मजीद को लेकर वहाँ आ गई जहाँ कान्हू, रामी, विमल और नीला खड़े थे। रीता ने कान्हू और रामी को पहचान लिया। ये वही भीख माँगने वाले थे, जिनको मुलताना ने चवन्नी दी थी और रीता ने उसकी हँसी उड़ाई थी।

मजीद ने विमल को देखा और उसकी माँ की सूरत से उसके मुख की आकृति के मिलने को देख समझ गया। विमल इस नवीन आदमी को देख भय से चुप कर गया परन्तु मजीद ने यह पूछ कर उसका भय निवारण कर दिया, "तो तुम विमल हो ? कमली के विमल ?"

"हाँ भैया !" कान्हू ने उत्तर दिया।

"और तुम कौन हो ?" मजीद ने उसको सिर से पैर तक देख कर पूछा।

"मैं ? मैं एक भिखारी हूँ। इसको और इसकी माँ को तब से जानता हूँ, जब यह माँ के पेट में था और इसकी माँ भीख माँगने लगी थी।"

"यह लड़का ही तो माँ के निकाले जाने में कारण बना था।"

"यह कैसे साहब ?" कान्हू ने कुछ अकड़ कर कहा।

"इसकी माँ बद्कार थी। कहीं से इसे ले आई थी। इसके घरवाले को इसका पता चल गया और उसने इसकी माँ को घर से निकाल दिया।"

"यह सरासर झूठ है। कमली सती-साध्वी थी।"

"तभी एक लाला के घर की शोभा बन रही है !"

"बाबू ! तुम नहीं समझ सकते। इस बात को समझने के लिए कोठी छोड़ वर्षों तक सड़क के किनारे सोने की आवश्यकता है।"

"तुम भीख माँगने वाले भी अपने को साधु और महात्मा कहते होगे। यह कमली भी अपने को सती-साध्वी कहती होगी। वास्तव में तुम लोग क्या हो मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

इस लांछन पर कान्हू के माथे पर त्योरी चढ़ गई। विमल इस झगड़े

को ठीक-ठीक समझ न सका। रामी समझती थी, इस कारण उसने अपने बाबा की बाँह पकड़ घसीटते हुए कहा, "बाबा ! ये लोग अच्छे नहीं हैं, चलो।"

कान्हू रामी के कहने पर वहाँ से चल दिया। वहाँ से जाते हुए स्वभाववश उसके मुख से निकल गया, "भगवान् तुम्हारा भला करे।"

जब कान्हू और रामी कुछ दूर निकल गए तो मजीद खिलखिलाकर हँस पड़ा।

विमल विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। रीता ने बात बदल कर विमल से कहा, "देखो विमल ! इन भिखमंगों के मुँह नहीं लगना चाहिए। इनको यहाँ आने न दिया करो।"

"मैंने इनको बुलाया नहीं था, दीदी ! सड़क पर चलते हुए मुझे पहिचान यहाँ चले आये थे।"

जब मजीद विदा होने के लिए मोटर में आकर बैठा तो उसने रीता से कहा, "देखो रीता ! कमली और उसका पुत्र, दोनों बहुत अच्छे मालूम होते हैं और उनके मुकाबिले में मोहन शैतान, बिलकुल शैतान। अगर तुम्हारा हुक्म न होता तो मैं मोहन का वकील बनने के स्थान पर कमली का वकील बनता।"

"तो मजीद साहब का कमली से विवाह करा दिया जाय, ठीक है न?"

"टा, टा !" कह कर मजीद मोटर स्टार्ट कर हवा हो गया।

: ६ :

रामी को जब पता चला कि विमल कहाँ रहता है तो वह दूसरे-तीसरे दिन उससे मिलने आने लगी। वह कोठी के बाहर आकर खड़ी हो जाती। कभी विमल कोठी के फाटक के बाहर पुलिया पर बैठा मिल जाता और कभी नहीं मिलता। जब विमल वहाँ बैठा होता तो रामी उसके पास बैठ बहुत बातें करती। कभी विमल उसको एक-दो आने, जब उसके पास होते,

देना चाहता तो रामी लेने से इन्कार कर देती। एक दिन विमल ने पूछ ही लिया, "तुम मुझसे भीख क्यों नहीं लेतीं ?"

"मैं यहाँ भीख माँगने नहीं आती।" रामी का उत्तर था।

"तुम औरों से तो लेती हो न ?"

"हाँ, पर तुमसे नहीं लूँगी।"

"क्यों ?"

"यह नहीं बताऊँगी।"

नीला भी विमल के पास बैठी थी। वह तो कुछ भी समझ नहीं सकी। विमल को विस्मय हुआ और वह प्रश्न-भरी दृष्टि से रामी की ओर देखता रहा। रामी ने कुछ देर तक विचार कर पुनः कहा, "विमल ! हम भिखारी आपस में भीख लेते-देते नहीं। एक दिन बाबा तुम्हारी माँ से मिले थे। तुम्हारी माँ उसे एक रुपया देने लगी तो बाबा ने न कर दी थी।"

विमल का विस्मय इससे कम नहीं हुआ। वह जानता था कि भीख माँगने वाले कैसे एक पैसा पाने के लिए दाता के पीछे-पीछे भागते फिरते हैं। कान्हू ने एक रुपया नहीं लिया। रामी ने कहना जारी रखा, "बाबा ने कहा था, 'कमली बहिन ! भीख तो हम दूसरों से लेते हैं। बहिन से तो आशीर्वाद ही लूँगा।"

"अच्छा ! तुम भी मेरी बहन हो, इसलिए।"

रामी इस पर चुप रही। वह मुस्कराती हुई विमल की ओर देखती रही। पश्चात् वह एकाएक बोली, "मैं भी तुम्हारी तरह अच्छे कपड़े पहनना चाहती हूँ।"

"अच्छा ! मैं मम्मी से कहूँगा। कल तुम आना।"

"पर एक बात है। यदि बढ़िया कपड़े पहन सड़क के किनारे सोऊँगी तो वे दो-तीन दिनमें ऐसे ही मैले हो जायेंगे।"

विमल इसका उपाय नहीं जानता था। रामी ने इसका उपाय सुझा दिया, "मम्मी से कहो कि मुझको वे नौकर रख लें। जो काम कहेंगी कर

दूँगी।"

विमल चुप रहा। वह नहीं जानता था कि मम्मी से कैसे वह यह कहे। इस पर भी रामी को नौकरी दिलाने के लिए उसके मन में बात घूमती रही। एक दिन अवसर मिल गया। रीता सुलताना के घर उससे पुस्तकों का एक बंडल उठवाकर ले जाना चाहती थी। ऐसा काम वह प्रायः माली के लड़के से करवाया करती थी। वह बीमार पड़ा था। उसको जाने योग्य न पा रीता ने विमल से कहा, "विमल! ये किताबें उठाकर मेरे साथ चलो।"

विमल रीता के साथ हो लिया। दोनों पैदल ही जा रहे थे। सुलताना की कोठी लगभग एक फर्लांग के अन्तर पर थी। रीता ने मार्ग में विमल से पढ़ाई के विषय में एक-दो बातें पूछीं। उसका इससे आशय केवल इतना था कि विमल को थकावट अनुभव न हो। विमल ने यह अवसर उचित जान कह दिया, "दीदी! आप एक नौकरानी क्यों नहीं रख लेतीं?"

"नौकरानी? क्या करूँगी रखकर?"

"वह आपका कमरा झाड़-फूँक दिया करेगी। आपके छोटे-मोटे कपड़े धो दिया करेगी और फिर आपकी पुस्तकें उठाकर ले जाया करेगी।"

रीता मुस्कराई और बोली, "उसको वेतन भी देना पड़ेगा।"

"एक नौकरानी है जो बिना वेतन के नौकरी कर लेगी।"

रीता ने विमल के मुख पर देखते हुए पूछा, "कौन?"

"रामी।"

"वह भिखारी की लड़की?"

"हाँ, वह भीख माँगना छोड़ना चाहती है।"

"चोरी कर भाग गई तो?"

"हम चोर नहीं हैं, दीदी! वह चोरी नहीं करेगी।"

रीता को बात पसन्द नहीं आई और वह चुप रही। परन्तु उसने हँसी-हँसी में यह बात सुलताना से कर दी।

"नौकरानी तो मुझको एक चाहिए," सुलताना ने कहा, "मगर वह

भिखारी की लड़की चोर हुई तो ?"

विमल ने उसे भी आश्वासन दिया। बात सुलताना की माँ और भाई तक पहुँची। काफी विचार-विनिमय पश्चात् यह तय हुआ कि रामी को देखा जाये। मजीद रामी को नौकर रखने के पक्ष में नहीं था। उसकी युक्ति यह थी कि भिखारियों का विश्वास नहीं करना चाहिए। वे कभी भी चोरी कर भाग सकते हैं। सुलताना की माँ सुलताना के लिए एक लड़की नौकरानी रखना चाहती थी। रामी के पक्ष में वह इस लिए थी कि एक तो उसे वेतन नहीं देना पड़ेगा और दूसरे एक हिन्दू लड़की को कुफ्र छोड़ने का मौका मिलेगा। अन्त में सुलताना और उसकी माँ की जीत हुई और रामी को बुला कर उसे साफ-सुथरे कपड़े पहना कर सुलताना की सेवा के लिए रख लिया गया।

रामी के नौकर रखे जाने पर रीता को विस्मय हुआ। विमल ने यह सूचना डॉक्टर साहब और रीता को 'ब्रेकफास्ट' के समय दी थी। रीता का कहना था कि यह ठीक नहीं हुआ। उसका विचार था कि यदि वह चोरी करती पकड़ी गई तो इसमें विमल और वह स्वयं उत्तरदायी होंगे। उन्होंने ही रामी के विषय में सुलताना को बताया था। जब रीता ने अपना संशय बतलाया तो विमल ने कहा, "दीदी ! मैं कहता हूँ कि वह चोरी नहीं करेगी। हम भगवान् से डरते हैं।"

डॉक्टर और रीता दोनों हँसने लगे। विमल उनके हँसने का आशय न समझ सकने के कारण चुप कर गया और उनका मुख देखने लगा। स्वरूप रानी ने विमल से कहा, "तुम भगवान् से डरते हो ?"

"हाँ मम्मी !"

"वह तो मुसलमान के घरमें रहकर मुसलमान हो जायेगी और तुम्हारे भगवान् से डरना छोड़ देगी।"

विमल ने कुछ विचार कर पूछा, "भगवान् को छोड़ किसको मानेगी ?"

"खुदा को।"

"तो क्या खुदा चोरी करने को कहता है ?"

डॉक्टर इस सरल प्रश्न को सुन खिलखिलाकर हँसने लगा। विमल को समझ नहीं आया कि उसने क्या भूल की है। वह चुपचाप प्रश्न-भरी दृष्टि से डॉक्टर की ओर देखने लगा। इस प्रकार अपनी ओर देखते हुए पा, डॉक्टर ने अपनी स्त्री से कहा, "अब दो न उत्तर। खुदा मानने से वह चोर क्यों हो जावेगी?"

स्वरूप रानी ने समझाने का प्रयत्न किया, "देखो विमल! पहले तुम बताओ, भगवान् से डरने वाला चोरी क्यों नहीं करता?"

"भगवान् चोरी करने पर दण्ड देता है।"

"पर भगवान् को पता कैसे चलता है कि तुम चोरी कर रहे हो?"

"भगवान् सब जगह रहता है और सबको देखता है।" कमली ने इतना विमल को बतला रखा था।

"पर विमल! खुदा सब जगह पर नहीं है। वह सातवें आसमान पर एक चमकदार तख्त पर बैठा है और उसको बताने वाला एक फरिश्ता है जो दुनिया-भर में घूमता रहता है। जहाँ वह नहीं होता, वहाँ पर की हुई चोरी का खुदा को पता नहीं चलता।"

डॉक्टर राधाकृष्ण स्वरूप रानी की बात सुन खूब जोर से हँसने लगा। हँसने के पश्चात् उसने कहा, "बात तो तुम ठीक कहती हो रानी! जिनका खुदा ऐसा है, जैसा तुम बताती हो, उनके मजहब में जरूर चोरी और बदमाशी हो सकेगी।"

इस पर रीता ने कहा, "पापा! हम तो न खुदा को मानते हैं न भगवान् को। हम भी तो चोरी नहीं करते?"

"तुम चोरी इस कारण नहीं करती क्योंकि तुम डॉक्टर राधाकृष्ण की लड़की हो, जो बहुत अमीर है और तुमको चोरी करने की आवश्यकता नहीं।"

"यही तो मैं कह रही हूँ कि जब किसी की उचित आवश्यकता पूरी नहीं होती तभी वह चोरी करता है।"

"तब तो ठीक है। यदि तुम्हारी सहेली सुलताना रामी की उचित

आवश्यकता पूर्ण करती रहेगी तब वह चोरी नहीं करेगी और यदि वह ऐसा न कर सकी तो चोरी होगी और फिर तुमको क्या ? जैसा कोई करेगा वैसा भरेगा ।"

स्वरूप रानी ने फिर अपना विचार बताया, "किसी की उचित आवश्यकताएँ तो शिक्षा, वातावरण और संगत से बढ़ती-घटती रहती हैं । इस प्रकार की सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होनी कठिन हैं ।"

"तो मम्मी ! क्या मैं भी कभी चोरी कर सकती हूँ ।" रीता ने मुस्कराते हुए पूछा ।

"हाँ, चोरी कई प्रकार की होती है । अपनी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ कम रखने से ही मनुष्य चोरी इत्यादि से बच सकता है । यही कारण है कि धनियों से निर्धन अधिक भले और सत्यवादी होते हैं ।"

इस पर राधाकृष्ण फिर हँस पड़ा। अब उसका क्लिनिक जाने का समय हो गया था । इस कारण वह हँसता हुआ मेज़ पर से उठकर अपने चिकित्सालय में चला गया ।

बात यहीं समाप्त हो गई और रामी एक मुसलमान के घर में एक कट्टर मुसलमानिन की देख-रेख में रहने लगी ।

: १० :

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती । रीता बी० ए० में पढ़ने लगी । विमल अब पाँचवीं श्रेणी में चला गया था । इसकी अवस्था में ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी मानसिक शक्तियाँ, जो पहले निर्धनता के बाँध से सुषुप्ति अवस्था में जकड़ी पड़ी थीं, सुविधा मिलने पर फूट कर बहने लगी थीं । वह एक वर्ष में दो-दो परीक्षाएँ देकर स्कूल में अपनी आयु के लड़कों में जा बैठा था । नीला अब उससे दो वर्ष पीछे रह गई थी । डॉक्टर राधाकृष्ण उसकी इस उन्नति को अपनी डायरी में लिख रहा था । एक स्थान पर उसने लिखा था, "यह लड़का इस विचार की पुष्टि करता है कि इस संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए लगन एक अत्यावश्यक बात

है। भिखारिन के लड़के में बाबू बनने की उत्कट इच्छा ने यह चमत्कार कर दिखाया है। यदि इस लड़के की आकांक्षाएँ बढ़ती गईं तो यह वह उन्नति कर दिखायगा, जो पढ़े-लिखे माता-पिताओं के बच्चे, साधन-सम्पन्न होने पर भी नहीं कर सकते।"

रामी को सुलताना के घर रहते हुए तीन वर्ष हो चुके थे। उसका पहिरावा मुसलमान लड़कियों जैसा हो जाना स्वाभाविक था। उसका खानपान, उसकी बातचीत और मानसिक विकास एक मुसलमान परिवार में रहने से वैसा ही होने लगा था।

दोनों परिवारों में, रीता और सुलताना की मैत्री के कारण आना-जाना बना था। इसके साथ-साथ विमल और रामी का परस्पर मेल-जोल अच्छा चल रहा था। विमल रीता के कार्य से मजीद के पास जाया करता था और रामी सुलताना अथवा उसकी माँ के काम से डॉक्टर राधाकृष्ण के घर जाती रहती थी।

विमल पाँचवीं श्रेणी में पढ़ता था। वह और नीला स्कूल से निकल स्कूल की बस की प्रतीक्षा में खड़े थे। बस स्कूल के 'गैराज' से लाई जा रही थी। इसी समय विमल की दृष्टि भीख माँगते हुए कान्हू पर पड़ी। वह उसे पहचान उसके समीप जा खड़ा हुआ। कान्हू उसकी ओर देखे बिना भीख माँगता रहा, "बाबू एक पैसा! भगवान् भला करेगा!" विमल ने जेब से एक इकन्नी निकाली और उसके प्याले में डाल दी और कहा, "कान्हू बाबा!" कान्हू का ध्यान टूटा तो उसने विमल की ओर देखा और फिर कहा, "कौन हो बेटा तुम! मुझको दिखाई नहीं देता।"

विमल ने देखा कि कान्हू की आँखें धुँधली हो चुकी थीं। उसने विस्मय में पूछा, "क्या हुआ है तुम्हारी आँखों को?"

"पानी उतर आया है, बेटा!"

"बाबा! मैं विमल हूँ। विमल, कमली का विमल।"

"विमल? ओह! बेटा! ठीक हो न? तुम्हारी माँ कैसी है? और····और रामी छोकड़ी?"

"वह ठीक है बाबा !"

"बेटा ! अब शरीर काम नहीं देता। उसको कहो कि एक दिन मिल ले। कौन जाने कब तक यह चल सकेगा ?"

"कहाँ मिलोगे तुम ?"

"अब तो मैं यहाँ से कुछ अन्तर पर एक पेड़ के नीचे सो रहता हूँ। यहीं कल मिल जाय तो ठीक रहेगा।"

उसी रात विमल रामी से मिलने गया और उसने कान्हू की बात बताई। रामी अपनी अम्मी से पूछकर जाने को तैयार हो गई। अगले दिन विमल के स्कूल बन्द होने के समय वह वहाँ पहुँच गई। कान्हू वहीं सड़क के किनारे बैठा भीख माँग रहा था। रामी उसके सामने बैठ बोली, "बाबा ! मैं आ गई हूँ।"

"ओह रामी बेटा ! कहाँ रहती हो तुम ?"

"अलीपुर रोड पर। सुलताना बीबी की कोठी में नौकरी करती हूँ।"

"तुम खुश हो बेटी ?"

"हाँ बाबा ! वहाँ कोई कष्ट नहीं। सुलताना दीदी बहुत अच्छी हैं।"

"अब तो तुम बड़ी हो गई होगी ? मैं यदि भूल नहीं करता तो ग्यारहवाँ वर्ष पूरा हो चुका होगा। जीता रहता तो तुम्हारा विवाह देखता। पर अब जीने की आशा नहीं रही। रात बहुत कठिनाई से निकलती है।"

"क्या है बाबा तुमको ? सुलताना बीबी से कहकर किसी डॉक्टर को दिखा दूँ ?"

"नहीं रामी ! अब चलने दो। हाँ, जरा मेरा हाथ पकड़कर उठाओ तो।"

रामी ने बाबा को उठाया। वह बहुत ही दुर्बल हो गया था और उठते-उठते उसको हँफनी चढ़ गई थी। कुछ समय तक साँस लेकर कान्हू एक ओर चल पड़ा, और रामी को अपने साथ चलने को कहा। कुछ ही दूर सड़क से एक ओर पेड़ के नीचे कान्हू की गुदड़ी पड़ी थी। समीप कुछ लकड़ियें पड़ी सुलग रही थीं। उनमें से धुआँ निकल रहा था। कान्हू

रामी के बाजू का सहारा लिये हुए उस पेड़ के नीचे जा खड़ा हुआ। वह अपनी गुदड़ी को टटोलकर उस पर बैठ गया और रामी को अपने सामने बैठाकर पूछने लगा, "बेटी ! देखो सामने कोई आ तो नहीं रहा ?"

रामी ने दोनों ओर देखकर कहा, "बाबा ! कोई नहीं।"

"अच्छा, कोई दूर से ही दिखाई दे तो मुझे बतला देना।" इतना कह उसने धुकती हुई लकड़ियों को एक ओर कर दिया। हाथों से गरम राख को उठाकर भूमि को उँगलियों से खोदने लगा। पाँच-चार अंगुल गड्ढा खोदने पर उसने एक टीन का डिब्बा निकाला। कान्हू ने उस डिब्बे को निकाल रामी को देते हुए कहा, "यह तुम ले जाओ। अपनी···क्या नाम लिया था मालकिन का ? उसको यह दे कहना कि तुम्हारे बाबा ने तुम्हारे विवाह पर देने के लिए दिया है।"

"क्या है इसमें ?" रामी ने उत्सुकता से पूछा।

कान्हू ने गड्ढे में फिर से मिट्टी भरते हुए और उस पर लकड़ियों को जलाने के लिए लगाते हुए कहा, "इसमें कुछ रुपये हैं। ये मैंने तुम्हारे विवाह के लिए इकट्ठे किए थे। सो तुम मेरी यह अन्तिम भेंट मान ले जाओ।

"अब तुम जाओ। जल्दी चली जाओ।"

रामी हाथ में डिब्बा लिये बैठी रही। कान्हू ने पूछा, "रामी ! चली गई हो या नहीं ?"

"नहीं बाबा !" रामी की आवाज भारी थी और उसी की आँखों से आँसू बह रहे थे।

कान्हू ने कहा, "बेटी ! जिससे भी विवाह हो, उसी की पत्नी बनकर रहना। जीता रहा तो तुम्हारे घर वाले को देखने आऊँगा।"

"बाबा !···" रामी के गले से आवाज नहीं निकल रही थी।

कान्हू ने कहा, "क्या है बेटा ?"

"बाबा ! मैं विमल से विवाह करूँगी।"

"विमल से ? वह तो तुमसे आयु में कम है ? जिससे मन करे, करना,

पर जीवन में पति एक ही होता है। यह ध्यान रखना। अच्छा अब तुम जाओ। यह सम्हालकर रखना।"

रामी उठी और धीरे-धीरे विमल के स्कूल के द्वार पर आकर उसकी प्रतीक्षा में खड़ी हो गई।

स्कूल की बस में रामी को भी बिठा लिया गया। जब कोठी में पहुँचे तो रामी ने विमल को बताया कि उसके बाबा ने उसको एक डिब्बा दिया है।

विमल रामी को एक ओर ले गया और डिब्बे को खोलकर देखा गया। उसमें चाँदी के रुपये थे और दो सोने की डलियाँ थीं। दोनों यह सब-कुछ देख घबराये। विमल ने पूछा, "इतना धन बाबा के पास कहाँ से आया?"

रामी ने कहा, "वह भीख से मिला धन होगा। क्या करूँ इसका?"

"यह बाबा को दे देना चाहिए और उसको कहना चाहिए कि अच्छा भोजन करे और अच्छे कपड़े पहने। इतना पैसा होते हुए उसको गन्दा नहीं रहना चाहिए।"

"पर वह खाये-पीयेगा नहीं।" रामी, जो बाबा का स्वभाव जानती थी, कहने लगी। "उसको कहीं ठहरा देते और हम उसको खिलाते-पिलाते तो बहुत ठीक रहता।"

विमल को एक बात सूझी। उसने कहा, "चलो पापा से बात करें। वे कोई उपाय बतायेंगे!"

दोनों डॉक्टर के पास जा उपस्थित हुए। विमल ने कान्हू के विषय में बताया और रुपये दिखाए। डॉक्टर भी रुपया देख विस्मय करता रह गया। पश्चात् कुछ विचारकर बोला, "क्या करूँ इसका मैं?"

"कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे बाबा को इससे लाभ पहुँचे।"

डॉक्टर ने विचारकर एक योजना बनाई। पश्चात् उसने कहा, "अच्छा कल तुम मेरे साथ चलना। मैं तुमको मोटर में ले चलूँगा। बाबा को गरीबखाने में भर्ती करा देंगे और इस रुपये से उसके भोजन का प्रबन्ध कर देंगे।"

रामी प्रसन्न हो अपने घर लौट गई। अगले दिन डॉक्टर विमल और रामी को मोटर में बैठाकर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ पेड़ के नीचे कान्हू की गुदड़ी थी। वह गुदड़ी में लिपटा पड़ा था! रामी उसके पास जाकर बुलाने लगी, "बाबा! बाबा! उठो। देखो कौन आया है?"

कान्हू नहीं हिला। रामी ने गुदड़ी को मुख से एक ओर हटाकर देखा तो उसको ऐसा लगा कि मानो वह शान्ति से सो रहा है। उसने उसको हिला-कर उठाना चाहा। कान्हू नहीं उठा।

इस समय डॉक्टर भी मोटर से उतरकर उसके पास आ गया। उसने कान्हू को देखा और समझ गया कि उसका अन्त हो गया है। डॉक्टर ने आँख की पलक उठाकर देखा और उसको विश्वास हो गया।

इस समय तक तीनों समझ गए थे कि बाबा का खेल समाप्त हो चुका है।

दो

: १ :

मजीद के पिता का देहान्त हुए बहुत वर्ष व्यतीत हो चुके थे। मजीद को विलायत से वापस आये भी पाँच वर्ष हो चुके थे। इस पर भी मजीद ने विवाह नहीं किया था। मजीद की माँ ने अपने जान-पहचान और सम्बन्धियों की कई लड़कियों को दिखाया था, परन्तु मजीद को कोई पसन्द नहीं आई। इस पर खीजकर, माँ ने एक दिन कह ही दिया, "तो तुम क्या चाहते हो मजीद? मेरे अकेले बेटे हो। बाप के खानदान को कायम रखना भी चाहते हो या नहीं?"

"अम्मी!" मजीद का उत्तर था, "सुलताना की शादी अब होने वाली है। उसके बाल-बच्चे होंगे और वालिद साहब का खानदान तरो-ताजा हो जायगा।"

"पर तुम शादी क्यों नहीं करते? लड़की के बच्चे कभी अपने खानदान में समझे जाते हैं क्या?"

"यह सब वहम है अम्मी जान! लड़के और लड़की में फरक क्या है? खुदा का फजल है कि पैसे की कमी नहीं। सुलताना के घर वाले को यहीं रख लेना और दुहितों को पोते-पोतियाँ समझ परवरिश करना।"

"देखो मजीद! यह 'सरवर' वाईसराय के 'ऐग्जैक्टिव कौंसिलर' की लड़की है। एम० ए० तक पढ़ी है। यह शादी मान जाओगे तो खानदान का नाम रोशन करोगे।"

"पर अम्मी लड़की का रंग कुछ काला है।"

"और वह जो ख्वाजा अफजलजू की लड़की दिखाई थी? तुमने कहा था कि वह इतनी गोरी है कि कोढ़ी मालूम होती है।"

"हाँ! अम्मी जान! और यह मामू जान की 'रेशम' की नाक जरूरत से ज्यादा लम्बी है।"

"तो तुमको तो दुनिया में कोई पसन्द आयेगी ही नहीं। एक वक्त यह खयाल था कि डॉक्टर राधाकृष्ण की लड़की रीता से तुम विवाह करोगे। उसमें भी कुछ हुआ नहीं।"

"अम्मी! एक बात कहूँ? मेरे मुतल्लक तुम सोचना छोड़ दो। वक्त आने पर सब ठीक हो जायगा। और अभी उम्र भी तो कुछ बड़ी नहीं हुई। सिर्फ तीस साल का ही तो हूँ न!"

विवश माँ को चुप रह जाना पड़ा। मजीद को पार्टी का काफी काम रहता था और इस सम्बन्ध में, मजीद के पास पार्टी के बहुत लोग आते-जाते रहते थे। इनमें रीता का भी आना-जाना बना था।

एक दिन रीता आई तो उसका मुख क्रोध से लाल हो रहा था। वह आकर धम् से सोफा पर बैठ गई।

मजीद उसको इस मुद्रा में देख विस्मय में पूछने लगा, "क्या बात है देवी जी? क्या डॉक्टर साहब से झगड़ा हुआ है?"

"मैं आपसे एक मामले में सहायता लेने आई हूँ।"

"हाँ! हाँ! बताइये! मैं क्या खिदमत कर सकता हूँ?"

"मैं चाहती हूँ कि कोटलवाल को पीट-पीटकर, उसका कचूमर निकाल दें।"

मजीद हँस पड़ा और बोला, "बस? इतनी सी बात के लिए परेशान हैं आप? मैं आपके हुक्म की तामील कर दूँगा। मगर क्या मैं जान सकता हूँ कि उस बदकिस्मत ने, क्या कसूर किया है?"

"उसने मेरा अपमान किया है।"

"कैसा अपमान किया है?"

इस प्रश्न पर रीता के मुख का रंग और भी लाल हो गया। उसने कहा, "तो क्या अपने अपमान की बात अपने मुख से कहूँ ?"

"सब बात बताने की आवश्यकता नहीं। सिर्फ मैं यह जानना चाहता हूँ कि किस हद तक वह जा पहुँचा है। सजा भी उसी के मुताबिक तय करूँगा।"

"वैसे तो कुछ अधिक नहीं। उसने मुझको धोखे से कार्यालय के भीतर के कमरे में बुलाकर, मेरा मुख चूमा है और आलिंगन किया है।"

"इसके लिए तो आपको स्वयं उसको जूतों से पीटना चाहिए था।"

"इतना कुछ तो मैं कर आई हूँ। परन्तु यह मैं काफी नहीं समझती।"

"तो रीता देवी ! शेष मैं कर दूँगा।"

"धन्यवाद !" इतना कह, प्रसन्नतापूर्वक रीता वहाँ से उठ खड़ी हुई।

मजीद ने कहा, "तनिक बैठिये तो। मैं लैमनेड मँगवा रहा हूँ। जरा ठण्डी होकर जाइयेगा।"

"नहीं, कुछ आवश्यकता नहीं।"

"पर देवी जी ! मुझको तो कुछ कहने की जरूरत है।"

"हाँ कहिये।" रीता पुनः सोफा पर बैठ गई।

"मेरी एक अर्जी हुजूर के दरबार में पहले ही पेश है। उस पर हुक्म सादर फरमाया जाय।"

"अर्जी विचाराधीन है। उस पर आज्ञा एक-दो दिन में दे दी जायगी। आज्ञा की रूपरेखा उस कार्य की पटुता पर निर्भर है, जो प्रार्थी को करने के लिए दिया गया है।"

इतना कह रीता हँस पड़ी और जाने के लिए तैयार हो गई। मजीद ने कहा, "जरा तशरीफ रखिये। अभी तो लैमोनेड भी नहीं आया।"

रीता फिर बैठी तो मजीद ने कह दिया, "अम्मी परेशान कर रही हैं। वे चाहती हैं कि वालिद साहब के खानदान को चालू रखने की जिम्मेदारी मैं अपने सिर पर ले लूँ।"

"ठीक तो कहती हैं। आप किसी देहाती हृष्ट-पुष्ट लड़की से विवाह कर लीजिये और वह आपके वालिद शरीफ के घर पोते-पोतियों की बहार लगा देगी।"

"पर मैंने बछड़े आदि तो पैदा नहीं करने। मैं इन्सान, सही दिमाग रखने वाले, और दुनिया के वहमों से बरी, पैदा करना चाहता हूँ। मुझे कभी आपके पिता, डॉक्टर साहब पर रश्क होता है। मैंने कुछ दिन हुए उनसे आपकी शादी का जिक्र किया था। उन्होंने कहा, "रीता अब पढ़-लिखकर समझदार हो गई है और मैं उसकी, अपने लिये, खाविन्द ढूँढने की काबलीयत पर यकीन रखता हूँ।"

"पिता जी बहुत अच्छे हैं।"

"मुझको तो तुम्हारे अच्छे होने से मतलब है।"

इस समय लैमोनेड आ गया और रीता ने पीना आरम्भ कर दिया। पीने के पश्चात् जब वह उठकर चलने के लिए तैयार हो गई, तो मजीद ने कहा, "आज आठ बजे के बाद आप कोटलवाल से मिल लें। मुझको उम्मीद है कि उसके पीछे वह आपकी इज्जत करने लगेगा।"

ऐसा ही हुआ। रीता विमल को साथ लेकर रात के नौ बजे पार्टी के कार्यालय में गई। वहाँ बहुत हल्ला-गुल्ला हो रहा था। कोटलवाल खाट पर लेटा हुआ था और उसके माथे और मुख पर पट्टियें बँधी हुई थीं। उसकी पीठ पर गरम पानी से सेंक किया जा रहा था। कई सदस्य वहाँ घटना का समाचार जानने के लिए आ-जा रहे थे।

जब रीता कार्यालय की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी तो एक और सदस्या प्रीतमकौर ऊपर से उतर रही थी। वह रीता को देखते ही ठहर गई और बोली, "अच्छा हुआ है रीता बहन! तुम आ गई। कई लोग कह रहे हैं कि इसे तुमने ही पिटवाया है।"

"किसको पिटवाया है? किसने पीटा है?"

"कोटलवाल बुरी तरह घायल कर दिया गया है। एक सिक्ख था, जो मोटर ड्राईवर प्रतीत होता था। वह सात बजे के लगभग आया और

कोटलवाल को पूछने लगा। जब भैया आये तो उसने बिना कुछ बातचीत किये, भैया को पकड़ लिया और उसको खूब पीटा। उसे बहुत चोट आई है और वह खाट पर लेटा हुआ कराह रहा है।"

इस समाचार से रीता के मनमें बहुत प्रसन्नता हुई, परन्तु उसको भीतर-ही छिपाकर बोली, "बहन प्रीतम! मुझको बहुत शोक है कि मैंने उसको नहीं पिटवाया। ऐसे भले कार्य का श्रेय कोई और ले गया है।"

प्रीतमकौर ने समीप आकर धीरे से कहा, "तुमने भी तो कम नहीं किया था?"

"क्या मतलब?"

"वे सैंडल कहाँ उतार आई हो?"

"वे बहुत ही मुलायम थे। दो-चार चोटों में ही फट गए। परन्तु प्रीतम बहन! तुमको किसने बताया है यह?"

"किसी ने देख लिया था और उसको तुम्हारी कारगुजारी पसन्द आई थी।"

"तो शायद उसी ने मेरा काम पूरा कर दिया है?"

"पर वह तो मैं थी।"

"तुम? वहाँ छिपकर तुम क्या कर रही थीं?"

"जो मैं छिपकर कर रही थी, वह बताने के लिए नहीं है।"

रीता हँस पड़ी और कार्यालय, जो ऊपर की मंजिल पर था, पर चढ़ गई। कोटलवाल पट्टियों से बँधा हुआ खाट पर लेटा हुआ था। उसके चारों ओर बहुत से मित्र बैठे और खड़े हुए, घटना का विवरण जान रहे थे। इस समय रीता वहाँ आ पहुँची। उसे देख सब चुप कर गए। इस पर कोटलवाल ने कहा, "तो आ गई हैं आप? क्या यह देखने आई हैं कि मैं मरा हूँ अथवा जीता?"

"क्या हुआ है आपको? मैंने क्या किया है?"

"मैं मिल-एरिया से लौटकर आया था कि एक सिक्ख मोटर ड्राई-वर मेरे पास आकर पूछने लगा, 'आप कोटलवाल हैं?' मेरे हाँ कहते ही

वह मुझ पर पिल पड़ा। दो सैकेंड में ही उसने मेरी यह दुर्दशा कर दी। पूर्व इसके कि मैं हल्ला करता, वह सीढ़ियाँ उतर, एक मोटर गाड़ी पर सवार होकर भाग गया।"

"तो इसमें आप मुझसे क्यों नाराज़ हैं?"

"मेरा सन्देह है कि वह आपका भेजा हुआ था।"

"क्यों? मुझको इसकी आवश्यकता ही क्या थी?"

"आजकल आपकी कृपा-दृष्टि मुझपर अधिक है।"

"मैं समझती हूँ कि आपने मेरे अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों पर भी कृपा-दृष्टि की होगी, जिनसे उनकी आप पर कृपा-दृष्टि मुझ से भी अधिक हो रही है।"

समीप बैठे लोग हँसने लगे। रीता इसी प्रकार के सतर्क उत्तरों के लिए पार्टी में विख्यात थी। यूँ तो कोटलवाल भी रीता के इस गुण से प्रसन्न था परन्तु इस समय उसे पीड़ा हो रही थी और वह अभी उस सिक्ख महानुभाव के भयंकर मुक्कों के प्रहार को भूला नहीं था। इस कारण उसने कह दिया, "मैं इस प्रश्न को पार्टी में रखने वाला हूँ। मेरी माँग है कि आपको पार्टी दण्ड दे।"

"पर मैंने किया क्या है?"

"पार्टी में केवल आप ही मुझसे शत्रुता रखती हैं। पार्टी से बाहर कोई मुझे जानता ही नहीं।"

"मैं समझती हूँ कि किसी मिल-कर्मचारी की बीवी से तुमने अनुचित व्यवहार किया होगा और उसने ही यह कुछ किया प्रतीत होता है।"

"किसी कर्मचारी की बीवी से तो कुछ नहीं हुआ। हाँ! पार्टी की एक सदस्या से प्रेम-प्रलाप किया था?"

"सत्य? आप में प्रेम करने के लिए हृदय है?"

इस दुखित अवस्था में भी कोटलवाल हँस पड़ा। उसने कहा, "तो क्या रीता देवी समझती हैं, कि मेरा इतना बड़ा शरीर बिना हृदय के जी रहा है। किसने बी० ए० की डिग्री दी है आपको?"

"मेरा अभिप्राय हृदय से नहीं मन से था। आप में मनन-शक्ति नहीं है, अर्थात् आप मन रहित हैं।"

"मैं मन इत्यादि को नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि हम सबमें 'सेक्स हंगर' रहती है और दूसरी भूखों की भाँति इसकी भी तृप्ति होनी चाहिए। इसी को हम प्रेम-प्रलाप कहते हैं।"

"यह तो ठीक है, पर जब संसार में अनेकों स्थानों पर नल लगे हैं, तो आप किसी दूसरे के नल से प्यास बुझाने का हठ नहीं कर सकते।"

"जब घर में कुआँ हो तो जल पीने के लिए बाजार में क्यों जाय ?"

"घर वाले आपको घर वाला नहीं समझते हैं।"

"यह घर वालों की भूल है। हम तो सब एक समान साथी हैं। सब बराबर हैं। हममें से प्रत्येक सबके लिए है और सब प्रत्येक के लिए हैं।"

: २ :

अगले दिन रीता मजीद से मिलने गई तो उसने कोटलवाल की पार्टी के समक्ष मारपीट वाली बात रखने की धमकी को बताया। मजीद ने कहा, "पार्टी वालों को जब पता चलेगा कि तुम मेरी हो तो सब कोटलेवाल की बात को रद्द कर देंगे।"

रात को जब सुलताना सोने के लिए तैयारी करने लगी तो उसने रहीमन, यह रामी का नाम था, जो सुलताना की अम्मी ने रखा था, को बुलाकर पाँव दबाने को कहा, "आज बजार में बहुत घूमना पड़ा है। बहुत थक गई हूँ। जरा पाँव दबा दो।"

सुलताना जब पलंग पर लेट गई तो रहिमन ने उसके पाँव दबाना शुरू कर दिया। सुलताना अपने विवाह के लिए सामान खरीदने प्रायः नित्य बाजार जाती थी। इन दिनों वह रीता से मिल नहीं सकी थी। इस कारण उसने पूछा, "रहीमन ! रीता दीदी तो आजकल नहीं आती न ?"

"कल भी आई थीं और आज भी ?"

"मेरे विषय में पूछती थीं कुछ ?"

"नहीं। वह आई और सीधी भाई जान के कमरे में चली गई। एक घण्टा के बाद वे दोनों निकले तो सिनेमा देखने चले गये। वहाँ से अभी तक नहीं लौटे।"

"तुम कैसे जानती हो कि सिनेमा देखने गये हैं।"

जाते समय रीता दीदी ने मुझको एक कागज पर कुछ अंग्रेजी में लिखकर दिया था और कहा था कि मैं उसकी माँ को दे आऊँ। रीता दीदी की माँ घर पर नहीं थीं। इस कारण वह कागज मैं विमल को दे आई थी। कागज खुला था और विमल ने पढ़ लिया था।"

"अच्छा तुम कल जाना और दीदी से कहना कि अब मेरी शादी बहुत समीप आ गयी है। उसे मिलने के लिए ज़रूर आना चाहिए।"

"पर वह तो कल दिल्ली में नहीं होंगी।"

"क्यों?"

"तो ठीक बताऊँ दीदी! नाराज़ तो नहीं होगी?"

"क्यों बात क्या है?"

"वे सिनेमा देखने नहीं गये। उनका आज विवाह हो गया है और वे अपनी सुहाग-रात मनाने आगरा गये हैं। वहाँ से दो दिन में लौटेंगे।"

"किस ने बताया है तुमको यह?"

"मैंने अपनी आँखों से देखा है और कानों से सुना है। पर दीदी मैंने जान-बूझकर नहीं सुना। मैं भाई जान के सोने के कमरे के पिछले कमरे में रखी क्रौकरी झाड़ रही थी कि रीता दीदी आ गई। वह आई तो दोनों गले मिले। भाई जान को पता नहीं था कि मैं वहाँ पर हूँ। दोनों कमरों के बीच वाला दरवाज़ा खुला था परन्तु परदा लटक रहा था। मैं बाहर निकल जाना चाहती थी परन्तु वे······। मैं डरकर कमरे में छिपी रही। मेरा विचार था कि यदि भाईजान को पता चल गया कि मैं परदे के पीछे खड़ी उनको देख रही हूँ तो मुझको बहुत बुरी तरह पीटेंगे। इस कारण एक घण्टा तक मैं परदे के पीछे खड़ी देखती रही। जब वे जाने लगे तो रीता दीदी ने कहा, "चलो आज कहीं चल दें।"

भाई जान ने कहा, "आगरा।"

बस दोनों कमरे से निकल मोटर को 'गैराज' से निकालने चले गए। मोटर निकली और चल दिये।'

"घण्टा भर वे कमरे में रहे और क्या बातें करते रहे थे ?"

"बातें तो कुछ अधिक नहीं कीं। परन्तु···।"

इतना कहते-कहते रहीमन के गंदमी मुख पर भी लाली दौड़ गई। सुलताना सब समझ गई। इससे वह गम्भीर विचार में पड़ गई। उसने रहीमन को विदा कर दिया और घर में एक विवाह के स्थान दो विवाहों के विषय में सोचने लगी।

रहीमन सुलताना के कमरे से निकल अपने कमरे में पहुँची ही थी कि सुलताना की माँ, वहाँ आकर कहने लगी, "रहीमन ! अभी रीता दीदी के घर चली जाओ। उसकी माँ बुला रही है।"

"क्या बात है अम्मीजान ?"

"तुम कोई चिट्ठी रीता की लेकर गई थी। उसी की बाबत वे पूछना चाहती हैं।"

"अब तो बहुत देर हो गई है अम्मी !"

"तब क्या हुआ ? तुमको तो सड़कों पर घूमने की आदत है। जाओ भागती हुई जाओ और भागती हुई आ जाना।"

वह उसी स्थिति में वहाँ से चल दी। डॉक्टर राधाकृष्ण की कोठी बहुत दूर नहीं थी। पाँच मिनट का रास्ता था। वह वहाँ गई तो विमल कोठी के फाटक के पास खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह उसे देख पूछने लगा।

"रामी ! मजीद भैया लौटे हैं क्या ?"

"अभी नहीं।"

"रीता दीदी भी नहीं आई ! पापा और मम्मी में भारी तकरार हुआ है और वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"व्रज भैया कहाँ हैं ?"

"अपने कमरे में पढ़ रहे हैं।"

"तुम नहीं पढ़ते क्या ?"

"मुझे तो सब कुछ स्कूल में ही याद हो जाता है।"

इस समय वे दोनों ड्रायंग रूम में पहुँच गए थे। वहाँ डाक्टर राधा-कृष्ण और स्वरूप रानी बैठे थे। रामी के आते ही स्वरूप रानी ने विमल को बाहर भेज दिया और रामी से पूछ गीछ करने लगी। रामी ने केवल यह बताया, "मैं कोठी के बरामदे में खड़ी थी कि रीता दीदी आई और कागज का टुकड़ा तह कर दे दिया और मुझ को कहा कि आप को दे आऊँ। मैं यहाँ दो पहर के दो बजे आई थी। आप यहाँ नहीं थे। इस कारण कागज विमल को दे गई थी।"

"रीता अकेली थी क्या ?"

"मजीद भय्या साथ थे।"

"दोनों इकट्ठे गए थे क्या ?"

"जी इकट्ठे गए थे।"

"किधर गए थे ?"

"मोटर कोठी के बाहर गई, तो फिर पता नहीं चला कि किधर चले गए।"

"सुलताना से रीता मिली थी क्या ?"

"नहीं। सुल्ताना बीबी तो बाजार कुछ खरीदने गई हुई थीं। अम्मी-जान भी उस के साथ गई हुई थीं।"

"और कुछ जानती हो ?"

"मैं चिट्ठी लेकर इधर आ गई थी। पीछे की बात मैं नहीं जानती।"

"मजीद के घर न लौटने से वहाँ किसी की चिन्ता है या नहीं।"

"भाईजान तो पहिले भी कभी-कभी घर से बाहर रहते हैं। उन के विषय में किसी को कोई चिन्ता नहीं।"

"अच्छा, भाग जाओ। देखो किसी से इस विषय में कुछ नहीं कहना।"

रामी ने सलाम की और कमरे से बाहर निकल आई। वहाँ विमल

उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह बाहर आई तो विमल उसके साथ हो लिया। विमल ने पूछा, "क्या हुआ है, रामी?"

रामी विमल को बांह से पकड़ कर कोठी की लान में शहतूत के पेड़ों के नीचे ले गई। वहाँ पेड़ों के झुरमुट में पहुँच उसने विमल को कहा, "रीता दीदी मजीद भय्या के साथ भाग गई हैं।"

"भाग गई हैं? क्यों?"

"दोनों ने विवाह कर लिया है।"

"विवाह कैसे कर लिया है?"

"चोरी चोरी।" इतना कह उसने विमल को अपनी ओर खेंच कर, छाती से लगा मुख चूम लिया।

विमल को यह कुछ बुरा प्रतीत नहीं हुआ। इस पर भी वह विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। अँधेरे में वह रामी के मुख पर वासना का भाव देख नहीं सकता था और न ही वह अभी वासना के रूप को ठीक तरह समझ सकता था।

रामी ने जब उसका पुनः आलिंगन किया और मुख चूमा तो वह विरोध नहीं कर सका। उसने केवल यह कहा, "रामी! यह आज तुमको क्या हो गया है? जाओ देर हो गई है।"

"मेरा चित्त तुमसे प्यार करने को करता है। तुम मेरा मुख नहीं चूमोगे?"

विमल ने भी रामी का मुख चूमा। इस पर रामी ने अपने होंठ विमल के मुख में दे दिये। विमल के लिए यह एक नवीन अनुभव था। उसके पूर्ण शरीर में झुनझुनी होने लगी। रामी ने विमल से पृथक् हो कहा, "यह किसी से कहना नहीं। देखो मैं तुमसे तब से प्यार करती हूँ जब हम पहाड़गंज की पुल के नीचे इकट्ठे सोया करते थे।"

"मुझको स्मरण नहीं है।"

"मुझको स्मरण है। तुम तब भी गोरे-गोरे थे और मैं तुमको छाती से लगा सोया करती थी।"

"पर आज तो कुछ अजीब ही बात प्रतीत हुई है।"

"हाँ! तुम अब बड़े हो रहे हो।"

: ३ :

रीता के मजीद के साथ आगरा चले जाने पर कुछ चिन्ता न की जाती यदि डॉक्टर राधाकृष्ण को सायंकाल टेलीफ़ोन से एक सन्देश न मिलता। टेलीफ़ोन करने वाले ने अपना नाम कोटलवाल बताया। उसने कहा, "डॉक्टर साहब! मैं कोटलवाल हूँ। मैंने यह टेलीफ़ोन आपको बधाई देने के लिए किया है।"

"आप कौन हैं और भाई! बधाई किस बात की दे रहे हो?"

"मैं मजीद साहब और रीता के मित्रों में से हूँ। मुझको यह अभी-अभी पता चला है कि दोनों की शादी हो गई है और दोनों 'हनी-मून' के लिये आगरा गये हैं।"

"वट नॉनसेंस आर यू टॉकिंग?"

इस पर टेलीफ़ोन बन्द हो गया। डॉक्टर इस सन्देश पर कुछ काल तक विचार करता रहा। पश्चात् उसने रीता की 'फाइल' निकालकर रीता के विषय में लिख दिया, 'पशुपन में उत्पन्न हुई लड़की अपने पशुपन का प्रदर्शन कर रही है।'

इतना लिख उसने रीता की 'फाइल' में रीता के जन्म समय की लिखी टिप्पनी निकाल पढ़ी। उसमें लिखा था, 'स्वरूप रानी वासना से व्याकुल हो रही थी और इस उन्माद में हुए गर्भाधान से लड़की उत्पन्न हुई और उसका नाम रीता रखा गया।'

एक स्थान पर लिखा था, 'लड़की की आँखों में स्वच्छन्दता और उच्छृङ्खलता स्पष्ट दिखाई देती है।'

इस प्रकार 'फाइल' के और पन्ने उलटे। एक स्थान पर से उसने पढ़ा, 'यह रोटी भूखे बाघों की भाँति खाती है। अपने खाने के लिए दूसरे के खाने का विचार नहीं करती।'

एक और स्थान पर लिखा था, 'अपने छोटे भाई का गला ही घोंट देने वाली थी। जब उसको बताया गया कि इससे तो वह मर जाता तो बोली, 'तो मैं क्या करूँ। इसने मेरा रूमाल मैला कर दिया है।' उससे पूछा गया, 'क्या तुम भाई की कीमत रूमाल से भी कम समझती हो?' तो कहने लगी, 'मैं ऐसे गन्दे लड़के की कुछ कीमत नहीं समझती।' उस समय रीता छः वर्ष की थी और उसका भाई ब्रज दो वर्ष का।

'बिलकुल पशुपन है।'

जब डॉक्टर फाईल में मन के उद्‌गार लिख चुका तो उसने स्वरूप रानी को बुलाकर टेलीफोन पर प्राप्त सूचना दी। स्वरूप रानी ने कह दिया, "यह झूठ है।"

"हो सकता है कि किसी ने शत्रुता के कारण बदनाम करने के लिए कहा हो। यह कोटलवाल दिल्ली में कम्युनिस्ट पार्टी का नेता है।"

"आप इसे जानते हैं क्या?"

"इसके विषय में कपड़ा-मिल के अधिकारियों से सुना है कि यह मिल में कर्मचारी यूनियन बना रहा है। वैसे मैं इसको पहचानता नहीं।"

"रीता ने लिखकर भेजा था कि वह सिनेमा देखने जा रही है और सायंकाल घर आयगी।"

"चिट्ठी कौन लाया था?"

"सुलताना की नौकरानी, रहीमन।"

"तो उसे बुलाओ। टेलीफ़ोन कर दो।"

स्वरूप रानी ने टेलीफ़ोन किया, परन्तु न सुलताना घर थी न उसकी माँ। थोड़े-थोड़े समय पश्चात् स्वरूप रानी टेलीफ़ोन करती रही। रात के दस बजे सुलताना की माँ टेलीफ़ून पर मिली और रहीमन आई।

रहीमन की बातों से डाक्टर और स्वरूप रानी को कुछ पता नहीं चला। इस पर डॉक्टर ने स्वरूप रानी को यह कह सोने के कमरे में भेज दिया, "अब जाकर सो रहो। जो कुछ होना था सो हो गया। एक-दो दिन में लौट आयगी तो फिर विचार कर लेंगे कि क्या करना उचित है।"

स्वरूप रानी रात-भर, अगले दिन-रात और फिर तीसरे दिन भी प्रतीक्षा करती रही। उस दिन सायंकाल रीता लौटी। मजीद अपनी मोटर में उसको कोठी के बाहर उतारकर चला गया।

स्वरूप रानी ने तीन दिन से एक दाना अन्न का नहीं लिया था। केवल जल पी-पीकर निर्वाह कर रही थी। रीता आई तो उसने कहा, "आ गई हो रीता?"

"हाँ मम्मी! तुम्हें क्या हुआ है?"

"तुम कहाँ गई थीं?"

"मैं मजीद साहब के साथ आगरा गई थी।"

"सुलताना भी साथ थी क्या?"

"नहीं। मैं और मजीद दोनों ही थे।"

"अकेले? तुम यह कैसे कर सकी हो? कहाँ रही थी वहाँ?"

"हम सेवाय होटल में ठहरे थे। बहुत मजा रहा है, मम्मी!"

"जाओ! अपने पिता के पास जाओ! वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे थे।"

"क्यों?"

"क्योंकी बच्ची! देखती नहीं कि मैं खाट पर लेट रही हूँ।"

"इसी कारण तो पूछ रही हूँ। आप बीमार हैं क्या?"

"बीमार नहीं, तुम्हारा सिर हूँ। बाप की लाडली हो न। वे ही बतायेंगे तुमको?"

रीता सब समझती थी। इस पर भी वह इस विषय में अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करना चाहती थी। इस कारण सिर ऊँचा कर डॉक्टर के स्टडी रूम में चली गई। डॉक्टर एक पुस्तक पढ़ रहा था। रीता को आया देख उसने पुस्तक सामने की मेज़ पर रख दी और रीता की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा। रीता ने वहाँ आने का अभिप्राय बताया।

"मम्मी ने आपसे मिलने को कहा है।"

"तो तुम स्वयं नहीं आने वाली थीं?"

"मैं तो अभी आगरा से आ रही हूँ। मिट्टी से लथपथ हूँ। स्नान करने के पीछे मिलने आती।"

"आगरा क्यों गई थीं?"

"कल पूर्णिमा थी। हम पूर्णिमा की चाँदनी में ताजमहल की छटा देखना चाहते थे।"

"हम, कौन कौन?"

"मैं थी और मजीद थे।"

"तो तुम दोनों का विवाह नहीं हुआ?"

"विवाह? किसने कहा है आपको?"

"मुझको पता चला है कि तुम दोनों ने विवाह कर लिया है और 'हनी मूनिंग' पर आगरा गए थे।"

"यह बात सत्य नहीं है डैडी!"

"झूठ तो नहीं बोल रही?"

"हमने विवाह नहीं किया।"

"तब तो ठीक है। चलो अपनी मम्मी के पास और अपनी सौगन्ध खाकर कहो। तब वह अन्न लेगी।"

"तो क्या मेरे लिए मम्मी भूख-हड़ताल किये हुए हैं?"

"हाँ।"

अब रीता और डॉक्टर स्वरूप रानी के कमरे में आये। रीता ने कहा, "मम्मी! डैडी कहते हैं कि तुम भूख-हड़ताल किये हुए हो। मैं सौगन्ध-पूर्वक कहती हूँ कि मेरा मजीद साहब से विवाह नहीं हुआ। किसी ने झूठ बोल आपको दुःखी किया है।"

"पर तुम अकेली उसके साथ गई क्यों थी?"

"हम बच्चे तो हैं नहीं। मैं अब सज्ञान हो गई हूँ। मजीद की आयु भी अब तीस वर्ष के लगभग है। हम अपना बुरा-भला सब समझते हैं।"

स्वरूप रानी इससे सन्तुष्ट हो गई और अन्न लेने के लिए तैयार हो गई। परन्तु डॉक्टर सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने रीता को अपने स्टडी-रूम

में पुनः ले जाकर कहा, "देखो रीता! तुम्हारी माँ तो तुम्हारे उत्तर से सन्तुष्ट हो गई है, पर मैं इतना सीधा-सादा आदमी नहीं। तुम यह बताओ कि दो रात, जो तुम मजीद के साथ रही हो, क्या तुममें सम्भोग नहीं हुआ?"

"यह तो पापा एक स्वाभाविक कर्म है। इसके लिए चिन्ता करनी तो आप जैसे विद्वान् को शोभा नहीं देती।"

"तो एक विद्वान की दृष्टि में तुम्हारा विवाह हो गया है। अब यह बताओ कि यह अस्थायी सम्बन्ध कब स्थायी होगा?"

"इसकी क्या आवश्यकता है?"

"इसका परिणाम जानती हो क्या होगा?"

"जानती हूँ। मैं अबोध बालिका नहीं हूँ। इस पर भी मैं समझती हूँ कि विवाह से परिवार का होना आवश्यक नहीं है। परिवार तो एक 'अन-रजिस्टर्ड कम्पनी' है, जिसमें नियम कोई नहीं प्रत्युत् उत्तरदायित्व है। मैं ऐसी कम्पनी बनाना नहीं चाहती। शेष तो एक स्वाभाविक बात है।"

"पर तुम इस बात को अपने पिता के सामने कहते हुए लज्जा अनुभव नहीं करतीं?"

"लज्जा का भाव 'बोर्जिया' समाज का निर्माण किया हुआ है। कुछ विशेष अधिकारों को रखने वाले व्यक्तियों ने अपनी स्त्रियों पर अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए यह लज्जा, स्त्रीत्व इत्यादि भावनाएँ बना डाली हैं। जो लोग मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति को अपने जीवन का मूल सिद्धान्त मानते हैं, इस प्रकार की कृत्रिम भावनाओं का त्याग कर रहे हैं।"

"केवल एक बात का डर है। यदि बच्चा हो गया तो फिर क्या होगा?"

"बच्चा क्यों होगा? 'प्रोफिलेक्टिस' जो बन गये हैं। इस पर भी यदि कोई दुर्घटना हो गई तो कोई उपाय विचार लिया जायगा। 'किबल अज मर्ग वावेला' की क्या आवश्यकता है?"

इस आचरण को अपने पिता के सामने स्वीकार कर रीता अपने साहस

और शौर्य पर गर्व करने लगी। वह अपने कमरे में जा वस्त्र उतार गुसल-खाने में चली गई और स्नान कर यात्रा की थकावट दूर करने के लिए निश्चिन्त भाव में सो गई।

डाक्टर राधाकृष्ण ने रीता की फाइल निकाली और उस पर लिखने लगा, 'पढ़ाई ने पशुपन को मिटाया नहीं' प्रत्युत् उसको ग्रहण करने में युक्ति उत्पन्न कर दी है।'

: ४ :

मजीद का किसी रात घर से बाहर रहना, नई बात नहीं थी। इस कारण मजीद के दो रात घर पर न आने पर किसी का ध्यान न जाता। परन्तु रहीमन के सुलताना से रहस्योद्घाटन ने सुलताना और उसकी माँ के मन में मजीद के विवाह की आशा बना दी थी। इस कारण मजीद को बुलाकर उसकी माँ ने पूछा।

"मजीद ! मेरा खयाल है कि तुम्हारी शादी का बन्दोबस्त भी सुलताना की शादी के साथ-साथ ही कर दूँ।"

"किससे अम्मी ?" मजीद ने भयभीत हो पूछा। उसको समझ आई कि माँ ने कोई और लड़की देखी है और उससे उसे बाँधने के लिए कह रही है।

सुलताना की माँ ने कह दिया, "किससे क्या ? रीता से विवाह होगा न ?"

"कौन कहता है अम्मी ?"

"कौन कहता है ? क्या कह रहे हो तुम ?"

"अम्मी ! बच्चों की बातों की ओर तुमको ध्यान नहीं देना चाहिए। मैं रीता के साथ ताज देखने गया और चान्दनी में उसकी खूबसूरती देखने के लिए दो रात आगरा रह गया। इससे शादी जैसी अहम बात का नतीजा निकाल लेना ठीक मालूम नहीं होता।"

"पर तुम आगरा तो पीछे गये हो। मैं समझती हूँ कि तुम्हारा उससे

ताल्लुक तो पहिले ही बन गया था और तुमने उससे शादी करने का वायदा ले लिया था।"

"यही तो मैं पूछ रहा हूँ कि यह बात किसने बताई है आपको?"

"तो क्या मैं ग़लत कहती हूँ? क्या यह ग़लत है कि आगरा जाने से पहले तुम और रीता एक घण्टा कमरा बन्द कर भीतर रहे थे?"

मजीद के मुख का रंग पीला पड़ गया था। परन्तु तुरन्त ही उसने अपने को सम्हालकर कहा, "पर इससे क्या होता है? हम 'लंदन बाई पिक्चर्ज' रसाला देख रहे थे। दरवाजा हवा से बन्द हो गया होगा।"

"मजीद देखो! अगर तुम रीता से शादी कर लो तो हमको कोई एतराज़ नहीं हो सकता। बल्कि हमको एक हिन्दू लड़की को मुसलमान बनाने की प्रसन्नता होगी। और अगर उससे तुम्हारा विवाह नहीं होना तो उससे मेल-जोल बन्द करो। एक कँवारी जवान लड़की से घूमना मुझको पसन्द नहीं।"

"मेरी शादी रीता से नहीं होगी। वह नहीं मानती।"

"तो फिर यह क्यों हुआ?"

"कुछ नहीं हुआ अम्मी!" उसको विश्वास था कि रीता से उसके सम्बन्ध को किसी ने नहीं देखा।

"अच्छी बात है। मैं तहकीकात करूँगी। मैं समझती हूँ कि भले घर की लड़की को खराब कर छोड़ देना इन्सानीयत नहीं है।"

मजीद, माँ की कभी परवाह नहीं करता यदि उसका पिता सारी जायदाद उसकी माँ के नाम न कर जाता। वसीयत में यह बात स्पष्ट लिखी थी "मैं अपनी सारी चल और अचल जायदाद अपनी बीवी सनोबर के नाम करता हूँ। इस जायदाद में से मेरे लड़के को, जो विलायत में कानून पढ़ने गया हुआ है, पढ़ने को खर्चा देने की जिम्मेदारी सनोबर पर होगी। इसी तरह सुलताना की तालीम और शादी का खर्चा इस जायदाद में से दिया जाय। शेष जायदाद पर सनोबर का पूरा अखतियार होगा। जहाँ चाहे खर्च करे और जिसको चाहे दे।"

यदि मजीद अपना समय और ध्यान वकालत में लगाता तो उसका काम चल जाता और उसको माँ के पैसे की कुछ भी परवाह न होती। परन्तु कम्यूनिस्ट पार्टी में काम करने और सुख तथा वासनामय जीवन व्यतीत करने के कारण वह अपनी आय से खर्चा नहीं चला सकता था। उसे प्रतिमास कुछ-न-कुछ आर्थिक सहायता माँ से लेनी पड़ती थी। यही कारण था कि माँ का भय उसके मन में था।

अगले दिन सुलताना रीता को अपने विवाह का निमन्त्रण देने गई। सुलताना आजकल बुर्का पहनकर बाजार जाया करती थी। इस पर भी रीता ने उसे इसमें पहली बार देखा था। वह एक छोटे से 'टेंट' को चलते हुए अपने कमरे में घुसते देख विस्मय में बोली, "कौन?"

सुलताना ने बुर्का ऊपर उठा लिया और मुस्कराते हुए, उसकी ओर देखा और बोली, "देखो कौन हूँ।"

"सुलताना? यह क्या हो गया है तुमको?"

"मेरी शादी होने वाली है और मेरे शौहर शरीफ़, पर्दे को पसन्द करते हैं।"

"तो तुम उससे शादी ही क्यों कर रही हो?"

"शादी मैं तो कर नहीं रही। मेरी माँ ने सब इन्तज़ाम किया है। वे सरकारी दफ्तर में सुप्रिन्टेंडेन्ट हैं। पाँच सौ तनख्वाह पाते हैं। उनके बाप हैं, माँ है और वे दो भाई और तीन बहनें हैं। सब इस्लाम पर एतकाद रखते हैं। इसलिए मुझको भी बुर्का पहनना पड़ा है।"

"मैं इसको हैवानीयत समझती हूँ।"

"तुम इस बात में बहुत खुशकिस्मत हो रीता! तुम्हारे पिता आज़ाद-खयाल हैं। तुमको खाविन्द भी मन-पसन्द का मिल गया है।"

"खाविन्द मिल गया है? कहाँ मिल गया है?"

सुलताना खिलखिलाकर हँस पड़ी और रीता के समीप बैठ उसकी गरदन में हाथ डाल अपनी ओर घसीटकर बोली, "मैं जानती हूँ। मुझसे तुम चोरी नहीं रख सकती।"

"क्या कह रही हो सुलताना ? मैं तुम्हारे कहने का अर्थ नहीं समझी।"

"मतलब तो साफ है। भाई जान के सोने के कमरे की दीवारें और पलंग गवाह हैं कि रीता दीदी अब रीता भाभी बन गई है।"

"यह सब ग़लत है।" रीता ने सुलताना की बाँह गले से निकालकर कहा। "किसने बताया है यह झूठ।"

"एक है, जो उस कमरे के पीछे के कमरे में पर्दे के पीछे खड़ा सब-कुछ देख रहा था।"

"वह झूठा है।" रीता ने जोश में कहा।

"देखो रीता ! बताने वाली है रहीमन। अगर यह झूठ है तो मैं उसको घर में रख नहीं सकती। मैं आज ही अम्मी से कहकर जूतों से पिटवा घर से निकलवा दूँगी।"

"निकलवाओ या रखो, यह मैं कुछ नहीं कहती। मैं तो उस लांच्छन को स्वीकार नहीं कर सकती जो शायद तुम मुझको मजीद से शादी कर लेने के लिए लगा रही हो।"

सुलताना निश्चय नहीं कर सकी थी कि रहीमन पर विश्वास करे या न करे। एक बात वह सोचती थी कि रीता के कहने का समर्थन भाई जान कर सकते हैं और वह उनसे पूछ नहीं सकती। उसे ऐसी बात अपने भाई से करते लज्जा लगती थी। उसने रहीमन को ही डाँट-डपटकर निश्चय करने का निर्णय किया।

रीता को मजीद पर क्रोध चढ़ आया, उसका विचार था कि उसने ही यह बात फैलाई है, जिससे विवश हो वह उससे शादी कर ले। इससे उसने यह निश्चय कर लिया कि वह मजीद से मिलना बन्द कर देगी। यह निश्चय अधिक काल तक स्थिर नहीं रह सका। एक दिन सायंकाल कोटलवाल और कुछ अन्य पार्टी के कार्यकर्ता उससे मिलने आये। वह अपने मन की वर्तमान परिस्थिति में उनसे भाग जाना चाहती थी, परन्तु ऐसा हो नहीं सका। वह कोठी की लॉन में टहलती हुई पकड़ी गई।

विवश उसने चपरासी को बुला उनके लिए कुर्सियाँ लान में लगवा दीं और उनके आने का कारण पूछने लगी।

उत्तर कोटलवाल ने दिया, "मैं आज ही खाट से उठ चलने योग्य हुआ हूँ। अभी साथी रीता के पास आता नहीं, परन्तु पार्टी के काम की महानता का ध्यान कर मैंने समय व्यर्थ खोना पसन्द नहीं किया। इस पर भी क्या मैं रीता देवी से पूछ सकता हूँ कि वे अपने को पार्टी की सदस्या मानती हैं या नहीं?"

"मैंने पार्टी से त्यागपत्र नहीं दिया।"

"तब ठीक है। कल मिल के बाहर हमने एक जलसा रखा है। उसमें मिल-कर्मचारी यूनियन के प्रधान अयोध्याप्रसाद के साथ दुर्व्यवहार के विषय में बताना चाहते हैं। साथी रीता ने उस यूनियन में कार्य किया है इस कारण उस जलसे में जाना उसका ही कार्य है।"

"क्या दुर्व्यवहार किया गया है और किसने किया है?"

"मिल के जनरल मैनेजर ने अयोध्या प्रसाद को मिल में सब मजदूरों के सामने गाली दी है। उसे निकाल देने की भी धमकी दी है।"

"पर ऐसा क्यों कहा है?"

"ठीक तो पता नहीं। कुछ तो बात होगी। परन्तु उसे एक मजदूर को गधा-सूअर कहने का अधिकार नहीं है।"

"पर बात किस प्रकार हुई है। जलसा करने से पहले पूछ-गीछ तो कर लेनी चाहिए थी।"

"वह तुम चाहो तो अभी कर लो। परन्तु मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता। हमारी पार्टी का सिद्धान्त है कि सरमायादार समाज में जिस किस भाँति भी गड़बड़ हो सके, मचाई जाय। हमको इन बोर्जिया विचार के लोगों को तब तक शान्ति से सोने नहीं देना, जब तक इनके स्थान पर मजदूर मालिक नहीं बन जाते।"

रीता को यह बात समझ नहीं आई। इस पर भी उसने कहा, "मैं अभी अयोध्याप्रसाद के घर जाती हूँ और पूर्ण बात को जानने का यत्न

करती हूँ। यदि वास्तव में जनरल मैनेजर ने अनुचित व्यवहार किया है तो कल मीटिंग बुलाने का आयोजन कर देती हूँ।"

इस पर प्रीतमकौर ने कहा, "रीता बहन! समझी नहीं। यह बात कि दोष किसका है, एक पृथक् विषय है। मीटिंग तो कल होगी। कारण यह कि किसी कारण से मजदूर असन्तुष्ट हैं और उनके असन्तोष को सुसंगठित कर हमने फैक्टरी में अव्यवस्था उत्पन्न कर देनी है।"

"अव्यस्था उत्पन्न करना ध्येय है या मजदूरों के लिए सुख और शान्ति प्राप्त करना?" रीता ने विस्मय में पूछा।

उत्तर कोटलवाल ने दिया, "हमारा ध्येय है मजदूरों का राज्य स्थापित करना। वैसा ही जैसा सोवियत संघ में स्थापित हुआ है। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक मजदूर संगठित नहीं होते। मजदूर तो वास्तविक परिस्थिति और कूटनीति को समझ नहीं सकते। इस कारण उनको सब कुछ बताने की आवश्यकता नहीं। जब भी उनके मनमें किसी भी, सत्य अथवा असत्य कारण से, असन्तोष उत्पन्न हो, हमको उससे लाभ उठा अव्यवस्था उत्पन्न करने का यत्न करना चाहिए।"

"यह ठीक है, परन्तु इससे तो मजदूरों को भी कष्ट मिल सकता है?"

"महान् उद्देश्य के लिए आरम्भ में तो कष्ट सहन ही करना पड़ेगा।"

"मैं यह नहीं कहती। मेरा अभिप्राय तो यह है कि सत्य की भित्ति पर खड़ी की हुई योजना ही सफल हो सकती है।"

"पर मूल सत्य क्या है? यही तो एक महान् प्रश्न है, जिसका उत्तर मनुष्य आदि काल से खोज रहा है। हम तो उचित उद्देश्य को ही सत्य मानते हैं। उसकी प्राप्ति के लिए जो कुछ भी किया जाय वह सत्य है।"

रीता को इससे सन्तोष नहीं हुआ था, परन्तु इसी समय मजीद आ पहुँचा और सबके सामने वह मजीद से मिलने और बातचीत करने से न नहीं कर सकी। मजीद ने कोटलवाल से कहा, "आज कचहरी में मजिस्ट्रेट साढ़े पाँच बजे तक बैठा रहा और मेरा मुकद्दमा सबसे आखिर में लिया गया, इस कारण आपके साथ समय पर नहीं आ सका।"

"तो आप भी इन लोगों के साथ आने वाले थे ?" रीता ने पूछा ।

"हाँ !"

"तो बताइये, क्या आपको विदित है कि अयोध्याप्रसाद से झगड़ा किस बात पर हुआ है ?"

"इसके जानने की क्या आवश्यकता है ? सत्य यह है कि झगड़ा हुआ है । अयोध्याप्रसाद को कुछ कहा गया है जिससे तमाम मिल के मजदूरों में असन्तोष है । हमको इससे लाभ उठाकर उनके वाहद लीडर बन जाना चाहिए ।"

"तो मजीद साहब भी मेरे साथ कल मीटिंग में चलेंगे ।"

"पार्टी ने तो तीन साथियों को यह काम सौंपा है । प्रीतमकौर, रीता देवी और कोटलवाल को । हाँ, यदि साथी मजीद भी साथ चलना चाहें तो क्या हानि है ?"

"रीता देवी यदि मेरे जाने से कुछ लाभ समझती हों तो चल सकता हूँ । वरना हमने तो रीता देवी को ही इस काम का 'इन्चार्ज' नियुक्त किया है ।"

"तो मजीद साहब चलेंगे ।" रीता ने कह दिया ।

इस पर सब प्रसन्न हो, जाने के लिए उठ खड़े हुए ।

: ५ :

मजीद सबके जाने के पीछे खड़ा रहा और जब रीता अकेली रह गई तो पूछने लगा, "रीता देवी । क्या अब हम परस्पर फिर मित्रता के भाव में अपने को समझें ?"

"मैंने आपको शत्रु कब माना है ?"

"जब देवी जी ने कहा था कि हमारा विवाह नहीं हो सकता ।"

"तो जिनके विवाह नहीं होते वे क्या एक दूसरे के शत्रु हो जाते हैं ?"

"हाँ । जब वह सब कुछ हो चुका हो जो हमारे भीतर हो चुका है । मैंने आपको अपनी शादी-शुदा माना था और मैं वही भावना अब भी

रखता हूँ। यह कोई आदमी बर्दाश्त नहीं कर सकता कि वह औरत जो उसकी बीवी है किसी दूसरे की बने।"

"तो अमेरिका में अथवा इंग्लैंड में आदमी नहीं रहते। वहाँ एक भारी संख्या में तलाक होते हैं और पुनर्विवाह होते हैं।"

"हमारी हिन्दुस्तानी समाज में यही माना जाता है कि जो आदमी अपनी बीवी को दूसरों की बीवी बनने देता है वह हिजड़ा है।"

"और जो स्त्री अपने पति को दूसरी औरतों का पति बनने दे उसको आप क्या कहेंगे?"

"मैं तो आदमी-आदमी में मुकाबिला कर रहा हूँ। स्त्री-स्त्री में नहीं। स्त्रियों का स्वभाव आदमियों से अलग है।"

"यह क्या जीर्ण-शीर्ण विचार हैं! ऐसे विचार रखते हुए आप एक प्रगतिशील संस्था के सदस्य कैसे रह सकते हैं? पुरुष और स्त्री में भेद मानने वाले की बुद्धि की सीमा का बहुत ही हीन अनुमान लगाया जायेगा।"

"देखिये देवीजी! किसी प्रकार बात मेरी माँ और बहन तक पहुँच गई है और वे कहती हैं कि यदि यह बात सत्य है तो हमारी शादी हो जानी चाहिए।"

"तो कह दीजिये की सत्य नहीं है।"

"रहीमन हमारे व्यवहार की साक्षी है। वह पर्दे के पीछे खड़ी सब कुछ देख चुकी है।"

"तो कह दीजिये कि वह झूठ बोलती है।"

"यह कहता हूँ तो वह घर से निकाल दी जावेगी।"

"तो निकल जाये। हम क्या करें?"

"बेचारी फिर भीख माँगने के लिये मजबूर हो जावेगी।"

"तो माँगे? जब वह इतने बड़े रहस्य की बात पेट में नहीं रख सकी तो दण्ड की भागी हो गई है। हमने ही तो उसकी सहायता कर उसे एक भले घर में रखवाया था और हमारी ही बातों की डुग्गी वह पीटने लगी है।"

"वह बेगुनाह है रीता !"

"तो उसी से विवाह कर लो न ?"

"वह काली है।"

"रूप-रेखा तो अच्छी है। रंग भी काला तो नहीं कहा जा सकता। हाँ गन्दमी तो वह है।"

"कुछ भी हो, वह तुम नहीं हो !"

दोनों हंस पड़े।

अगले दिन सुलताना की माँ ने रहीमन को बुलाकर कहा, "तुम्हारी यहाँ जरूरत नहीं है। तुम फौरन घर से निकल जाओ।"

"अम्मी ! मैंने क्या कसूर किया है ?"

"अम्मी की बच्ची ! चली जाओ यहाँ से। नहीं तो मार डालूँगी।" इतना कहते हुए उसने छड़ी उठा दो तीन उसकी पीठ पर जमा दीं।

रहीमन अम्मी के कमरे से निकल आई। कमरे के बाहर बरामदे में खड़ी हो सोचने लगी कि वह किधर जाय। सुलताना लान में टहल रही थी। उसके मन में खयाल आया कि सुलताना के पाँव पकड़ ले। वह यदि माँ से कहेगी तो अवश्य उस का दोष क्षमा कर दिया जावेगा, नहीं तो उसे पुनः भीख माँगने का काम करना पड़ेगा। इसका विचार आते ही उसके पूर्ण शरीर में कँपकँपी हुई। उसके मन में ग्लानि उत्पन्न होने लगी। वह मन में भिखारियों के रात को सोने के अड्डों की कोठी से तुलना कर रही थी। उसे विमल की याद आई। शायद वह डाक्टर से कह उसको वहाँ रखवा दे। एक बात उसको समझ आ रही थी कि कम-से-कम डाक्टर साहब उसकी बात सुनकर उसे कोई मार्ग बता देंगे। इस विचार से उसके मन में कुछ उत्साह भर गया। इस पर भी वह सुलताना के पास जा उसके पाँव पकड़ रोने लगी। सुलताना को सब कुछ मालूम था। इस विषय में उसकी माँ ने निर्णय उससे राय कर ही किया था। इस कारण उसने पाँव की ठोकर से उसे दूर कर कहा, "रहीमन की बच्ची ! चली जाओ यहाँ से। तुम जैसी झूठ बोलने वाली को हम घर में नहीं रख सकते।"

"क्या झूठ बोला है मैंने ?"

"मजीद भैया और रीता दीदी के मुताल्लिक तुमने सरासर झूठ बोला है ?"

"कौन कहता है झूठ है।"

"दोनों, मजीद भैया और रीता दीदी।"

रामी अवाक् खड़ी रह गई। सुलताना ने उसको कहा—"निकल जाओ यहाँ से नहीं तो बैरा से धक्के दिलवाकर निकलवा दी जाओगी।"

रहीमन अनिश्चित् मन धीरे-धीरे कोठी के बाहर निकल गई। वह इस जीवन की अन्तिम आशा की परीक्षा करने विमल से मिलने चल पड़ी।

उस का भाग्य मन्द नहीं हुआ था। वह जब डाक्टर राधाकृष्ण की कोठी में प्रविष्ट हुई तो डाक्टर राधाकृष्ण और विमल को गुलेल लिये लॉन में खड़े देख समझी कि काम बन जायगा। डाक्टर साहब के स्वभाव के विषय में वह विमल के मुख से बहुत-कुछ सुन चुकी थी। अतएव वह सीधी वहाँ जा पहुँची, जहाँ दोनों शहतूत के पेड़ पर बैठे तिलियरों पर गुलेल का निशाना साध रहे थे।

दोनों ने निशाना बाँधा और डाक्टर बोल रहा था, 'एक, दो, तीन'। तीन कहते ही दोनों ने गुलेल से गोली फेंकी और दो तिलियर पेड़ में से सर-सर करते हुए भूमि पर गिर पड़े।

दोनों उन को उठाने के लिए उधर गए। दोनों पक्षी मुख चौरा किए लम्बे लम्बे साँस लेते हुए प्राण छोड़ रहे थे। इस समय रहीमन वहाँ जा खड़ी हुई। विमल ने उसको पहले देखा। डाक्टर तिलयरों का कष्ट कम करने के लिए उनको उठा गर्दन मरोड़ने लगा था।

विमल ने पूछा, "रामी कैसे आई हो ?"

विमल के कहने पर डाक्टर ने भी रामी को देखा और विमल से किए प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

रामी ने कहा, "मेरी नौकरी छूट गई है और इस कोठी में नौकरी

की आशा से आई हूँ।"

"यहाँ क्यों आई हो, अन्य कहीं क्यों नहीं गई ?" डाक्टर ने मुस्कराते हुए पूछा।

"यहाँ विमल है और आप हैं। अन्य कहीं ये नहीं रहते।"

"विमल तो तुम्हारा बचपन का साथी है न ? परन्तु मैं तुम्हारा क्या लगता हूँ ?"

"आप बुद्धिशील और दयावान हैं ?"

"पर मेरे यहाँ कोई जगह खाली नहीं है।"

"मैं बाहर बरामदे में सो रहा करूँगी।"

"मैं सोने की बात नहीं कहता। मैं तो वेतन की बात कर रहा हूँ।"

"मैं वेतन नहीं लेती। रोटी कपड़ा ही लेती थी। वही लूँगी।"

"वहाँ क्यों छोड़ी है ?"

"छोड़ी नहीं, छूट गई है। उन्होंने निकाल दिया है।"

"क्यों ?"

"मैं नहीं जानती !"

"अकारण तो कोई बात होती ही नहीं।"

रामी निरुत्तर खड़ी रह गई। परन्तु तुरन्त ही उसे एक बात समझ आई और उसने कह दिया, "ये पक्षी भी तो बेमतलब से मारे गए हैं।"

डाक्टर उसकी बात पर विस्मय करने लगा। वह विचार करता था, 'लड़की समझदार है। यदि इसको रख लूँ तो रीता की साथिन बन जाएगी और बहुत काम करेगी।' कुछ विचारकर बोला, "अच्छी बात है। सुलताना से पता करेंगे। यदि उन्होंने तुमको अकारण निकाला है तो नौकर रख लूँगा।"

"पर पिताजी ! यदि उसने कुछ झूठ बात कह दी तो ?"

"तुम मुझको मूर्ख समझती हो क्या ?"

रामी डर गई और उसका मुख विवर्ण हो गया। इस पर डाक्टर ने जरा डाँटकर कहा, "अभी तुम यहाँ ठहर सकती हो। शाम तक पक्की बात बताऊँगा।"

रामी को इससे विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। उसको भय था कि सुलताना मजीद और रीता की बात, जैसी उसने उसे बताई थी सुना देगी तो वह इस कोठी से भी निकाल दी जावेगी। इस पर भी और कुछ चारा ही नहीं था। वह चुप चाप खड़ी रही। डाक्टर ने विमल से कहा, "इसको ले जाओ और मम्मी से कहो, रीता के लिए नौकरानी रखी है।"

विमल उसे स्वरूप रानी के पास ले गया।

: ६ :

रीता आज कपड़ा-मिल के कर्मचारियों की जनरल मीटिंग में गई हुई थी। मीटिंग प्रातः ६ बजे होने वाली थी। स्वरूप रानी ने रामी को रीता के कमरे में सफाई करने के लिए लगा दिया और स्वयं सुलताना की माँ से टेलीफोन पर उसके निकाले जाने के विषय में पूछने लगी। सुलताना की माँ ने पूर्ण कहानी सुना दी और कहा, "मैं ऐसी झूठी लड़की को घर पर नहीं रख सकती। आज उसने लड़के को बदनाम करने की कोशिश की है कल लड़की की बाबत कुछ कह देगी।"

स्वरूप रानी रीता के विषय में रामी की बात सुन आग-बबूला हो गई और लंच के पीछे उसने डाक्टर साहब को एकान्त में सुलताना की माँ की सब बात बता दी। स्वरूप रानी के विचार के विपरीत डाक्टर खिलखिला-कर हंस पड़ा और बोला, "लड़की समझदार और चतुर है। मैं समझता हूँ कि रीता के साथ रहकर उसे बहुत सहायता देगी।"

"पर इस झूठी लड़की को अपना अपमान कराने के लिए रख लूँ?"

"वह झूठी नहीं है रानी! सुलताना की माँ मूर्ख है।"

"क्या? उसने यह बात सत्य ही कही है?"

"हाँ!"

"आप कैसे जानते हैं?"

"मैं जानता हूँ। देखो रानी! रामी को रख लो। वेतन नहीं देना होगा। रोटी में से रोटी खा लेगी और रीता के पुराने कपड़े पहन लेगी।"

रीता लंच के बहुत पीछे लौटी। दोपहर का खाना वह होटल में खा आई थी। आज वह बहुत प्रसन्न थी। मीटिंग बहुत सफल हुई थी। सात हजार कर्मचारियों में से पाँच हजार से ऊपर उपस्थित थे और सबने एक स्वर से मीटिंग में उपस्थित प्रस्ताव का समर्थन किया था। यूनियन के मुख्य-मुख्य कर्मचारियों ने मंच पर आकर शपथ उठाई थी कि वे यूनियन के निर्णय पर कटिबद्ध रहेंगे। रीता ने मीटिंग में भाषण दिया था और भाषण इतना प्रभावशाली रहा था कि श्रोतागण मन के आवेग में उतावले हो उठे थे।

यह मिल का काम करने का दिन था। इस पर भी सात हजार में से केवल एक-डेढ़ हजार लोग उपस्थित हुए थे। शेष ने हड़ताल की हुई थी।

इस उत्साह वर्धक वातावरण से और होटल में मजीद और कोटलवाल की चापलूसी सुन, वह घर आ अपने कमरे में पहुँची, तो उसको झाड़-फूंककर साफ-सुथरा तथा सामान विधि-वत लगा देख विस्मय में खड़ी रह गई। इस समय कमरे के साथ लगे 'बाथ रूम' में से रामी निकली और रीता को कमरे के दरवाजे में खड़ी देख एक क्षण के लिए झेंप गई। शीघ्र ही अपने को सम्हाल वह पूछने लगी, "रीता दीदी! ठीक बना है या नहीं?"

"तो यह तुमने किया है?"

"हाँ! मम्मी ने यहाँ की सफाई करने को कहा था।"

"मैं पूछती हूँ कि क्यों कहा था?"

"उनको कमरा गन्दा प्रतीत हुआ होगा।"

रीता ड्रेसिंग टेबल के सामने कुर्सी पर बैठ अपने मुख को शीशे में देखने लगी। रामी उसके पीछे खड़ी हो गई। शीशे में दोनों एक-दूसरे का मुख देख रही थीं। रीता ने पुनः पूछा, "कमरा तो गन्दा था, पर तुम यहाँ क्या करने आई हो?"

"मैंने आपके यहाँ नौकरी कर ली है।"

उसको मजीद का कहना कि वह निकाल दी जायगी स्मरण हो आया। इस कारण उसने कहा, "तुमको यहाँ किसने नौकर रखा है?"

"डॉक्टर जी ने।"

"तुमने बताया है कि तुमको सुलताना की माँ ने क्यों निकाल दिया दिया है?"

"वे कहते थे कि स्वयं पता कर लेंगे।"

रीता ने कपड़े बदल डाले और पलंग पर लेट गई। रामी जो अभी तक वहीं खड़ी थी, पूछने लगी, "पाँव दबाऊँ, दीदी?"

"नहीं। जाओ मम्मी के सिर में दर्द रहता है। उनसे पूछो।"

रामी वहाँ से चली आई। विमल स्कूल गया हुआ था। इस कारण वह उसके कमरे में जा पहुँची और उसकी इधर-उधर बिखरी वस्तुएँ झाड़-फूँककर ठिकाने पर रखनी शुरू कर दीं। विमल का कमरा कोठी के पिछवारे में बरामदे के कोने में था और उसके सामने व्रजभूषण का कमरा था। वह भी कालेज गया हुआ था। रामी विमल के कमरे को ठीक-ठाककर व्रज-भूषण के कमरे को झाड़ने चली गई। इस प्रकार सायंकाल हो गया। पहले विमल और नीला आये। विमल अपने कमरे का सामान करीने से लगा देख अति प्रसन्न हुआ। पीछे व्रजभूषण आया और किताबें पलंग पर फेंक हॉकी खेलने की पोशाक पहन, हॉकी स्टिक ले खेलने चला गया।

इस समय रामी स्वरूपरानी के कमरे को ठीक कर रही थी। सायं-काल की चाय पीने को मिली। वह उसने पी और डॉक्टर साहब के कमरे में सफाई करने चली गई। वहाँ डॉक्टर और रीता बातचीत कर रहे थे। रामी उनको वहीं देख लौट चली थी कि डॉक्टर ने बुला लिया, "ओ लड़की!"

रामी लौट आई और बोली, "पिताजी! मेरा नाम रामी है।"

"रहीमन नहीं है अब?" रीता ने पूछा।

"वह नाम तो अम्मी ने रखा था। वे समझती थीं कि नाम बदलने से मैं मुसलमान हो गई हूँ।"

"और तुम क्या समझती हो?" डॉक्टर ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं एक हिन्दू की बेटी हूँ। मेरे पिता ने मेरा नाम रामी रखा था।"

"तुमने गोमांस नहीं खाया क्या ?"

"जान-बूझकर कभी नहीं खाया। धोखे से खा लिया हो तो कह नहीं सकती।"

"मान लो मजीद साहब के घर में तुमने गो-मांस खा लिया हो तो ?"

रामी इससे परेशानी अनुभव करने लगी। फिर अपने बाबा की बात स्मरण कर बोली, "मैं तो हिन्दू हूँ। मुझको पता नहीं गोमांस खाने से क्या होता है।"

डॉक्टर स्वयं ऐसे ही विचार रखता था। क्लब में 'बीफस्टिक्स' उसका चाहता खाना था। इससे उसने बात बदलकर कहा, "देखो रामी ! सुलताना की माँ ने बताया है कि उसने तुमको क्यों निकाला है। तुमने कोई बात मजीद और रीता की देख ली और वह सुलताना से बता दी। सुलताना की माँ समझती है कि तुमने झूठ बोला है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी बात झूठ नहीं थी। परन्तु कुछ बातें ऐसी होती हैं कि उनको देखकर भी न देखी हुई मानना, सुनकर भी न सुनी हुई समझना ठीक रहता है। समझी हो या नहीं ?"

"हाँ पिताजी !"

"तो अपनी जबान को अपने बस में रखो। यदि ऐसा कर सकोगी तो मैं तुमको यहाँ रहने की स्वीकृति दूँगा और तुम्हारे लिए बहुत अच्छा वर ढूँढ दूँगा।"

रामी का मुख लज्जा से लाल हो गया। इस पर डॉक्टर ने पूछा, "यहाँ किस काम से आई थी ?"

"मैं आपका कमरा साफ करने के लिए आई थी।"

"अच्छा अब जाओ। सफाई फिर हो जायगी।" रीता इस प्रबन्ध से सन्तुष्ट थी। जब रामी चली गई तो डॉक्टर ने कहा, "रीता ! जिससे तुम्हारा मन करे तुमको विवाह कर लेना चाहिए। इस प्रकार आवारागर्दी ठीक नहीं है।"

रीता का विचार इससे विपरीत था। वह समझती थी कि जीवन में

विवाह एक मुसीबत है। इस पर भी उसने कह दिया, "डैडी! मैं आपकी सम्मति पर विचार करूँगी।"

जब रीता चली गई तो डॉक्टर ने रीता की फाईल निकाल लिख दिया, "रीता झूठ बोल गई है। वह शायद मेरे अनुमान से अधिक जीवन का भोग कर चुकी है।"

: ७ :

मिल-कर्मचारियों की यूनियन की जनरल मीटिंग शुक्रवार को ६ बजे बुलाई गई थी। अस्सी प्रतिशत कर्मचारी मिल का काम छोड़ बाहर निकल आये और मिल के फाटक के बाहर एकत्रित हो गए। इस सभा में सबसे अधिक रोचक और प्रभावशाली व्याख्यान रीता का हुआ और उसने तथा अन्य वक्ताओं ने अपने भाषणों में अयोध्याप्रसाद, प्रधान मिल कर्मचारी यूनियन का नाम एक सौ से ऊपर बार लिया। इस सभा में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकार किया गया, जिसमें मिल के जनरल मैनेजर श्री सोमानी को इस पदवी से हटा देने की माँग की गई। इसमें यह कहा गया कि श्रीयुत सोमानी ने मिल कर्मचारी यूनियन के प्रधान अयोध्याप्रसाद को गाली दी है। इस कारण वह मैनेजरी के योग्य नहीं है। उसे इस पद से हटा दिया जाय।

इस प्रकार के प्रस्ताव और सभा और व्याख्यानों के पश्चात् अयोध्याप्रसाद का एक विख्यात नेता हो जाना स्वाभाविक ही था। उसको ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह भूमि से एक गज ऊपर चल रहा है।

सभा के पीछे कर्मचारी मिल में जाने लगे तो फाटक बन्द मिला। चौकीदार ने कह दिया, "मैनेजर का हुक्म है कि मिल कल प्रातः छः बजे खुलेगी।"

इसका अभिप्राय यह था कि उस दिन की सब कर्मचारियों की बिना वेतन के छुट्टी कर दी गई थी। इस पर भी कर्मचारियों का उत्साह भंग नहीं हुआ और सब लोग अपने-अपने घर आराम करने चले गए।

अयोध्याप्रसाद तो सबसे अधिक प्रसन्न था। वह घर पर दोपहर के एक बजे पहुँच गया। उसे असमय आया देख उसकी स्त्री विन्ध्यावासिनी चिन्ता में पूछने लगी, "कैसे चले आये हैं ? तबीयत तो ठीक है ?"

"तबीयत ठीक है बिन्दु ! आज हमारी यूनियन की सभा थी। इस कारण मिल बन्द रही है।"

"तो इस दिन का वेतन मिलेगा न ?"

"वेतन क्यों मिलेगा ? हम अपनी इच्छा से काम पर नहीं गए।"

"तो इस मास छः दिन की अवैतनिक छुट्टी हो गई है। इसका मतलब है चौबीस रुपये वेतन में से कम हो जावेंगे।"

"फिर भी छियानवे तो मिलेंगे ही।"

"यह तो ठीक है। इस पर भी छः दिन की वेतन फोकट में चली गई। इससे लाभ क्या हुआ है ?"

"कर्मचारियों के संगठन-कार्य में यह त्याग तो करना ही पड़ता है। देखो बिन्दु ! आज रीता देवी का व्याख्यान हुआ था और सब सुनने वाले गद्‌गद् प्रसन्न हो गए हैं।"

"क्या कहा था, देवीजी ने ?"

अयोध्याप्रसाद ने दीवार के साथ रखे तकिये का आश्रय लेकर रीता-देवी के व्याख्यान का सारांश सुना दिया। उसने बताया, "रीता देवी ने ठीक ही बताया है कि दुनिया-भर में दो प्रकार के लोग हैं। एक सीधे-सादे सरल चित्त व्यक्ति हैं। वे मेहनत करते हैं और प्रकृति का पेट फाड़कर धनोपार्जन करते हैं। दूसरे चतुर धूर्त लोग हैं, जो सरल स्वभाव मेहनत करने वालों से पैदा किये धन को अनायास ही ले जाते हैं और उससे आनन्द-भोग करते हैं।

"चतुर और धूर्तों ने बड़ी-बड़ी कम्पनियां बनाकर गरीबों का शोषण आरम्भ कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जहाँ मिल मालिकों को तो यह भी पता नहीं चलता कि वे अपने धन-दौलत को कहाँ रखें, वहाँ निर्धन कर्मचारी को सोने को चटाई तक नहीं मिलती और भूखे पेट

रहना पड़ता है।

"इस विषमता को दूर करने का उपाय यह है कि मजदूर कारखानों के मालिक हो जावें और सबको उचित वेतन मिलने लगे। मालिक अपनी इच्छा से तो ऐसा होने नहीं देंगे। उन्होंने एक ऐसा इन्द्रजाल बना रखा है कि जिससे वे तो आनन्द भोगते हैं और वास्तविक धन पैदा करने वालों को रक्त-पसीना एक करना पड़ता है।

"इस कारण क्रान्ति की आवश्यकता है। क्रान्ति की तैयारी करनी चाहिए। बिना क्रान्ति के अन्य कोई उपाय नहीं।"

विन्ध्यवासिनी जिला रायबरेली के एक ब्राह्मण की कन्या थी। इतनी हिन्दी जानती थी कि तुलसी-कृत रामायण का पाठ कर सकती थी। उसका अयोध्याप्रसाद से विवाह हुए आठ वर्ष हो चुके थे। अयोध्याप्रसाद अपने विवाह के पश्चात् ही दिल्ली में आ कपड़ा-मिल में नौकर हो गया था। दो वर्ष नौकरी करने के पश्चात् वह घर गया और अपनी स्त्री को साथ ले आया था। तब से पति-पत्नी इकट्ठे रहते थे और इस काल में तीन बच्चे भी हो गये थे।

विन्ध्यवासिनी ईश्वर की भक्तिनी और भगवान् राम में श्रद्धा रखने वाली स्त्री थी। वह पति की मन लगाकर सेवा करती जिससे अयोध्याप्रसाद दिल लगाकर मिल में काम करता था। परिणाम यह हुआ था कि साधारण करघे पर काम करने वाले से उन्नति कर, वह फोर-मैन बन गया था। नौकर होने के समय उसका वेतन पैंतालीस रुपया था और साढ़े सात वर्ष में उसका वेतन एक सौ बीस रुपया मासिक हो गया था। वह मिलनसार और समझदार माना जाता था। यही कारण था कि जब यूनियन बनी तो वह यूनियन का प्रधान निर्वाचित हो गया। यूनियन के प्रधान के नाते वह कोटलवाल इत्यादि पार्टी के सदस्यों से मिलता रहता था और पार्टी के सिद्धान्तों से परिचित था। जब उसने अपनी स्त्री को रीता के व्याख्यान का सारांश सुनाया तो विन्ध्यवासिनी क्रान्ति के अर्थ समझ नहीं सकी। इस कारण उसने पूछा, "यह क्रान्ति क्या बला है?"

"क्रान्ति का अर्थ है बलपूर्वक मालिकों को ईमानदारी से रहने पर विवश करना और इस पर भी यदि वे न माने तो उनको दुनिया से बाहर कर देना।"

"अर्थात् मार डालना?"

"और क्या?"

"तो यह पाप नहीं है क्या?"

"पापी को दण्ड देना पाप नहीं पुण्य है।"

विन्ध्यवासिनी की सरल बुद्धि में यह बात अच्छी प्रतीत नहीं हुई। उसे इस झगड़े की बात में कल्याण नजर नहीं आया। इस पर भी इसमें कहाँ दोष है, वह नहीं जान सकी। इस कारण उसने कहा, "मुझको यह बात कुछ समझ नहीं आती कि किसी को मार डालना कैसे पुण्य हो सकता है?"

"तो क्या दिन-भर मेहनत-मजदूरी करने वालों को पेट-भर भी न मिलना पुण्य है?"

"क्या किसी से काम कराकर उसको वेतन नहीं भी दिया जाता?"

"वेतन तो सबको मिलता है, परन्तु इतना कम होता है कि जीवन में कठिनाई बनी ही रहती है।"

"हम सबका विचार है कि वेतन और अधिक मिले। केवल यही नहीं प्रत्युत् मालिकों को लाभ कम हो।"

विन्ध्यवासिनी को यह वेतन की बात तो पसन्द आई परन्तु मालिकों को मार डाला जाय यह वह समझ नहीं सकी। उसने कहा, "कुछ भी हो। खून-खराबे से तो कोई बात नहीं होनी चाहिए। जो अन्याय करते हैं उनको मनाना चाहिए।"

"ऐसा नहीं हो सकता बिन्दु! जो एक बार मालिक बन गया वह फिर अपना अधिकार अपनी इच्छा से नहीं छोड़ता। उसे विवश करना पड़ता है। इसी को क्रान्ति कहते हैं।"

"यही तो मैं कह रही हूँ। मान लो आज तुम्हारी रीता मालिक बन

जाय तो फिर उसकी भी हत्या करनी पड़ेगी। यदि तुम यूनियन के अधिकारी मिल के मालिक हो जाओ तो तुमको भी अधिकार से हटाने के लिए मार डालना पड़ेगा ?"

अयोध्याप्रसाद इस प्रश्न से घबराया। वह मन में सोच रहा था कि यदि वह स्वयं मिल का मालिक बन जाय तो क्या वह अपनी इच्छा से अपना अधिकार छोड़ सकेगा ? इस समय भी क्या वह अपना वेतन, जो उसके साथ काम करने वालों से लगभग दुगुना है, अपने साथियों में बाँटकर उनके बराबर कर सकता है ? उसका मन कहता था कि यह सम्भव नहीं। तो क्या वह भी क्रान्ति का शिकार बनाया जाना चाहिए।

वह अभी यह विचार कर ही रहा था कि विन्ध्यवासिनी ने पूछ लिया, "रीता देवी का पति क्या काम करता है ?"

इस प्रश्न से अयोध्याप्रसाद हँस पड़ा और बोला, "वह विवाहित नहीं है।"

"क्या आयु है उसकी ?"

"अभी लड़की ही है। उन्नीस-बीस वर्ष की होगी।"

"तो वह ग़लत कहती है।"

"अच्छा ?"

"हाँ ! जब तक किसी औरत का विवाह होकर उसके बाल-बच्चे न हो जावें तब तक मरने-जीने की बातों को समझ नहीं सकती। यह सब कुछ वह बालकपन में कह गई है।"

: ८ :

विन्ध्यवासिनी की बात को अयोध्याप्रसाद समझता था। वह मन में विचार करता था कि यदि उसकी हत्या हो जाय तो उसकी पत्नी बेचारी का क्या बनेगा ! क्रान्ति का बदल क्या है वह यही विचार कर रहा था। उसके नेताओं ने बताया था कि बिना क्रान्ति के सुधार नहीं हो सकता। इस बात को लेकर अयोध्याप्रसाद ने रीता से कही गई युक्ति अपनी स्त्री को सुना

टी। उसने कहा, "बिन्दु! तुम कहती तो ठीक हो, पर समाज की विषमता, बिना खून-खराबे के दूर होनी कठिन है।"

"क्या समझाने से कार्य नहीं चल सकता?"

"समझाने से कौन मानता है? जब तक किसी को मुक्का न दिखाया जाय वह मानता ही नहीं।"

"पर मुक्का दिखाने वाला ठीक ही है, यह भी तो कहा नहीं जा सकता।"

रीता ने अपने व्याख्यान में कहा था, "यह प्रस्ताव एक मुक्का है, जो हम मालिकों को दिखाना चाहते हैं। यदि इससे भी उन्होंने हमारी बात न मानी तो मुक्का उनके जबड़े पर लगाना ही पड़ेगा।"

विन्ध्यवासिनी ने जब यह कहा कि मुक्का दिखाने वाला भी अपराधी हो सकता है, तो वह सभा और सभा के प्रस्ताव के कारण पर विचार करने लगा। यह कारण विचार कर तो वह काँप उठा। वह सोचता था कि जनरल मैनेजर ने उसको गाली दी थी क्या? जहाँ तक समझता था, मैनेजर से भी अधिक बुरी गालियाँ वे परस्पर देते रहते हैं। बात यह हुई थी कि उसे एक काम सायंकाल तक समाप्त कराने के लिए कहा गया था। वह इस आदेश को भूलकर कोई दूसरा काम करवाता रहा था। जब उससे इसका कारण पूछा गया तो वह टालमटोल करने लगा। इस पर मैनेजर ने कहा था, "क्या गधेपन की बातें कर रहे हो? हानि-लाभ का अनुमान लगाने वाले तुम कौन हो?"

सारा हल्ला-गुल्ला इसी बात पर खड़ा किया गया था। गधा शब्द अयोध्याप्रसाद के कुछ साथियों ने सुन लिया और उन्होंने मिल से बाहर आकर पार्टी के अधिकारियों से कह दिया। जब बात कोटलवाल और पार्टी के अन्य सदस्यों तक पहुँची तो उन्होंने इसको बहाना बना यह सभा बुला ली। कोटलवाल ने मजीद और रीता को समझा दिया था कि सभा में क्या और क्यों गाली दी गई यह न बताया जाय। गाली को गाली मात्र कहकर सभा की कार्यवाई करवाई जाए।

आज अयोध्याप्रसाद की आत्मा में, इस साधारण-सी बात पर इतनी बड़ी सभा करने और प्रस्ताव करनेपर लज्जा अनुभव हुई। उसने विंध्यवासिनी को बताया, "वास्तव में बात तो बहुत ही साधारण थी। मेरी एक बात पर, जो मैं भी समझता हूँ कि गलत थी, मैनेजर ने कहा था कि यह गधों की सी बात है। परन्तु बिन्दु! हमारे नेता लोग कहते हैं कि उद्देश्य यदि अच्छा हो तो झूठ बोल देना भी बुरा नहीं है। उद्देश्य मजदूरों के मन में मिल-मालिकों के विरुद्ध भावना उत्पन्न करना है, इस कारण मालिकों की छोटी-सी बात को भी हम सहन नहीं करना चाहते। हमने क्रान्ति उत्पन्न करनी है और इसमें हमको कर्मचारियों की भावना से ही काम लेना है।"

"तो झूठी बात पर झगड़ा खड़ा करोगे?"

"झगड़े की बात तो ठीक है। कर्मचारियों का वेतन तो बहुत कम है ही। केवल यह गाली की बात का तो बहाना है। मिल के कर्मचारियों में कोई नहीं जानता कि गाली क्या दी गई थी। दो-चार जानते हैं और उन्होंने वचन दिया है कि किसी को बतायेंगे नहीं।"

"पर यह झूठ तो है ही?"

अयोध्याप्रसाद ग्रामोफोन की भाँति जो कुछ सुन आया था, कह रहा था। इस पर भी उस का मन अपनी बात के अयुक्ति संगत होने को जनता था। यही कारण था कि जिस उत्साह से वह घर आया था, वह लुप्त हो गया। इस उत्साह के कम हो जाने पर उसे वेतन की चिन्ता लगने लगी। अपने वेतन के साथ-साथ उसका ध्यान कर्मचारियों की सामूहिक हानि पर भी गया। पाँच हजार कर्मचारियों का लगभग दस हजार रुपया वेतन का व्यर्थ गया और वह भी एक झूठी बात पर।

वह इस बात पर मन में भयभीत होने लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने कोई भारी पाप किया है और इसका प्रतिकार वह इस जीवन में दे नहीं सकेगा।

विन्ध्यवासिनी ने उसे चिन्तित देख पूछा, "क्यों, क्या हुआ है?"

"तुम ठीक कहती हो कि गाली की बात सत्य नहीं है। परन्तु यह झूठ

एक महान् कार्य के लिए बोला गया है। संसार में मजदूरों का राज्य स्थापित करना है। इसके लिए थोड़ी खेंचातानी कर दी गई है। इस पर भी मैं मन में विचार करता हूँ कि मजदूर राज्य स्थापित हो जायगा या नहीं, मैं कैसे जान सकता हूँ ? हाँ, मेरा झूठ बोलना तो समझ आ रहा है।"

"तो इस का प्रायश्चित् कर दीजिए।"

"प्रायश्चित् कैसे किया जाय ?"

"मैनेजर के पास जाकर क्षमा माँग लीजिए और भविष्य में इस प्रकार की बात न करने का वचन दे आइए।"

अयोध्याप्रसाद अपनी पत्नी की सरलता पर हँस पड़ा। उसने कहा, "मैं समझा था कि तुम कोई जप-संध्या की बात करोगी। यदि मैं इस प्रकार क्षमा माँगने चला गया तो यूनियन के प्रधान-पद से तो तुरन्त हटा दिया जाऊँगा।"

"तो क्या हानि होगी ?"

विन्ध्यवासिनी नहीं जानती थी कि नेता बनने की लालसा कितनी प्रबल हो सकती है। इससे हो अयोध्याप्रसाद अपने प्रधान-पद से हटाये जाने को बहुत हानि की बात मानता था।

वह अपनी पत्नी की साधारण सी बात से कि झूठ का प्रायश्चित् करना चाहिए, इतना प्रभावित हुआ था कि वह अगले दिन कोटलवाल को मिलने चल पड़ा। मिल के समय के बाद वह पार्टी के कार्यालय में उससे मिला। कोटलवाल ने समझा कि पिछले दिन का वेतन कट जाने के विषय में बात करने आया है, परन्तु अयोध्याप्रसाद ने तो उस विषय में कुछ नहीं कहा। उसने पूछा, "प्रस्ताव चला गया है क्या ?"

"हाँ।"

"उसमें गाली का विषय निकाल देना चाहिए था।"

"क्यों ?"

"गाली तो दी नहीं गई। झूठी बात पर यह अभियोग चलाया गया तो सफल नहीं हो सकेगा।"

"उसमें झूठ तो कुछ नहीं। हमारे देश में गधा एक गाली मानी जाती है। यह कोई प्रेम वाक्य तो है नहीं। साथ ही अब प्रस्ताव तो चला गया। कल समाचार पत्रों में भी छप जायगा और इस समय तक तो मिल-मालिकों ने पढ़ भी लिया होगा।"

"मैं यही विचार करता हूँ कि मैनेजर साहब ने, मेरा भूल करके दूसरा काम कराने को गधापन कहा है। मुझे तो कुछ नहीं कहा। मेरी समझ में प्रस्ताव के शब्द अनावश्यक रूप में कड़े हो गए हैं।"

"देखो अयोध्याप्रसाद !" कोटलवाल ने कुछ कठोर भाव में कहा, "विचार करना और अपनी समझ की बात करना अनधिकार चेष्टा है। संसार में न तो सब विचार कर सकते हैं, न ही उनको विचार करने की आवश्यकता है। विचार करने के लिए आप के नेता लोग हैं। आपको एक सेना के सेनानी के रूप में अपने नेताओं का कहना मानना चाहिए। यदि सब लोग विचार करने लगे तो ज्ञान में अन्तर होने से परिणामों में अन्तर हो जायगा और परस्पर ही झगड़ा होने लगेगा।"

अयोध्याप्रसाद कोटलवाल की युक्ति से प्रभावित हो गया और चुप कर रहा। मन में यह समझते हुए भी कि गाली इत्यादि तो दी नहीं गई और व्यर्थ में मिल-मालिकों को मुक्का दिखाया जा रहा है, वह विचारता था कि इसमें उसको विचारने की आवश्यकता नहीं। मजदूरों के नेता कोटलवाल मजीद साहब और रीता देवी सब समझदार व्यक्ति हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं सबके हित की ही बात कर रहे होंगे। इस पर भी वह मन में असन्तोष अनुभव कर रहा था।

: ६ :

रामी को डॉक्टर राधाकृष्ण ने रीता के साथ आने-जाने के लिए नियुक्त कर दिया था। डाक्टर का इससे यह आशय था कि रीता की उच्छृङ्खलताओं का पता चलता रहे और उस पर नियन्त्रण का प्रयत्न किया जा सके परन्तु रीता एक अनपढ़ लड़की को अपना साथी बनाने के लिए तैयार नहीं होती

थी। एक दिन उसने माँ को कह ही दिया "मम्मी ! मैं इस गँवार लड़की को अपने साथ नहीं ले जाना चाहती।"

"तुम इसे कालेज की श्रेणी में ले जा रही हो क्या ?"

"मैंने कालेज छोड़ दिया है।"

"कब से ? अभी फीस तो तुम इस मास भी ले गई थीं ?"

"पर मैंने फीस जमा नहीं करवाई और मेरा नाम कालेज रोल से निकाल दिया गया है।"

"डॉक्टर साहब को मालूम है क्या ?"

"होना चाहिए। उनको कालेज से सूचना आई होगी।"

"मुझको उन्होंने बताया नहीं। पर मैं तो कह रही थी कि तुम कौन कालेज का व्याख्यान सुनने जाती हो, जो यह अनपढ़ लड़की तुम्हारे साथ नहीं जा सकती ?"

"यह जाकर करेगी क्या ?"

"नगर के एक प्रसिद्ध डॉक्टर की लड़की के साथ नौकरानी हो तो तुम्हारी और तुम्हारे पिता की शोभा होगी। क्या तुम यह नहीं चाहतीं ?"

"ये बातें 'बोर्जिया' वर्ग की हैं। नौकर-नौकरानियाँ शोभा के लिए तो उसी समाज में रखी जाती हैं। आज के समाज में तो नौकर काम करने के लिए ही होते हैं।"

"तो इसको तुम काम नहीं समझतीं ? भला बताओ न, यह साड़ी पर लेस किस लिए लगवाई है तुमने ? क्या यह शोभा के लिए नहीं है ?"

"आज यह फैशन है मम्मी ! नौकरानी का मालिक के पीछे-पीछे चलना फैशन नहीं रहा।"

माँ बेटी से हार गई, परन्तु रामी रीता के साथ जाने में सफल हो गई। रीता जब चलने लगी तो रामी भी साथ चलने के लिए तैयार हो गई। रीता ने उसे कपड़े पहिन चलने के लिए तैयार देखा तो पूछा, "किधर जा रही हो रामी ?"

"आपके साथ, दीदी !"

"क्यों ?"

"मैं आपकी संगत में रहकर कुछ सीखना चाहती हूँ।"

"वह तुम घर में रहकर सीख सकती हो।"

"दीदी ! आप घर में तो रहती नहीं, तो संगत दीवारों से करूँ क्या ? और फिर जिनकी संगत से आप इतनी बड़ी नेता बन गई हैं, क्या मैं उनकी बातें सुन और जान नहीं सकती ?"

"मैं नेता बन गई हूँ ? कौन कहता है ?"

"उस दिन मिल के कई कर्मचारी आये थे और कह रहे थे कि रीता देवी उनकी नेता हैं।"

"किससे कह रहे थे ?"

"पापा जी से। उन्होंने कहा था, 'हम भूखे मर जायेंगे परन्तु अपने नेताओं की बात रद्द नहीं होने देंगे।' "

"तो तुम भी नेता बनना चाहती हो ? तुम पढ़ी-लिखी तो कुछ भी नहीं।"

"मैं तो उनकी संगत का लाभ उठाना चाहती हूँ, जिन्होंने तुमको नेता बना दिया है।"

रीता कुछ गम्भीर विचार में पड़ गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "जानती हो मुझे किसने नेता बनाया है ?"

"नहीं।"

"वह मजीद साहब हैं। वह ही मुझको पार्टी में ले गए थे। उन्होंने ही मुझको उसका सदस्य बनाया था।"

इससे रामी का मुख उतर गया। उसने उदास मन से कहा, "वह तो मुझको सदस्य नहीं बनायेंगे। हाँ दीदी ! यदि आप सिफारिश कर दें तो शायद बना लें।"

"वह मेरी सिफारिश क्यों मानेंगे ?"

"वह आपकी बात नहीं मानेंगे तो किसकी मानेंगे ? आप उनसे मुहब्बत जो करती हैं।"

"मुहब्बत ? वह क्या होती है ?"

"जो उस दिन आप मजीद भाई-जान के कमरे में कर रही थीं।"

"हट बेवकूफ !"

"तो दीदी ! साथ ले चलोगी न ?"

"तो तुमको भी मुहब्बत करनी पड़ेगी ?"

"मैं तो विमल से ही मुहब्बत करती हूँ। मेरा दिल और किसी से मुहब्बत करने को नहीं मानता।"

इस पर रीता खिलखिलाकर हँस पड़ी और इस प्रकार रामी रीता के साथ पार्टी के कार्यालय में जा पहुँची। मजीद और कोटलवाल वहाँ एक गम्भीर विषय पर वार्तालाप कर रहे थे। मजीद रामी को रीता के साथ आते देख अवाक् रह गया। कोटलवाल रामी के विषय में कुछ जानता नहीं था, इससे वह रीता से पूछने लगा, "यह कौन है ?"

"यह पार्टी में सम्मिलित होने के लिए आई है।"

"तो इसे प्रीतमकौर के हवाले कर दें। आप इधर आइए। एक भयंकर घटना घट गई है।"

रीता रामी को लेकर एक अन्य कमरे में चली गई। वहाँ प्रीतमकौर एक मेज-कुर्सी लगाये बैठी थी। रीता ने कहा, "यह हमारी नौकरानी है। पार्टी में सम्मिलित होना चाहती है।" प्रीतमकौर ने उसे सिर से पैर तक देखा और एक खाली कुर्सी पर बैठाकर बातें करने लगी।

रीता रामी को वहाँ बैठा मजीद और कोटलवाल के पास चली गई। कोटलवाल ने विचारणीय विषय बतलाया, "अयोध्याप्रसाद ने मिल-मैनेजर से क्षमा प्रार्थना की है। उसका कहना है कि वह इस प्रस्ताव से सहमत नहीं और उसकी इच्छा के बिना यह प्रस्ताव किया गया है। इस पर मैनेजर कल सब कर्मचारियों की एक सभा में अयोध्याप्रसाद से यह कहलवाने वाला है कि मैनेजर ने उसको कोई गाली नहीं दी। यह गाली की बात तो कर्मचारियों को भड़काने के लिए झूठ-मूठ बना ली गई है।"

"यह तो बहुत बुरा होगा।" रीता ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा।

"हाँ !" कोटलवाल का कहना था, "इस प्रकार उसके बयान हो जाने से तो हमारा सब बना-बनाया काम चौपट हो जायगा।"

"तो इसका कुछ प्रबन्ध करना चाहिए।"

इस पर कोटलवाल ने आँखें नीची कर कहा, "प्रबन्ध तो हो सकता है, यदि रीता देवी चाहें तो।"

"मैं क्या कर सकती हूँ ?"

"जो कुछ आपने मुझको शिक्षा देने के लिए किया था, वही यहाँ भी कर सकती हैं।"

"आपने क्या किया था और रीता देवी ने क्या किया था ?" मजीद ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

"देवीजी से ही पूछ लीजिये न।"

"मुझको तो कुछ समझ नहीं आ रहा कि ये क्या कह रहे हैं।" रीता ने मुस्कराते हुए कहा।

कोटलवाल ने गम्भीर हो कहा, "अब तीन बज रहे हैं। कल प्रातः नौ बजे सभा होने वाली है। तब तक कुछ-न-कुछ करना चाहिए।"

मजीद ने रीता को आँखों से चुप रहने को कहकर अपनी योजना रख दी, "आज पिछली रात अयोध्याप्रसाद गायब कर दिया जाय। कल सभा में वह उपस्थित नहीं हो सकेगा और हमारा कथन सत्य बना रहेगा।"

"बात तो ठीक है।" रीता ने कहा।

"परन्तु इस प्रकार किसी को बन्दी रखने से पाँच वर्ष कारावास का दण्ड हो सकता है।" कोटलवाल का कहना था।

"यह पता ही लगने क्यों दिया जाय कि हमने उसे कैद कर रखा है ?" मजीद ने बेपरवाही से कह दिया।

: १० :

प्रीतमकौर और रामी में बातचीत बहुत ही सुरुचिपूर्ण चल रही थी।

प्रीतमकौर ने पूछा, "अच्छा रामी ! यह बताओ, तुमको हमारी पार्टी के विषय में किसने बताया है ?"

"मैंने अपने यत्न से जाना है। जब आप सब मजीद साहब से मिलने आती थीं तो मैं जान गई थी कि आप किसी सभा-सोसाईटी से सम्बन्ध रखते हैं। फिर रीता बहन नेता बन गई। मिल के कर्मचारी उनके घर आते-जाते रहते हैं और उनके गले में पुष्प-मालाएँ डालते रहते हैं। उनके फोटो लिए जाते हैं और लोग उनकी जयजयकार करते हैं। इससे मेरे मन में भी नेता बनने की लालसा होती है।"

"क्या आयु है तुम्हारी ?"

"पन्द्रह वर्ष।"

"तुम अभी आयु में छोटी हो। पार्टी की सदस्या नहीं बन सकती।"

"कितनी आयु होनी चाहिए, सदस्य बनने के लिए ?"

"अठारह वर्ष।"

"लिख लीजिये, अठारह वर्ष की हूँ।"

"झूठ लिख लूँ ?"

"तो क्या आप लोग सदा सत्य ही बात करती रहती हैं। रीता दीदी तो···।" वह कहती-कहती रुक गई।

"कहो न, रीता दीदी क्या करती हैं ?"

"कभी-कभी झूठ भी बोल देती हैं और कहती हैं कि अच्छे मतलब के लिए कुछ भी किया जा सकता है। मेरा पार्टी में सम्मिलित होना भी तो अच्छी बात होगी। उसके लिए यह गलत बात भी लिखी जा सकती है।"

"पर तुम इतनी छोटी हो कि यह झूठ छिप नहीं सकता।"

"पर पूछेगा ही कौन ?"

"तुम्हारे माता-पिता।"

"मेरे माता-पिता दोनों नहीं हैं और यह पन्द्रह वर्ष की आयु की बात भी तो ठीक-ठीक कोई नहीं कह सकता। कोई नहीं जानता कि मैं कब पैदा हुई थी।"

प्रीतमकौर हँस पड़ी और बोली, "अच्छी बात है। तुम सदस्या बन सकोगी। परन्तु इसके लिए परीक्षा देनी होगी।"

"क्या परीक्षा देनी होगी?"

"उस परीक्षा के लिए पहले पढ़ाई की आवश्यकता है।"

"मैं उर्दू पढ़ी हूँ। सुलताना बीबी की माँ ने उर्दू पढ़ना और लिखना सिखाया था।"

"पढ़ाई से मेरा मतलब उर्दू-हिन्दी से नहीं, मैं तो बुद्धिमत्ता की बात कह रही हूँ। दुनिया क्या है? हम क्या हैं? क्यों हैं? हमारे कष्ट-क्लेष क्यों हैं और कैसे उनसे छुटकारा पाया जा सकता है?"

"यह सब कौन सिखायेगा?"

"तुम अभी यहाँ आया करो। हमारी ज्ञान-गोष्ठियों में बैठा करो और सुना करो। एक वर्ष के पश्चात् तुम्हारी परीक्षा होगी। तब तुम सदस्या बन सकोगी।"

"रीता दीदी भी उन गोष्ठियों में आती हैं क्या?"

"हाँ! वे तो स्वयं उन गोष्ठियों में बहुत-सी बातें बताती हैं।"

"तब ठीक है।" रामी भी यही चाहती थी और डाक्टर राधाकृष्ण भी यही चाहता था। रीता, अयोध्याप्रसाद के विषय में मजीद और कोटल-वाल के साथ राय कर, जब प्रीतमकौर के पास आई तो रामी और वह घुल-मिलकर बातें कर रहे थे। रीता ने पूछा, "साथिन प्रीतमकौर! क्या कह रही है यह?"

"यह अपना पूर्व-इतिहास बता रही है। मैं समझती हूँ कि रामी बहुत अच्छी साथिन बन सकेगी। अभी इसको ज्ञान-गोष्ठियों में आने की स्वीकृति मिल जानी चाहिए।"

"पर यह पढ़ी-लिखी कुछ नहीं?"

"उर्दू तो पढ़-लिख सकती है। अँग्रेजी पढ़ाने का प्रबन्ध कर देना चाहिए।"

बात तय हो गई। रीता कार्यालय में कुछ समय तक और ठहर रामी

के साथ चल पड़ी। जब वे कार्यालय से निकले तो अयोध्याप्रसाद मिल से घर जाता हुआ दिखाई दिया। जो योजना रीता बनाकर निकली थी, उसके अनुसार रीता अयोध्याप्रसाद से बात नहीं करने वाली थी। परन्तु अयोध्या-प्रसाद ने रीता को हाथ जोड़ नमस्कार कह दी। इस पर भी रीता बिना बात किए जाने लगी तो अयोध्याप्रसाद ने कहा, "रीता देवी! आपसे एक बात करनी थी।"

रीता को विवश ठहरना पड़ा। उसने पूछा, "क्या कहना चाहते हैं आप?"

" कल मिल-मालिकों ने सब मिल-कर्मचारियों को एक सभा बुलाई है।"

"मुझको पता है।"

"वहाँ मुझसे यह कहलवाने वाले हैं कि मैनेजर ने मुझे कोई गाली नहीं दी।"

"तो तुम यह कहने वाले हो?"

"मैं यही सोच रहा हूँ कि सत्य कहूँ या झूठ। मेरी स्त्री बिन्दु कहती है कि सत्य कहना चाहिये, झूठ बोलना पाप है।"

"सत्य क्या है?"

"सत्य तो यह है कि गाली नहीं दी गई।"

रीता को क्रोध आ गया। उसने कहा, "भोले अयोध्याप्रसाद! सत्य यह है कि मालिकों को बदनाम किया जाये। ये ठग हैं और ठगों को बचाने में बोला हुआ सत्य झूठ से भी अधिक पाप होगा।"

"पर बहन जी! मेरी बिन्दु कहती है कि यही तो सिद्ध करना है कि वे ठग हैं। यदि वे ठग नहीं तो उनको बदनाम करना अनुचित होगा। विशेष रूप में एक भले व्यक्ति को झूठ बोलकर बदनाम करना तो घोर पाप हो जायेगा।"

"तुम्हारी बीवी बिन्दु तुम्हारी गुरु है क्या? यह जो पार्टी में इतने दिन से शिक्षा पा रहे हो, वह क्या किसी काम की नहीं है?"

"रीता बहन ! हमारे घर में चलो और कुछ उसको समझा दो तो बहुत कृपा होगी।"

"इस समय मुझको अवकाश नहीं। फिर किसी दिन चलूँगी। इस पर भी यह विचार कर लो कि मीटिंग में तुम्हारे यह कहने पर कि गाली नहीं दी गई सब कर्मचारी तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे और क्या हो जावेगा, कहा नहीं जा सकता।"

रीता ने यह भी उचित से अधिक ही कह दिया था। इस कारण इतना कह उसने कहा, "यदि तुम कल सभा में अनुपस्थित रहो तो ठीक रहेगा।"

इतना कह वह चल पड़ी। अयोध्याप्रसाद मुख देखता रह गया। उसके मुख पर भय के लक्षण रामी ने भी, जो रीता के पीछे खड़ी थी, देखे और वह रीता के साथ-साथ चलती हुई पूछने लगी, "रीता दीदी! इसने कोई भयंकर पाप किया प्रतीत होता है।"

"किया नहीं है, पर करने जा रहा है। कल यह भरी सभा में यह कहने वाला है कि हम सब झूठे हैं।"

"यह इतना बड़ा झूठ क्यों बोलेगा?"

"अज्ञानता और लोभ के वश में होकर। अज्ञानता तो यह है कि यह सत्य और झूठ में अन्तर नहीं जानता और लोभ इस कारण कि उस सभा में हमारी निन्दा करने से इसकी वेतन में वृद्धि होगी।"

"बहुत पाजी है यह!"

"हाँ।"

घर पहुँच रामी ने पूर्ण विवरण डाक्टर साहब को सुना दिया। इस पर डाक्टर ने पूछा, "पर वह क्या बात है, जो वह सभा में कहने जा रहा है। वह सत्य नहीं क्या?"

"ऐसा कहा गया प्रतीत होता है कि मिल-मैनेजर ने अयोध्याप्रसाद को गाली दी है। इस गाली पर लोग क्रोध कर रहे हैं। अयोध्याप्रसाद का कहना है कि गाली नहीं दी गई और वह कल एक सभा में यही कहने जा रहा है। इस पर रीता ने उसे कहा था कि कर्मचारी उससे रुष्ट हो जावेंगे

और न जाने क्या कर बैठें।"

डाक्टर इस मनोवृत्ति को समझ चिन्तित हो विचार करने लगा। डाक्टर की चिन्ता का एक कारण यह भी था कि उसे स्वरूप रानी ने बताया था कि रीता ने कॉलेज छोड़ दिया है। पढ़ाई छोड़ देने पर उसके सर्वथा आवारा हो जाने का विश्वास हो जाने से डाक्टर की रही-सही आशा भी विलीन हो गई थी।

अगले दिन ब्रेकफास्ट के पश्चात् डाक्टर ने रीता को अपने स्टडी-रूम में बुलाकर पूछा, "रीता! तुम ने कॉलेज जाना छोड़ दिया है क्या?"

"मैं और अधिक पढ़ाई की आवश्यकता नहीं समझती।"

"मैं भी यही समझता हूँ, परन्तु बात तो यह है कि अब क्या करोगी?"

"करने को बहुत कुछ है, डैडी! वास्तव में मुझको तो दिन में एक क्षण का भी अवकाश नहीं मिलता।"

"क्या करती रहती हो तुम? मैं समझता हूँ कि तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर दूँ।"

"विवाह कोई काम है क्या? डैडी! यह तो बन्दीगृह होगा। मैं माता जी को देखती हूँ तो मेरे मन में उन पर दया आती है। उनका सब संसार तो कोठी के भीतर ही बन गया है। रोटी, कपड़ा, मेज, कुर्सी, नौकर-चाकर और फिर नीला, विमल, व्रज इत्यादि की बातें उनके मन पर बोझा बन पड़ी रहती हैं। वर्ष के पीछे वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। न कभी वे दिल्ली से बाहर जा सकी हैं और न ही कभी थिएटर-सिनेमा देखने में उनकी रुचि होती है। मैं ऐसा बनना नहीं चाहती।"

"कैसी बनना चाहती हो?"

"मैं अपने देश तथा जाति के लिए कुछ करना चाहती हूँ। कार्ल-मार्क्स ने संसार के पीड़ितों के रोग का एक निदान किया है और उसकी चिकित्सा बताई है। संसार के दुःखों के निवारण के लिए मैं वह चिकित्सा करना चाहती हूँ। इसके विपरीत आप मुझ को किसी विलासी पति के मकान की चार-दीवारी में बन्द कर देना चाहते हैं?"

युक्ति से तो रीता की बात बहुत ही श्रेष्ठ और अनुकरणीय प्रतीत होती थी परन्तु डाक्टर रामी के मुख से रीता से कही सत्य की मीमांसा सुन चुका था। सत्य वह है, उसने कहा था, जो मिल-मालिकों को बदनाम करे। वह इस सत्य के विकृत लक्षण को सुन चिन्तित था। इस पर भी वह केवल यह कह सका, "देखो रीता! मैं एक वैज्ञानिक हूँ। मेरा काम रोगी शरीरों की चिकित्सा करना है। मैं तुम्हारे कार्ल मार्क्स की बात नहीं जानता। मैं तो एक बात जानता हूँ कि स्त्री-पुरुष में लैंगिक आकर्षण प्रायः मन में विकार पैदा कर देता है और वह विकार संसार को विकृत रूप में ही मन में उपस्थित करता है। इस आकर्षण को नियन्त्रण में रखने के लिए विवाह एक अत्यावश्यक व्यवस्था है।"

"आप अपने विचार से सत्य कहते हैं। उस विचार से भी तो मैं यही कहना चाहती हूँ कि अभी वह समय मेरे जीवन में नहीं आया। जब कोई मेरे से विवाह के योग्य दिखाई देगा तो वह भी हो जावेगा।"

"मुझको भय यह है कि जहाँ तुम अपना समय व्यतीत करती हो, वहाँ कोई योग्य वर मिलेगा भी क्या?"

"मिलना होगा तो मिल जायेगा। मैं अब लड़कों के पीछे तो भाग नहीं सकती पिता जी! इस विषय में आप निश्चिन्त रहें। मैं अपना मार्ग स्वयं बना लूँगी।"

इस आश्वासन पर डाक्टर स्वयं लड़का ढूँढने के लिए तैयार हो गया। उसने अपने परिचितों के परिवारों की जाँच-पड़ताल करनी आरम्भ कर दी। जब उसने स्वरूप रानी से अपना विचार बताया तो उसने लड़की के दहेज के लिए मन में एक धारणा बनाने के लिए कहा। डाक्टर ने यह भी विचार कर लिया।

: ११ :

रामी के लिए विमल के सम्पर्क में आना अब बहुत सुगम हो गया था। वह अवसर ढूँढती रहती थी कि विमल से एकान्त में मिले और उसको

अपने विचारों के अनुकूल बना ले। रात को भोजन करने के पीछे वे प्रायः कोठी के लान में मिल सकते थे। कभी उनके साथ नीला और ब्रज होते थे। कभी वे केवल दोनों ही होते थे। जब तो नीला इत्यादि होते तब तो वे रामी को एक नौकरानी मानते और विमल तथा रामी में अन्तर बना रहता था। परन्तु जब वे दोनों अकेले होते तो दोनों में अधिक घनिष्टता रहती थी।

इसी प्रकार की एक एकान्त भेंट में विमल ने रामी से पूछा, "तुम रीता बहन के साथ नित्य कहाँ जाती हो?"

"जहाँ वे जाती हैं। पापा की आज्ञा है कि मैं उनके साथ ही जाया करूँ और जो कुछ वह करे अथवा कहे, उनको बताया करूँ।"

"इससे क्या होता है?"

"पापा क्या करते हैं, सो तो मैं जानती नहीं। परन्तु मैं यह जान गई हूँ कि दीदी अच्छी संगत में नहीं जाती। वहाँ लड़के-लड़कियें परस्पर मिलते रहते हैं और उनमें कुछ तो बहुत ही खराब लोग हैं।"

"पापा एक दिन मुझ को और ब्रज भैया को क्लब में ले गए थे। वहाँ भी बहुत सी स्त्रियें और पुरुष परस्पर मिलते रहते हैं। कुछ लोग नाचते हैं और बहुत शराब पीते हैं।"

"पापा भी शराब पीते हैं क्या?"

"हाँ! उस दिन उन्होंने पी थी। परन्तु हमको पीने नहीं दी।"

"ये पैसे वाले और उनके लड़के-लड़कियें सब एक समान हैं। बुरी बात तो यह है कि जहाँ रीता दीदी और मजीद जाते हैं, वहा कुछ ग़रीबों की लड़कियें और लड़के भी आते हैं और वे इन की बातें सीखते जाते हैं।"

"वहाँ भी शराब पीते हैं क्या?"

"नहीं! पार्टी में शराब तो नहीं पी जाती, परन्तु उनको नशा शराब पीने वालों से अधिक चढ़ा रहता है। बिना पिये ही वे मूर्खों की बातें करते रहते हैं। वे निर्धनों की निर्धनता मिटाने की बातें करते हैं। उन में योग्यता बढ़ाकर नहीं, प्रत्युत् दूसरों से छीन-झपटकर। वे अपने को दूसरों से

आगे बढ़ा हुआ मानते हैं, परन्तु बातें तो वे चोर-डाकुओं की-सी करते हैं।"

"किसी की चोरी करते हैं क्या ?"

"वैसे तो नहीं, जैसे चोर घरों में घुसकर कीमती सामान उठा ले जाते हैं, परन्तु मन से वे सब संसार की वस्तुएँ अपनी ही समझते हैं और जब उनको किसी वस्तु की आवश्यकता पड़ती है, तो जहाँ पर भी वह मिले वहाँ से उठा लाने में संकोच नहीं करते। मम्मी ने मुझको सिर में लगाने के लिए एक क्लिप दिया था। वहाँ एक प्रीतमकौर है। उसकी दृष्टि मेरे क्लिप पर पड़ गई तो उसने वह क्लिप देखने के लिए मेरे बालों से उतार लिया और अपने बालों में लगा लिया। पीछे बोली, "मुझको भला प्रतीत होता है। अच्छा तुम माता जी से और माँग लेना।"

"मैंने कहा भी कि मम्मी नाराज होंगी, तो कहने लगी 'होने दो। पैसे वाले नाराज हुआ करते हैं, यह बात वहाँ खूब चलती है। कहने को तो वे कहते हैं कि हम सब साथी हैं, परन्तु उनका साथ केवल-मात्र धनियों को लूटने में है। उस दिन रीता दीदी सुलताना के विवाह में गई थीं और मम्मी की ओर से उसे भेंट देने के लिए एक साड़ी और ब्लौज का पीस ले गई थीं। परन्तु जानते हो उसका क्या हुआ ? भेंट देने से पूर्व ये वस्तुएं मजीद और प्रीतमकौर ने देख लीं और मजीद ने यह कहकर रीता से दोनों ले लीं कि सुलताना को साड़ियों की आवश्यकता नहीं है। उसका खाविन्द सात सौ मासिक वेतन पाता है और अम्मी इकतीस सूट दे रही हैं।

"कुछ दिन पीछे वही साड़ी प्रीतमकौर ने पहनी थी। मम्मी को तो यही विदित है कि सुलताना को भेंट दे दी गई है।"

"यह प्रीतमकौर कौन है, जो सबकी चीजें लेती रहती है और उसको कोई रोकता ही नहीं ?"

"वैसे तो मिल के एक क्लर्क की लड़की है, परन्तु पार्टी के बहुत से युवक उसको भेंट दिया करते हैं।"

"क्यों ?"

रामी हँस पड़ी और उसने आज फिर विमल से आलिंगन किया। इस

पर विमल ने कहा, "देखो रामी ! उस दिन माँ आई थी और कहती थी कि मैं तुमसे अकेले में न मिला करूँ ?"

"क्यों ?"

"तुम मुझसे प्यार जो करती हो। माँ का कहना था कि यदि डॉक्टर जी को पता चल गया तो हम दोनों को कोठी से निकाल देंगे। मुझको फिर लाला घनश्याम के मकान में जाकर रहना पड़ेगा और मेरी पढ़ाई बन्द हो जायगी।"

"देखो विमल ! मैं तुमसे प्रेम करती हूँ और जब तुम पढ़-लिखकर बड़े आदमी बन जाओगे तब मैं तुमसे विवाह कर लूँगी। बताओ करोगे ?"

विमल अब तेरह-चौदह वर्ष का कुमार था और उसको विवाह-सम्बन्धी बातों का स्कूल के लड़कों से ज्ञान हो रहा था। इस पर उसने कहा, "मैं तो डॉक्टर जी के बराबर पढ़ूँगा और उन जितना ही धन पैदा करूँगा। इसमें अभी दस वर्ष और लग जायँगे।"

"तो क्या हुआ ? मैं तब ही तुमसे विवाह करूँगी।"

"पर तुम जब मेरा मुख चूमती हो तो मुझको कुछ विचित्र प्रतीत होता है और फिर उस रात मुझको न तो नींद आती है और न ही मैं पढ़ सकता हूँ।"

रामी इस अनुभव को समझती थी। वह चाहती थी कि विमल पढ़-कर बड़ा आदमी बन जाय, परन्तु उसका मन कभी रोकने पर भी नहीं रुकता था। इस कारण विमल की बात सुन वह लज्जित हुई। फिर कुछ विचारकर बोली, "अच्छा एक बात कहो कि तुम मुझसे विवाह करोगे, तब मैं तुम्हारा मुख कभी नहीं चूमूँगी।"

"विवाह तो करूँगा, परन्तु तब तक तुम्हारा विवाह पापा कहीं और कर देंगे तो ?"

"मैं उनसे कह दूँगी और वे जरूर मान जायँगे।"

"सत्य ? पर देखो मैं डॉक्टर बनूँगा और तुम क्या करोगी तब तक ?"

"मैं इसी कोठी में नौकरानी का काम करूँगी।"

"पर उस दिन व्रज भैया कहते थे कि तुम बहुत अच्छी लड़की हो।"

"सो तो हूँ। मम्मी भी यही कहती हैं। जब मेरा तुम्हारे साथ विवाह होगा तो बहुत अच्छा होगा।"

रामी का बस चलता तो वह पुनः उससे आलिंगन कर लेती परन्तु विमल यह कह कि उसे स्कूल का काम करना है, अपने कमरे में चला गया।

रामी कुछ देर तक वहाँ लान में शहतूत के पेड़ों के नीचे खड़ी रही। वह अपने मन में विमल के लिए दस वर्ष तक प्रतीक्षा करने की बात विचार-कर व्याकुल हो रही थी। बहुत कठिनाई से मन को शान्त कर वह कोठी में आ गई। उसके लिए स्वरूप रानी ने रीता के कमरे के बाहर बरामदे में एक छोटी-सी कोठरी, जिसमें पहले टूटा-फूटा फरनीचर पड़ा रहता था दे रखी थी। सर्दी में वह कोठरी के भीतर और गर्मियों में कोठरी के बाहर बरामदे में अथवा सेहन में सोती थी।

इस रात वह सो नहीं सकी। प्रातःकाल पाँच बजे नींद आने लगी तो रीता ने उसकी चारपाई के पास आ आवाज दी "रामी! अरी रामी!!"

रामी चौंककर उठी। उसने देखा कि रीता दीदी सोने की पोशाक में खड़ी हैं और उसके पीछे कोई सफेद कपड़े पहने खड़ा है। वह हाथ उठा बिजली जगाने लगी तो रीता ने उसका हाथ पकड़ रोक लिया, "नहीं। मत जगाओ।" उसने कहा, "यह साथी हैं। इनको कोठी के बाहर ले जाओ। यदि चौकीदार पूछे कि कौन है तो कह देना पापा के साथ क्लब से आये थे अब जा रहे हैं।"

"झूठ बोल दूँ?"

"बेवकूफ़! जैसा मैं कहती हूँ कह देना और पापा के क्लब के साथी कहने से कोई कुछ नहीं कहेगा। इन्हें कोठी के बाहर छोड़ पापा के कमरे के बाहर जाकर, वहाँ कुछ देर ठहरना। जब सबको निश्चिन्त देखोगी तो चली आना।"

रामी उस आदमी को मार्ग दिखाती हुई ले गई। फाटक पर चौकीदार ने पूछा, "कौन है ?"

"रामी हूँ और ये बाबूजी पापा के साथ क्लब से आये थे। अब जा रहे हैं।"

चौकीदार ने, जो फाटक के भीतर बैठा ऊँघ रहा था, फाटक खोल दिया। वह व्यक्ति निकल गया। रामी वापस लौटकर डॉक्टर साहब के सोने के कमरे की ओर चली गई और वहाँ से छिपकर रीता के कमरे में चली आई।

रीता उत्सुकता से रामी की प्रतीक्षा कर रही थी। जब वह आई तो उसने पूछा, "गए ?"

"हाँ। पापा का नाम लेते ही उसने फाटक खोल दिया।"

"तुम बहुत अच्छी लड़की हो। देखो मैं तुमको इनाम देती हूँ।"

इतना कह रीता ने एक दस रुपये का नोट रामी की ओर कर दिया। रामी ने कहा, "दीदी ! मुझसे गुम हो जायेगा तुम इसको रखो, जब आवश्यकता होगी ले लूँगी।"

रीता विस्मय में उसका मुख देखती रही। रामी ने कहा, "अब मैं जाकर सोऊँ ?"

"हाँ ! जाओ।"

रामी आकर अपनी खाट पर लेट गई पर उसको नींद नहीं आई। वह खाट पर करवटें लेती रही और दिन निकल आया।

: १२ :

रामी उठी। स्नानादि से निवृत्त हो प्रातः के अल्पाहार के लिए रसोई-घर में जा पहुँची। वहाँ स्वरूप रानी, अपने सामने आहार के लिए सामान ठीक करवा रही थी। उसने रामी को देख कहा, "यह अण्डों की प्लेट ले चलो।" पौरिज बैरा ले गया था।

रामी ने टेबल लगाने में बैरा की सहायता करनी आरम्भ कर दी।

वह प्रायः ऐसा किया करती थी। बैरा, बन्सी, रामी के उसकी सहायता पर लगाये जाने पर बहुत प्रसन्न हुआ करता था। उसको रामी से नोंक-झोंक करने का अवसर मिल जाया करता था। रामी उसकी बातों का प्रयोजन समझने लगी थी और इस कारण उससे घृणा करने लगी थी।

बन्सी उसे उबले अण्डों की प्लेट ले जाते हुए देख मुस्करा दिया। रामी ने जब प्लेट डाइनिंग टेबल पर रखी तो उसने कहा, "रामी! आज आँखों में सुर्खी क्यों है?"

"तुम्हारा सिर है। चुपचाप काम करो, नहीं तो मम्मी...।"

इस समय स्वरूप रानी हाथ में दूध का जग लिये आ गई और रामी से बोली, "जाओ, चाय का पौट ले आओ।"

बन्सी उसके साथ ही रसोई-घर की ओर चल पड़ा। स्वरूप रानी ने बैराको जाने से रोकते हुए कहा, "कहाँ जा रहे हो? तुम कुर्सियें लगाओ।"

बैरा लौटकर कुर्सियें ठीक करने लगा। जब तक वह कुर्सियें लगा चुका, रामी ट्रे पर टी-पौट और शूगर पौट लिए हुए चली आई। बन्सी ने आगे बढ़ उससे ट्रे पकड़ ली और पकड़ते हुए धीरे से बोला, "अलसाये नैन!"

रामी ने उसके हाथ में ट्रे देते हुए कह दिया, "गधे का बच्चा।"

स्वरूप रानी डॉक्टर से, जो आ गया था, कुछ कह रही थी। नीला आकर कुर्सी पर बैठ गई और बैरा से बोली, "बन्सी! दो अंडे इधर लाओ।"

बन्सी को कुछ और कहने का अवसर नहीं मिला। अब ब्रजभूषण और रीता भी आ गए थे। सब परिवार के सदस्य बैठ गए तो डॉक्टर ने रामी को अपने समीप बुला कहा, "तुम इधर मेरे पास बैठो।"

रामी अपनी कुर्सी, जो ब्रजभूषण और स्वरूप रानी के बीच थी, उठाकर डॉक्टर और रीता के बीच ले आई।

रीता रामी से अधिक अलसाई हुई प्रतीत होती थी। उसने अभी स्नान भी नहीं किया था। रीता ने रामी से कहा, "मैं आज पार्टी कार्यालय में नहीं

जा रही। मेरी तबियत खराब मालूम होती है।"

डॉक्टर ने रामी से कहा, "देखो रामी ! तुम ने आज मेरे स्टडी-रूम की सफ़ाई करनी है।"

रामी दोनों की बातों में कुछ रहस्य समझती थी। वह चुपचाप अण्डे छीलती रही। बैरा ने पौरिज उसके सामने डाला तो मुस्कराया और पूछने लगा, "और लोगी रामी ?"

"हाँ, और डालो।"

"यहाँ शोभा पाती हो !"

डॉक्टर रीता के विषय में स्वरूप रानी से पूछ रहा था, "रीता को क्या है आज ?"

"सिर दर्द बताती है।"

"रीता ! क्या बात है ?" इस समय रामी बन्सी को कह रही थी, "बदतमीज़ ! पौरिज नीचे गिरा रहे हो।"

बैरा रामी की आँखों की ओर देख रहा था। डॉक्टर ने रामी की बात सुनी तो बैरा की ओर देखा और उसे इस प्रकार काम बिगाड़ते देख पूछा, "बन्सी ! क्या हो गया है तुमको आज ?"

उसको विवश सावधान होना पड़ा। उसने कहा, "क्षमा करिए साहब। ध्यान चूक गया था।"

डॉक्टर ने रामी को देखा तो उसे भी उसकी आँखें भारी प्रतीत हुईं। इस पर डॉक्टर ने बन्सी को कहा, "छोड़ दो। जाओ सीताराम को भेज दो। तुम काम नहीं कर सकते।"

इसके पश्चात् कोई उल्लेखनीय बात नहीं हुई। रीता अपने कमरे में जा सो रही। डॉक्टर ने रामी के हाथ एक खुराक दवाई भेजी तो उसने रामी को कहा, "गुसलखाने में फेंक दो। तुम तो जानती हो कि मैं बीमार नहीं हूँ।"

"पर दीदी ! वह था कौन ?"

"कोई था। न जाने कैसे मेरे कमरे में घुस आया था। हल्ला होता

तो बदनामी हो जाती।''

रामी का मस्तिष्क अभी भी शान्त नहीं हुआ था। वह चाहती थी कि डाक्टर साहब से सब बात बता दे। इस कारण वह उनसे पृथक् मिलने के लिए स्टडी-रूम की सफाई करने दिन के ग्यारह बजे गई। उस समय तक डाक्टर अपने रोगियों को देखने में लगा रहता था।

डाक्टर अपने काम से अवकाश पा जब स्टडी-रूम में पहुँचा तो रामी किताबें और सामान झाड़ रही थी। डाक्टर ने उसे इसी मतलब के लिए बुलाया था। डाक्टर ने पूछा, "आज रीता के मुख पर थकावट प्रतीत होती थी। रात तुम दोनों किस समय लौटी थीं?"

हम तो रात के खाने से पहिले ही आ गए थे। खाना यहाँ खाया था। पश्चात् रीता दीदी अपने सोने के कमरे में चली गई थीं। परन्तु पापा! वे रात-भर सोई प्रतीत नहीं होतीं।''

इसके पश्चात् प्रातः चार बजे वाली बात उसने बता दी। डाक्टर का मुख इस बात को सुन विवर्ण हो गया। उसने पूछा, "तुम उसको जानती हो?"

"नहीं! मैंने उसको पहले कभी नहीं देखा।"

"रीता से पूछा था कि वह कौन है?"

"पूछा था, परन्तु उसने बताया नहीं।"

"वह कैसे कोठी में घुस आया होगा।"

"रात को तो वह आया नहीं। चौकीदार रात के दस बजे ही फाटक पर जा बैठता है। वह अवश्य सायंकाल आपसे मिलने का बहाना कर आया होगा और किसी प्रकार अवसर पा भीतर जा पहुँचा होगा।"

डाक्टर गम्भीर विचार में कुर्सी पर बैठ गया। फिर कुछ विचार कर बोला, "यह आज बन्सी को क्या हो गया था?"

"वह बहुत बदमाश होता जा रहा है। कई दिन से मुझसे हँसी-मज़ाक करता रहता है।"

"क्या कहता है?"

"कहता है कि मुझसे विवाह करलो।"

"और तुम क्या कहती हो?"

"पापा! मैंने आपको बताया तो था।"

"पर रामी विमल अभी बहुत छोटा है। वह पढ़ाई में संलग्न है और अभी दस वर्ष से अधिक काल तक पढ़ेगा। इतना पढ़ जाने पर वह तुमको पसन्द करेगा भी या नहीं। कहना कठिन है।"

रामी आँखें नीचे किये सामने खड़ी थी। उसका मुख ताँबे की भाँति लाल हो रहा था। उसे चुप देख डाक्टर ने पूछा, "क्या कहती हो तुम रामी?"

रामी ने धीरे-धीरे कहा, "मेरे भाग्य में जो होगा सो सहूँगी। मैं विवाह नहीं करूँगी।"

"पर रीता बनना चाहती हो तुम?"

"वह पढ़ी-लिखी है। धनी बाप की बेटी है। मैं तो भिखारी की लड़की हूँ। वैसा कैसे कर सकती हूँ। संसार मुझको नोच-नोच खा जायगा।"

"अच्छी बात, जाओ। मगर एक बात याद रखो! जब तक तुम अठारह वर्ष से कम आयु की हो, हम तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं। अठारह वर्ष से बड़ी लड़की की हम कुछ भी सहायता नहीं कर सकते। तब तुमको अपनी मर्यादा स्वयं सम्भालनी होगी।"

रामी जानती थी कि रीता की आयु बीस वर्ष से ऊपर हो चुकी है। वह बिना कुछ उत्तर दिये बाहर आ गई। वह अपने कमरे में जा रही थी कि बन्सी डाक्टर साहब के 'क्लिनिक' में से बाहर निकलकर बरामदे में खड़ा मिल गया। वह रामी का मार्ग रोक पूछने लगा, "रामी! वह कौन था जो रात तुम्हारे पास रहा है?"

"बकवास न करो।" रामी ने उसकी आँखों में घूरकर देखते हुए कहा। इस पर बन्सी ने मुस्कराते हुए कहा, "उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे!"

रामी ने एक चपत उसके मुख पर जोर से दे मारी। और कहा, "बद-

माश का बच्चा ! हट जाओ एक तरफ।"

बन्सी अभी गाल को हाथ से मल ही रहा था कि डॉक्टर वहाँ आ पहुँचा। रामी डॉक्टर को देख कोठी के पिछवारे की ओर चल दी। बन्सी भी वहाँ से खिसक जाना चाहता था, परन्तु डाक्टर ने उसको बुला लिया।

"बन्सी ! इधर आओ।"

बंसी घबरा गया। वह नहीं जानता था कि उसको लगी चपत किसी ने देखी है। एक क्षण में ही वह सम्भल गया और मन में निश्चय कर कि डॉक्टर को वह प्रातः कोठी से निकाले गये आदमी की बात बता देगा, जिससे वे रामी को निकाल देंगे, वह डाक्टर के सामने जा खड़ा हुआ। डाक्टर ने पूछा, "तुम्हारा कितने दिन का वेतन शेष है ?"

"बीस दिन का हज़ूर !"

"महीने का क्या वेतन पाते हो ?"

"पच्चीस रुपया महीना।"

डाक्टर उसको कार्यालय में ले गया। वहाँ जा उसने पैंसिल कागज़ ले, उसका बीस दिन का वेतन गिन डाला और सोलह रुपये ग्यारह आना गिन मेज़ पर रख कहने लगा, "तुम अभी अपना सामान ले कोठी से निकल जाओ।"

"पर हज़ूर ! मैंने क्या अपराध किया है ?"

"तुमने रामी को क्या कहा है ?"

"तो सब बता दूँ ! नाराज़ न हों तो कह दूँ ?"

"क्या कह दोगे ? क्या मैं जानता नहीं कि वह प्रातः चार बजे किसी को कोठी से बाहर करने गई थी ?"

"हाँ सरकार ! वह रात-भर रामी के कमरे में रहा है।"

"बकवास बन्द करो। वह रात-भर मुझसे ब्रिज खेलता रहा है। अब तुम निकल जाओ।" इतना कह डॉक्टर ने घण्टी बजाई। चपरासी आया तो उसने कहा, "बन्सी को नौकरी से निकाल दिया है। देखो यह अभी यहाँ से निकल जाय।"

चपरासी ने उसकी बाँह पकड़ी तो वह बोला, "पर साहब ! एकदम निकाल दिया है । एक महीने का नोटिस तो···।"

डॉक्टर को क्रोध चढ़ आया । उसने छड़ी, जो कार्यालय में रखी रहती थी, उठाते हुए कहा, "निकल जाओ यहाँ से, नहीं तो पीटे जाओगे । नोटिस शरीफ आदमियों के लिए होते हैं न कि चोर-गुण्डों के लिए ।"

बन्सी को चपरासी धकेलकर बाहर ले गया और उसका बिस्तर, कपड़े उठाकर कोठी के बाहर फेंक दिये । प्रातः चार बजे जाने वाले आदमी का रहस्य सब कर्मचारियों पर इस रूप में प्रकट हुआ कि डॉक्टर साहब से उनका एक मित्र रात-भर ब्रिज खेलता रहा है । वही बाहर गया था ।

: १३ :

डॉक्टर राधाकृष्ण बन्सी को निकाल रोगी देखने चला गया । वह विचार रहा था कि दोपहर का खाना खाने के पश्चात् रीता से रात की घटना के विषय में बात करेगा, परन्तु उस समय से पूर्व ही मजीद रीता से मिलने आया । उसका मुख विवर्ण हो रहा था और वह जल्दी में था । ड्रॉइङ्ग-रूम में रीता से भेंट हुई । रामी भी, जो रीता के पीछे परछाईं की भाँति लगी रहती थी, वहाँ आ पहुँची । इस पर मजीद ने रामी से कहा, "रामी ! एक लैमोनेड तो ले आओ । डॉक्टर जी के 'फ्रिजेडीयर' में अवश्य लगी होगी ।" रामी को विवश जाना पड़ा । जब वह चली गई तो मजीद ने कहा, "रीता ! बहुत बुरा हुआ है ।"

"क्या ?"

"आज सवेरे मिल के मजदूरों की मीटिंग में अयोध्याप्रसाद हाजिर नहीं हो सका । उसमें मिल-मैनेजर ने पहले कहा कि अयोध्या प्रसाद आ रहा है । परन्तु जब वह नहीं आया तो खुद ही गाली वाली बात बताने लगा । मजदूरों ने उसकी एक नहीं सुनी । जब उसने बोलने की कोशिश की तो लोगों ने उस पर पत्थर फेंके । सभा बन्द कर दी गई ।

"सभा के पीछे मैनेजर के आदमी अयोध्याप्रसाद का पता करने

उसके घर गये और वहाँ पर उसकी पत्नी ने रात का सारा किस्सा सुनाया। उसने बताया कि रात के बारह बजे के लगभग कुछ लोग आये और उसके पति के मुँह में कपड़ा ठूँसकर उसे पकड़कर ले गये हैं। अयोध्याप्रसाद की बीवी ने पड़ोसियों से कहा कि पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दें। मानक सवेरे रिपोर्ट लिखवाने के लिए घर से गया भी पर रिपोर्ट नहीं लिखवाई।

"जब मैनेजर को इस बात का पता लगा तो वह खुद अयोध्याप्रसाद के घर पहुँचा और उसकी बीबी को साथ लेकर थाने में रिपोर्ट लिखवाने गया। वहाँ पता लगा कि मानक रिपोर्ट नहीं लिखवा गया। जब यह रिपोर्ट लिखवा रहे थे तब अयोध्याप्रसाद की लाश पुलिस-थाने में पहुँच गई और अयोध्याप्रसाद की बीवी ने उसे पहचान लिया है।"

"लाश ! अयोध्याप्रसाद की ! किसने मार डाला है उसको ?"

"किसी ने नहीं मारा। उसको मेरे आदमी टेक्सी में लादकर सीदीपुरा के एक मकान में ले गए थे। वहाँ उन्होंने उसको एक मकान की ऊपर की मंजिल में बन्द कर दिया था। उनको हुक्म था कि रात को उसको छोड़ दें।

"लेकिन अयोध्याप्रसाद लगभग साढ़े दस बजे दरवाजा तोड़ मकान की छत पर जा पहुँचा और वहाँ से नीचे आने का रास्ता न पा मकान की चौथी छत पर से कूद पड़ा। बद्किस्मती से वह सिर के बल गिरा। गिरते ही उसका सिर चकनाचूर हो गया और वह मर गया।

"उसके छत से गिरते ही सैकड़ों लोग इकट्ठे हो गए। पुलिस आ गई और लाश लोगों के साथ थाने में पहुँच गई है। मेरे आदमी, जिन्होंने अयोध्याप्रसाद को उड़ाया था, दिल्ली छोड़ भाग गए हैं।"

रीता इस दुर्घटना को सुन विस्मय में मुख देखती रह गई। इस समय रामी ग्लास में लैमोनेड लेकर आ गई। मजीद ने ग्लास हाथ में ले लिया और रामी को कहा, "तुम जरा यहाँ से चली जाओ।"

रामी इससे मन-ही-मन जल-भुन गई, परन्तु रीता को मजीद के कहने का समर्थन करते देख वहाँ से टल गई। रीता ने पूछा, "अब क्या होगा ?"

"जिस मकान से अयोध्याप्रसाद ने छलाँग लगाई है, वह मेरे मुन्शी का है। वह शायद पकड़ा गया होगा। यदि वह कुछ बक गया तो भारी नुक्सान हो सकता है।"

"मुन्शी को विदित है क्या कि अयोध्याप्रसाद क्यों पकड़ा गया था?"

"वह उसको पकड़ने के लिए गये हुओं में से एक था।"

"क्या वह जानता है कि आपका इसमें कोई सम्बन्ध है?"

"मैंने ही तो मुन्शी को सब कुछ करने का हुक्म और खर्चे के लिए रुपया दिया था।"

"मजीद! कुछ दिनों के लिए यहाँ से टल जाओ।"

"पर पीछे मुन्शी की देखभाल कौन करेगा? उसको जमानत पर छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए और फिर उसको बकने से रोकना चाहिए।"

"यह काम आपका नहीं। कोटलवाल को कहकर किसी मिल-कर्मचारी की नियुक्ति इस बात पर लगवा देनी चाहिए। वह मुन्शी को हवालात में मिलकर बकने से रोके।"

"तो यह काम तुम करना। मैं आज ही कलकत्ता चला जाता हूँ। वहाँ जाकर तुमको अपना पता लिखूँगा। तुम मुकम्मल हालात लिखती रहना।"

मजीद को विदा कर रीता रामी को साथ लेकर पार्टी-कार्यालय में जा पहुँची। वहाँ प्रीतमकौर थी परन्तु कोटलवाल का कहीं पता नहीं था। रीता सायंकाल के छः बजे तक कोटलवाल की प्रतीक्षा करती रही और जब वह नहीं आया तो कोठी में लौट आई। उसके आने से पहले डॉक्टर क्लब चला गया था।

स्वरूप रानी ने रीता से पूछा, "कहाँ गई थी तुम? तुम्हारे पापा तुमसे मिलना चाहते थे।"

"क्या कहते थे?"

"मुझको कुछ नहीं बताया। पर तुम घर पर बैठ नहीं सकती क्या?"

"मम्मी! बहुत जरूरी काम था।"

"तुम ठीक नहीं कर रही रीता ! अभी भी समय है, सँभल जाओ।"

"क्या है माँ ? क्या किया है मैंने ?"

"यह तो तुम्हारे पिता ही बतायेंगे।"

रात के आठ बजे रीता ने रामी को भेजा कि वह कोटलवाल से मिल-कर उसे एक पत्र दे आए। परन्तु उस समय तक पुलिस ने कार्यालय पर अधिकार कर लिया था और रामी कान्स्टेबलों को वहाँ बैठा देख लौट आई।

अगले दिन प्रातःकाल अयोध्याप्रसाद के विषय में समाचारपत्रों में यह बात छपी, 'मालिकों से आयोजित मिल-कर्मचारियों की एक सभा में यूनियन के प्रधान अयोध्याप्रसाद यह घोषणा करने वाले थे कि मैनेजर ने उसको गालियाँ नहीं दीं। सभा होने से पहले आधी रात को ही अयोध्याप्रसाद को, चार आदमी उसके घर में घुसकर, उठाकर ले गए। मीटिंग में अयोध्या-प्रसाद उपस्थित नहीं हो सका और मैनेजर पर झूठा कहकर, सभा में उप-स्थित कर्मचारियों ने पत्थर फेंके।

'अयोध्याप्रसाद सीदीपुरा के एक मकान से गिरकर मर गया। यह कहा जाता है कि उसे मकान की छत पर ले जाकर धक्का दे दिया गया है। वह मकान जिस पर से अयोध्याप्रसाद गिरा कहा जाता है, कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रमुख सदस्य मुहम्मद मजीद के मुन्शी का है। मुन्शी पुलिस का बन्दी है और कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय पर पुलिस ने अधिकार कर लिया है। कम्युनिस्ट पार्टी की क्लर्क, प्रीतमकौर भी पकड़ ली गई है। पार्टी के अन्य सदस्यों के भी वारंट निकल चुके कहे जाते हैं।'

यह समाचार रीता ने पढ़ा और उसने विचार किया कि वह भी कुछ दिनों के लिए दिल्ली छोड़ कहीं बाहर चली जावे। वह रामी को साथ ले जाना चाहती थी और रामी ने यह योजना डॉक्टर साहब से बता दी। डॉक्टर ने भी समाचार पढ़ा था। वह समझ गया कि रीता का भी इसमें हाथ हो सकता है। वह नगर छोड़ भाग जाने को ठीक नहीं समझता था। इस कारण पूर्ण वृत्तान्त जानने के लिए वह रीता के कमरे में जा पहुँचा। रीता

अपने होल्डाल में कपड़े बाँध रही थी। रामी उसकी सहायता कर रही थी। डॉक्टर ने कमरे में प्रवेश कर, तैयारी देखी और पूछा, "किधर की तैयारी है रीता ?"

"पापा ! बम्बई की सैर के लिए मन करता है।"

"रीता ! तुम क्या मूर्ख समझती हो मुझको ?"

रीता को इतनी-मात्र डाँट भी कभी नहीं पड़ी थी। वह पिता को नाराज जान चुप कर गई और विस्मय में उनका मुख देखने लगी। डॉक्टर ने कहा, "मैंने समाचार-पत्र में अयोध्याप्रसाद की बात पढ़ी है।"

रीता अभी भी चुपचाप खड़ी थी। इस पर डाक्टर ने पूछा, "क्या यह सत्य है कि कम्युनिस्ट पार्टी ने यह हत्या की है ?"

"हत्या करने का विचार नहीं था। इस पर भी यह हो गई है।"

"मुन्शी तुम को जानता है क्या ?"

"जानता तो है पर उसको यह विदित नहीं कि मैं अयोध्याप्रसाद को बन्दी करने वालों में हूँ।"

"इस प्रकार भागकर जाने से तो तुम निश्चय अपराधी बन जाओगी।"

"तो क्या किया जावे ?"

"तुम घर से बाहर नहीं निकलो। शेष मैं समझ लूँगा।"

"पर पापा !" रीता ने कुछ उत्साहित हो कहा, "मुन्शी ने क्या-क्या कह डाला है, कैसे पता चले ?"

"मैं पता करने का यत्न करूँगा, परन्तु शर्त यह है कि तुम घर से बाहर मत निकलो।"

"सिनेमा देखने भी नहीं ?"

"नहीं, और किसी को घर में आने भी नहीं देना। एक और बात, रात को माँ के कमरे में सोया करो।"

"पर पापा !······।"

"बस ! ऐसा करना होगा। नहीं तो तुम जानो तुम्हारा काम जाने।"

रीता चुप रही, परन्तु उसने पिता की आज्ञा को स्वीकार नहीं किया।

मन में उसने समझ लिया कि समय पर जो उचित होगा करेगी।

डाक्टर का विचार था कि रीता का नाम मुन्शी ने नहीं लिया होगा। यदि लिया होता तो वह इस समय तक पकड़ ली गई होती। इस पर भी उसने पहले मिल के मैनेजर से, जो उस की चिकित्सा में रह चुका था, भेंट की। उससे उसको मुन्शी से कही गई बातों का पता चल गया। मुन्शी ने मजीद, कोटलवाल, प्रीतमकौर और तीन मिल के कर्मचारियों का, जिन में मानक भी सम्मिलित था, नाम लिया था। इनमें से मानक और प्रीतम-कौर तो पकड़ लिये गए थे और शेष लापता थे।

इसके पश्चात् डाक्टर ने सुपरिन्टैंडेण्ट पुलिस, जो इस हत्या की जाँच में लगा था, से बातचीत की। वह डाक्टर साहब की चिकित्सा में था। उसने सुपरिन्टैंडेण्ट से स्पष्ट कह दिया, "अयोध्याप्रसाद को चुरा ले जाने और पीछे जो कुछ हुआ उससे दो-चार कम्युनिस्टों का सम्बन्ध हो तो हो। सब सदस्य इस बात से सम्बन्ध नहीं रखते। मेरी लड़की भी इस पार्टी की मेम्बर है और खाँ सहाब! जरा उसका ख़याल रखियेगा।"

खाँ साहब सब बात अच्छी तरह समझते थे। इस कारण उन्होंने कह दिया, "डाक्टर साहब, मुझको सब मालूम है। प्रीतमकौर सब बक गई है। उसने बताया है कि अयोध्याप्रसाद के मुख में कपड़ा ठूँसने से दम घुट गया था और वह तो मोटर में ही मर गया था। पीछे उसको मकान की सबसे ऊपर की मंज़िल पर ले जाकर सिर के बल लुढ़का दिया गया। पोस्ट-मार्टम में डाक्टरों ने खोपड़ी टूटी देख, शेष जाँच करने की आवश्यकता अनुभव नहीं की।"

यह कहकर पुलिस-अधिकारी ने डाक्टर के कान के समीप मुख ले जा कर कहा, "हम को यह भी मालूम है कि एक अपराधी रात को आप की कोठी की दीवार फाँदकर, आपकी लड़की के कमरे में पहुँच गया था और रात भर वहाँ रहा है।"

डाक्टर का मुख विवर्ण हो गया। इस पर भी उसने दिल कड़ा कर कहा, "यह कहानी किसने बताई है आप को?"

"प्रीतमकौर ने। वह उसका प्रेमी था, परन्तु आपकी लड़की के सामने तो प्रतीमकौर मट्टी का ढेला दिखाई देती है। ईर्ष्यावश वह सब बक गई है। इस पर भी मैं आश्वासन देता हूँ कि आप का नाम इसमें नहीं आयेगा।"

: १४ :

डाक्टर राधाकृष्ण कहने को तो कह आया, "खां साहब! मैं इस सब कहानी में कोई तथ्य नहीं पाता। इस पर भी आपका, इस भारी कृपा के लिए धन्यवाद करता हूँ। कोई सेवा मेरे योग्य हो तो बताइयेगा।"

परन्तु वह अपनी लड़की की इस प्रकार की ख्याति से अत्यन्त चिन्तित प्रतीत होने लगा। घर पर आ उसने रीता को बुला कर थानेदार की कहानी बता दी और पूछा, "कौन था वह?"

"कौन कौन था?"

"जो पिछली रात तुम्हारे कमरे में सोया था। वह कातिल है। उसने अयोध्याप्रसाद के मुख में कपड़ा इतने जोर से ठूँसा था कि उसका दम घुट गया और वह मर गया। पश्चात् वह भागकर इस कोठी में घुस आया और शेष रात तुम्हारे कमरे में सोया था।"

डाक्टर यह सब वृत्तान्त बताते हुए सिर से पाँव तक क्रोध से काँप रहा था। रीता अत्यन्त भयभीत थी। उसके मस्तक पर पसीने की बूँदें दिखाई देने लगी थीं। इस पर भी यह विचार कर कि उसको कोठी से बाहर करने की कहानी डाक्टर नहीं जानते, उसने फिर पिता को धोखा देने का यत्न किया। उसने कहा, "पिताजी! वह रात-भर रामी के कमरे में सोया था। मुझको तो जब वह चला गया तो पता चला था।"

डाक्टर इससे और भी आग-बबूला हो गया। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि रीता घोर पतन के गर्त में जा चुकी है। वह पग-पग पर झूठ बोल रही है। उसने कहा, "रीता! तुम यह सब झूठ किस कारण बोल रही हो? तुम क्या समझती हो कि मैं कुछ नहीं जानता। देखो! यदि तो तुमने इस घर में रहना है तो तुम्हारा विवाह पन्द्रह दिन में हो जाना

चाहिए। बताओ वह कौन है, जिससे तुम विवाह करना चाहती हो। यदि वह मुझको भी पसन्द हुआ तो तुम्हारा विवाह उससे कर दूँगा, अन्यथा मुझ को तुम्हारे लिए लड़का ढूँढना पड़ेगा।"

डाक्टर इतना कह वहाँ से अपने कमरे में चला गया। रीता डाक्टर के चले जाने के पश्चात् पूर्ण बात पर विचार करने लगी। पुलिस को प्रीतम-कौर ने हत्यारे के उसके कमरे में आने की बात बता दी है। पुलिस-अधिकारी ने पापा से कह दी है और पापा अब उसको पन्द्रह दिन में विवाह करने की बात कह रहे हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि पुलिस अधिकारी को कुछ ले-देकर मुख बन्द कर दिया गया है। इससे वह निश्चिन्तता अनुभव करने लगी। अब प्रश्न विवाह का रह गया था। अभी तक उसका सम्बन्ध पार्टी के दो-तीन सदस्यों से हो चुका था। यह सम्बन्ध केवल विनोद के विचार से था। इन सदस्यों को वह विवाहित-पति के रूप में स्वीकार करने के लिए कभी भी तैयार नहीं थी। वे प्रायः निर्धन और कम शिक्षित थे। अपनी शिक्षा और पैसे के कारण वह अपने को उन सबसे श्रेष्ठ मानती थी। उसके पिता कैसा लड़का ढूँढेंगे और वह उसको कितनी स्वतन्त्रता प्रदान करेगा, अब उसके लिए यही चिन्ता का विषय रह गया था।

उस सायंकाल डाक्टर ने रीता को बुलाया। उस समय स्वरूप रानी भी वहाँ उपस्थित थी। डाक्टर ने उससे पूछा, "मेरे प्रश्न का क्या उत्तर है, रीता?"

"किस प्रश्न का पापा?"

"विवाह के विषय में।"

"मैं किसी ऐसे लड़के को नहीं जानती, जिससे मैं विवाह करने में अपने को तैयार कर सकूँ।"

"तो फिर यह काम मुझको करना होगा।"

रीता आँखें नीचे किये बैठी रही। इस पर स्वरूप रानी ने कहा, "लड़का तो हमारे विचार में एक है। वह इकौनोमिक्स में एम० ए० है। एक स्कूल में पढ़ाता है। आयु पच्चीस-छब्बीस वर्ष की है। देखने में सब

प्रकार से स्वस्थ प्रतीत होता है।"

इस पर रीता ने कहा, "मुझको दिखा दीजिए।"

"तुम क्या देखोगी? यदि देखने की अक्ल तुममें होती तो तुम्हारी यह अवस्था न होती।"

अयोध्याप्रसाद की हत्या के मुकद्दमे में मजीद और कोटलवाल के वारण्ट निकल गये, परन्तु वे दोनों देश छोड़ चले गए। कोटलवाल और मजीद की कोई सम्पत्ति नहीं थी, जो सरकार उनके लापता हो जाने पर जप्त कर सकती। पीछे रह गये मुन्शी हमीद, प्रीतमकौर और मानक। मुन्शी हमीद सरकारी गवाह बन गया। प्रीतमकौर निर्दोष सिद्ध हो छूट गई। मानक दोषी सिद्ध हुआ और दस वर्ष के कठोर दण्ड का भागी बना।

तीन

: १ :

परिस्थिति से विवश रीता अपने विवाह के लिए मान गई। कोटलवाल और मजीद के हत्या-दण्ड से बचने के लिए देश त्याग देने से रीता के लिए कम्युनिस्ट पार्टी में कोई आकर्षण नहीं रहा और इधर माता-पिता के निरन्तर दबाव के कारण विवाह कर लेना ही एक मार्ग रह गया। नैनीताल में लड़कों के सरकारी स्कूल के हैडमास्टर देवीदत्त किचलू को रीता के पति होने के लिए निर्वाचित किया गया। किचलू परिवार स्वरूप रानी के माता-पिता के परिचितों में से था और जब रीता के लिए शीघ्र ही पति ढूँढने का प्रश्न उपस्थित हुआ तो देवीदत्त एक देखा-भाला युवक होने से स्वीकार कर लिया गया।

यूँ तो देवीदत्त दो सौ रुपया वेतन लेता हुआ अपने को गृहस्थ का बोझा सहन करने के योग्य नहीं समझता था, परन्तु जब देवीदत्त की फूफी ने उसको समझाया कि लड़की पढ़ी-लिखी है और स्वर्गलोक की अप्सराओं के समान सुन्दर है, तो वह तैयार हो गया।

बिना भावी पति-पत्नी के एक-दूसरे को देखे ही विवाह का निश्चय हो गया। देवीदत्त ने पूछा भी, "बूआ! गृहस्थी चालू करने को कुछ धन मिलेगा भी?"

"देखो बेटा देवीदत्त! माँगने से तो हेठी हो जाती है और जीवन-भर के लिए मनुष्य बदनाम हो जाता है। इस विवाह से एक धन की खान

तुम्हारे सम्मुख खुल जायगी। अपना विश्वास जमा लो और तब उस खान में से जितना चाहोगे उठाकर प्रयोग में ला सकोगे। यह सब तुम्हारी चतुराई पर निर्भर है।"

देवीदत्त न केवल एम० ए०, बी० टी० था, साथ ही वह तीस वर्ष का एक अनुभवी पुरुष भी था। संसार को उसने आँखें खोलकर देखा था और जी भरकर इसका स्वाद चखा था। इस कारण अपनी बूआ की सम्मति का अर्थ समझ गया।

देवीदत्त के अपने माता-पिता नहीं थे। फूफी ने ही उसका पालन-पोषण किया था और उसके पिता की थोड़ी-सी सम्पत्ति से उसको उच्चतम शिक्षा दी थी।

स्वरूप रानी और राधाकृष्ण ने लड़के को देखा हुआ था। यूँ तो रीता को भी उसका कुछ धुँधला-सा स्मरण था, परन्तु दोनों में परस्पर मेल-मुलाकात अथवा बातचीत का अवसर नहीं आया था। इस कारण निश्चय हो जाने के पश्चात् देवीदत्त को डाक्टर ने एक सौ रुपये का मनीआर्डर भेजा कि वह दिल्ली में आकर विवाह की तिथि इत्यादि का निश्चय कर जाय।

देवीदत्त को भी अपनी फूफी के कथनानुसार स्वर्गीय अप्सरा को देखने की लालसा थी। अब भावी श्वसुर से बुलावा आने पर स्कूल अधिकारियों से छुट्टी ले दिल्ली आ पहुँचा। वह सीधा डाक्टर की कोठी पर ठहरने के लिए पहुँच गया।

कोठी की लान में रीता, रामी, नीला और विमल बैडमिंटन खेल रहे थे। देवीदत्त सीधा कोठी की ओर चला गया। उसका ध्यान बच्चों की ओर नहीं गया। वास्तव में वह डॉक्टर साहब से बातचीत करने के विषय में विचार कर रहा था। रीता ने एक आदमी को ताँगे में सामान लादे हुए आते देख समझ लिया कि कौन आ रहा है। इससे उसने खेल छोड़ उसको सिर से पाँव तक देखा। पाँच फुट दस इन्च लम्बा, गठा हुआ शरीर और भरा हुआ लम्बा चिकना मुख देख प्रथम प्रभाव उसके मन पर

अच्छा ही रहा। मजीद की भाँति उसकी रूप-रेखा तीखी नहीं थी, परन्तु काश्मीरी पण्डितों का गौर वर्ण इस त्रुटि को कम कर रहा था।

देवीदत्त ने अपने आने की भीतर सूचना भेजी तो डॉक्टर बाहर निकल आया और चपरासी को ताँगे से सामान उतारने के लिए कह उसे भीतर ले गया। स्वरूप रानी को भी बुला लिया गया। चाय-पानी का प्रबन्ध होने लगा और डॉक्टर साहब ने अनौपचारिक वार्तालाप आरम्भ कर दी, "मार्ग में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?···कल कब चले थे ? ··अभी कुछ खाया-पिया है या नहीं ?····कितने दिन की छुट्टी लेकर आये हैं···इत्यादि।

देवीदत्त ने एक-एक शब्द में ही इनका उत्तर दिया। इस पर स्वरूप-रानी ने कहा, "पूर्व इसके कोई बात की जावे, आप लड़की को देखना चाहेंगे क्या ?"

"बूआ ने उसकी बहुत प्रशंसा की है और मुझको उनपर पूर्ण विश्वास है।"

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा, "तब तो ठीक है। आप बिना उसको देखे उससे विवाह करने के लिए तैयार हैं न ? पर क्या आप कुछ दहेज इत्यादि की भी आशा करते हैं।"

"आप मुझको कोई गँवार-मूर्ख समझकर मेरे साथ व्यवहार कर रहे हैं। वास्तव में तो मैं यह विचार कर आया हूँ कि चार दिन की छुट्टी में एक दिन आने में और आज का दिन बात करने में चला जायेगा, कल आप विवाह कर देवीजी को मेरे साथ विदा कर दें।"

डॉक्टर लड़के को आडम्बर से ऊपर देख बहुत प्रसन्न हुआ। इस पर भी वह इतनी जल्दी करने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा, "हमको अपने सम्बन्धियों को बुलाना तो चाहिए ही और इसमें कुछ दिन लग जायेंगे।"

इस प्रकार सब सुगमता से निश्चित होते देख स्वरूपरानी ने कहा, "कुछ तो लड़की को विदा करते समय देंगे ही। यह अपनी मान-मर्यादा के अनुसार ही होगा। आपने माँगा नहीं तो इसका अर्थ यह नहीं कि

आपको कुछ हानि सहन करनी पड़ेगी।"

"माताजी!" देवीदत्त ने कह दिया, "वह आप अपने पास रख छोड़िये। कभी किसी समय जरूरत होगी तो हम ले लेंगे। अभी तो मैं कमाता हूँ और गुजर हो ही जायगा।"

"क्या वेतन पाते हो?"

"दो सौ रुपया मासिक, मकान और नौकर।"

डॉक्टर मुस्कराया। उसके लिए दो सौ रुपये की कुछ गणना नहीं थी। उसकी अपनी आय हजारों रुपया थी। इससे उसकी दृष्टि में देवीदत्त के सन्तोष की महिमा और भी बढ़ गई।

देवीदत्त ने तार द्वारा अपनी छुट्टी बढ़ा ली और यह निश्चय कर लिया कि विवाह कर ही वहाँ से जायगा। देवीदत्त के सम्बन्धी दिल्ली में नहीं रहते थे और उनको बाहर से मँगवाने में देवीदत्त का खर्चा होता था। इस कारण बरात इत्यादि का आयोजन नहीं किया गया।

एक दिन डॉक्टर राधाकृष्ण की कोठी में डॉक्टर के सम्बन्धी और देवीदत्त की बूआ के परिवार के लोग एकत्रित हो गये और रीता का देवीदत्त से विवाह हो गया। अगले दिन डॉक्टर ने अपनी कोठी में परिचितों को विवाह के उपलक्ष में दावत दी और तीसरे दिन रीता को साथ ले देवीदत्त विदा हो गया।

देवीदत्त दिल्ली में डॉक्टर साहब की कोठी में एक सप्ताह-भर रहा। उसने अपनी ओर से रीता को देखने की इच्छा प्रकट नहीं की। स्वरूपरानी ने रीता से कहा भी, "रीता! चलो तुमको उनसे मिला दूँ। घर में आये हैं तो न मिलने से अपमान अनुभव करने लगेंगे।"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझती। जीवन-भर मिलना ही है। मिलते रहेंगे।"

"तो तुमको वे पसन्द नहीं हैं?"

"मुझको वे नापसन्द नहीं हैं।"

"तुमने देखा है उनको?"

"हाँ, जब ताँगे से उतरे थे, देख लिया था।"

"तो मुलाकात कर उनके आचार-विचार का भी अनुमान लगा लो न।"

"क्या लाभ होगा, इससे? विवाह तो होगा ही। जैसे होंगे, निर्वाह करना होगा।"

माँ रीता के मन की इस अवस्था से कुछ प्रसन्न नहीं हुई। यह लज्जा नहीं थी। यह आत्म-समर्पण था। एक विचार से यह ठीक ही था। स्वरूप रानी के विचार से स्त्री इससे ही विजय प्राप्त करती है। इस पर भी यह रीता की स्वाभाविक बात नहीं थी और यही चिन्ता का कारण था।

दिन-भर देवीदत्त कमरे में बैठा पुस्तकें पढ़ता रहता था और डॉक्टर राधाकृष्ण के पुस्तकालय में इनकी कमी नहीं थी। प्रातः का अल्पाहार अपने कमरे में ही कर लेता। पश्चात् दिन-भर पढ़ता रहता अथवा अपने होने वाले श्वसुर से बातें करता रहता। दोपहर का भोजन केवल डॉक्टर जी के साथ उनके स्टडी-रूम में कर लेता। सायंकाल उनके साथ क्लब चला जाता और रात को आकर सो रहता।

इस प्रकार रीता से एक भी शब्द कहे बिना विवाह हो गया और विवाह के पीछे दोनों को एक ही कमरे में सोने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जब देवीदत्त विवाह पर आये सम्बन्धियों से छुट्टी पाकर कमरे में आया तो रामी उसकी शय्या को फूलों से सजा रही थी। रामी तो उससे कई बार मिल चुकी थी। प्रायः प्रातः का अल्पाहार वही कराया करती थी।

"यह क्या कर रही हो रामी?" देवीदत्त ने कुछ बात करने के लिए पूछ लिया।

"श्रीमान् को अधिक-से-अधिक प्रसन्न करने का यत्न कर रही हूँ।"

"क्यों? इसकी आज आवश्यकता क्यों पड़ी है?"

"अपने मन से पूछिये महाराज! मैं बेचारी क्या जानूँ। मुझको तो मम्मी ने भेजा है। सो उनका आदेश पालन कर रही हूँ।"

"अच्छा रामी! तुम अपनी मालकिन के साथ चलोगी न?"

"यह दीदी की इच्छा पर है।"

"तुम्हें तो आपत्ति नहीं न ?"

"मैं नौकरानी हूँ। मालिक की सेवा करना मेरा काम है। वे कहेंगी तो न कैसे कर सकती हूँ।"

"और यदि मैं कहूँ तो ?"

"आपकी बहुत कृपा है। इस पर भी दीदी और मम्मी की आज्ञा के बिना कैसे चल सकती हूँ ?"

"पर तुम्हारी दीदी तो आ ही नहीं रही। अब तो," उसने कलाई के साथ बँधी घड़ी देखते हुए कहा, "रात के बारह बज रहे हैं।"

"दीदी की सहेलियाँ आई हुई हैं और वे उसको छोड़ें तो आ सकती हैं।"

"कठिनाई यह है कि मेरा कोई सखा नहीं। नहीं तो उसको प्रतीक्षा करनी पड़ती।"

रामी ने मुख गोल कर और आँखें चौड़ी कर कहा, "बहुत दयनीय दशा है जीजाजी! मैं जाकर दीदी को बताती हूँ कि आप अब अधिक विरह सहन नहीं कर सकते।"

यह कह रामी हँस पड़ी और पलंग पर तकिये ठीक कर जाने लगी तो देवीदत्त ने उसको बाँह से पकड़ रोक लिया। रामी ने भयभीत हो उसकी ओर देखा तो देवीदत्त ने कहा, "तो तुम भी भागी जा रही हो ?"

"नहीं सरकार! मैं दीदी को बुलाने जा रही हूँ।"

"वह अब क्या आयेगी! आधी रात तो निकल गई है।" इतना कह उसने रामी की कमर में हाथ डाल अपनी ओर खींचना चाहा। पर रामी ने एक चपत मुख पर दे मारी। देवीदत्त ने उसकी बाँह को छोड़ दिया और अपनी गाल को मलने लगा। रामी कमरे के दरवाजे के समीप खड़ी हो बोली, "जीजा जी! क्षमा करना। साली के प्यार से नाराज न हो जाना।"

इतना कह वह भाग गई। देवीदत्त विचार करता था कि इस घर में नौकरानियों तक का इतना साहस है। न जाने मालिक कैसे होंगे। तुरन्त

उसके मन में विचार आया कि यह बात किसी से कहने की नहीं । यदि वह रीता को मना सका कि वह रामी को साथ ले चले तो फिर इस चपत का बदला ले लेगा ।

: २ :

अगले दिन विदा होने से पूर्व रीता माँ के पास गई और रामी को साथ ले जाने के लिये कहने लगी । स्वरूप रानी मान गई, परन्तु डॉक्टर ने न कर दी । स्वरूप रानी इसका कारण नहीं समझ सकी । इस पर डॉक्टर ने कहा, "रामी को बुलाकर पूछ लो । यदि वह अपनी इच्छा से जाना चाहे तो जा सकती है । मैं न तो स्वयं उसको जाने की आज्ञा दूँगा, न ही तुमको इस विषय में आज्ञा देने दूँगा ।"

"क्यों, क्या वह नौकरानी नहीं है ?"

"है, पर मैं उसको उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करने को नहीं कहूँगा ।"

"तो आपने उससे पूछा है क्या ?"

"हाँ ! वह न कर चुकी है ।"

"तो मैं उसको घर से निकाल दूँगी । ऐसे नौकर से लाभ ही क्या है !"

"मैंने उसको इस कोठी के काम के लिए नौकर रखा है । जब तक वह यहाँ का काम ठीक प्रकार से करती रहेगी वह नौकर रह सकती है ।"

"मुझको उसकी आवश्यकता नहीं है ।"

"मुझको आवश्यकता है ।"

"तो उसको अपने पास रख लो । मैं अन्तःपुर में उसको नहीं आने दूँगी ।"

"मैं कोठी में एक नया अन्तःपुर बना लूँगा ।"

स्वरूप रानी से पहले भी डाक्टर का मतभेद हो जाया करता था । इससे स्वरूप रानी सुखी नहीं थी । डाक्टर उसको मूर्ख मान चुप रह जाया करता था । परन्तु आज बात बहुत बढ़ गई थी । स्वरूप रानी ने डाक्टर पर

रामी से विशेष सम्बन्ध का आरोप लगाया था और डाक्टर ने उसका अपने विचार से उचित ही उत्तर दे दिया था। स्वरूप रानी अपने पति से निराश हो सीधा रामी से बात चीत करने चली गई। रामी, नीला और रीता की कुछ सखियाँ देवीदत्त को घेरे बैठी थीं। वह नैनीताल जाने के लिए तैयार बैठा था और रीता तैयार होने अपने कमरे में गई हुई थी। स्वरूप-रानी वहाँ गई तो ये लड़कियाँ देवीदत्त की गत बना रही थीं। कोई उसको रीता की जूती लाकर दे रही थी और कह रही थी, "जीजाजी! यह अपने सूटकेस में रख लीजिए। कहीं छूट न जाय।"

दूसरी कहती, "यह कोट तो आपको छोटा है। किसी मित्र से मांग-कर लाये हैं।"

वह अभी उत्तर देने ही लगा था कि रामी ने कह दिया, "जीजाजी यह बाईं गाल को क्या हुआ है? यह दाहिनी से कुछ अधिक लाल प्रतीत होती है।"

"दीदी ने मारा होगा।" एक लड़की ने कह दिया।

"नहीं......।" देवीदत्त कुछ कहना चाहता था, परन्तु रामी ने बात बीच में ही काट कर कह दिया,

"चुप! यह तो प्यार के चिह्न मालूम होते हैं।"

सब हँसने लगीं।

इस समय स्वरूप रानी आ गई। उसने आते ही कहा, "रामी! रीता कहाँ है?"

"अपने कमरे में कपड़े पहन रही है।"

"और तुम यहाँ क्या कर रही हो? जाओ न उसे तैयार कराओ।"

"दीदी ने यहाँ भेज दिया है। कहती थी, ज़रा इनका दिल बहलाऊँ।"

"अच्छा इधर आओ।"

रामी उसके साथ कमरे से निकल गई। वह उसको अपने सोने के कमरे में ले गई। वहाँ ले जाकर कहने लगी, "तुमको कुछ दिन के लिए रीता के साथ जाना है। तैयार हो जाओ।"

"मैं नहीं जाऊँगी।"

"तो यहाँ से नौकरी छोड़नी पड़ेगी।"

रामी घबराकर मम्मी का मुख देखती रह गई। इस पर स्वरूप रानी ने पूछा, "बताओ जाना चाहती हो या नहीं?"

"नहीं।" रामी ने उत्तर दिया। फिर कुछ विचारकर कहा, "आप कहेंगे तो कोठी छोड़ कहीं चली जाऊँगी।"

"कहाँ जाओगी?"

"मैंने पापा से बता दिया है।"

"क्या बता दिया है?"

"उनसे ही पूछ लीजिये।" इतना कह वह अपनी आँखों में उमड़ रहे आँसू छिपाने के लिए मुख मोड़ कमरे के बाहर की ओर घूम गई। स्वरूप-रानी ने उसकी बाँह पकड़ ली और कहा,

"कितनी कृतघ्न हो तुम!"

"सो तो नहीं मम्मी! पर यह काम मुझसे नहीं हो सकेगा।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि क्यों नहीं हो सकेगा?"

रामी बताना चाहती नहीं थी। वह डरती थी कि देवीदत्त की उच्छृङ्खलता की बात रीता को पता चल गई तो पति-पत्नी में द्वेष उत्पन्न हो जावेगा। इस कारण वह चुप थी। उसने सुख का साँस लिया, जब रीता वहाँ आ पहुँची। उसने आते ही कहा, "रामी! तुम तैयार नहीं हुई?"

उत्तर स्वरूप रानी ने दिया, "यह जा नहीं रही।"

रीता ने समझा कि उसकी मां रामी को भेजने के लिए तैयार नहीं। इस कारण उसके गले में बांह डालकर बोली, "मम्मी! भेज दो न।"

स्वरूप रानी ने कहा, "भेज दूँ? कैसे भेज दूँ? यह जाना नहीं चाहती। नौकरी छोड़ने को तैयार हो गई है।"

"क्यों रामी? चलती क्यों नहीं। तुम्हारे जीजा भी कामरेड हैं। बहुत अच्छी तरह से निभेगी।"

रामी चुप रही। रीता ने बांह पकड़कर कहा, "चलो न रामी!"

"दीदी नहीं। मैं दिल्ली से बाहर नहीं जा सकती।"

"क्यों ? 'लव अफेयर' है कोई ?"

"लव अफेयर ही समझ लें।" रामी मुस्कराई और चुप रही।

जब रीता अकेली देवीदत्त के साथ विदा हुई तो देवीदत्त ने पूछा, "रामी को क्या हुआ है ?"

"वह नहीं जा रही।"

इस समय तो देवीदत्त चुप रहा, परन्तु नैनीताल पहुँचकर पहिली बात जो दोनों के भीतर हुई, वह रामी के विषय में ही थी, "मैं गया था दिल्ली तुम से विवाह करने और मुहब्बत करने लगा हूँ रामी से।"

"आप अच्छे प्रगतिशील हैं, जो प्रेम को इतना महत्त्व देते हैं ? क्या यह सत्य नहीं कि प्रेम यौन-आकर्षण का दूसरा नाम है ?"

देवीदत्त इस उलहने से झेंप गया और उत्तर के लिए विचार करने लगा। रीता ने आगे कहा, "देखिये। मेरा आपसे यह समझौता हो चुका है कि हमारे विवाह ने हममें केवल 'कोमरेड-शिप' (साथी-पना) उत्पन्न किया है। इसमें यौन-सम्बन्ध हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। यह समय-समय पर परिस्थिति और मनकी अवस्था पर निर्भर है। हम दोनों इस बात पर सहमत थे और हैं। ऐसी अवस्था में आपको रामी के विरह में व्याकुल देख मुझको विस्मय हो रहा है।"

"देवी जी ! जो कुछ आपने कहा था, मैं उसको आज भी मानता हूँ। अन्यथा विवाह के पश्चात् अपनी पत्नी से पहली रात ही पृथक् सोने पर पश्चात्ताप करने लगता। परन्तु उस समझौते में यह बात तो नहीं थी कि मैं रामी से अथवा अन्य किसी से प्रेम भी नहीं कर सकता।"

"प्रेम तो आप कर सकते हैं, परन्तु मैं तो आश्चर्य इस बात पर कर रही हूँ कि आप, प्रिय-वस्तु न मिलने पर, गम्भीर साँस क्यों ले रहे हैं ?"

देवीदत्त हँस पड़ा और कहने लगा, "अच्छा देवी ! एक और भी बात थी, वह तुम भूल गई हो।"

"क्या ?"

"उस रात परस्पर यह निश्चय हुआ था कि तुम और मैं अपने स कुछ के आधे-आधे के हिस्सेदार होंगे।"

"ठीक है।"

"तो जो कुछ तुमको तुम्हारे माता-पिता ने दिया है, वह आधा मुझको दे दो।"

"और जो कुछ आपको अपने माता-पिता से मिला है ?"

"हाँ! वह भी बाँटना चाहिये।"

रीता को इस समझौते के अनुसार तीस हजार रुपया का, जो उसके पिता ने विदा होते समय दिया था, आधा देवीदत्त को देना पड़ा। देवीदत्त ने अपना बैंक-बैलेंस, जो पाँच सौ रुपये के लगभग था, रीता से बाँट लिया। भूषण और वस्त्र भी आधे देवीदत्त माँगता था। अपने पास उसकी एक सोने की घड़ी और अँगूठी थी, वह भी वह बाँटने को तैयार हो गया। परन्तु कुछ विचार कर यह निश्चय किया गया कि अभी एक-दो वर्ष तक यह बटवारा न किया जाय और इस पर दोनों का अधिकार माना जावे।

"और यदि सन्तान हो गई तो ?"

"वह मैं नहीं होने दूँगी।"

"इस पर भी सम्भावना तो है ही ?

"अच्छी बात है पहली सन्तान मेरी और दूसरी तुम्हारी। इसी प्रकार बारी-बारी से।"

"ठीक है।" यह कह देवीदत्त हँस पड़ा।

देवीदत्त बुद्धिवादी कम्युनिस्ट था। वह पुस्तकें पढ़कर साम्यवाद का उपासक हो गया था। इस पर भी वह क्रियाशील नहीं था। एक तो सरकारी स्कूल में हैडमास्टर होने के कारण और दूसरे प्रत्येक बात के सिद्धान्त पर अधिक बल देने के कारण, वह क्रियाशील साम्यवादी बन निर्वाह नहीं कर सकता था। रीता के कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध के विषय में उसको रीता से पहली भेंट के समय, जो विवाह के पीछे हुई थी, विदित हुआ था। उस रात जब रामी यह कह कि यह चपत साली का प्यार मान क्षमा करना,

चली गई, तो रीता आई। देवीदत्त खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। रीता शैया की सजावट देख सोचती रह गई। देवीदत्त उसे इस पर आश्चर्य करते देख, उसके कहने की प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में रीता ने पूछा, "यह किसने किया है ?"

"आपकी नौकरानी रामी ने ?"

"बहुत बदमाश हो गई है, यह लड़की।"

"पर वह कहती थी कि आपकी माताजी की आज्ञा से कर रही है।"

"माताजी तो प्राचीन विचार की स्त्री हैं। मैं यह पसन्द नहीं करती।"

"क्या पसन्द नहीं करतीं, देवीजी ?"

"आज मैं थकी हुई हूँ और सोना चाहती हूँ।"

"तो क्या सोने में फूल विघ्न डालेंगे ?"

"इसका भय श्रीमानजी से है। यदि आप अपने पर नियन्त्रण नहीं रख सकते तो मैं किसी दूसरे कमरे में जाकर सो रहती हूँ।"

"पर तुम्हारी सखी सहेलियाँ क्या कहेंगी ?"

"यदि कुछ कहेंगी तो अपनी मूर्खता प्रकट करेंगी।"

"पर मैं तो उनके वाक्यों को सहन नहीं कर सकूँगा।"

"तो भले मनुष्य की भाँति अपना पलंग कमरे के उस कोने में ले जाइये और सो रहिये।"

देवीदत्त को क्रोध चढ़ रहा था। एक तो देवीजी ने विवाह से पूर्व एक सप्ताह तक एक ही घर में रहने पर भी दर्शन नहीं दिये थे। सुहागरात को भी व्यर्थ में रात के एक बजे तक प्रतीक्षा कराई थी और अब भी उसको अपनी संगत से वंचित रखना चाहती थी। नौकरानी तो नौकरानी, मालकिन उससे भी बढ़कर निकली। एक बार तो उसके मन में आया कि रामी की चपत का बदला मालकिन पर ही निकाल ले। ठीक इसी समय उसको अपनी बूआ का कथन स्मरण हो आया। उसने कहा था, 'तुम्हारे सामने एक धन की खान खुल जायगी। अपनी चतुराई से जितना चाहना, उठा लेना।' इसके स्मरण आते ही उसने मन में विचार किया, 'आखिर यह

भागकर कहाँ जायगी ! कुछ रुपये-पैसे का भी विचार कर लेना चाहिए।' इस कारण वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। वह दोनों पलंगों में से एक को घसीटकर दूर दीवार के साथ ले गया और उसके ऊपर बैठकर बोला, "देवी जी ! पधारिये।"

रीता कमरे के बीच के पलंग पर बैठ गई। बोली, "आप समझदार व्यक्ति प्रतीत होते हैं। यदि ऐसी समझदारी करते रहे, तो जीवनभर निर्वाह सुगमता से हो जायगा।"

"मेरी समझदारी का परिचय तो देवीजी को उत्तरोत्तर अधिक होगा ही। इस कारण क्या मैं देवीजी से एक-दो समझदारी की बातें अभी कर सकता हूँ ?"

"हाँ ! शीघ्र करिये, नींद आ रही है।"

"आपने मुझसे विवाह किस अर्थ कराया है ?"

"पिता जी का कहना था कि युवा स्त्रियों को कोई संरक्षक चाहिये। इस काम के लिए पति की आवश्यकता होती है और पति लाने के लिए विवाह कराना पड़ता है।"

"यह तो ठीक है, पर पति का संरक्षण पाने के लिए कुछ देना भी तो पड़ता है। प्रायः स्त्रियाँ तो आत्म-समर्पण करती हैं। आप क्या देंगी ?"

"देखिये साहब !" रीता ने कुछ अकड़कर कहा, "मैं एक प्रगतिवादी स्त्री हूँ। यौन-सम्बन्ध को मैं आत्म-समर्पण नहीं मानती। यह तो कुछ देना नहीं। इसमें लेन-देन दोनों बने हैं और यह तब तक ही हो सकता है, जब सम्बन्ध के दोनों भागीदार इसकी इच्छा रखते हों। हाँ पति बनने के लिए और उसके उत्तरदायित्व को निभाने के लिए आपको, यदि कुछ चाहिए तो बताइये वह क्या होगा ?"

इस प्रकार देवीदत्त को पता चल गया कि कैसी स्त्री से उसका वास्ता पड़ा है। वह प्रगतिशील है। वह यौन-तृषा के विषय में तृप्त है और वह पति के संरक्षण की आवश्यकता रखती है। वह स्वयं भी सिद्धान्त से ऐसे ही विचार रखता था और मनुष्य के कार्य स्वार्थ की धुरी पर केन्द्रित

मानता था। इस कारण उसने कुछ विचारकर कहा, "मैं विवाह को जीवन में साझेदारी मानता हूँ। यह एक कारोबार है, जिसमें पति-पत्नी पत्तीदार हैं। इस कारण इस कारोबार में जो-कुछ आय हो अथवा व्यय हो, उसके दोनों बराबर-बराबर के भागीदार होते हैं।"

"मुझको स्वीकार है। अब आप सो जायें। मुझको नींद आ रही है।"

यह बातचीत थी, जो सुहागरात को हुई थी। उस समय रीता को विदित नहीं था कि उसके पिता उसको तीस हजार नकद देने वाले हैं और न ही उसको यह समझ आया था कि भूषण और वस्त्रों का भी बराबर-बराबर का बटवारा होगा।

: ३ :

रीता के विवाह के समय रामी को डाक्टर राधाकृष्ण के घर काम करते दो वर्ष हो चुके थे। डाक्टर जहाँ विमल के जीवन और उसकी आकांक्षाओं का अध्ययन कर रहा था, वहाँ वह रामी की बातों को भी अपनी डायरी में नोट कर रहा था।

उसको विदित था कि रामी विमल से विवाह करना चाहती है। उसको यह भी विदित था कि विमल के मन में एक उच्च कोटि का डॉक्टर बनने की आकांक्षा बनी हुई है। दोनों यह जानते हुए भी कि वे परस्पर प्रेम करते हैं और एक ही छत के नीचे रहते हैं, अपने को अछूते रखने में सफल हो रहे थे। इसमें कारण यह था कि दोनों के सम्मुख एक आदर्श था, जिसकी प्राप्ति तब ही सम्भव थी, जब वह अपने जीवन को नियन्त्रण में रख सकें।

डाक्टर के विस्मय करने की बात यह थी कि दोनों के मन में उन्नति की भावना कैसे उत्पन्न हुई और फिर कैसे इतनी प्रबल हो गई। वह इसमें कारण जानने का यत्न करता रहता था। यद्यपि वह विमल के व्यवहार को बहुत पसन्द करता था तो भी वह रामी से अधिक खुलकर बात कर सकता था। जब वह रीता के विषय में सूचनाएँ डाक्टर को आकर दिया करती थी, तब वह उससे बहुत कुछ पूछा करता था और उसके अपने मन

के भावों के विषय में भी जानकारी प्राप्त करता रहता था।

रीता गई तो स्वरूपरानी, जो रामी की मालकिन होते हुए भी उसके विषय में बहुत कम ज्ञान रखती थी, उसके रीता के साथ जाने से न कर देने पर, क्रुद्ध हो गई और उससे काम-धन्धा लेना बन्द कर दिया। पहले रामी स्वरूपरानी का कमरा झाड़-फूँककर साफ़ रखा करती थी और कभी आवश्यकता पड़ने पर उसकी धोती इत्यादि छाँट देती थी। कभी उसके साथ बाज़ार जा सामान इत्यादि भी उठा लाती थी। अब स्वरूपरानी ने उसको कह दिया, "रामी, आज से तुम मेरी सेवा में नहीं हो। मेरा काम तुम न किया करो।"

रामी डॉक्टर के पास जा पूछने लगी, "पापा! क्या मुझको चला जाना चाहिए?" इतना पूछ उसने मम्मी का आदेश सुना दिया।

डॉक्टर ने पूछा, "क्या मम्मी ने तुमको कोठी से निकल जाने को कहा है?"

"नहीं, यह नहीं।"

"तो कोठी छोड़ जाने की आवश्यकता नहीं।"

"पर वे मुझसे कुछ काम नहीं लेतीं। नीला को भी उन्होंने मना कर दिया है।"

"तो तुम उनका काम न किया करो।"

"तो फिर क्या किया करूँ?"

"तुम पढ़ा करो। मैं तुमको अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सिखाऊँगा।"

इस बात ने रामी के सामने एक और उद्देश्य उपस्थित कर दिया। जिस लगन से रामी ने पढ़ना आरम्भ किया, वह आश्चर्यजनक थी। इस समय डॉक्टर को, एक दिन रामी के अन्तरात्मा में डुबकी लगाने का अवसर मिल गया।

विमल ने इन्टरमीडियेट साइन्स की परीक्षा पास कर ली थी और वह लाहौर मैडिकल कालेज में प्रवेश के लिए जाना चाहता था। रामी जानती थी कि डॉक्टर राधाकृष्ण इंग्लैण्ड और बर्लिन के पढ़े हुए हैं और वह समझती

थी कि विमल को भी वहाँ पढ़ने के लिये जाना चाहिए। परन्तु विमल साधन विहीन था। लाहौर जाने का खर्चा भी तो डॉक्टर की उदारता से ही मिलने वाला था।

जब विमल का परीक्षा-फल घोषित हुआ और सब लोग उसको बधाई दे चुके तो रामी को भी बधाई देने का अवसर मिला, "विमलजी !" रामी ने उसके उत्तीर्ण होने पर गर्व अनुभव करते हुए कहा, "मैं आज बहुत खुश हूँ। अब आगे क्या होगा ?"

"मैं डॉक्टर बनूँगा।"

"ठीक ! परन्तु पढ़ाई कैसे और कहाँ होगी ?"

"मन तो चाहता है कि इंग्लैण्ड जाऊँ परन्तु खर्चा तो लाहौर के लिए भी नहीं है। लाहौर में भी अढ़ाई सौ रुपया वर्ष की फीस, साठ रुपया वार्षिक कालेज का अतिरिक्त व्यय और खाना-पीना तथा रहना पृथक्, सब मिल-मिलाकर डेढ़ सौ मासिक के लगभग कौन देगा ?"

"तुम विलायत जाने की बात करो न। जहाँ से डेढ़ सौ आवेगा वहाँ से तीन सौ भी आ जावेगा।"

"विलायत में तीन सौ से काम चलना कठिन है। लाहौर में तो डॉक्टरजी से वर्ष का पाँच सौ माँग लूँगा और शेष लाहौर में जाकर ट्यूशन इत्यादि कर पैदा कर लूँगा।"

"जब पापा पाँच सौ देंगे तो पाँच हजार भी दे देंगे।"

"बहुत कठिन है।"

"तो मैं बात करूँगी।"

अगले दिन अंग्रेजी पढ़ते समय रामी ने डाक्टर से पूछ लिया, "पापा ! अब विमल क्या करेगा ?"

"मैंने उससे पूछा नहीं। एक-दो दिन में निर्णय कर लेना चाहिए।"

"विमल तो डाक्टरी पढ़ना चाहता है।"

"हाँ। उसने इन्टरमीडियेट तो प्रथम श्रेणी, में पास किया है। उसको प्रवेश तो किसी भी कालेज में मिल जायगा।"

"वह विलायत पढ़ने नहीं जा सकता क्या ?"

डाक्टर इस प्रस्ताव को सुन विस्मय में रामी का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर कहने लगा, "विलायत जाने के लिए पाँच-छः हजार वार्षिक का व्यय है। पूरी पढ़ाई के लिए तीस-पैंतीस हज़ार। इतना उसको कौन देगा ?"

"तो आप नहीं देंगे यह ?"

"मैं ! मैं तो लाहौर जाने का खर्चा भी दूँ या न दूँ, विचार कर रहा हूँ।"

रामी का मुख उतर गया। डाक्टर ने देखा और समझकर कहा, "देखो रामी ! रीता के विवाह पर चालीस हज़ार खर्च हो गया है और अभी कुछ-न-कुछ देना ही पड़ता है। व्रजभूषण की पढ़ाई पर भी खर्च हो रहा है। उसने बी० ए० पास कर लिया है और लॉ पढ़ने विलायत जाना चाहता है। नीला कालेज में पढ़ना चाहती है। ऐसी अवस्था में विमल के लिए रुपया मैं दे नहीं सकूँगा।"

"आप उधार दे दीजिये। विमल पढ़ाई के पीछे उतार देगा।"

डाक्टर हँस पड़ा। फिर कहने लगा, "मैंने अभी 'बैंकिंग' संस्था नहीं खोली। इस पर भी विचार करूँगा।"

इसके दो दिन पीछे विमल, स्वरूप रानी और डॉक्टर के भीतर उसके भविष्य के विषय में बातचीत हुई। डाक्टर ने उसे स्टडी-रूम में बुला भेजा और स्वरूप रानी की उपस्थिति में पूछ लिया, "विमल ! अब तुम क्या करना चाहते हो ?"

विमल को रामी ने डाक्टर साहब की कठिनाई बता रखी थी। इस कारण विमल ने आँखें नीचे किये हुए कहा, "पापा ! मेरी इच्छा, मेरी परिस्थिति में कुछ भी अर्थ नहीं रखती। मैं नहीं जानता कि अब क्या कर सकूँगा।"

"इस पर भी तुम करना क्या चाहते हो ?"

"मैं डाक्टरी पढ़ना चाहता हूँ। विलायत जाकर या लाहौर, लखनऊ

अथवा नागपुर जाकर।"

"खर्चे के विषय में क्या विचार किया है।"

"आपकी परिस्थिति का ज्ञान मुझको है। ब्रज भैया विलायत जा कानून पढ़ने की बात कह रहे हैं। नीला भी कालेज में पढ़ना चाहती है। ऐसी अवस्था में आपसे अपने लिए कुछ भी कहते संकोच हो रहा है।

"मैं कल माँ से मिलने गया था। सेठ घनश्याम से बातचीत हुई थी। सेठ जी का कारोबार ढीला पड़ गया है। साथ ही उनके अपने पाँच बच्चे हैं। इस पर भी सेठ जी ने पाँच सौ रुपया प्रारम्भिक व्यय के लिए उधार देने का वचन दिया है। यदि मैं मैडिकल कालेज में प्रवेश पा गया तो शेष वहाँ ट्यूशन कर पैदा करने का यत्न करूँगा।"

डाक्टर राधाकृष्ण तो सेठ घनश्याम की बात सुन, सन्तोषकर चुप हो गया परन्तु स्वरूप रानी ने बात जारी रखी। उसने पूछा, "तो प्रति वर्ष वह पाँच सौ तक सहायता देगा ?"

"नहीं। इसके लिए वह कोई वचन नहीं दे सकता। और पाँच सौ का दो रुपया सैकड़ा सूद माँगता है।"

"अर्थात्," स्वरूप रानी ने मन में गिनकर कहा, "पाँच वर्ष में पाँच सौ का ग्यारह सौ लेगा ?"

"हाँ ! और कहता था कि मेरी माँ के कारण ही वह इतना रुपया देने को कह रहा है, अन्यथा उसको तो पाँच रुपया सैकड़ा सूद देने वाले मिल रहे हैं।"

डाक्टर हँसकर चुप कर रहा। उस पर स्वरूप रानी ने कहा, "देखो विमल ! रीता के विवाह पर हमारा चालीस हजार व्यय हो गया है। इतना ही हमने नीला के लिए रख छोड़ा है। यदि तुम एक बात मानो तो इसमें से तीस हजार तुम्हारे विलायत में पढ़ाई के लिए और दस हजार 'क्लिनिक' फिट करने के लिए दे सकते हैं।"

विमल का मुख खिल उठा। इतना अच्छा अवसर उसको और कहाँ मिल सकेगा ! वह समझा था कि उसको यह चालीस हजार उधार मिल

रहा है और वह उसको शीघ्र वापस करना होगा। इस कारण उधार की शर्तों को जानने के लिए वह मम्मी का मुख देखने लगा।

स्वरूप रानी ने अपना अभिप्राय समझाया, "यह रुपया नीला के विवाह पर उसके पति के लिए है। यदि तुम चाहो तो सगाई विलायत जाने से पहले हो जाय।"

विमल को समझ आ गई। उसने नीला को इस भाव से पहले कभी सोचा ही नहीं था। वह उसको सदा बहन के रूप में ही देखता रहा था। साथ ही उसको मालूम था कि रामी उससे प्रेम करती है और उससे विवाह की प्रतीक्षा कर रही है। इस कारण वह इस प्रस्ताव से अवाक् बैठा रह गया।

स्वरूप रानी उसको चुप देख पूछने लगी, "क्या कहते हो विमल ?"

"मम्मी! यह प्रस्ताव इतना अकस्मात् हुआ है कि मैं इसका अर्थ समझ नहीं सका। नीला को अपनी बहन मानने वाले के लिए उसके प्रति पत्नी का भाव बनाने में समय चाहिए।"

"तो विचार कर लो। देखो विमल! मैं अपने मन की एक बात बताती हूँ। इतना धन देकर तो नीला के लिए पति मिल जाना कठिन नहीं, परन्तु वह देवीदत्त भी तो हो सकता है। हम उस लड़के से सन्तुष्ट नहीं हैं। तुम जाने-बूझे हो। नीला भी तुम को भली भाँति जानती है। मैं समझती हूँ कि तुम दोनों बहुत सुखी रहोगे। फिर नीला के पिता हैं। उनके साथ बैठकर काम करोगे तो शीघ्र ही उन जैसी ख्याति प्राप्त कर लोगे। विचार करते समय इस बात का भी विचार कर लेना कि हमारा तुम्हारे पर कुछ तो अहसान है ही। बिना हमारी सहायता के तुम शायद दिल्ली की गलियों में भीख माँगते होते। अधिक-से-अधिक घनश्याम का बही-खाता देख लेते और उसकी भाँति गरीबों को रुपया उधार दे उनका रक्त चूसते होते।

"अब तुम विचार कर एक-दो दिन में उत्तर दे देना। तब डाक्टर जी तुम्हारे लिए लन्दन के किसी कॉलेज में प्रवेश और वहाँ रहने का प्रबन्ध कर देंगे।"

: ४ :

विमल के मन में बीसियों विचार आने लगे थे। वह समझता था कि ऐसा अच्छा अवसर उन्नति का फिर नहीं मिल सकेगा। वह यह भी जानता था कि तीस हजार तो वह सुगमता से पैदा कर नहीं सकेगा। साथ ही वह विचार करता था कि उसने रामी को विवाह का वचन दे रखा है। वह क्या करेगी? रामी के विचार ने उसके सब मनसूबे मिटा दिए। वह मन में लगभग निश्चय ही कर बैठा कि वह विलायत जाने के प्रलोभन को मन से निकाल देगा।

डाक्टर के स्टडी-रूम से निकल वह अपने कमरे में चला गया और वहाँ बैठ पुनः अपनी आकांक्षाओं और अपने रामी के प्रति कर्तव्य में चल रहे संघर्ष पर विचार करने लगा। दिन-भर वह इस दुविधा में फँसा रहा। उसके मन में विचार आया कि अपनी माँ से विचार कर ले तो ठीक रहेगा। वह अपने मन में लगभग निर्णय ही कर चुका था कि वह विलायत नहीं जायगा।

सायंकाल वह घनश्याम के मकान पर अपनी माँ से मिला। उसने माँ को सब बात बताई तो उसकी माँ ने उसे बधाई दी और उसकी पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए कहा, "बेटा, नीला बहुत ही सुन्दर लड़की है और तुमको ऐसी बीवी पाने से अति प्रसन्न होना चाहिए। साथ ही विलायत से डाक्टर बनकर आओगे तो मेरा मन, तुम जैसे पुत्र की माँ होने से, गर्व से फूला नहीं समायेगा।"

"पर माँ! तुम तो जानती हो कि मैं रामी को विवाह का वचन दे चुका हूँ। उसका क्या होगा? पिछले ही वर्ष हम आए थे और तुम ने हमको आशीर्वाद देते हुए कहा था कि हमारी सगाई हो गई समझ लो।"

"पर बेटा! उस समय नीला की बात तो हम विचार भी नहीं कर सकते थे। नीला रामी से कहीं अधिक सुन्दर, पढ़ी-लिखी और समझदार है। सबसे बड़ी बात तो पढ़ाई करने का यह अवसर है।"

"माँ! मैं रामी से बहुत प्रेम करता हूँ।"

"तो बेटा ! उससे भी विवाह कर लेना। जब पढ़कर आओगे और नीला से विवाह हो चुकेगा, तो उससे भी विवाह कर लेना।"

"दोनों से विवाह कर लूं ?"

"क्या हानि है ?" इतना कह कमली ने उसको कितनी ही देर नीला से विवाह के विषय में बताया। विमल उसकी युक्तियों से प्रभावित नहीं हुआ। उसके मन में इस अवसर से जीवन में उन्नति करने का लालच तो आता था, परन्तु वह विचार करता था कि रामी एक भिखारी की लड़की होने से किसी भी अच्छे पति को पाने की आशा नहीं कर सकती। वह धनी हो जाने पर भी उसके मन से सब मान प्रतिष्ठा खो बैठेगा।

रात भर वह इसी विषय पर विचार करता रहा। प्रातःकाल तक वह अपने मन को सुदृढ़ कर सका था। उसने निर्णय कर लिया था कि वह डाक्टर जी से मिल कर कह देगा कि वह रामी से विवाह का वचन दे चुका है और इस कारण वह उनकी कृपा-युक्त सहायता स्वीकार करने में अपने को अशक्त पाता है।

डाक्टर हाथ में गुलेल लिये हुए अपने स्वभावानुसार लान में घूम रहा था, जब विमल उसके समीप आ कर बोला, "पापा ! गुडमार्निंग।"

"मार्निंग।" डाक्टर ने उत्तर दिया और प्रश्न भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगा। डाक्टर जानता था कि वह उससे अपने विलायत जाने के विषय में कहने आया है। इससे वह उसके कहने की प्रतीक्षा करने लगा। विमल ने आँखें नीचे कर कहा, "पापा ! मैं कल मम्मी से कही बात के विषय में राय करने आया हूँ।"

"हाँ।"

"आपने मेरे ऊपर बहुत कृपा की है। मेरा सगा पिता भी इतना कुछ नहीं कर सकता था। मेरे लिये आपकी बात टाल देना निपट कृतघ्नता होगी। इस पर भी मेरे मन में रामी को दिया वचन कि मैं पढ़ाई समाप्त करने के बाद उससे विवाह करूंगा, एक भारी अड़चन उत्पन्न कर रहा है। एक ओर आपके अहसान की याद और दूसरी ओर रामी को दिया वचन,

मेरे मन में परस्पर संघर्ष कर रहे हैं। एक ओर विलायत जा कर अपने चिर संचित अभिलाषा की पूर्ति और दूसरी ओर बिचारी रामी के मन में यह भावना कि मैं वचन भंग करने वाला हूँ, मेरे मन को दुविधा में मथ रहे हैं। मैं इन्हीं परस्पर विरोधी भावनाओं में रात भर सो नहीं सका और अभी तक किसी निर्णय पर पहुँच नहीं सका।

"क्या आप मेरा पथ प्रदर्शन करेंगे। मैं सदा आपको अपने पिता से भी अधिक मान की दृष्टि से देखता रहा हूँ और आपके ठीक-ठीक राय देने पर विश्वास रखता हूँ।"

डाक्टर उसके मन में चल रहे द्वन्द को भली प्रकार समझता था और वह यह भी जानता था कि एक स्वाभिमानी व्यक्ति को क्या मार्ग लेना चाहिए। परन्तु वह भी नीला के विषय में चिन्तित था और विमल के चरित्र को जानते हुए नीला का यह सौभाग्य मानता था कि उसका उससे विवाह हो सके। इस समय विमल के अपने मन के भावों को इस प्रकार बताने से उसका मान, डॉक्टर के मन में, कुछ बड़ा ही था। इस पर भी उसने विमल के कन्धे पर हाथ रख उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "देखो बेटा विमल! मैं तुम्हारे रामी से सम्बन्ध के विषय में जानता हूँ और एक आत्म-सम्मान रखने वाले व्यक्ति के लिये वचन भंग करना कितना कठिन है, समझता हूँ। परन्तु तुम इस विषय में जो कुछ निर्णय करोगे वह मैं स्वीकार कर लूंगा। इस पर भी कोई अन्तिम निर्णय करने से पूर्व तुम रामी से ही राय कर लो तो अच्छा न होगा क्या?"

इससे पहली सायंकाल, जब विमल अपनी माँ से राय करने गया हुआ था, रामी ने डाक्टर राधा-कृष्ण से राय की थी। डाक्टर क्लब जाने को तैयार था। रामी ने कहा, "पापा! मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ।"

"अभी? कल नहीं?"

"कल बहुत देरी हो जायगी।"

"इतनी जल्दी की क्या बात है?"

"कुछ है। दस मिनट से अधिक समय नहीं लूँगी।"

डॉक्टर अपने स्टडी-रूम में लौट आया। रामी ने खड़े-खड़े ही पूछा, "क्या यह सत्य है कि आप विमल से नीला का विवाह करना चाहते हैं ?"

"किसने कहा है तुमको ?"

"मम्मी ने कहा है। वे चाहती हैं कि मैं विमल की माँ से जाकर कहूँ कि वह उसे इसके मानने की सम्मति दे।"

"तो तुम कमली को कह आई हो क्या ?"

"नहीं, अभी नहीं गई। मैं जानती हूँ कि आपकी इच्छा होगी तो यह विवाह हो सकेगा। इस कारण आपसे सब बात जाने बिना, कैसे कहने चली जाती।"

"पर विमल तो अपनी माँ से मिलने चला गया है।"

"सत्य ? तब तो ठीक नहीं हुआ। तो यह बात सत्य है ?"

"तुम कमली से क्या कहने जाती ?"

"यदि नीला का विवाह विमल से हो तो कमली को न नहीं करनी चाहिए।"

"पर तुम्हारे साथ उसकी सगाई जो हो चुकी है ?"

"विवाह तो नहीं हुआ। सगाई तो टूट सकती है। विवाह नहीं टूट सकता।"

"देखो रामी ! नीला की माँ ने विमल को विलायत जाने के लिए नीला के दहेज का तीस हजार देने का वचन दिया है और उससे कहा है कि उसको नीला से विवाह करना होगा। मैंने इसमें कुछ नहीं कहा। हाँ यदि विमल स्वेच्छा से यह बात स्वीकार कर लेगा तो मैं बाधा नहीं डालूँगा।"

"तो आप नीला के लिए विमल को उचित पति मानते हैं ?"

"हाँ। इस पर भी मैं उस पर दबाव डालकर नहीं मनाऊँगा।"

रामी गम्भीर विचार में डूब गई। डॉक्टर ने घड़ी में समय देखा और स्टडी-रूम से बाहर निकलते हुए पूछा, "तुम क्या चाहती हो रामी ?"

"मैं···मैं···मैं भी यह विवाह ठीक ही समझती हूँ।"

"और तुम क्या करोगी ?" डाक्टर ने रामी से यह प्रश्न कर उसके

मुख की ओर देखा। रामी की आँखों में आँसू थे परन्तु मुख पर मुस्कराहट थी। उसने हँसी का बहाना करते हुए कहा, "मैं किसी और से प्रेम करने लगी हूँ।"

: ५ :

ब्रेक-फास्ट पर रामी नहीं आई। विमल उससे मिलने के लिए उत्सुक था। इस कारण उसने उसकी कुर्सी खाली देखी तो डाक्टर की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा। डाक्टर उसका आशय समझता था परन्तु वह स्वयं कुर्सी खाली का कारण नहीं जानता था। जब खाना आरम्भ हो गया तो उसने बैरा से कहा, "देखो रामी क्यों नहीं आई?"

उत्तर स्वरूप रानी ने दिया, "वह विमल की माँ से मिलने गई है।"

"क्या काम है उससे?"

"कहती थी कुछ काम है। उसने बताया नहीं।"

बात वहीं समाप्त हो गई। डॉक्टर ने समझा कि स्वरूप रानी ने रामी को कहकर भेजा है। वह समझता था कि विमल की माँ को बीच में घसीटने की आवश्यकता नहीं। रामी से विमल की बात हो जाय तो कुछ-न-कुछ निर्णय हो ही जायगा और जो कुछ भी होगा, वह अच्छे के लिए ही होगा। एक बात उसके मस्तिष्क में स्पष्ट थी कि इस विषय में दबाव डालकर मनाना ठीक नहीं।

विमल दिन-भर अपने कमरे में रहा। वास्तव में वह रामी के, माँ से मिलकर लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। थोड़े-थोड़े समय के उपरान्त वह रामी का कमरा देख आता था।

सायं चार बजे तक उसकी प्रतीक्षा कर वह माँ से मिलने गया। वहाँ जाकर उसको पता चला कि रामी वहाँ नहीं गई। वह पिछले पाँव लौट आया और डाक्टर के क्लब जाने से पूर्व उनसे मिलकर कहने लगा, "पापा! रामी लापता है।"

"कैसे पता चला?"

"वह माँ से मिलने नहीं गई।"

"सत्य ? तो कहाँ गई है ?"

"शायद मम्मी से कुछ कह गई हो।"

स्वरूप रानी को बुलाया गया और उसको समाचार देकर पूछा गया, "रामी क्या कहकर गई थी।"

"प्रातःकाल वह मेरे पास आई थी और कहने लगी कि उसको बीस रुपये चाहिएँ। मैंने रुपये दिये तो बोली कि विमल की माँ से मिलने जा रही है। मैंने जब पूछा कि क्या काम है तो बोली कि उसी को यह बीस रुपये पहुँचाने हैं। इतना कह वह चली गई और अभी तक नहीं लौटी।"

अगले दिन डाकिया विमल के नाम एक चिट्ठी दे गया। चिट्ठी रामी की थी। उसने लिखा था "मैं कुछ दिनों से किसी अन्य से प्रेम करने लगी हूँ। आज वह मुझ को अपने गाँव, जो अलमोड़ा के समीप है, ले जा रहा है। विमलजी! क्षमा करना मैं अपने मन के भावों को आपके प्रति ठीक-ठीक जान नहीं सकी। यही कारण था कि आप से विवाह की बात करती रहती थी। जब से मैंने अपने प्रेम के इस पात्र को पाया है, तब से ही मैं आपको बताने का अवसर ढूँढ रही थी परन्तु जब भी कहने के लिए आती थी, तब ही लज्जा से मैं अटक जाती थी और बात कह नहीं सकती थी। आज यह चिट्ठी डाल कर आप से क्षमा चाहती हूँ। मुझ को नालायक मान कर भूल जाना।"

विमल भौंचक्का रह गया। वह समझ नहीं सका कि यह पत्र उसने स्वेच्छा से लिखा है अथवा कसी के दबाव में आकर। वह इस विषय में कुछ निर्णय नहीं कर सका था। पाँच दिन पश्चात् रामी का एक पत्र और आया। यह पत्र नैनीताल से भेजा गया था। इसमें उसने लिखा, "हम ने यहाँ पर विवाह कर लिया है और अब अपने घर वाले की पत्नी बन ससुराल जा रही हूँ। मैं अपने को बहुत सुखी पाती हूँ। इस कारण आप से जो कुछ कहती रही हूँ, उसके लिए क्षमा चाहती हूँ। यहाँ रीता दीदी से मिली थी। वे अच्छी तरह हैं। मम्मी से बीस रुपये लाई थी। उनसे मेरी

ओर से क्षमा माँग लेना। कभी होंगे तो लौटा दूँगी। पापा के चरण स्पर्श कर मेरी पाँवलागूँ और उनसे मेरे अपराधों को क्षमा कर देने के लिए कहना।

"मैं अपनी सुसराल का पता नहीं लिख रही, जिससे आप मुझको मिल न सकें। जो कुछ मैं आप से कहती रही हूँ, उसके पश्चात् मुझ को आप के सामने आते लज्जा लगती है मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ।"

इस पत्र में कुछ अधिक सत्यता प्रतीत हुई। इसके कुछ दिन पीछे कमली विमल से मिलने आई और उसको नीला के विषय में मान जाने का आग्रह करने लगी। जब उसने रामी के विषय में सुना तो नाक चढ़ा कर बोली, "किसी नौकर के साथ भाग गई प्रतीत होती है। विमल! उसका विचार छोड़ो और अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में लग जाओ।"

डाक्टर राधाकृष्ण ने लन्दन में अपने एक परिचित को लिख कर, विमल के लिए लन्दन मैडिकल कालेज में स्थान ले दिया।

विमल के लन्दन जाने से पूर्व उसकी नीला से सगाई घोषित कर दी गई। विमल ने नीला से पूछा, "नीला! तुम क्या समझती हो?"

"जो समझती थी वही तो हुआ है।"

"कब से यह समझने लगी थीं?"

"जब से तुम हमारे यहाँ रहने आये थे।"

"ओह!"

डाक्टर राधाकृष्ण प्रसन्न था। इस पर भी रामी के विषय में वह निश्चिन्त नहीं था। उसने रीता को लिख रामी के विषय में पूछा। उत्तर देवीदत्त ने दिया, "वह यहाँ आई थी और चली गई है।"

यह बात असत्य थी। रामी स्वरूप रानी से बीस रुपये ले कर सीधी रेल के स्टेशन पर पहुँची।

स्टेशन पर से उसने चिट्ठी, जो वह घर से ही लिखकर साथ लाई थी, डाक के डिब्बे में डाल मुरादाबाद की गाड़ी में जा बैठी। यह चिट्ठी वही थी जो विमल को अगले दिन मिली थी। काठगोदाम से वह नैनीताल पहुँची

और वहाँ मास्टर देवीदत्त का मकान ढूँढ रीता से जा मिली। वह हाथ में कपड़ों की पोटली लिये रामी को मकान का दरवाजा खटखटाते देख अपनी आँखों पर सन्देह करने लगी। उसने पूछा, "कौन? रामी? अरी रामी, तुम? कैसे आई हो?"

वह रामी को ऊपर की छत पर ले गई और वहाँ बैठाकर पूछने लगी, "तुमने अपने आने का समाचार क्यों नहीं भेजा?"

रामी ने सब प्रश्नों का उत्तर एकदम ही दे दिया, "दीदी! दिल्ली में रहते-रहते जी ऊब गया था। इस कारण कल प्रातः उठी और दो धोतियाँ बाँध स्टेशन की ओर चल दी। वहाँ पहुँच गाड़ियों के छूटने के बताने वाले बोर्ड पर देख, इधर की गाड़ी में जा बैठी।

"यहाँ आपके पास कुछ दिन रहूँगी पश्चात् विचार करूँगी कि किधर जाऊँ।"

"तो दिल्ली चिट्ठी लिख दो। वहाँ सब लोग चिन्ता करते होंगे।"

"कल लिख दूँगी। इस पर भी यह लिखना नहीं चाहती कि यहाँ बहुत दिन ठहरने का विचार है।"

देवीदत्त उस समय स्कूल गया हुआ था। अब वह लौटा तो रामी स्नान कर बाल सुखा रही थी। देवीदत्त ने पहले तो उसको पहचाना ही नहीं और जब पहचाना तो प्रसन्नता से कूद पड़ा। वह ताली बजा बोला, "हुर्रे। थ्री चीयरज फार अवर रामी! बताओ रामी! अब यहाँ क्यों आई हो?"

रामी ने हाथ जोड़ नमस्कार कर कहा, "अपने जीजाजी के दर्शन करने चली आई हूँ। सुना था बहुत उदास रहते हैं।"

"ओह! बहुत प्यार उमड़ आया है अपने जीजा के साथ। पर यह स्मरण रखना कि अब विवाह के दिन नहीं हैं। कहीं अब उसी तरह प्यार करने लगीं तो दीदी नाराज हो जायेंगी।"

"तो अभी तक आप वह बात भूले नहीं?"

"मेरी गाल अभी चुनचुनाती है। खैर छोड़ो इस बात को। मम्मी

पापा सब ठीक-ठीक हैं न ? किस काम से भेजा है उन्होंने ? क्या दीदी को लिवाने आई हो ?"

रामी मुस्कराई और कहने लगी, "मैं दिल्ली छोड़ आई हूँ। अब वहाँ लौटकर नहीं जाऊँगी।"

"निकाल दिया है उन्होंने ? कुछ खराबी की होगी !"

"नहीं ! मैं चुपचाप भाग आई हूँ।"

"कुछ चुराकर लाई हो ?"

"चुरा कर कुछ नहीं लाई। बीस रुपये उधार माँग लाई हूँ।"

"बस ? तो ये बीस कितनी दूर तक ले जायेंगे तुमको ?"

"अपने जीजा जी के घर तो ले ही आये हैं न। फिर आप चाहेंगे तो आपकी नौकरी कर लूँगी।"

"नौकरी ? मेरी ?"

"हाँ।"

"क्या काम करोगी ?"

"जो काम दीदी कहेंगी।"

"तो दीदी की नौकरी करोगी ?"

"मैं तो आप दोनों में कोई भेदभाव नहीं समझती।"

"तो मेरा कहा काम क्यों नहीं करोगी ?"

"आपने अभी तो कहा है कि दीदी को नाराज नहीं करना।"

देवीदत्त हँस पड़ा। मध्याह्न का भोजन तैयार था। रीता का खाना कहीं बाहर था। वह कपड़े पहन जाने को तैयार थी। देवीदत्त ने कहा, "आज तो रामी आई है। घर पर खा लेती तो क्या होता ?"

"कुँवर व्रजेश ने लंच के लिए निमन्त्रण दिया हुआ है। उनको ना कैसे कर सकती हूँ ? रामी ने भोजन करना है। आपका वह साथ देगी। नौकर ने दो का खाना तैयार किया हुआ है।"

यह कह रीता बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये मकान के नीचे उतर गई। देवीदत्त ने रामी को, जो वहाँ खड़ी सब सुन रही थी, कहा, "इसी कारण

तो मैं तुमको यहाँ आने के लिए कहता था। अच्छा किया जो तुम अब आ गई हो। अकेले रोटी तोड़ने से, तुम्हारे साथ बाँटकर खाने में लुत्फ़ रहेगा।"

रामी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। दोनों खाने की मेज पर जा बैठे और नौकर खाना परस गया। दाल, भात, साग, चटनी और चपाती। रोटी खाते हुए देवीदत्त ने पुनः दिल्ली की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मैं तो स्वप्न में भी यह विचार नहीं कर सकता था कि तुम इस प्रकार यहाँ चली आओगी।"

रामी ने देवीदत्त को अपने आने का कारण बनाकर बताया। उसने कहा, "जब से दीदी आपके साथ आई हैं और मैंने मम्मी का कहना कि उनके साथ यहाँ आऊँ, नहीं माना, मम्मी मुझको नित्य गाली देती थीं और घर से निकल जाने के लिए कहती थीं। मैं इतने दिन तक तो ढीठ बन पड़ी रही। सहन शक्ति की भी सीमा होती है। बात सहन से बाहर हो गई और मैं चुपचाप बिना किसी को बताये यहाँ चली आई हूँ। कल एक पत्र लिखूँगी। उसमें उनको यह लिख देना चाहती हूँ कि मेरे साथ कोई दुर्घटना नहीं हुई। मैं अपनी इच्छा से घर छोड़ आई हूँ और अब वे मेरे लौटने की आशा छोड़ दें।"

"और उनको लिख दोगी कि तुम यहाँ पर रहोगी?"

"नहीं। ऐसा लिखूँगी तो डाक्टर मुझको लेने आ जायँगे।"

"डाक्टर! भला वे क्यों आएँगे?"

"वे मुझसे प्यार करते हैं।"

"सत्य! वह बूढ़ा तुमसे प्यार करता है? तभी तुम यहाँ नहीं आना चाहती थी और मम्मी तुमको यहाँ भेजना चाहती थीं। सब समझ गया हूँ।"

"आप कुछ नहीं समझे। डाक्टर मुझको अपनी लड़की के समान चाहते हैं। वे मुझको आपके घर कभी नहीं रहने देंगे।"

"क्यों?"

"आप जैसे जीजा के पास, छोटी साली को भेजना वह पसन्द नहीं करेंगे।" यह कह रामी हँस पड़ी।

"पर तुम तो यहाँ रहना पसन्द करती हो ?"

"उस रात जैसा प्यार नहीं करेंगे तो···। मैं आपकी नौकरी करने आई हूँ।"

देवीदत्त कुछ विचारकर बोला, "मुझको स्वीकार है।"

अगले दिन रामी ने विमल को चिट्ठी लिखी। पीछे डाक्टर ने रीता को उसके विषय में लिखकर पूछा और उत्तर देवीदत्त ने दे दिया—"रामी यहाँ आई थी, चली गई है।"

: ६ :

जब डॉक्टर की चिट्ठी आई कि नीला की सगाई विमल से हो गई है, तो रीता को रामी की बातों पर सन्देह हो गया। उसने रामी को पृथक् में ले जाकर पूछा, "रामी ! तुम विमल से लड़कर आई हो ?"

"नहीं दीदी ! उससे कैसे लड़ सकती हूँ ? वह मेरे बचपन का साथी है।"

"उसकी सगाई नीला से हो गई है।"

"सत्य ? मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"तुम्हारा उससे विवाह होने वाला था न ?"

"हाँ, परन्तु अब नीला का होगा।" यह कहते-कहते रामी की आँखें तरल हो गईं। रीता समझ गई कि धन के लोभ में विमल ने उसको छोड़ दिया है। तभी वह दिल्ली से भाग आई है।

"रामी ! सत्य बताओ, क्या बात है ?" रीता ने आग्रह कर पूछा।

रामी ने भीतर की पूर्ण बात रीता को बता दी। इस पर रीता ने पूछा, "तो अब क्या करोगी ?"

"करना क्या है ? कहीं पेट भरने के लिए नौकरी करनी ही तो शेष रह गई है। इस जन्म में विवाह नहीं होगा।"

"मास्टर साहब तुमको बहुत चाहते हैं।"

"हाँ। मैं जानती हूँ। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उनको नहीं चाहती।"

"इसमें चाहने न चाहने की क्या बात है ? उनको प्रसन्न रखोगी तो वे तुमको जन्म-भर नहीं निकालेंगे।"

"पर दीदी ! मैं वेश्या नहीं हूँ। वेश्याएँ भी तो इस काम के लिए बहुत माँगती हैं। मैंने उनसे कह दिया है कि मैं उनके घर का काम-काज तो कर सकती हूँ, पर यह बात नहीं होगी। यदि उनको स्वीकार हो तो रहूँगी, नहीं तो चली जाऊँगी।"

रीता ने उत्सुकता से पूछा, "तो उन्होंने क्या कहा है ?"

"वे अभी तक तो मान गए प्रतीत होते हैं। वे कहते थे कि मैं उनके साथ बैठकर खाना खाया करूँ। उनके साथ सैर करने जाया करूँ और वे इससे अधिक मुझसे कुछ नहीं मांगेंगे।"

रीता हँस पड़ी। रामी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो वह कहने लगी, "ठीक है। तुम जानो और वे जानें। यदि उनसे किसी प्रकार का झगड़ा हुआ तो मेरे पास शिकायत करने न आना।"

"पर दीदी ! तुम उनके कमरे में क्यों नहीं सोतीं ?"

"मेरी इच्छा है। जब इच्छा होती है और उनको फुरसत होती है, तो वे मेरे कमरे में आ जाते हैं। पर तुम यह क्यों पूछती हो ?"

"यदि आप इकट्ठे एक ही कमरे में सोते होते, तो मुझको रात के समय अपनी कोठरी भीतर से बन्द कर सोने की आवश्यकता न होती।"

"तो तुम अपनी रक्षा के लिए मेरी आहुति देना चाहती हो ?"

"पर दीदी ! वे तुम्हारे पति हैं।"

"ठीक ! परन्तु यह भी तुम को पता होना चाहिए कि मैं यहाँ के सार्वजनिक जीवन में भाग ले रही हूँ। मैंने यहाँ किरायेदारों और कुलियों का संगठन किया है और अगले निर्वाचनों में संयुक्त प्रान्त की धारा-सभा के लिए खड़ा होने का विचार रखती हूँ। इस कारण मुझ को दिन-रात सार्वजनिक कार्यों पर आना-जाना पड़ता है।"

"मैं अनपढ़ क्या जानूँ।"

परन्तु देवीदत्त का राग दूसरा था। वह स्कूल से घर आता तो उसकी इच्छानुसार रामी कपड़े पहन चाय पीने के लिए तैयार रहती। रीता प्रायः कहीं गई होती थी। नौकर चाय लगाता तो दोनों पीने लगते। चाय पीकर वे ताल के किनारे सड़क पर घूमने निकल जाते थे। कभी किनारे पर लगी बैंचों पर बैठ ताल का सुन्दर दृश्य देखते और स्वच्छ हवा का सेवन करते। ऐसे अवसरों पर देवीदत्त अपने मन की व्यथा रामी के सामने उड़ेल देता। रामी उससे सहानुभूति प्रकट करती और उसको सहन करने के लिए कहती। वह कहा करता, "रामी! अब तो विमल से विवाह की आशा नहीं रही। फिर किस आशा पर जीवित हो तुम?"

"क्या जीवन में पुरुष-स्त्री-समागम ही एक बात रह गई है। यह तो जीवन का चुंगा है। वास्तविक जीवन-कार्य तो कुछ और ही है।"

"वह क्या है?" देवीदत्त ने खीजकर पूछा।

"देखिये जीजाजी! मैं एक भिखारी की लड़की हूँ। बाबा कहते थे कि मेरे जन्म होने के दो मिनट पीछे माँ का देहान्त हो गया था। उस समय से बाबा ने मेरा पालन-पोषण किया है। मेरा और बाबा का रहने का स्थान पहाड़गंज दिल्ली की पुल के नीचे सड़क की पटरी रहा है। फिर क्या बात हुई है कि मुझको अब इस स्थान पर बैठ, इतने सुन्दर स्थान की शोभा देखने का अवसर मिल रहा है। मेरे साथ वहाँ रहने वाले अन्य किसी भिखारी को इसका शतांश भी सुख और आनन्द नहीं मिल रहा। यह क्यों है?"

देवीदत्त ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तो जानता हूँ कि ऐसा क्यों है। पर तुम क्या समझती हो कि इसमें क्या कारण है?"

"मैं समझती हूँ कि मैंने उन्नति करने का यत्न किया है। इस यत्न करने पर भी मैं सफल न होती यदि मेरे भाग्य में कुछ सुअवसर मेरे सम्मुख न आ जाते। यह भाग्य, जिसके कारण उन्नति करने के अवसर मेरे मार्ग में आ उपस्थित हुए, मेरे पूर्व-जन्म के कार्यों के फल से ही हैं। इस प्रकार पुरुषार्थ और भाग्य के आश्रय में एक भिखारी से इस अवस्था तक पहुँची

हूँ। इसके आगे मेरा भाग्य-क्षेत्र समाप्त हो गया प्रतीत होता है।"

"बस यहीं मेरा तुमसे मतभेद है। मैं समझता हूँ कि तुम्हारे भाग्य से ही मेरी तुम्हारी भेंट हुई है और तुम्हारा यत्न अब भाग्य के विपरीत जा रहा है।"

"नहीं! नहीं!! ऐसा नहीं। यदि भाग्य में मेरा आपकी पत्नी बनना बदा होता तो मेरे मनमें आपके लिए प्रेम उत्पन्न हो जाता।"

देवीदत्त हँसकर बोला, "कितनी भोली हो तुम! तुम विमल से प्रेम करती थी पर भाग्य से वह नीला का हो गया है। तुमको यहाँ नैनीताल आकर मेरे घर में रहने की प्रेरणा तुम्हारे भाग्य ने ही तो दी है। अब तुम अपने कर्म को भाग्य के अनुरूप कर लो तो पुनः उन्नति के पथ पर बढ़ चलोगी।"

"यह तो मैं नहीं जानती कि मेरा भाग्य मुझको यहाँ लाया है या मेरा यत्न? यदि मैं दिल्ली से भाग न आती तो विमल नीला से विवाह नहीं करता। मैंने अपने भाग्य को यत्न से बदलना चाहा है, परन्तु क्या यह सम्भव है? मेरा मन तो अब भी कहता है कि नीला से विमल का सम्बन्ध स्थायी नहीं हो सकता।"

"तो फिर तुमने यह क्यों किया है?"

"आप रीता दीदी को यह आवारागर्दी क्यों करने देते हैं?"

"आवारा तो वह है ही। मैं तो उसके आवारापन को एक निश्चित पथ में ले जाकर उससे लाभ उठाना चाहता हूँ।"

"यही बात मेरी है। विमल की नीला से सगाई एक अनुचित वस्तु है। मैं उसको होने देकर विमल की उन्नति और उससे अपने लाभ की आशा करती हूँ।"

"विमल की उन्नति करने से तुमको क्या लाभ हो सकता है? विशेष रूप में जब तुम्हारा उससे सम्बन्ध ही कुछ नहीं!"

"सम्बन्ध तो है। मैं उससे प्रेम करती हूँ। यह क्या कम सम्बन्ध है? उसकी उन्नति में ही मैं अपनी उन्नति मानती हूँ।"

"पर तुमको इससे मिलेगा क्या?"

"मन को सन्तोष। अपने प्रेमी की उन्नति में मेरा भी कुछ तो भाग हो गया है।"

"कौन देखता है ऐसी बातों को?"

"एक है जो देखता है!"

"भगवान्?" देवीदत्त खिल-खिलाकर हँस पड़ा।

वास्तव में रामी किसी प्रकार की भी शिक्षा के प्रभाव से अपने आचरण को नहीं बना रही थी। उसका वर्तमान व्यवहार उसके संस्कारों की देन था। कान्हू और कमली की संगत का फल था कि वह प्रेम के आश्रय वासना से मुक्त रह सकती थी। उसको भली भाँति स्मरण था कि उसका बाबा कमली से सहवास करना चाहता था और कमली उसको भाई कहकर टाल जाया करती थी।

जब वह बड़ी होकर डॉक्टर राधाकृष्ण की कोठी में रहती थी और कमली कभी विमल से मिलने आती थी, तो रामी उससे उस काल के विषय में पूछा करती थी। एक दिन कमली ने रामी को डाँटा था। उसको विमल ने यह बता दिया था कि रामी उससे आलिंगन करती है। इस बात पर उसने रामी को एकान्त में ले जाकर कहा था, "रामी! तुम विमल से क्या चाहती हो?"

"मैं उससे विवाह करना चाहती हूँ।" यह रामी का उत्तर था।

"पगली!" विमल की माँ ने कहा, "इससे तो प्रेम लुप्त हो जावेगा। प्रेम तो दूसरे के लिए त्याग को कहते हैं। यदि तुम विमल से सचमुच प्रेम करती हो तो उसको पढ़ने दो और उसके पढ़ने में सुविधा पहुँचाओ। वह तुमसे प्रसन्न होगा, तो तुम्हारे प्रेम से प्रभावित हो, तुमको प्रेम करने लगेगा। तब वह भी तुम्हारे लिए त्यागकर सकेगा। वह बड़ा आदमी बनने पर भी तुमको अपने साथ रखेगा।"

"पर काकी! वह कैसे मेरे मन की बात को जान सकेगा?"

"एक है, जो तुम्हारे में, उसमें और सबमें विद्यमान है। वह एक के अन्तरात्मा की बात को दूसरे तक पहुँचाता रहता है।"

इसके पश्चात् रामी ने विमल को शान्ति से अपनी पढ़ाई करने दी और विमल के मन में भी रामी के प्रेम की प्रतिक्रिया हुई थी।

उसका मन कहता था कि विमल उसके वहाँ से चले आने के कारण को भाँप जायगा और उसके इस त्याग की भी प्रतिक्रिया उसके मन में होगी। वह इस सत्य की परीक्षा करना चाहती थी और उस परीक्षा के समय उसके फल को प्राप्त करने के लिए तैयार रहना चाहती थी। यह प्रबल भावना उसको, देवीदत्त के इतने समीप रहते हुए भी, सुरक्षित रखने में सफल हो रही थी।

: ७ :

एक दिन चिट्ठी आई। डॉक्टर राधाकृष्ण, स्वरूप रानी और नीला नैनीताल भ्रमणार्थ आ रहे हैं। व्रज और विमल दोनों विलायत गये हुए थे। रीता ने चिट्ठी रामी को सुनाई तो रामी का विचार वहाँ से टल जाने का हुआ।

"क्यों ?" देवीदत्त का प्रश्न था।

"मैंने उनको लिखा था कि मैंने अलमोड़ा के एक रहने वाले से विवाह कर लिया है। मैं उनके मन में अभी यही बात रहने देना चाहती हूँ। जब तक विमल का नीला से विवाह नहीं होता, तब तक मैं प्रकट होना नहीं चाहती।"

"तो तुम अपने हाथों, अपने प्रेमी को नीला के साथ विवाहने का प्रबन्ध कर रही हो ?"

"हाँ !"

"क्यों ?"

"इसी में मैं विमल की और अपनी भलाई समझती हूँ।"

"विचित्र लड़की हो तुम ! अपनी मृत्यु का वारण्ट आप ही निकाल रही हो ?"

"नहीं जीजा जी ! मैं अपने लिए एक सुवर्णिल जीवन का निर्माण कर

रही हूँ।"

"पागल हो तुम!"

"मेरा निवेदन है कि मेरे विषय में उनसे कुछ न कहा जाय। मुझ भिखारिन पर दया करो। मैं कल प्रातःकाल पहली बस से अलमोड़ा चली जाऊँगी।"

डाक्टर राधाकृष्ण को स्वप्न में भी यह विदित नहीं था कि रामी रीता के घर रहती है। वे तो तीन वर्ष के पश्चात् रीता से मिलने आ रहे थे। उनको देवीदत्त के पत्रों से ऐसा विश्वास हो चुका था कि पति-पत्नी सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर रहे। इसमें वे इनकी सहायता करने का विचार रखते थे।

जब वे मोटर के अड्डे पर टैक्सी से उतरे तो देवीदत्त उनके स्वागत के लिए खड़ा था। नीला ने पहचाना, "मम्मी! जीजा जी खड़े हैं।"

डाक्टर ने पूछा, "और रीता?"

"वह तो दिखाई नहीं देती।"

देवीदत्त आया तो डाक्टर ने हाथ मिलाया, सुख समाचार पूछा और फिर रीता के विषय में पूछा। देवीदत्त ने कहा, "घर पर चलिए। सब कुछ पता चल जायगा।"

इससे स्वरूप रानी के माथे पर त्योरी चढ़ गई, परन्तु डाक्टर मुस्कराकर बोला, "अच्छा चलो।"

एक रिक्शा में स्वरूप रानी और नीला, दूसरी में उनका सामान और तीसरी में डाक्टर और देवीदत्त सवार हो मल्ली ताल को चल दिए। देवीदत्त का मकान उसी ओर था।

मार्ग में देवीदत्त ने डाक्टर को रीता के विषय में बता दिया। उसने कहा, "रीता को रात लखनऊ से तार आया था। वहाँ कांग्रेस इलेक्शन बोर्ड ने उसे बुला भेजा है। वह कांग्रेस टिकट पर इस स्थान से यू० पी० धारा-सभा के लिए खड़ी होना चाहती है। इस कारण वह प्रातःकाल ही टैक्सी से बरेली के लिए चली गई है।"

"कब तक लौटेंगी ?"

"यह वह वहाँ जाकर लिखेगी ।"

"आप अपनी सुनाइए । कैसे जीवन चल रहा है ?"

"ठीक वैसे ही जैसे विवाह से पूर्व चलता था । केवल खर्चा अधिक हो गया है । आपका मैं अत्यन्त आभारी हूँ कि आपने जो खर्चा मेरे गले में बाँधा था, उसका एक भारी अंश दे भी दिया था । अभी तक तो कुछ विशेष कष्ट नहीं हुआ, आगे के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता ।"

"आपको आजकल क्या वेतन मिलता है ?"

"अब अढ़ाई सौ मिलता है ।"

"रीता को उसमें से क्या दे देते हैं आप ?"

"सवा सौ । इसमें वह अपने कपड़े, टायलेट इत्यादि का खर्चा, मकान का आधा किराया और जब कभी रोटी घर खाती है, तो एक रुपया प्रति खुराक के हिसाब से दे देती है । वह प्रायः चाय तथा भोजन घर से बाहर मित्रों के स्थान पर करती है । अपने सवा सौ में से शेष घर का खर्चा मैं चलाता हूँ । धीरे-धीरे इस प्रकार निर्वाह करने का अभ्यास हो गया है ।"

"इतनी आमदनी पर वह चुनाव लड़ने जा रही है क्या ?"

"अब तो आप आये ही हैं । यह बात उससे पूछ लीजियेगा ।"

"हमने कुछ रुपया दहेज के रूप में भी तो दिया था ?"

"हाँ ! वह भी हमने आधा-आधा बाँट लिया है । उसमें से उसके पास क्या बचा है, मैं जानता नहीं । मेरे भाग में से तो अभी कुछ बचा है ।"

"पर देवीदत्त ! अढ़ाई सौ तो बहुत कम आय है । शायद यही कारण है कि उसकी तुमसे बनती नहीं ।"

"यह हो सकता है । इस पर भी मैंने कोई बात छिपाकर तो रखी नहीं थी । मेरी कम आय की बात पर तो विवाह से पहले विचार करना चाहिए था ।"

"हमारा विचार था कि आपकी आवश्यकताएँ बढ़ेंगी तो आप आय भी बढ़ाने का यत्न करेंगे ।"

"मैं इस सिद्धान्त को मानने वाला हूँ कि आवश्यकताएँ आविष्कार की जननी हैं (निसैसिटी इज़ दि मदर ऑफ़ इन्वैन्शन), परन्तु डाक्टर साहब ! मुझको ऐसा अनुभव हुआ है कि विवाह से मेरी आवश्यकताएँ अधिक नहीं हुईं। इससे मेरा बोझा बढ़ा है। बोझा तो कमर तोड़ देता है, मन में स्फूर्ति उत्पन्न नहीं करता।"

डाक्टर, मास्टर की विवेचना पर मन्त्रमुग्ध हो उसका मुख देखने लगा। उसके मुख से ये शब्द निकले, "आवश्यकताएँ नहीं, बोझा बढ़ा है ! खूब ! खूब ! पर देवीदत्त, दोनों में क्या अन्तर मानते हो ?"

"एक अपनी इच्छा से स्वीकार की जाती है। वह जीवन का एक अंग हो जाती है। दूसरी बाहर से लाद दी जाती है। जीवन उस का तिरस्कार करता है। रीता देवी मेरे जीवन का अंग नहीं बन सकी, इस कारण वह बोझा-मात्र ही है।"

डाक्टर ने कुछ और जानने के लिए पूछा, "रीता से जीवन एकमय करने का यत्न क्यों नहीं किया ?"

"उसके लिए अवसर ही नहीं मिला। वह विवाहित जीवन को एक 'कोऑपरेटिव सोसाइटी' मात्र समझती है। वह भी देखने वालों की आँखों में धूल झोंकने के लिए।"

डाक्टर रीता के इन विचारों को जानता था। इस पर भी उसका विचार था कि एक युवक युवती के समीप रहे तो दोनों में यौन-सम्बन्ध होना स्वाभाविक है और उसके पश्चात् दोनों के जीवन एक प्रवाह में बहने लगते हैं। इस कारण उसने कहा, "प्रतीत होता है कि आपका परस्पर यौन-सम्बन्ध कुछ अधिक घनिष्ट नहीं हुआ ?"

"घनिष्ठ की बात छोड़िये। वह हुआ ही नहीं और है ही नहीं।"

"तो इसमें दोष किस का मानूँ—तुम्हारा या लड़की का ?"

"मैं तो दोष किसी का भी नहीं मानता। हमारा विवाह हुआ ही नहीं, ऐसा समझता हूँ। हमारा एक कान्ट्रेक्ट हुआ है, जिसमें यौन-सम्बन्ध की शर्त नहीं है।"

डाक्टर इस अवस्था को जान कर गम्भीर हो गया। वह मन में विचार करता था कि रीता को आवारागर्दी से बचाने के लिए उसने इस भले मनुष्य के गले में बोझा लटका दिया है।

इस समय वे मकान पर पहुँच गये थे। पहाड़ पर कुछ चढ़ कर मकान था। मकान से पूर्ण घाटी का दृश्य दिखाई देता था। मकान के सामने एक छोटी सी पुष्प-वाटिका थी। मकान में रसोई, गुसलखाना छोड़ कर चार कमरे थे। एक कमरा रीता ने बन्द कर रखा था। एक बैठक थी, जहाँ रीता से मिलने के लिए आने वाले लोग बैठते थे। मास्टर से तो कभी ही कोई घर पर मिलने आता था। एक कमरे में रामी ठहरी हुई थी। वह अपना कमरा खुला छोड़ गई थी। इसी में देवीदत्त ने डाक्टर और स्वरूप रानी तथा नीला को ठहरा दिया। चौथा कमरा देवीदत्त के अपने पास था। नीचे के तल पर एक कोठरी में नौकर रहता था।

रामी का कमरा मकान के पिछवारे में था और वहाँ से ताल का दृश्य बहुत ही भली भाँति दिखाई देता था।

जब स्वरूप रानी अपने बिस्तर इत्यादि सामान लगवा चुकी तो भोजन का प्रबन्ध हो गया। भोजनोपरान्त वे कमरे की खिड़की में से ताल का दृश्य देखने में लीन थे, जब देवीदत्त ने उनसे सायंकाल तक की छुट्टी माँगी,

"मुझको लड़कों की एक सभा में जाना है। तब तक आप से छुट्टी चाहता हूँ।"

: ८ :

डाक्टर एक सप्ताह के लिए नैनीताल आया था। उस काल में रीता लखनऊ से लौट कर नहीं आई। डाक्टर इत्यादि को आये तीन दिन होगए थे, जब उसका पत्र आया। उसमें उसने शीघ्र नैनीताल न लौट सकने के विषय में लिखा था, "यहाँ इलैक्शन बोर्ड वाले झगड़ा कर रहे हैं। वे टिकट देने के लिए रुपया माँगते हैं। मैं उनसे बातचीत कर रही हूँ। कठिनाई यह है कि मैं कांग्रेस के आन्दोलनों में जेल नहीं गई। इस कारण एक लक्ष्मी

चन्द् शाह को टिकट देने की बात चल रही है। वे पिछले नमक सत्याग्रह में जेल गए थे और दस सहस्र रुपया इलैक्शन बोर्ड को दे भी रहे हैं। इस पर भी मैं निरुत्साह नहीं हुई हूँ और टिकट पा जाने की आशा में हूँ। एक मुसीबत यह है कि कांग्रेस का इतना प्रभाव है कि उसके टिकट के बिना चुनाव में जीतना असम्भव ही है।"

इससे स्वरूप रानी और नीला को बहुत निराशा हुई। डाक्टर की चिट्ठी पढ़ हँसी निकल गई। देवदत्त इस हँसी का अर्थ नहीं समझ सका। उसके, प्रश्नभरी दृष्टि से अपनी ओर देखने पर डाक्टर ने कहा, "हम शीघ्र ही दिल्ली लौट जाना चाहते हैं। रीता से मिल कर आप दोनों के कॉन्ट्रेक्ट में कुछ परिवर्तन कराने का यत्न करना चाहता था, परन्तु यह लड़की तो इस ओर ध्यान ही नहीं दे रही।

"देवीदत्त !" डाक्टर ने गम्भीर हो पुनः कहा, "मुझ को शोक है कि इस विवाह से हमने तुम को कुछ कष्ट ही दिया है।"

"आप मेरे विषय में चिन्ता न करें।" देवीदत्त ने गरदन ऊँची कर कहा, "मैं अपना काम चला ही रहा हूँ। साथ ही आपका दिया हुआ धन मेरे बहुत काम आया है। उसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं चाहता था कि रीता देवी से कॉन्ट्रेक्ट में जिस वस्तु का अभाव था, वह किसी अन्य से कॉन्ट्रेक्ट करके पूरा कर लूँ। यह अभाव अस्थायी रूप में तो पूर्ण किया जा सकता है, परन्तु अभी तक कोई स्थायी प्रबन्ध नहीं मिला।

"इस पर भी आप यहाँ ठहरिये। यहाँ का जलवायु बहुत अच्छा है। नीला को तो निस्सन्देह लाभ होगा। पढ़ाई के कारण वह कुछ दुबली हो गई प्रतीत होती है।"

"नीला जाने और नीला की माँ जाने। मैं तो एक सप्ताह से अधिक नहीं रह सकता।"

स्वरूप रानी कहती थी कि यदि रीता से बिना मिले चले गये तो इतना समय भी व्यर्थ जायगा। इस पर यह निश्चय हुआ कि स्वरूप रानी और नीला एक होटल में ठहर जाएँ और रीता से मिल कर, जब मन करे, दिल्ली

लौट आएँ।

देवीदत्त ने कहा भी कि वे उसके मकान में ही ठहर सकते हैं, परन्तु डाक्टर ने यह उचित नहीं समझा। इस पर भी जब तक डाक्टर रहा वे सब देवीदत्त के मकान पर ही रहे।

इस बीच में एक घटना हो गई। उसी कमरे में, जिसमें वे ठहरे हुए थे, दरी के नीचे से एक पत्र निकला, जो रामी के नाम आया था। ऐसा प्रतीत होता था कि कभी वह पत्र भूल से कमरे में बिछी दरी के परत में आ गया और वहाँ छिपा रह गया था।

आज स्वरूप रानी ने बिस्तर और अन्य कपड़े धूप में डालने के लिए निकाले तो नौकर से कमरे में रखे पलंगों को भी धूप लगाने के लिए निकलवा दिया। एक पलंग उठाते समय दरी उठ गई और नीचे से एक खुला लिफाफा, जिस पर लिखा था, 'रामी, द्वारा मास्टर देवीदत्त, मल्ली ताल, नैनीताल' मिल गया।

नीला ने लिफाफा उठा लिया और माँ से बोली, "मम्मी! यहाँ रामी की एक निशानी रह गई प्रतीत होती है।"

"कौन रामी?"

"वही रामी होगी, जो दिल्ली से किसी के साथ भाग आई थी। और कौन हो सकती है? वह यहाँ आकर इस कमरे में ठहरी होगी। देखो दरी के नीचे से यह लिफाफा निकला है।"

डाक्टर को लिफाफा दिखाया गया। वह खुला हुआ था और उसमें से चिट्ठी निकल चुकी थी। चिट्ठी दिल्ली से आई थी। डाक्टर इस लिफाफे पर मोहर की तारीख देखने लगा। मोहर फीकी छपी थी। इस पर भी सन् १६३६ भली भाँति पढ़ा जाता था। डाक्टर इस चिट्ठी को देख गम्भीर विचार में पड़ गया? रामी को दिल्ली से आये डेढ़ वर्ष हो चुका था और यह चिट्ठी पाँच मास से पुरानी नहीं हो सकती। फिर पता मार्फत मास्टर देवीदत्त लिखा था। इसका अर्थ यह है कि वह यहाँ पीछे भी आकर ठहरी है और इन दिनों की, मास्टर ने रामी की कोई बात इन से नहीं की।

इस पर डाक्टर ने देवीदत्त के नौकर को बुलाकर पूछा, "हमारे आने से पहले इस कमरे में कौन रहता था ?"

नौकर बितर्-बितर् मुख देखता रह गया। वह उत्तर देने में संकोच कर रहा था। डाक्टर का सन्देह और भी प्रबल हो गया। वह नौकर को कमरे की खिड़की में ले गया और दोनों खिड़की में से ताल का दृश्य देखते हुए बातें करने लगे। इस समय स्वरूप रानी और नीला कमरे से बाहर कपड़े धूप में फैला रही थीं।

नौकर ने झिझकते हुए कहा, "साहब ! मेरा नाम न लिया जाय तो बताऊँ ?"

"हाँ बताओ। तुम्हरा नाम बीच में नहीं आएगा।"

"यहाँ एक लड़की रहती थी। उसका नाम रामी था। वह पण्डिताइन जी को दीदी कहती थी और मास्टरजी को जीजा। पण्डिताईनजी तो दिन-भर घूमती रहती थीं और मास्टरजी रामी के साथ भोजन करते थे तथा भ्रमण करने जाया करते थे।"

"उसका मास्टरजी से कैसा सम्बन्ध था ?"

"सो तो मैं कुछ नहीं जानता। इतना कह सकता हूँ कि मैंने उसको मास्टरजी से कभी भी न तो अनुचित व्यवहार और न ही कोई ऐसी-वैसी बात करते देखा, सुना है। इस पर भी मास्टरजी जब उसको शृंगार करने को कहते थे, तो वे करती थीं।"

"कभी किसी क्लब या होटल में जाते थे ?"

"नहीं ! हमने कभी जाते नहीं देखा। यहाँ तक कि रामी कभी मास्टर जी के साथ सिनेमा देखने भी नहीं जाती थी।"

"अब वह कहाँ है ?"

"आपके आने से कुछ घण्टे पूर्व, वह अलमोड़ा चली गई थी। सुना है आठ-दस दिन तक लौटेगी।"

डाक्टर मास्टर देवीदत्त के अस्थाई सम्बन्ध के रहस्य को समझ गया। उसको यह समझ आया कि कभी-कभी चोरी-चोरी रामी से देवीदत्त का यौन-

सम्बन्ध होता रहा है। इस विषय में नौकर से और कुछ नहीं पूछा गया। इस पर भी डाक्टर मन-ही-मन इस रहस्य को सुलझाने के लिए योजना बनाने लगा। उसने नीला तथा स्वरूप रानी को इस विषय में कुछ नहीं बताया। डाक्टर ने देवीदत्त से पूछा, "रामी के विषय में पता चला कि वह कहाँ रहती है?"

"कुछ पता नहीं कि वह कहाँ है। यहाँ से अलमोड़ा गई थी।"

"कब गई थी?"

देवीदत्त ने बहुत चतुराई से बात बदल दी, "वह दिल्ली से क्यों चली आई थी, पता नहीं चला। रीता देवी का अनुमान था कि उस का विमल से विवाह होने वाला है। फिर एकाएक वह आई और उसके पीछे यह समाचार मिला कि विमल और नीला की सगाई हो गई है।"

"उससे पूछना था। वह क्या कहती थी?"

"वह तो कहती थी कि वह अलमोड़ा के एक युवक से प्रेम करने लगी है और उसके साथ भाग आई है। परन्तु मुझको उसके कहने पर सन्देह होता है।"

"तो उसके साथ वह युवक नहीं था?"

"यहाँ वह अकेली ही आई थी।"

"आपको उसकी बात पर सन्देह क्यों हुआ?" डाक्टर ने बात को स्पष्ट करने लिए पूछा।

देवीदत्त मुस्कराया और बोला, "दिल्ली में मैंने उससे सम्बन्ध उत्पन्न करने का यत्न किया था, परन्तु उसने ना कर दी थी और उसके बाद वह किसी नौकर के प्रेम में फँस गई होगी, यह विश्वास नहीं होता।"

"यह तो कोई युक्ति नहीं! वह यहाँ कितने दिन रही थी?"

"जब तक उसके मनमें रहने की इच्छा हुई।"

डाक्टर हँस पड़ा। उसके मन की बात जानने के लिए उसने कहा, "मुझको ऐसे प्रमाण मिल गए हैं कि वह हमारे आनेसे एक दिन पहले इस हमारे वाले कमरे में रहती थी।"

देवीदत्त मुस्कराया और चुप कर रहा।

: ६ :

स्वरूपरानी की इच्छा थी कि वह रीता से मिलकर ही दिल्ली लौटेगी। इस कारण उसे और नीला को एक होटल में ठहरा कर, डाक्टर दिल्ली लौट गया। डाक्टर के जानेके दूसरे दिन ही रामी अलमोड़ा से लौट आई। आने पर उसको विदित हुआ कि स्वरूप रानी अभी भी नैनीतालमें ठहरी हुई है। उसको अपने को प्रकट करना अभी रुचिकर नहीं था, इस कारण वह पिछले पाँव लौट गई और पुनः अलमोड़ा चली गई। जाने से पूर्व देवीदत्त ने उसे यह बता दिया था कि डाक्टर को उसके वहाँ रहने का सन्देह हो गया है। रामी का कहना था, "जब तक वे स्वयं अपने यत्न से पूर्ण रहस्य जान नहीं जाते तब तक आपको मेरे विषय में कुछ भी नहीं बताना चाहिए। मैं अपने को ऐसा रखना चाहती हूँ कि रहस्योद्घाटन के समय मेरी आँखें लज्जा से झुकने की आवश्यकता न समझें।"

देवीदत्त रामी के व्यवहार पर विस्मय करता रहा। वह, उसके अन्तरात्मा में उठ रहे भावों को जैसा समझ सका था, मिथ्या मानता था।

स्वरूप रानी और नीला होटलमें रहती हुई भी प्रायः नित्य देवीदत्त को मिलने आती थीं। देवीदत्त भी प्रायः नित्य सायंकाल को, भोजन होटल में उनके साथ खाता था। स्वरूप रानी को वहाँ ठहरे एक सप्ताह और व्यतीत हो गया और रीता अभी भी नहीं आई। इससे स्वरूपरानी को बहुत क्रोध आ रहा था, परन्तु वह कर ही क्या सकती थी? रीता के दो पत्र लखनऊ से आये थे, परन्तु उन दोनों में उसने अपने ठहरने का पता नहीं लिखा था।

नीला को भी रीता के इस व्यवहार पर बहुत रोष था। उसने अपनी माँ से एक दिन कहा, "मम्मी! कितने दिन तक हम यहाँ उसकी प्रतीक्षा करते रहेंगे?"

समीप देवीदत्त बैठा था। उसने कहा, "जब तक नैनीताल का जलवायु अनुकूल रहता है।"

"इसमें जलवायु की क्या बात है ? हम काश्मीर जाने वाले थे। मम्मी ने कहा कि एक सप्ताह तक दीदी के पास ठहर कर दिल्ली लौट जायँगे और फिर वहाँ से काश्मीर चलेंगे।"

"काश्मीर में क्या रखा है ? म्लेच्छ देश है। लोग गन्दे हैं, मकान पिस्सुओं और खटमलों से भरे रहते हैं। वर्षा हो तो कई दिन तक कीचड़ बना रहता है। वर्षा बन्द हो तो मलेरिया फैल जाता है। नैनीताल के समान सुन्दर स्थान वहाँ आपको नहीं मिलेगा।"

"आप वहाँ गये भी हैं कभी ?"

"तीन बार गया हूँ। मुझको तो वह स्थान पसन्द नहीं।"

"आप काश्मीरी पंडित होते हुए ऐसा कहते हैं ?"

"होंगे काश्मीरी मेरे पूर्वज। अब तो मैं अलमोड़ा-नैनीताल का रहने वाला हूँ। मुझको तो काश्मारी हातों को दूर से ही देख, उनसे दुर्गन्ध आने लगती है।"

"और वहाँ के फल ?"

"फलों की यहाँ भी कमी नहीं। चेरी, बग्गूगोशे, आलूबुखारे, सेब, जो कुछ भी चाहें यहाँ मिल जाते हैं।"

देवीदत्त की समालोचना ने नीला के मन में काश्मीर जाने के विचार को ढीला कर दिया। इस पर भी स्वरूप रानी ने कहा, "फिर भी कितनी प्रतीक्षा की जा सकती है रीता की ?"

"मम्मी !" देवीदत्त ने कहा, "जहाँ इतने दिन तक ठहरे हैं, कुछ दिन और ठहर जाइये। नीला देवी का कालेज तो अभी खुला नहीं और फिर मेरी ओर देखिये। मैं कब से आपकी सुपुत्री की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"कब से प्रतीक्षा कर रहे हैं आप ?" नीला ने अपने चुलबुले पन में पूछ लिया।

देवीदत्त का सतर्क उत्तर था, "जब से हमारा विवाह हुआ है, तब से ही समझ लें।"

नीला इसका अर्थ समझ गई और लज्जा से लाल हो गई। इस कारण

उसने एक दिन, जब दोनों ताल के किनारे खड़े नौकाओं के बहने का दृश्य देख रहे थे, पूछ ही लिया, "जीजा जी ! दीदी आपसे लड़ी हुई है क्या ?"

"हाँ और नहीं भी।"

"वाह ! आप मुझको मूर्ख समझते हैं क्या ?"

"नहीं नीला देवी ! आप अभी बच्ची हैं। कुछ बातें अभी आप समझ नहीं सकतीं।"

नीला हँस पड़ी और बोली, "आपकी आयु बड़ी हो गई है, इससे आप कई बातें बचपन की भूल गये हैं।"

इस बात को सुन देवीदत्त नीला के मुख की ओर देखने लगा। उसे कुछ ऐसा समझ आया कि नीला की आँखों में शरारत समा रही है। उसने उसे और उत्साहित करने के लिए कह दिया, "अपनी जानकारी में तो मैं अपनी स्मरण-शक्ति को बहुत अच्छी समझता हूँ। हाँ यह है कि आजकल के बच्चे शायद वे खेल खेलते हैं, जो मेरे काल में नहीं खेले जाते थे।"

"क्या खेल खेलते थे आप बचपन में ?"

"हम कबड्डी खेलते थे। गेंद फेंकना, गाना-बजाना, दौड़ना, कूदना, इत्यादि खेल पसन्द करते थे।"

"और हम क्या खेलते हैं ?"

"एक स्कूल मास्टर के अनुभव का आप समर्थन करेंगी। आजकल के लड़के-लड़कियाँ आँख मिचौनी खेलना अधिक पसन्द करते हैं।"

नीला इसका अर्थ नहीं समझी। उसने तुरन्त कह दिया, "आपके स्कूल में अवश्य यह खेल विशेष महत्त्व रखता होगा। हमारे कालेज में तो हाकी, फुटबाल, क्रिकेट इत्यादि ही खेले जाते हैं।"

"हाँ ! पर यह तो खेल के मैदान में है न। एक स्कूल के कितने लड़के इसमें भाग ले सकते हैं ? मैं समझता हूँ कि यदि जीवन-क्षेत्र में देखें तो मेरे कथन का समर्थन ही होगा। जितना अधिक सम्पर्क हमारा अपने माता-पिता से तब था, उतना ही अधिक आज लुकाव-छिपाव हो गया है।"

"मैं तो इससे उलट देखती हूँ। हम अपने माता-पिता से जिस स्वतन्त्रता

से बातचीत करते हैं, पुराने समय में नहीं होती थी।"

"बातचीत करना तो हो सकता है, परन्तु वह बात-चीत मन के भावों को छिपाने के लिए नहीं होती क्या ?"

देवीदत्त ने मुस्कराते हुए नीला की आँखों में देखा। वह दूर सामने किनारे पर आ-जा रहे सैर करने वालों को देख रही प्रतीत होती थी। वास्तव में वह देवीदत्त के कहने का अर्थ समझने का यत्न कर रही थी। उसने कहा, "मैं तो समझती हूँ कि मैंने अपने मन के भावों को छिपाने का कभी यत्न नहीं किया।"

इस समय स्वरूप रानी हाथ में तार लिये आ गई। तार देवीदत्त का नौकर होटल में दे गया था। उसका विचार था कि मास्टर वहाँ होगा। देवीदत्त ने तार खोला। तार रीता का था। लिखा था, "गॉट कांग्रेस टिकट। रीचिंग टैन्थ।"

स्वरूप रानी ने कहा, "तो कल आ रही है ?"

"यही लिखा है।"

इस पर नीला ने पूछा, "क्या अभी भी कुछ सन्देह है ?"

"मुझको कभी विश्वास हुआ ही नहीं, तुम्हारी दीदी पर।"

यह बात स्वरूप रानी को पसन्द नहीं आई। इस पर भी रीता के देवीदत्त से व्यवहार की जो व्याख्या वह सुन चुकी थी, उसके प्रकाश में देवीदत्त का कटाक्ष स्वाभाविक ही प्रतीत होता था। पर नीला आज हवाई घोड़े पर सवार थी। उसने कहा, "जीजाजी! जब आपको दीदी पर विश्वास नहीं, तो यह विवाह व्यर्थ ही हुआ है न ?"

"नहीं! ऐसी बात नहीं नीला देवी! मैं एक व्यवहारिक पुरुष हूँ। प्रत्येक वस्तु से लाभ उठाने का ढंग मुझको आता है। सो इस कहे जाने वाले व्यर्थ के विवाह से भी मैं कुछ तो लाभ निकाल ही लेता हूँ।"

"क्या लाभ होता होगा आपको ? दीदी इधर-उधर भागती रहती है और आप स्कूल में भाड़ झोंकते हैं।"

देवीदत्त हँस पड़ा और ताल में नौकाओं की हो रही दौड़ को देखता

रहा।

रीता आई तो चुनाव के प्रबन्ध में लग गई। उसने कुलियों की सभा बुलाई और उसमें बताया कि कांग्रेस भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाने वाली है। इस कारण प्रत्येक देशवासी को, जो भारत माता का भक्त है, कांग्रेस को वोट देना चाहिये। उसने यह भी बताया कि वह निर्धन जनता से सहानुभूति रखती है और उनके कल्याण की चिन्ता करती रहती है। इस कारण उनके वोट की वह ही अधिकारिणी है। उसने दुकानदारों और नैनीताल के किरायेदारों को बताया कि वह एक निर्धन स्कूल-मास्टर की बीवी होने से एक किराये के मकान में रहती है। वह स्वयं किरायेदार होने से किरायेदारों की कठिनाइयों को समझती है। इससे वह ही उनके वोट की हकदार है। वह वहाँ पर रहने वाले सरकारी नौकरों को भी मिली और उनको कहने लगी कि उसका मेल-जोल सरकारी अफसरों से है। वह उनके लिए बहुत कुछ कर सकती है।

इस प्रकार नैनीताल में लौटते ही वह चुनाव के कार्य में व्यस्त हो गई। पहले दिन वह अपनी मां और बहन से मिली और फिर दो सप्ताह व्यतीत हो गए और वे उसको देख भी नहीं सके।

इस सब समय देवीदत्त नित्य स्वरूप रानी और नीला से मिलने जाता था। सायंकाल जब वह स्कूल से घर आता तो सीधा होटल में जा पहुँचता। वहाँ नीला और स्वरूप रानी के बीच बैठ चाय पीता और फिर इधर-उधर की बातों में दो-तीन घन्टे व्यतीत कर, रात को खाना खा कर लौट आता। कभी चाय के पश्चात् वे तीनों घूमने भी चले जाते। इन दिनों उसने रीता के विषय में कभी कोई बात नहीं की। वह सदैव अपनी सास और साली को प्रसन्न करने में लगा रहता था। अन्त में यह स्थिति स्वरूप रानी को असह्य हो गई। उसने एक दिन पूछ ही लिया, "रीता किस समय घर आती है?"

"मम्मी! मैं सोया होता हूँ तो वह आती है और वह सोई होती है कि मैं स्कूल चला जाता हूँ।"

"मैं आज उससे अवश्य मिलूँगी।"

"कुछ लाभ नहीं होगा। कोई कष्ट हो तो मुझको बताइये। मैं आपकी सेवा के लिये तैयार हूँ।"

"हम कल यहाँ से चले जाना चाहते हैं। इस कारण मैं उससे कुछ कहना अपना कर्तव्य मानती हूँ।"

"तो ऐसा करिये। भोजन कर आप रात को मेरे निवास-स्थान को सुशोभित करिये और वहाँ उसकी प्रतीक्षा करिये। वहीं रात सोइये और वहाँ ही उससे भेंट करने का अच्छा अवसर मिल जायगा।"

: १० :

विवश स्वरूप रानी और नीला रात के भोजन के पश्चात् देवीदत्त के साथ उसके मकान पर जा पहुँचीं और रीता के कमरे में जा बैठीं।

बैठक में कुछ लड़के खद्दर के कपड़े पहने वोटरों की सूचियाँ नकल कर रहे थे। कुछ बैठे गप्पें हाँक रहे थे। एक तीस-पैंतीस वर्ष की आयु का पुरुष कुछ उपस्थित लोगों को काम बाँट रहा था। "देखो भोला!" एक लड़के से वह कह रहा था, "तुम मल्लीताल पोलिंग बूथ की सूची ले लो और कल से ही वोटरों से मिलना आरम्भ कर दो। पाँच दिन में दो सहस्र वोटरों से मिलना है। जब मिल लोगे तो फिर रीता देवी तुम्हारे साथ जायँगी और सबसे प्रार्थना कर आएँगी।"

"महेश!" उसने एक दूसरे से कहा, "यह पोस्टर का ड्राफ्ट लेकर तुम बरेली चले जाओ और छपवा कर परसों लौट आना। बताओ कितना रुपया तुमको दे दिया जाय?"

इस प्रकार काम बहुत वेग से चल रहा था। स्वरूप रानी पिछले कमरे में बैठी यह हलचल सुन रही थी। देवीदत्त और नीला रामी के कमरे में पूर्णिमा की चाँदनी में ताल की छटा देखने लगे। दोनों एक दूसरे से सटकर खिड़की में खड़े देख रहे थे। चाँदी की चादर के समान ताल में पानी चमक रहा था और काले-काले पहाड़ उसको चारों ओर से घेरे ऐसे दिखाई

देते थे, मानों राक्षस दर्पण में मुख देखने को उमड़ रहे हों।

कितनी ही देर तक दोनों चुपचाप इस अति मनमोहक दृश्य को देखते रहे। एकाएक नीला ने एक गम्भीर साँस छोड़ी और देवीदत्त ने यह अनुभव किया। इससे वह उसके मुख की ओर देखकर पूछने लगा, "क्या सोच रही हो नीला?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो है। फिर आँख मिचौनी खेलने लगी हो न मुझ से?"

नीला को उस दिन की बात याद आ गई। इस पर उसने कहा, "मैं आपके विषय में ही विचार कर रही थी।"

"क्या विचार कर रही थी?"

"तो आप नहीं जानते क्या?"

"मेरी बातें अनेक हैं। तुम इस समय किस विषय में विचार कर गम्भीर निःश्वास छोड़ रही थीं?"

"मैं विचार कर रही थी कि कितना नीरस जीवन है आपका!"

"यह सर्वथा सत्य नहीं है नीला! कम-से-कम इस समय मैं अपने को अति आनन्द में पाता हूँ।"

"क्या आनन्द मिल रहा है आपको? इस मनोहर चाँदनी रात में क्या आप यहाँ कुछ अभाव नहीं पाते?"

"पाया करता था, परन्तु इस समय नहीं। जब तक तुम मेरे साथ यहाँ खड़ी हो मेरे मन में किसी अभाव का विचार नहीं रहा।"

एक क्षण के लिए नीला का कन्धा फड़का और इसको देवीदत्त ने अनुभव किया। दोनों के कन्धे एक-दूसरे से लग रहे थे। देवीदत्त ने अपनी बात जारी रखी, "पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के अभाव की पूर्ति के लिए प्रकृति ने बनाये हैं और जब-जब ये दोनों इकट्ठे होते हैं तो वे अभाव मिट जाते हैं। मैं इस समय ऐसा ही अनुभव करता हूँ।"

कमरे में लैम्प जल नहीं रहा था। केवल खिड़की में से आ रही चाँदनी ही वहाँ प्रकाश का स्रोत थी। इस कारण देवीदत्त यह कह

नीला के मुख पर देखने तो लगा पर वह वहाँ कुछ देख नहीं सका। नीला अपने सामने देख रही थी। वह अभी भी किसी गम्भीर विचार में पड़ी चुप थी। देवीदत्त ने अपनी बात की और अधिक व्याख्या करने के लिए कहा, "क्या विवाह होने से कोई विशेष सम्बन्ध बन जाता है? मैं इसका अनुभव नहीं रखता। हाँ आज की भाँति कभी किसी स्त्री से बातें कर अथवा केवल चुपचाप हाथ में हाथ पकड़कर अपने अभाव की पूर्ति हो रही अनुभव करता रहता हूँ।"

इतना कह उसने अपना हाथ नीला के हाथ पर अति कोमलता से रखकर कहा, "ऐसे दृश्य ही हैं, जो मुझको नैनीताल के साथ बाँधे हुए हैं और जीवन की कटुता को शेष करते रहते हैं।"

नीला ने अभी भी कुछ उत्तर नहीं दिया और दोनों फिर चुपचाप ताल के दृश्य को देखने लगे। दोनों खिड़की की चौखट पर बोझा डाले बाहर को झुके हुए थे। धीरे-धीरे नीला के सिर के बाल देवीदत्त की गाल पर लगने लगे और उसका मुख उसके कन्धे पर टिक गया। देवीदत्त अपना हाथ उसकी गरदन की ओर से उसके सिर पर ले गया और अपनी उंगलियों को उसके बालों में फेरने लगा। नीला किसी अतीत की स्मृतियों में खोई हुई थी। उसने न तो अपना सिर उसके कन्धे से उठाया और न ही वह उसके समीप से हटी।

दूर घड़ियाल ने रात का एक बजाया। देवीदत्त ने कहा, "नीला! एक बज गया है। अब चलकर सोना चाहिए।"

"ओह! तो हमको यहाँ खड़े तीन घण्टे हो गये।"

"चलो सो जाओ।"

दोनों रीता की बैठक में आये तो निर्वाचन का कार्य करने वाले प्रायः सब कार्यकर्ता चले गये थे। वही पुरुष जो दूसरों को आज्ञा दे रहा था, फर्श पर ही एक शाल ओढ़, लेटा हुआ खुर्राटें भर रहा था। वे दोनों भीतर गये तो स्वरूप रानी कुर्सी पर बैठी-बैठी सो गई थी। देवीदत्त ने नीला की आँखों में देखा, मुस्कराया और हाथ जोड़ नमस्कार कह अपने कमरे में चला

गया।

नीला ने रीता के बिस्तर में से एक कम्बल निकाल मम्मी के ऊपर डाल दिया। वहाँ एक ही पलंग था। उस पर बिछे बिस्तर में घुस गई और सो गई। अढ़ाई बजे के पीछे रीता आई और और अपने कमरे में माँ और बहन को अधिकार किये देख, स्वयं रामी के कमरे में जा सोने का विचार करने लगी। वहाँ पलंग तो था परन्तु बिस्तर के लिए कपड़ों के सन्दूक से निकालने में खड़ाक हुआ और स्वरूप रानी जाग पड़ी।

वह आराम कुर्सी पर सीधी हो पूछने लगी, "तो रीता! तुम आ गई हो?"

"हाँ।" उसने कलाई पर बँधी घड़ी देख कहा, "अभी तो अढ़ाई ही बजे हैं।"

"तो इससे भी देरी से आया करती हो तुम?"

"आज 'बाल' में गई थी। 'बाल' तो प्रातः चार बजे तक चलेगा। मैं जल्दी ही चली आई हूँ। यहाँ इलैक्शन का काम भी तो कुछ कम नहीं।"

"मैं कल दिल्ली लौट जाना चाहती हूँ। इस कारण तुमसे मिलने के लिए यहाँ रहना पड़ा है।"

"अच्छी बात। अब मम्मी सो जाओ। कल कितने बजे की बस से जाओगी?"

"दस बजे जाकर साढ़े ग्यारह की गाड़ी पकड़ना चाहती हूँ।"

"तब तो ठीक किया है। मैं तो बहुत कठिनाई से ग्यारह बजे तक जाग सकूँगी। अब सो जाओ। जाकर पत्र लिखना।"

"पर मैं तुमसे एक-दो बातें भी करना चाहती हूँ।"

"अच्छी बात। जल्दी करो। दिन-भर घूमने से थककर चूर हो रही हूँ।" इतना कह वह माँ के सामने एक कुर्सी घसीटकर बैठ गई।

स्वरूप रानी इस व्यवहार से आगबबूला हो रही थी। इस पर भी वह इस कठिनाई से प्राप्त अवसर को व्यर्थ खोना नहीं चाहती थी। उसने बिना

भूमिका के बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "रीता ! तुम जानती हो कि तुम्हारा विवाह हो चुका है ?"

"होगा।"

"तो तुम नहीं जानती क्या ?"

"मेरे से पूछकर विवाह नहीं किया गया। मेरी इच्छा विवाह करने की नहीं थी। इस पर भी एक निर्धन स्कूल मास्टर को मेरे गले बाँध दिया गया है। मैं तो अपने को अविवाहित ही समझती हूँ।"

"तो यहाँ आकर क्यों रहती हो ?"

"किराया देती हूँ और रहती हूँ।"

"मास्टर का आधा वेतन किसलिए लेती हो ?"

"केवल-मात्र इसलिए कि मैंने उसको एक सुन्दर लड़की का पति कहाने का सौभाग्य प्रदान किया है।"

"बस ?"

"इस सौभाग्य का यह बहुत कम दाम है मम्मी ! लोग तो इसके लिए लाखों देने को तैयार हैं।"

"यह सब ठीक नहीं रीता ! किसी दिन इस सबका बहुत कटु फल पाओगी।"

"कौन जानता है कि क्या होगा ? अपने विचार से तो मैं अपना मार्ग बना रही हूँ। मुझको विश्वास है कि मैं निर्वाचन में सफल हो जाऊँगी। तब यू० पी० की धारा-सभा में मैं पहली स्त्री सदस्या हूँगी। जब मैंने वहाँ दो-तीन व्याख्यान दिये तो निश्चय मेरी धाक धारा-सभा में बैठ जायगी और फिर मैं प्रान्त के नेताओं में मानी जाऊँगी। एक स्कूल मास्टर की पत्नी बनने से क्या मिलता है मुझको ?"

स्वरूपरानी लड़की के साथ इतनी खुल कर बात नहीं करती थी, जितनी डाक्टर करता रहता था। इस पर भी वह अपने मन की बात किये बिना नैनीताल से जाने में लाभ नहीं समझती थी। इस कारण उसने कह ही दिया। उसने बात ऐसे की, मानो वह कुछ विचार रही है, "मालूम नहीं आजकल

के बच्चे कैसे हैं। जब मैं तुम्हारे जितनी थी, मेरा मन सदा पति के पास रहने को करता था। मेरी सगाई हुई तो मैं डाक्टर जी को देख पसीना-पसीना हो जाती थी। एक बार वह मुझ को कहने लगे कि विवाह के अर्थ क्या समझती हूँ मैं ? उस रात मुझको नींद नहीं आई। विवाह के पीछे तो कोई दिन खाली नहीं जाता था, जब मैं उनके पास नहीं रहती थी। कभी वे घर से बाहर रात रहते थे तो मैं सो नहीं सकती थी। अब मैं तुम्हारे में क्या देखती हूँ कि विवाह की रात से लेकर आज तक तुमने पति का स्पर्श तक नहीं किया।"

"पर मम्मी! पिताजी तुम्हारे पसन्द के थे। यह स्कूल-मास्टर मेरे पसन्द का नहीं है।"

"तुमको मजीद से विवाह कर लेने पर भी तो हमने मना नहीं किया था।"

"मैं उससे भी विवाह करना नहीं चाहती थी।"

"तो किससे करना चाहती थी ? क्या तुम को वह पसन्द था, जो एक रात कमरे में सोया था।"

"वह तो निपट मूर्ख था।"

"इस पर भी तुमने उसको पति का हक दे दिया था।"

"मम्मी! तुम नहीं समझती। मैं तुमको समझा नहीं सकती। पापा एक क्षण में मेरी बात समझ जाते हैं। वे होते तो मुझको बहुत कुछ समझाना नहीं पड़ता।"

"उन्होंने ही तो मास्टर देवीदत्त तुम्हारे लिए ढूँढा था।"

"मैंने भी तब ही निश्चय कर लिया था कि यह मास्टर केवल नाम-मात्र का मेरा पति बनेगा। और इस काम के लिए मैं इसको अपने धन का आधा भाग दे दूँगी। भगवान् का धन्यवाद है कि वह कुछ समझ रखता है और हम तीन वर्ष में एक बार भी नहीं झगड़े। पहली रात ही मैंने उस को मन की बात बता दी थी और एक बुद्धिमान् आदमी की भाँति यह अपना पलंग मुझसे दूर ले जाकर सो रहा था।"

"पर मैं पूछती हूँ कि तुम ब्रह्मचारिणी हो क्या ?"

"न मैं ब्रह्मचर्य का व्रत लिये हूँ, न ही वे ऐसे पाक-साफ हैं। हम एक घर में कॉन्ट्रेक्टीज़ के रूप में रहते हैं और शरीर की शेष आवश्यकताओं को अपनी-अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार पूर्ण करते रहते हैं।"

स्वरूप रानी जीवन की इस मीमांसा को सुन अवाक् रह गई। उसने आरामकुर्सी पर ढासना लगा, अपने को सर्दी से बचाने के लिए कम्बल, जो खिसककर नीचे गिर गया था, ऊपर कर लिया।

इस पर रीता उठ पड़ी, "मम्मी! अब तुम भली भाँति समझ गई होगी। मैं जाती हूँ।" वह कमरे से बाहर जाने के लिए घूमी, परन्तु कुछ विचार कर फिर लौट आई। रीता माँ के समीप आ कहने लगी, "एक बात और कह दूँ तो ठीक रहेगी। विमल और रामी परस्पर प्रेम करते थे और अब भी करते हैं। यह तुम्हारी, उसके और नीला के विवाह की योजना भी सफल होनी कठिन है। रामी अभी भी उसकी याद में जीवन व्यतीत कर रही है। उसने विमल की शिक्षा के लिए अवसर पैदा करने के अर्थ, अपने को उसके मार्ग से दूर हटा दिया है और जब विमल को पता चला कि रामी ने उसकी उन्नति के लिए कितना त्याग किया है, तो वह नीला को छोड़, उसके पास भाग जावेगा।"

इस पर स्वरूप रानी ने सतर्क हो उससे पूछा, "तुम जानती हो क्या कि वह कहाँ है ?"

"जानती हूँ। यह भी जानती हूँ कि उसने अलमोड़ा के किसी पुरुष से भाग जाने का बहाना इसलिए किया था कि विमल को नीला से विवाह करने में संकोच न रहे।"

इतना कह रीता रामी के कमरे में चली गई और भीतर से द्वार बन्द कर सो गई।

जब रीता और उसकी माँ में वार्तालाप आरम्भ हुआ था तो नीला जाग रही थी। वास्तव में जबसे वह देवीदत्त के मूक प्यार को स्वीकार कर आई थी, वह मन में एक विशेष प्रकार का आन्दोलन अनुभव कर रही थी। यह

आन्दोलन देवीदत्त पर दया के भाव से आरम्भ होकर सहानुभूति तक और सहानुभूति से उसके लिए आदर तक तो पहले ही पहुँच चुका था। आज रात यह आदर स्नेह और स्नेह से प्यार की सीमा तक पहुँच गया था। इस पर भी इसमें कोई दूषित भावना अभी नहीं आई थी। अब रीता और माँ की बातें सुन, विशेष रूप में रामी के त्याग की बात सुन तो वह एकदम घबरा उठी थी।

जब रीता गई, तब भी वह ऐसे पड़ी रही, जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं और गहरी नींद सो रही है। कुछ देर पीछे स्वरूप रानी कुर्सी से उठी और बिजली बुझा, नीला के बिस्तर में घुसकर लेट गई। उसने भी जो कुछ सुना था, वह उसके हृदय में एक भारी हलचल मचाने वाला था। वह चुपचाप बिना एक भी झपकी लिए लेटी रही। वह नहीं चाहती थी कि उसके कारण नीला की नींद खराब हो। नीला अपने स्थान जाग रही थी। वह भी हिल कर यह प्रकट नहीं होने देना चाहती थी कि वह जाग रही है।

आज उसको देवीदत्त का कहना समझ आया कि आँख-मिचौनी खेलने के क्या अर्थ हैं।

: ११ :

स्वरूपरानी और नीला अगले दिन काठगोदाम के लिए टैक्सी कर जाने लगीं तो देवीदत्त उनको विदा करने आया। नीला के मन में इस बात ने भारी प्रभाव उत्पन्न किया था। वह विचार करती थी कि रीता सगी बहन है। यह उसी बहन का नाम-मात्र का पति है, परन्तु उनका आदर करता है। उनके स्वागत के लिए आया था, अब उनको विदा करने आया है। जब वे मोटर में बैठ गए तो देवीदत्त ने नीला की माँ को और फिर नीला को हाथ जोड़ नमस्ते कही। नीला से उसने पूछा, "अब फिर दर्शन कब होंगे?"

"जीजाजी! अब आप आइएगा, शीत काल की छुट्टियों में। ठीक है न?"

"हाँ ! यदि तुम लोग निमन्त्रण दोगे तो आऊँगा।"

"मैं पिताजी से कहूँगी।"

सन् १९३७ के निर्वाचन हुए और देश भरमें कांग्रेस ने हिन्दू वोट प्राप्त किये। यू० पी० प्रान्त की धारा-सभा में तो कांग्रेस का पूर्ण बहुमत आ गया। ग्यारह प्रान्तों में से सात में कांग्रेस का बहुमत था। इस कारण यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि कांग्रेस उत्तरदायित्व स्वीकार कर, इन प्रान्तों में शासन चलाए अथवा उत्तरदायित्व अस्वीकार कर विधान भंग करे। इस विषय पर विचार करने के लिए कांग्रेसी धारा-सभाओं के सदस्यों का एक सम्मेलन दिल्ली में हुआ और रीता भी इस सम्बन्ध में दिल्ली आई। एक अन्य सदस्य, बाबू ब्रजेश कुमार के साथ मरीना में ठहर, अपने आने की सूचना अपने पिता को एक पत्र द्वारा उसने भेज दी। एक डबल-सीटिड रूम में दोनों ठहरे थे।

डाक्टर रीता से मिलने गया। वह उस समय वहाँ नहीं थी। ब्रजेश वहाँ लंच ले रहा था। डाक्टर अपनी लड़की के कमरे में एक युवक को लंच लेते देख यह समझा कि वह किसी गलत कमरे में आ गया है। इस कारण बाहर निकल, उसने कमरे का नम्बर पढ़ा और फिर रीता का पत्र, जिसमें उसने होटल के कमरे का नम्बर लिखा था, पढ़ा और विचार करने लगा कि यह किसकी भूल है।

डाक्टर को आते देख ब्रजेश तो समझ गया कि वह कौन है। इस कारण उसने उन्हें आश्चर्य से कमरे का नम्बर देखते पा, आवाज दे दी, "आइये साहब ! कहिये किसे देख रहे हैं ?"

"रीता देवी, एम० एल० ए० से मिलना चाहता था।"

"आइये वे यहीं ठहरी हैं। उनका खाना एक अन्य स्थान पर था, इस कारण बाहर गई हैं। अब आने ही वाली हैं।"

"और आपका परिचय ?" डाक्टर ने कमरे के भीतर एक कुर्सी पर बैठते हुए पूछा।

ब्रजेश ने खाते-खाते पूछा, "आप लंच लेंगे क्या ?"

"नहीं। मैं घर से खाकर आया हूँ।"

"मेरा नाम ब्रजेश है। मैं बानकी स्टेट के राजा साहब का छोटा भाई हूँ। अपने इलाके से कांग्रेस टिकट पर निर्वाचित हुआ हूँ। रीता देवी मेरे विचार की स्त्री हैं, इस कारण हम दोनों मित्र हैं।"

"कैसे विचार?"

"राजनीतिक और आर्थिक विषयों में।"

"वह तो एक समय कम्युनिस्ट थी।"

"मैं जानता हूँ और मैं भी वैसे ही विचार रखता हूँ।"

"एक जमींदार के भाई होकर भी?"

"मैं तो गुजारेदार हूँ। मैं मालिक नहीं हूँ।"

डाक्टर मुस्कराकर चुप कर रहा। इस पर भी अपनी युवा लड़की को अपने पति के अतिरिक्त, किसी पर-पुरुष के साथ एक ही कमरे में रहते देख, मन में लज्जा अनुभव करता रहा। इस पर भी लड़की से मिलने के लिए वहाँ बैठा रहा।

रीता लगभग दो बजे आई। अपने कमरे में पिताजी और ब्रजेश को बैठे बातें करते देख प्रसन्न हुई। उसने कमरे में प्रवेश करते ही प्रसन्न हो कहा, "डैडी! कब आये?"

"मैं आया हूँ या तुम आई हो? बताओ कब आई हो और आने से पहले सूचना क्यों नहीं दी? साथ ही तुम अपनी कोठी में क्यों नहीं ठहरीं?"

"वहाँ से हम चले थे बम्बई के लिए, परन्तु लखनऊ पहुँच इस सम्मेलन की सूचना मिल गई। इस कारण एकाएक इधर आना पड़ा। सूचना भेजने का भी समय नहीं मिला। यहाँ होटल में सब प्रकार का प्रबन्ध है, इस कारण आपको कष्ट देने में कोई लाभ नहीं समझा।"

"मास्टर साहब…?"

"मैं उनसे बिना मिले ही चली आई हूँ। आशा है भली-भाँति होंगे।"

"अच्छी बात है।" डाक्टर ने उठते हुए कहा, "मुझको अभी एक

रोगी को देखने जाना है। पश्चात् एक मिलने वाले से घर पर समय निश्चित है। रात को एक पार्टी में जाना है।"

"तो आप कल किस समय मिल सकेंगे?"

"समय मिलेगा तो आजाऊँगा।"

"कोठी पर आप किस समय मिलेंगे?"

"किसी समय जब अवकाश हो आ जाना। मैं मिल सका, तो ठीक, नहीं तो माँ और बहन तो हैं ही।"

"अच्छी बात।" यह कह रीता उठकर पिता को कमरे के दरवाजे तक छोड़ने आई। परन्तु डाक्टर ने और कुछ भी नहीं कहा और गर्दन सीधी किये हुए कमरे से बाहर निकल गया। रीता वापस लौटी तो ब्रजेश, जो डाक्टर को जाते देख रहा था, ठहाका मार हँस पड़ा। एक क्षण के लिए रीता का मुख ब्रजेश के इस गँवारपन पर लज्जा से लाल हो गया। उसको विश्वास था कि इस हँसी को उसके पिता ने सुन लिया है। परन्तु शीघ्र ही अपने मन पर नियन्त्रण कर, वह ब्रजेश के समीप आकर बैठ गई। वह बैठी तो ब्रजेश ने कहा, "तो ये देवी जी के डैडी हैं?"

"हाँ! इस समय इनकी प्रैक्टिस एक हजार रुपया प्रति दिन की है।"

"हाँ! हो सकती है। दुनिया मूर्खों से भरी हुई है।"

"देखिये ब्रजेश जी!" रीता ने बात बदल कर कहा, "मैं भारत-सरकार के विदेश विभाग में गई थी। वहाँ से पासपोर्ट के लिए दो फार्म ले आई हूँ। मैं समझती हूँ कि ये तो भरकर दे ही देने चाहिएँ। जब तक पासपोर्ट मिलते हैं, तब तक रुपये का प्रबन्ध कर लिया जायगा।"

"तुम्हारे डैडी, जिनकी आय प्रतिदिन एक हजार है, कुछ नहीं देंगे क्या?"

"उनको आपने यह हँसी हँसकर नाराज कर दिया प्रतीत होता है।"

"उसने यह सुन ली होगी क्या?"

"अवश्य। आपकी हँसी से होटल तक काँपने लगा था।"

"तो कल जाकर मैं क्षमा माँग लूँगा।"

"कितना रुपया इस यात्रा के लिए चाहिए ?"

"मेरी इच्छा तो यह है कि यहाँ से इटली, इटली से स्विटजरलैण्ड, वहाँ से जर्मनी, फ्रांस और इंगलैण्ड। इंगलैण्ड से अमरीका, आस्ट्रेलिया, जापान और वहाँ से फिर भारत। कुल छः मास की यात्रा होगी। इन छः मासों में पन्द्रह हजार एक व्यक्ति के व्यय होंगे। मैं इस समय तो केवल दस हजार का प्रबन्ध कर सकता हूँ।"

"मेरी योजना कुछ छोटी है। यहाँ से फ्रांस। फ्रांस से जर्मनी, पोलैण्ड और मास्को। रूस में जितना घूमा जा सके घूम कर, टर्की के मार्ग से मिश्र और वापिस भारत। इसमें तीन मास लगेंगे। इसमें पाँच-छः हजार एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त होगा।"

"संसार की यात्रा में से इटली और अमरीका को निकाल देने से तो दूध से मक्खन निकालकर, छाछ पीने के समान होगा।"

"और आज रूस निकाल देने से तो आम फेंक गुठली खाने समान नहीं हो जायेगा, क्या ?"

ब्रजेश हँस पड़ा और बोला, "अच्छा बाबा ! रूस भी यात्रा के प्रोग्राम में सम्मिलित कर लेते हैं। पर रुपये का प्रबन्ध कैसे होगा ?"

"पाँच हजार मेरे पास हैं। दस हजार आपके पास। कल पिताजी से कुछ मांगूँगी। पाँच हजार उनसे मिल ही जावेगा। शेष दस हजार रह गया। यदि हो रहे कांग्रेस सम्मेलन ने यह निश्चय कर दिया कि प्रान्तों का शासन अपने हाथ में लेलें, तो फिर आय की सूरत बना लेंगे।"

ब्रजेश इससे गम्भीर हो गया। कुछ देर विचारकर बोला, "यदि हमने प्रान्तों में गवर्नमेंट बना ली तो वजारत का प्रश्न उठेगा। मेरी इच्छा है कि एक मन्त्री-पद तुमको मिल जाय ?"

"पर मैंने अभी तक जेल नहीं काटी। कांग्रेस-टिकट ही बहुत कठिनाई से मिला है। मन्त्री-पद तो बहुत बड़ी बात है।"

"कोई बड़ी बात नहीं मेरी रानी ! यत्न करने से टिकट मिल गया और तुम भारी बहुमत से चुनी गई हो। अब यत्न किया जाय तो मन्त्री-पद

भी मिल सकता है।"

"असम्भव प्रतीत होता है। मेरी आयु और अनुभव बहुत कम है।"

"फिर वही बात। यह निराशा तुम में बार-बार क्यों घुस आती है? श्रीयुत निगम, मिस्टर चक और सुधीन्द्र जी से मिल लो। अपने में से लघुता का भाव निकालकर बात करोगी तो विजय हो जायगी। एक बार तुम मिनिस्टिर बन गई तो निश्चय जानो कि तुम्हारा 'कैरियर' बन गया। तब मजदूरों की भलाई की योजनाएँ बनाना अथवा कम्युनिज़्म का प्रचार करना। बिना साधनों के कार्य करने से कुछ परिणाम नहीं निकल सकता। साधन जुटाना प्रथम कार्य है।"

"एक योजना तो मेरे मन में है। यदि आप उसमें थोड़ी सी सहायता करें तो सफलता की आशा हो सकती है।"

"क्या योजना है और मैं क्या सहायता कर सकता हूँ?"

"आज सायंकाल कन्वेन्शन में प्रान्तों का शासन-भार लेने का निर्णय हो जायगा। आप नैनीताल चले जाइए और बरेली डिविज़न का एक किसान-सम्मेलन बरेली में बुलाने का यत्न करिए। सम्मेलन धूमधाम से होना चाहिए। देश के नेताओं को निमन्त्रण दीजिए और फिर उस सम्मेलन में आगामी वर्ष के लिए मुझको इस संगठन का प्रधान बनवाइए। इससे मेरी स्थिति में अन्तर पड़ जायगा और मेरे मन्त्री-पद पाने में सहायता मिलेगी।"

"सम्मेलन में बहुत खर्चा बैठेगा।"

"अभी दो सहस्र से काम आरम्भ कर दीजिए। एक सहस्र मैं देती हूँ। एक सहस्र आप दीजिए। साथ ही डिविज़न-भर के मजदूरों, किसानों और निर्धन लोगों से अपील कर दीजिए कि चार-चार आना सम्मेलन की सफलता के लिए सब लोग दें। मैं समझती हूँ कि आठ-दस हज़ार हम एकत्रित कर लेंगे। तब हम अपना रुपया निकाल लेंगे।"

ब्रजेश इस योजना से फड़क उठा। उसने कहा, "ठीक है। तुम यहाँ नेताओं से सम्पर्क उत्पन्न करो और मैं डिविज़न का दौड़ा लगा लेता हूँ। यह

सम्मेलन एक अद्वितीय होना चाहिए। सब लोगों को इससे चकाचौंध कर देना चाहिए।"

: १२ :

जब से नीला नैनीताल से लौटी थी तब से उसका मास्टर देवीदत्त से पत्र-व्यवहार चल रहा था। उस पत्र-व्यवहार में, आरम्भ में तो रीता के व्यवहार की चर्चा चली और उससे उस व्यवहार के कारणों पर विचार होने लगा। इससे जीवन-मीमांसा पर बात चल पड़ी। मनुष्य क्या है? इसके जीवन में कुछ उद्देश्य है अथवा नहीं? यदि कुछ उद्देश्य है तो उसकी पूर्ति का सुगम उपाय क्या है? यदि जीवन उद्देश्य-हीन है तो इसको शीघ्र समाप्त कर देना ठीक नहीं क्या? दुःख क्या है? सुख क्या है? इनकी प्राप्ति के उपाय क्या हैं? इत्यादि विषयों पर लिखा-पढ़ी होती रहती थी।

नीला ने लिखा था कि यदि जीवन एक घटना-मात्र है और इसमें दुःख सुख से अधिक है तो इसको समाप्त क्यों न कर दिया जाय। "हम जीवन बना नहीं सकते, परन्तु हम इसका नाश तो कर सकते हैं। मैं कालेज में विज्ञान पढ़ती हूँ। मेरे सामने पोटैशियम् साइनाईड की बोतल पड़ी रहती है। कई बार इसके घोल को 'पिपेट' में खेंचने के लिए मुख से उसकी हवा खेंचती रहती हूँ। थोड़ा ज़ोर से सांस खेंचने की आवश्यकता होगी। एक घूँट इस घोल का गले से नीचे उतरा कि प्रकृति की यह शरारत, जिससे नीला बनी घूमती है, समाप्त हो जायगी।

"आपने लिखा है कि कम्युनिज़्म की आधार-शिला आत्मा-परमात्मा, पुनर्जन्म इत्यादि काल्पनिक बातों में अविश्वास है। यह तो नकारात्मक बात हुई। आप यह लिखिए कि यह संसार है क्या? यदि तो सुख प्राप्त होता हो, तब तो चाहे यह केवल घटना-मात्र ही हो, यह रखा जा सकता है और यदि यह इतना दुःखकारक है, जितना आप बताते हैं या जितना मैं अनुभव करती हूँ तो इसको समाप्त ही क्यों न कर दिया जाय।"

इसका उत्तर शीघ्र आया, "नीला देवी! जैसे यह जीवन एक 'एक्सीडैंट'

और इल्यूज़न है वैसे ही जीवन का दुःख भी माया अर्थात् भ्रम है। वास्तव में सुख-दुःख संसार में कुछ भी अस्तित्व नहीं रखते। जब रीता ने मुझसे तटस्थ रहने का निश्चय बताया तो कुछ काल के लिए मुझको दुःख हुआ था। परन्तु मैंने यह विचार किया कि यह भ्रम-मात्र है। तुरन्त मैंने अपनी अवस्था को ऐसे लिया, जैसे एक पत्थर किसी के बूट की ठोकर लग जाने से लेता है।"

इससे नीला को सन्तोष नहीं हुआ। उसको दुःख था रामी के उसके लिए त्याग को देखकर। वह विचार करती थी कि उसका विवाह तो हो जायगा, परन्तु रामी आजीवन कुँवारी रहेगी। रामी कष्ट तो इसलिए भोग रही है कि विमल को सुख मिले। तो क्या स्वेच्छा से अपने सर लिया हुआ यह दुःख भी भ्रम है? इससे जो सुख उसको प्राप्त होने वाला है, क्या वह भी भ्रम होगा? उसको जो प्रसन्नता विमल से सगाई के समय हुई थी और जिसके कारण वह दो रात-भर सो भी नहीं सकी थी, वह तो भ्रम नहीं था। यदि यह प्रसन्नता भ्रम नहीं थी तो रामी को हो रहा दुःख भी भ्रम नहीं हो सकता। परन्तु यह है क्या?

अभी रीता दिल्ली में ही थी और वह दिल्ली में आये हुए कांग्रेसी नेताओं से मेल-मुलाकात उत्पन्न कर रही थी कि देवीदत्त होली के अवकाश में दिल्ली चला आया।

देवीदत्त को कोठी में ताँगे पर पहुँचते और अपना सामान उतरवाते देख, डाक्टर खिलखिलाकर हँस पड़ा। फिर गम्भीर हो कमरे से बाहर आ, देवीदत्त का स्वागत करने लगा।

जब देवीदत्त भीतर गया तो उससे डाक्टर ने पूछा, "कैसे आना हुआ है?"

"आपसे मिलने को जी कर आया था। स्कूल में छुट्टियाँ थीं, सो एक सप्ताह के लिए दिल्ली चला आया हूँ।"

डाक्टर मन में सोचता था कि मिलने की इस चाहना के आधार में भी तो कुछ बात होनी चाहिए। विवाह के पश्चात् पहली बार ही वह

दिल्ली आया था। पिछली शरद् ऋतु में उसको निमन्त्रण भी भेजा गया था और उसने निमन्त्रण स्वीकार भी किया था, परन्तु आया नहीं था। इस कारण आज बिना सूचना के चला आना, केवल मिलने के लिए, डाक्टर समझ नहीं सका था।

इस पर भी देवीदत्त के मन में केवल मात्र मिलने की आकांक्षा थी। डाक्टर अथवा नीला की माता से नहीं। यह नीला से थी। दोनों का पत्र-व्यवहार एक ऐसे स्तर पर आ पहुँचा था कि अब परस्पर भेंट होनी आवश्यक प्रतीत हुई थी।

देवीदत्त की आँखें उसको ढूँढ रही थीं और वह कॉलेज गई हुई थी। स्वरूप रानी से उसने पूछ ही लिया, "मम्मी! नीला कहाँ है?"

"कॉलेज गई है। यदि आपके आने की सूचना होती तो वह घर पर ही रहती। हम सबसे अधिक वही आपको याद करती रहती है।"

"सत्य? तब तो मैं अपने को बहुत ही भाग्यशाली मानता हूँ। आखिर संसार में कोई तो प्राणी है, जो मुझको भी याद करता है।"

स्वरूप रानी के मन में रामी की बात, जो रीता ने उसको बताई थी अभी भी उथल-पुथल मचा रही थी। इस कारण उसने अवसर पा पूछ ही लिया, "रामी का कुछ समाचार मिला?"

देवीदत्त बात को मुस्कराकर टाल देना चाहता था, परन्तु स्वरूप रानी ने सीधा प्रश्न पूछ लिया, "क्या रीता का कहना ठीक है कि उसका किसी से विवाह नहीं हुआ?"

"रीता ने क्या कहा है?"

स्वरूप रानी ने वह सब बात बता दी, जो रीता ने कही थी। इस पर देवीदत्त ने कहा, "यह बात ठीक हो सकती है। पर इससे हमको क्या? हमें विमल की कर्तव्य-परायणता पर विश्वास रखना चाहिए। आपने उसके लिए जब इतना कुछ किया है, तो इसकी प्रतिक्रिया उसके मन में कुछ तो होगी ही।"

"यूँ तो डाक्टर जी कहते थे कि नीला के दहेज के लिए हमारे पास और

धन एकत्रित हो गया है। इसपर भी विमल बहुत ही अच्छा लड़का है।"

"तो एक बात करिये। रामी को ढूँढिये। उसे अपने पास रखकर उसको विवाह के लिए तैयार कर लीजिये। यदि उसका विवाह हो गया तो विमल का मार्ग साफ हो जाएगा।"

"यही तो मैं विचार किया करती हूँ। परन्तु उसको ढूँढूँ तो कैसे?"

"यदि डाक्टर जी मुझसे कहें तो मैं इसमें आपकी सहायता देने का वचन देता हूँ।"

"किस में सहायता देने का?"

"रामी को ढूँढने में।"

इससे प्रसन्न हो रात के खाने के पश्चात् स्वरूप रानी ने डाक्टर से कह ही दिया, "मुझको विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि रामी अभी तक अविवाहित है और वह यहाँ से इस कारण से चली गई थी कि विमल को नीला से विवाह स्वीकार करने में संकोच न हो।"

"और यह विश्वस्त सूत्र देवीदत्त है न?"

"नहीं। यह नैनीताल में ही रीता ने बताया था। आज मैंने देवीदत्त से रामी के ढूँढने के विषय में कहा, तो उसने उसको ढूँढ निकालने में हमारी सहायता करने का वचन दिया है।"

डाक्टर की हँसी निकल गई और वह कहने लगा, "मुझको विश्वस्त रूप में विदित है कि रामी देवीदत्त के घर में रहती है और शायद उसकी रखैल बनकर।"

"तो रीता का यह कहना ठीक नहीं होगा कि विमल पुनः उससे विवाह की इच्छा करने लगेगा?"

"रीता बहुत झूठी है। मुझको अब उसकी किसी बात पर विश्वास नहीं रहा। वह कहती थी कि तुमसे मिलने आवेगी, परन्तु नहीं आई। वह अभी भी दिल्ली में है, परन्तु उसको हमसे मिलने के लिए अवकाश ही नहीं। उसके एक मित्र ने उस दिन मेरी हँसी उड़ाई थी और उसने इसको साधारण बात समझी है। भगवान् जाने उसको क्या हो गया है कि

वह दो और दो को चार भी नहीं मानती।"

"देवीदत्त का कहना है कि यदि रामी को ढूँढ कर हम घर में रखें और विमल के लौटने से पहले उसको किसी भले पुरुष से विवाह के लिए राजी कर लें, तो विमल के विषय में निश्चिन्त हुआ जा सकता है।"

"इससे यह सिद्ध होता है कि देवीदत्त अब उससे ऊब गया है और वह उसे यहाँ भेज उसके विवाह में हमारी सहायता चाहता है। शायद इसी प्रयोजन से वह यहाँ आया है।"

"तो क्या करना चाहिए?"

"हमको इस विषय में चुप रहना चाहिए। जैसे हम रामी के विषय में, उसके पत्रों में लिखी बात के अतिरिक्त कुछ जानते ही नहीं। जब विमल लौटेगा तब ही इन सब बातों के रहस्य का उद्घाटन होगा। हमें विमल की ईमानदारी पर भरोसा रखना चाहिए।"

: १३ :

जब नीला के माता-पिता यह बात चीत कर रहे थे, तो नीला और देवीदत्त बाहर लान में टहलते हुए अपने पत्रों में लिखे विषयों पर चर्चा चला रहे थे। नीला कह रही थी, "बहुत अच्छा हुआ कि आप आ गये हैं। पत्रों में बात ठीक चल नहीं सकती। आप यह बताइये कि रामी आपके पास रहती हुई भी दुःखी है। रीता आपसे भागती-फिरती हुई भी सुखी है। मेरे मन में भय समा रहा है कि विमल कहीं विवाह के समय विचलित न हो जाय। आप कहते हैं कि ये सब भ्रम है। यह कैसे? परस्पर विपरीत दिशा में जाने वाली बातें कैसे एक समान हो सकती हैं।"

"मेरे आने का प्रयोजन इन विषयों पर चर्चा करना नहीं। तुम्हारी पिछली चिट्ठी कहीं रामी के हाथ में पड़ गई और हम दोनों में उस पर चर्चा चल पड़ी। उस चर्चा में मैं रामी से परास्त हो गया और अब तुमसे एक बात स्पष्ट रूप से कहने आया हूँ।"

नीला विस्मय में देवीदत्त का मुख देखती रह गई। इस पर देवीदत्त ने

अपना कहना चालू रखा। उसने कहा, "रामी इस बात की चिन्ता नहीं करती कि लोग उसको दुराचारिणी समझते हैं। वह स्वयं अपने को शुद्ध-चरित्र वाली मानती और जानती है। इससे वह किसी दूसरे के विचारों की परवाह नहीं करती। उसको तो चिन्ता तुम्हारी लग गई है। वह समझती है कि तुम्हारी चिट्ठियों से यह स्पष्ट हो रहा है कि तुम मुझसे प्रेम करने लगी हो, जिसका अन्तिम परिणाम हम दोनों में प्रणय-सम्बन्ध होगा। मैं तुमसे यहाँ यह कहने के लिए आया हूँ कि हम दोनों अपने मन के भावों का विश्लेषण कर लें और पश्चात् अपने व्यवहार का निश्चय कर सकेंगे।"

"मैं आपके कहने का अर्थ नहीं समझी।" नीला ने सतर्क हो कहा।

"अर्थ स्पष्ट है। मुझको तुम बहुत भली प्रतीत होती हो, परन्तु इस के अर्थ क्या यह हैं कि मैं तुम से प्यार करने लगा हूँ और तुमको अपनी पत्नी बनाने की इच्छा रखता हूँ? इसका उत्तर मैं वहाँ नैनीताल में बैठा-बैठा नहीं लगा सका। इस कारण वहाँ से यहाँ आया हूँ, जिससे अपने मन के भावों को समझ सकूँ।"

नीला इस प्रकार प्रश्न अपने सामने उपस्थित होते ही बहुत गम्भीर विचार में पड़ गई। देवीदत ने नीला को कुछ कहने का अवसर न देते हुए कहा, "रामी का कहना था कि तुम्हारा अपने पत्रों में जीवन के विषय में पूछ-गीछ करनी भी इसी बात का प्रतीक है कि तुम मुझ से प्रेम करने लगी हो, परन्तु तुम अभी जानती नहीं।"

"मैं तो इन बातों का इस प्रकार विचार कर ही नहीं सकती। मेरी सगाई विमल से हो चुकी है। उस समय मैंने इसको सहर्ष स्वीकार किया था। अब भी मैं कोई कारण नहीं देख रही कि मैं विमल को छोड़ किसी अन्य से प्रेम करने लगूँगी।"

"खैर! मैंने यह समस्या तुम्हारे सामने रख दी है। तुम स्वयं ही अपने मन को टटोल सकती हो।"

"तो यह बात तो आप नैनीताल से लिख देते तो मैं विचार कर लेती।

आप को इतनी-सी बात के लिए इतनी दूर की यात्रा की आवश्यकता नहीं थी।"

"यह तो मैं समझता हूँ कि आवश्यकता है अथवा नहीं। इस पर भी जो कुछ तुम समझती हो वह सुनने के लिए तैयार हूँ।"

"मैंने इस प्रकार इस विषय पर कभी विचार ही नहीं किया। उस दिन पूर्णिमा की चाँदनी में ताल की शोभा देखते हुए, जब आप मेरे बालों में हाथ फेर रहे थे, मुझको बहुत भला प्रतीत हो रहा था। यदि आप यह नहीं बताते कि एक बज गया है तो सारी रात-भर हम वहाँ खड़े रहते और मुझको बुरा प्रतीत न होता।"

"यही तो बात है। इसी को सुनकर ही तो रामी ने कहा है कि तुम मुझसे प्रेम करने लगी हो।"

"इसमें प्रेम की क्या बात है? कभी मेरी मम्मी भी मुझको प्यार करती हैं तो बहुत भला प्रतीत होता है।"

"पर मैं तो एक पुरुष हूँ और तुम एक स्त्री हो। पुरुष और स्त्री में इस प्रकार की रुचि को ही तो प्रेम कहते हैं।"

"पर विमल ने मुझ को कभी छूआ तक नहीं और मैं उससे विवाह करने के लिए तैयार हूं।"

"यह भी प्रेम है या क्या है, कुछ कहा नहीं जा सकता।"

एकाएक नीला ने खड़े होकर कहा, "आज मैं वैसा ही अनुभव नहीं कर रही।"

"कैसा? जैसा सगाई के दिन विमल के प्रति अनुभव करती थी।"

"हाँ, और न ही वैसा, जैसा उस रात आप के मकान की खिड़की में खड़े हुए अनुभव करती थी। वह क्या था, मैं नहीं जानती।"

"वैसा फिर अनुभव कराया जा सकता है। यद्यपि उस रात चाँदनी छिटक रही थी और आज घटाटोप अँधेरा है।

"कुछ बातें अँधेरे में ठीक प्रकार से समझ आती हैं। मैं तुमको अपने मन की बात बताता हूँ। मैं अपने अन्तरात्मा में तुमसे मिलने और बात-

चीत करने के लिए उत्कट इच्छा रखता था, परन्तु अपनी इस इच्छा को समझ नहीं सकता था। रामी के सुझाव पर मैं अपने अन्तरात्माकी बात को समझ गया हूँ और यहाँ चला आया हूँ। यहाँ आकर मैं अनुभव कर रहा हूँ कि तुम्हारे मन में भी कुछ ऐसी ही इच्छा है।"

नीला चुप थी। देवीदत्त कुछ समय तक ठहरकर फिर बोला, "यह स्वाभाविक भी है। मैं समझता हूँ कि जब यह स्वाभाविक है तो क्यों न हो।"

नीला अभी भी चुप थी। इस सब समय वे लान में चक्कर काट रहे थे। चलते-चलते दोनों ने एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिये और इस प्रकार हाथ पकड़े हुए टहलते रहे। अन्त में नीला ने कहा, "शायद आप ठीक कहते हैं। आपका विवाह रीता से भूल थी। कोई और है, जिसको आपका-जीवन साथी बनना चाहिए। मैं भी यह समझती हूँ कि विमल से मेरी सगाई भी भूल है। मैं भी किसी और के लिए ही नियत हूँ। परन्तु वह अन्य मेरे लिए, और कोई अन्य आपके लिए, क्या आप और मैं ही हैं? यह कहना कठिन है।"

दोनों के हाथों ने एक-दूसरे को जोर से पकड़ लिया। मानो दोनों के मन में भय था कि दूसरा छोड़ कर चला न जाय।

उस समय डाक्टर और स्वरूप रानी कमरे से निकले और डाक्टर ने बरामदे का लैम्प जलाया। इससे दोनों को कुछ अच्छा प्रतीत नहीं हुआ।

डाक्टर और स्वरूप रानी जब इनके समीप आये तो चारों लान में चक्कर काटने लगे। डाक्टर ने देवीदत्त से कहा, "रीता यहाँ दिल्ली में है।"

"मुझको मालूम है। वह अब यत्न कर रही है कि प्रान्त में मन्त्री बन जाय।"

"किसने कहा है यह आपको?"

"एक ब्रजेश हैं। वे कल नैनीताल में एक मजदूरों की सभा में कह रहे थे कि रीता देवी के मन्त्रीमण्डल में ले लिये जाने की बहुत आशा है।"

"यह ब्रजेश कौन है ?"

"जिला गोंडा में बानकी एक स्थान है। वहाँ के जमींदार का छोटा भाई है। कांग्रेस में काम करता है, इस कारण बड़े भाई ने प्रत्यक्ष रूप में इसको जमींदारी से पृथक् कर रखा है। इस पर भी छिपकर गुजारे को धन मिलता रहता है। उसका अभी विवाह नहीं हुआ। वह कहता है कि जब तक दो हजार मासिक उसके और दो हजार मासिक उसकी पत्नी के नाम न लिख दिया जाय, वह विवाह नहीं करायेगा। रीता देवी भी स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने वाली हैं। इस कारण दोनों में खूब पटती है।"

"तो तुम सब कुछ जानते हो ?"

"मैं मूर्ख नहीं हूँ। परन्तु एक-दूसरे की स्वतन्त्रता पर आपत्ति न करना हमारे कान्ट्रैक्ट की एक धारा है।"

"पर तुमको इस कान्ट्रैक्ट के पालन से क्या मिलेगा ?"

"कौन बता सकता है कि कल क्या होगा ?"

: १४ :

अगले दिन रीता अपनी माँ और बहन से मिलने आई और देवीदत्त को नीला के साथ बरामदे में गार्डन-चेयर्स पर बैठे, चाय पीते देख स्तब्ध रह गई। डाक्टर राधाकृष्ण घर पर नहीं थे और स्वरूप रानी रुग्ण होने से अपने कमरे में लेट रही थी।

रीता ने इनके पास पहुँच पूछा, "तो आप यहाँ आ गये हैं ?"

"आइये देवीजी ! पधारिये।" देवीदत्त ने एक खाली कुर्सी की ओर संकेत करते हुए कहा।

रीता वहाँ बैठ गई। नीला उसके लिए चाय बनाने लगी। रीता ने देवीदत्त से पुनः पूछा, "कैसे आना हुआ है ?"

"हमारे परस्पर के कान्ट्रैक्ट की किसी धारा में यह बताना नहीं लिखा।"

रीता हँस पड़ी और बोली, "ठीक है। अब आपसे नहीं पूछूँगी।

नीला ! तुम्हारे जीजा किस काम से आये हैं ?"

"हम सबसे मिलने के लिए। हम इनके घर गये थे और अब ये हमारे घर आये हैं।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि साली-जीजे में यह मिलने के लिए आने-जाने की इच्छा कब से उत्पन्न हुई है ?"

"इसके पैदा होने की तिथि तो मुझको स्मरण नहीं। इस पर भी इतना निश्चय है कि जीजा के विवाह के पीछे ही हुई होगी।"

देवीदत्त हँस पड़ा।

"आप हँसे क्यों हैं ?" रीता ने पूछा।

"यह देखकर कि सरल-चित्त व्यक्ति प्रायः चतुर से भी अधिक चतुर सिद्ध होता है।"

"यह छोकरी सरल-चित्त है ?"

"मुझको यह बहुत अच्छी प्रतीत होती है।"

"तो इससे विवाह कर लो न।"

"क्या सब अच्छे लोगों से विवाह ही किया जाता है ?"

"नहीं, भूल हुई। आप बिना विवाह के भी तो रामी को तीन वर्ष से अपने पास रखे हुए हैं।"

देवीदत्त ने बात बदल दी। उसने पूछा, "आपके मिनिस्टर बनने की कितनी सम्भावना है ?"

"आपको इसके जानने की क्या आवश्यकता है ?"

"आवश्यकता है। आपका-मेरा यह कान्ट्रैक्ट है कि जो कुछ आपको मिलेगा, वह आधा मेरा होगा।"

"तो आधे मिनिस्टर तुम होगे ?"

"नहीं देवीजी ! मिनिस्ट्री तो आप पूरी ही करेंगी। परन्तु उससे जो-कुछ लाभ होगा, वह आधा मेरा और आधा आपका होगा।"

"यह तो बहुत कठिन है।"

"कठिनाई क्या है इसमें ? हम तो साम्यवादी हैं। सबके समान

अधिकार की बात मानने वाले हैं। पहले पति-पत्नी में समान अधिकार होंगे तो पीछे एक परिवार में समानता की बात चल सकेगी। परिवार के पीछे मुहल्ले अथवा नगर में समानता हो सकेगी। देश की बात तो सबसे पीछे ही आवेगी।"

"आप तो हिन्दुओं की-सी बात करते हैं। परिवार में समानता की आवश्यकता नहीं। जब पूर्ण समाज में समानता का साम्राज्य होगा तो परिवार में स्वयं हो जायगा।"

"समाज में तो जब समानता होगी तब होगी। हमारे परिवार में तो यह चार वर्ष से चल रही है। मैं आपको अपना आधा वेतन बाँटकर देता रहा हूँ। अब आपको जो कुछ भी प्राप्त हो, उसमें से आधा मेरा होगा।"

"यदि न दूँ तो क्या होगा?"

"वही होगा जो हमारे गुरुदेव कार्ल मार्क्स करने को कह गये हैं।"

"क्या कह गये हैं? मैं समझी नहीं।"

"तो समझना चाहती हैं देवीजी? लीजिए मैं आपको कार्ल मार्क्स के सहयोगी एंजिल्स से कहे गए कम्युनिज़्म के लक्षण सुनाता हूँ। ये लक्षण उन्होंने अपने एक पत्र में कार्ल मार्क्स को लिखे थे। श्रीमानजी ने उस पत्र में लिखा है: एक, पूँजीवादियों के विरुद्ध मजदूर-वर्ग के लाभ की बात करना। दो, वैयक्तिक सम्पत्ति का नाश। तीसरा, इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए डैमोक्रेटिक रेवोल्यूशन बाई फोर्स (बलात्कार विद्रोह) को साधन बनाना। अब तो देवीजी मेरे कहने का अर्थ समझ गई होंगी।"

"यह तो मैंने पढ़ा है। लेनिन ने तो यहाँ तक कह दिया था कि, 'वन मस्ट बी ए रेवोल्यूशनरी एण्ड नाट ए रिफार्मिस्ट' (सुधारक न बनकर क्रान्तिकारी बनना चाहिए)।"

"धन्य हो देवीजी! अपने सिद्धान्तों का इतना ज्ञान रखती हुई, मेरा अभिप्राय भली भाँति समझती होंगी। मैं क्रान्ति कर दूँगा। मैं बल प्रयोग करूँगा और अपने सिद्धान्त की पालना करते हुए, अपने सिद्धान्तों के विरोधी को परास्त करने के लिए झूठ भी बोलूँगा और प्रत्येक प्रकार का

दंगा करूँगा।"

"पर यह सब तुम कैसे कर सकोगे?"

"यह सब देवीजी को विदित हो जावेगा। मिनिस्टर बन जाइए और अपने वेतन तथा अन्य लाभ की बातों का मेरे साथ बराबर का बटवारा न करिये, फिर देखिए मैं क्या करता हूँ।"

नीला इस विवाद को सुन रही थी। उसको समझ आ रहा था कि रीता जब अपने पति का आधा वेतन ले लेती है तो उसको भी अपना आधा वेतन बाँट कर देना चाहिए। वह यह नहीं जानती थी कि एक मन्त्री कितना कुछ अनुचित उपायों से पैदा कर सकता है और अढ़ाई सौ का आधा तो साधारण-सी धनराशि है। लाखों, जो रीता पैदा करने के स्वप्न देख रही थी, वह आधा बाँटकर देने के लिए बहुत बड़ा हृदय चाहिए था।

रीता देवीदत्त की धमकी पर हँस ही रही थी कि डाक्टर मोटर में कोठी पर आ पहुँचा। वह रीता और देवीदत्त को वार्तालाप करते देख मुस्कराया और समीप आकर बोला, "क्या मैं तुम दोनों को बधाई दूँ?"

देवीदत्त हँस पड़ा। जब डाक्टर बैठ गया, तो रीता ने कहा, "डैडी! यह कोई नई बात नहीं हो रही। हम अपने मतभेद इसी प्रकार वादविवाद कर मिटाया करते हैं।"

"ठीक है।" देवीदत्त ने रीता के कहने का समर्थन कर दिया। साथ ही कहा, "परन्तु आज का मतभेद सिद्धान्तात्मक है, कार्य में नहीं।"

"ये कहते हैं कि यदि मैं मन्त्री बन गई तो अपनी पूर्ण आय का आधा आपको बाँटकर दूँ।"

"ठीक तो है।" डाक्टर ने रीता को सम्बोधन कर कहा, "हम को तो यह बताया गया है कि तुम्हारे कान्ट्रेक्ट में दोनों की आय दोनों में बराबर वितरित हुआ करेगी।"

"वह तो ठीक है डैडी! परन्तु मन्त्री बनने से आवश्यकताएँ भी तो बढ़ जाती हैं। उनका भी तो विचार करना पड़ेगा?"

"यह तो कान्ट्रेक्ट करते समय विचार करना चाहिए था। तुम लोग

मिल-मालिकों की आवश्यकताओं का कभी ध्यान नहीं करते।"

"बात यह है कि ऐसी समाज में, जहाँ अभी पूँजीवाद का बोलबाला हो, वहाँ पूर्ण समानता का सिद्धान्त चल नहीं सकता। लेनिन ने भी रूस में यह नियम चालू कर दिया है कि 'वर्क एकार्डिंग टू कैपेसिटी एण्ड रैम्युनरेशन एकार्डिंग टू नीड्ज़' (कार्य शक्ति के अनुसार और दाम आवश्यकता के अनुसार)।"

इस समय डाक्टर ने पूछ लिया, "कैपेसिटी का और नीड्स का अनुमान कौन लगायेगा?"

"राज्य।"

"इस समय राज्य है पूँजीवादियों का। वे इन शब्दों के अर्थ अपने ढंग पर लगायँगे।"

इस समय देवीदत्त ने पुनः वार्तालाप में भाग लेते हुए कहा, "मैं तो लेनिन को अपना नेता मानता हूँ, परन्तु अपने परिवार में मैं ही राज्य-सत्ता हूँ। इस कारण मैं व्यवस्था दे दूँगा कि रीता देवी सोलह घन्टे काम करने की शक्ति रखती हैं, सो मन्त्री बनकर इतना समय काम करें। परन्तु रीतादेवी की आवश्यकता ही क्या है? बंगला इनको निःशुल्क मिलेगा। नौकर-चाकरों का वेतन सरकार दे देगी। खद्दर के धोती-कुर्ता पर क्या खर्चा बैठेगा? इस कारण इनके लिए साढ़े तीन हज़ार वेतन में से दो सौ पर्याप्त हैं, शेष मुझको मिलना चाहिए। मैं मास्टर हूँ। मुझको ज्ञानवृद्धि के लिए एक अच्छा पुस्तकालय बनाना है। मुझको देशाटन भी वर्ष में एक बार करना चाहिए और अभी तो मैं विदेश-यात्रा की आवश्यकता अनुभव कर रहा हूँ।"

"पर मैं जानना चाहता हूँ कि क्या रीता के मिनिस्टर बनने की आशा पक्की हो गई है।"

"मन्त्री नहीं बनेंगी तो भी कुछ बनेंगी। रीता देवी जैसी स्त्री कुछ-न-कुछ बनेंगी अवश्य।"

"मैं पालियामैन्टरी बोर्ड के सदस्यों से मिल रही हूँ। पाँच में से तीन

ने तो मेरी प्रार्थना पर विचार करने का आश्वासन दे दिया है।"

: १५ :

बरेली में किसान सम्मेलन हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन-कर्ता घरेलू-दस्तकारी की प्रदर्शनी के उद्घाटन करने वाले और सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष तो अन्य लोग थे, परन्तु सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती रीता देवी ने की। प्रान्त के बाहर से बहुत से नेता बुलाये गए थे और वे भारी संख्या में पधारे थे। कुंवर ब्रजेश ने बहुत योग्यता से सब के स्वागत और ठहरने का प्रबन्ध किया था। प्रायः सब नेता-गण प्रबन्ध से सन्तुष्ट थे और सबको यह विश्वास दिलाया गया था कि प्रबन्ध की श्रेष्ठता रीता देवी के कारण है। दस सहस्र के लगभग किसान और मजदूर सम्मेलन में सम्मिलित हुए और एक दिन सार्वजनिक सभा में एक लाख से ऊपर लोग उपस्थित थे।

एक बार तो प्रान्त भर में विशेष रूप से तथा देश में साधारणतः रीता देवी की धूम मच गई। समाचार पत्रों में रीता के चित्र छपे और उसका व्याख्यान छपा तथा उस पर टीका टिप्पणी हुई।

देवीदत्त ने रीता को यह चुनौती दे दी थी कि या तो वह जो कुछ अपनी सार्वजनिक पदवी से प्राप्त करे, आधा उसको दे दे, अन्यथा वह वास्तविक वृत्तान्त छपवा कर, उसको जनता की दृष्टि में गिरा देगा।

रीता इस धमकी से डरने वाली नहीं थी। इस पर भी उसने सम्मेलन के शान्ति से सम्पन्न होने के लिए देवीदत्त की बात मान ली। देवीदत्त ने अनुमान लगा कर कहा, "ब्रजेश ने बीस हजार रुपया से अधिक एकत्रित किया है। उसमें से कठिनाई से दस सहस्र व्यय होगा। इस कारण शेष में से आधा अर्थात् पाँच हजार मुझे मिल जाना चाहिए।"

"अच्छी बात है, तनिक हिसाब देख लूँ। तब रुपया आप को मिल जावेगा। तुम एक बार बरेली मेरे साथ चल कर लोगों को दर्शन दे देना।"

"यदि मुझ को पाँच हजार कल तक नहीं मिला तो मैं बरेली नहीं जाऊँगा। विपरीत इसके मैं अपना वक्तव्य बंटवा दूँगा।"

विवश रीता ने अगले दिन एक विश्वस्त कर्मचारी के हाथ पाँच सहस्त्र नकद भेज दिया।

सम्मेलन के पीछे यह बात सबकी जिह्वा पर थी कि रीता देवी यू० पी० प्रान्त में प्रथम मन्त्रीणी होंगी। यदि उसी समय कांग्रेस शासन भार सम्हाल लेती तो रीता देवी मन्त्री-पद पा जाती, परन्तु दिल्ली सम्मेलन में कांग्रेस ने सरकार से कुछ आश्वासन माँगे थे और सरकार उन आश्वासनों के देने में हिचकिचाहट अनुभव कर रही थी। इस कारण मन्त्री-मण्डल बनने में देरी हो गई।

इसके साथ ही मुस्लिम लीग की भी माँग थी। निर्वाचन साम्प्रदायिक आधार पर हुए थे। मुसलमानों में मुस्लिम लीग के टिकट पर सफल सदस्यों की संख्या अधिक थी। इस कारण मुसलमान चाहते थे कि मन्त्रि-मण्डल भी संयुक्त, कांग्रेस और मुस्लिम लीग के सदस्यों से बनाये जायँ। कांग्रेस इस बात को मानने को तैयार नहीं थी। ये कारण थे, जिन से मन्त्री-मण्डल बनने में देरी हो रही थी।

जब बरेली सम्मेलन समाप्त हुआ तो पाँच सहस्त्र देवीदत्त को दिये जाने पर ब्रजेश ने आपत्ति की। उसने रीता को कहा, "यह तुमने उसको क्यों दे दिया है?"

"न देती तो वह सम्मेलन में गड़बड़ करता और सम्मेलन का प्रयोजन ही नष्ट हो जाता। अब उसके सम्मेलन में आकर मेरे साथ बैठने से मेरी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि ही हुई है।"

"पर अब पाँच हजार का हिसाब कैसे बनाऊँ? आपने जो कार्यकारिणी नियुक्त की है, उसके सम्मुख हिसाब उपस्थित करना है।"

"तो ये रक्म कहीं खर्चा में दिखा दीजिये। कार्यकारिणी में मैं सबको समझा दूँगी।"

ब्रजेश का कहना था, "इस प्रकार काम नहीं चलेगा। यह देवीदत्त धमकाकर कभी भी हमारी जानको दुर्भर बना दिया करेगा।"

"तो फिर क्या किया जाय? वह तो कहता है कि मेरी आय का वह

आधे का पत्तीदार है।"

"इसका काँटा तो दूर करना ही पड़ेगा।"

"तो आप उनसे मिलकर बात कर लीजिये।"

ब्रजेश देवीदत्त को मिलने के लिए नैनीताल जा पहुँचा। मास्टर के घर का द्वार खटखटाया तो नौकर ने द्वार खोला। ब्रजेश ने पूछा, "मास्टर जी कहाँ हैं?"

"स्कूल में हैं। आज विद्यार्थियों की कोई सभा थी, इस कारण अभी तक नहीं आए।"

"किस समय आने वाले हैं?"

"समय तो हो गया है। आप ऊपर आकर बैठिए। मास्टरजी आते ही होंगे।" ब्रजेश नौकर के पीछे-पीछे ऊपर बैठक में चला गया। वहाँ रामी बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी। ब्रजेश को आया देख, वह उठ अपने कमरे में जाने लगी तो ब्रजेश ने कह दिया, "आप बैठिए। मेरी किंचित्-मात्र भी इच्छा आपको कष्ट देने की नहीं। मैं कुछ देर में आ जाऊँगा।"

"आप बैठिए! मुझको कष्ट नहीं होगा।"

"तो आप जा जो रही हैं? आप मुझको नहीं जानतीं। मैं आपको जानता हूँ। आप रामी देवी हैं न?

" जी। पर देवी नहीं, केवल रामी।"

ब्रजेश हँस पड़ा और बोला, "बैठिए। हम आपको आज से देवी की पदवी से विभूषित करते हैं। देखिए देवी जी! मैं रीता देवी का मित्र हूँ। मेरा नाम ब्रजेश है। मास्टरजी से भी मेरा गहरा सम्बन्ध है।"

रामी ने कहा, "चाय मँगवाऊँ आपके लिए?"

"हाँ, यदि आप भी पीयें तो?"

"मैं तो अभी पीकर हटी हूँ। ओ माधो!" उसने नौकर को बुलाकर कहा, "कुँवर साहब के लिए चाय ले आओ।"

जब नौकर आज्ञा सुन चला गया तो ब्रजेश ने फिर कहा, "आप बैठिए न! मैं आपसे मिलने वाला था। सुना है आप बहुत ही चतुर और

भली लड़की हैं। रीता देवी आपकी बहुत प्रशंसा करती हैं।"

रामी बैठ गई और बोली, "मेरी प्रशंसा कर रीता दीदी ने अपनी उदारता ही प्रकट की है। वास्तव में मैं और वह एक-दूसरे से इतने भिन्न-भिन्न हैं जितने पृथ्वी के दोनों ध्रुव।"

"तो देवीजी रीता की प्रशंसा नहीं करतीं।"

"जब वह प्रशंसा करती हैं तो मुझको भी तो कुछ वैसा ही करना चाहिए। उनके माता के घर की नौकरानी हूँ। इसके अतिरिक्त तो मैं कुछ कर ही नहीं सकती।"

"यह व्यवहार ठीक ही है। संसार में बहुत बातें हैं, जो मनुष्य अपनी रुचि अनुसार कर नहीं सकता। इस कारण जैसा करना पड़े, उस पर सन्तोष करना ही होता है।"

रामी चुप रही। वास्तव में ब्रजेश की बात में कुछ उत्तर देने को था ही नहीं। ब्रजेश ने कुछ विचार कर पूछा, "यहाँ मास्टरजी के पास रहते हुए आपको कितना काल हो गया है?"

"दो वर्ष के लगभग होने वाले हैं।"

"आप यहाँ क्या करती हैं?"

"मैं मास्टरजी से पढ़ती हूँ।"

"क्या पढ़ती हैं?"

"उर्दू-हिन्दी तो दिल्ली में ही सीख ली थी। अँग्रेज़ी कुछ तो डाक्टर जी से सीखी थी और कुछ मास्टरजी से यहाँ पढ़ रही हूँ।"

"बस?"

"नहीं! इसके अतिरिक्त, विपरीत परिस्थितियों में जीवन-निर्वाह का ढंग सीख रही हूँ।"

"तब तो देवीजी बहुत योग्य हो गई होंगी?"

"इसका अनुमान मैं स्वयं लगा नहीं सकती। मास्टरजी ही बता सकते हैं कि मैं जीवन की कौन-सी कक्षा में पहुँच गई हूँ।"

"पर मास्टर तो अपनी शिष्या की प्रशंसा करेगा ही। मज़ा तो तब है,

जब हम परीक्षक हों और आप परीक्षार्थी।"

"यह ठीक है। परन्तु श्रीमान स्वयं परीक्षक होने के योग्य हैं अथवा नहीं, यह भी तो देखना है।"

"आप किस समय पढ़ती हैं?"

"रात के अतिरिक्त, अन्य सब समय, जब मास्टरजी को अवकाश हो।"

"रात को क्या करतीं हैं?"

"वही जो उल्लु के अतिरिक्त और सब प्राणी करते हैं।"

इस समय माधो चाय बनाकर ले आया। रामी ब्रजेश के लिए चाय बनाने लगी। माधो चला गया तो ब्रजेश ने कुछ विचारकर पूछा, "सुना है आपका प्रभाव मास्टरजी पर बहुत है।"

"किसी ने आपसे मिथ्या भाषण किया है।"

"पर आप इतने समय से यहाँ रहती हैं, इस पर भी न किराया देती हैं, न भोजन-वस्त्र का दाम। कुछ तो बात है। मैं इसी को प्रभाव कहता हूँ।"

"उस भाषा में, जो मैं पढ़ी हूँ, इसको मास्टरजी की उदारता और नैतिकता कहते हैं। मैं उनको कुछ नहीं देती। केवल लेती ही हूँ। वे एक ऐसे वाद के मानने वाले हैं, जिसमें व्यक्तिगत स्वामित्व का अस्तित्व नहीं है।"

"क्या वाद है वह?"

"वे उसको साम्यवाद कहते हैं। मैं उसको साधुवाद कहती हूँ। हिन्दुओं में वह संन्यासियों में माना जाता है। 'वसुदेव-कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त वे ही निभा सकते हैं।"

"तो आपके विचार में वे संन्यासी हैं।"

रामी ने हँसते हुए कहा, "आप मेरे कहने के आशय को समझे नहीं। वे इस वाद को मानते हैं, परन्तु कभी इस पर आचरण करते हैं, कभी नहीं भी। मेरे साथ व्यवहार में वे इस वाद पर आचरण करते चले आये हैं।"

"क्यों?"

"यह उनसे ही पूछिएगा।"

"तो आपमें कुछ गुण तो है ही। मैं भी आपसे एक निवेदन करने आया हूँ। आप हमारा भी एक काम उनसे करवा दीजिए।"

ब्रजेश इस समय चाय पी रहा था, और रामी उसके मुख को देखती हुई कहने लगी, "कठिनाई यह है कि मैंने कभी भी उनसे कुछ भी करने को नहीं कहा। वे स्वयं ही कर देते हैं। मैं आपके विषय में भला कैसे कुछ करने को कह सकती हूँ।"

"आप यदि कहेंगी तो वे अवश्य कर देंगे।"

"मैंने कभी कुछ नहीं कहा और अब भी कुछ नहीं कहूँगी।"

"तब तो बहुत कठिनाई होगी। मैं तो बहुत आशा लगाकर आया था। रीता देवी ने भी बहुत आशा बाँधी थी आपसे।"

"तो रीता देवी और आप मेरे विषय में कुछ नहीं जानते। मैं मास्टरजी को करने को कभी कुछ नहीं कहती। जैसे एक तोता-मैना किसी के घर में रहता हुआ, कभी कुछ माँगता नहीं और मालिक उसको स्वयं ही देता है, वैसी ही मेरी अवस्था है।"

"इस पर भी, यदि आप हमारी बात का विरोध न करें तो भी, मैं समझता हूँ कि बात हो जायगी। मैं आपके सामने ही उनसे कहूँगा कि······।"

ब्रजेश प्याले में से सरुकी भरने के लिए चुप कर गया। यथार्थ में वह विचार करने लगा था कि किस सीमा तक वह अपनी बात रामी को बताये। दो-तीन घूँट पीकर, उसने कहा, "रीता देवी चाहती हैं कि मास्टरजी उनसे तलाक ले लें।"

"यह कैसे हो सकता है? हिन्दू ढंग से हुआ विवाह तो टूटता नहीं।"

"यह बात वे जानती हैं। परन्तु एक 'जैन्टलमैन' के वचन द्वारा सब-कुछ हो सकता है। जब यह वचन हो जायगा तब वे रीता के व्यवहार के विषय में, कभी किसी से कोई आपत्ति नहीं उठायँगे।"

"चाहे रीता दीदी नया विवाह भी करवा लें?"

"हाँ! इसी प्रकार वे भी अपना नया विवाह करवा सकेंगे।"

"तो आप उनसे कहिये। इसके लाभ उनको समझाइये। यदि उनको यह बात ठीक प्रतीत हुई तो वे मान भी सकते हैं।"

"आप इस प्रबन्ध को उनके लिए ठीक समझती हैं या नहीं।"

"नहीं, यह बात कुछ जची नहीं।"

"क्यों?"

"आप उनसे ही पूछ सकते हैं। वे आ गये हैं।"

: १६ :

इस समय देवीदत्त ने बैठक में प्रवेश किया। ब्रजेश की पीठ दरवाजे की ओर थी और रामी का मुख उस ओर। रामी ने जब कहा कि वे आ गए हैं तो उसने घूमकर देखा और बहुत सहिष्णुता से उनसे मिला।

देवीदत्त भी कुर्सी पर बैठ गया। रामी ने उससे पूछ, एक प्याला चाय उसके लिए भी बना दिया। देवीदत्त ने पीते हुए पूछा, "कुँवर साहब! आज आपके इस क्षुद्र जीव के गृह को पवित्र करने में क्या कारण है?"

"एक अत्यावश्यक कार्य से आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। उस विषय पर रामी देवी से बातचीत कर रहा था। मेरा दुर्भाग्य है कि ये उसको अच्छा नहीं समझतीं। मैं समझता हूँ कि इसमें सबका भला है। हमारा अर्थात् मेरा-आपका, रीता देवी का और रामी देवी का भी।"

देवीदत्त आराम से चाय पीता रहा। ब्रजेश ने खाली प्याला मेज पर रखते हुए कहा, "रीता देवी चाहती हैं कि आप उनको तलाक दे दिया समझ, अपना स्वतन्त्र प्रबन्ध करें। न वे आपसे कुछ मांगेंगी और न आपका उन पर किसी प्रकार का अधिकार रहेगा।"

"यदि मैं ऐसा स्वीकार न करूँ तो?"

"वे आपसे प्रार्थना कर रही हैं और आपकी शुद्ध-बुद्धि से यह आशा करती हैं कि आप उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लेंगे।"

"इस त्याग के लिए वे मुझको क्या देंगी ?"

"जो कुछ दे चुकी हैं, वह वापिस नहीं मांगेगी।"

"और जो कुछ मुझसे ले चुकी हैं ?"

"वह गिन डालिए, उसको वापिस देने का वचन देंगी।"

"और यह लेकर भी यदि मैं अपना वचन पालन न करूँ और फिर उससे अपने पति के अधिकार माँगूं तो क्या होगा ?"

"वह आपकी भलमनसाहत पर विश्वास करती हैं।"

"पर मैं उसकी भलमनसाहत पर विश्वास खो बैठा हूँ। विवाह के पश्चात् पहली रात ही मेरा उसके साथ एक कान्ट्रेक्ट हुआ था। अब वह उस कान्ट्रेक्ट को तोड़ना चाहती है। मैंने उस कान्ट्रेक्ट का ईमानदारी से पालन किया है। वह अब उसको पालन करने से भागना चाहती है। ऐसी अवस्था में मैं भी, जो उचित समझूँगा करूँगा।"

"पर मास्टर जी ! आप जरा अपनी शक्ति पर ध्यान दें। आप क्या कर सकेंगे ? अभी तो वह आपसे आपकी रुचि अनुसार शर्तें करना चाहती हैं। परन्तु ऐसा अवसर भी आ सकता है, जब वे ऐसी बात करने पर विवश हो जावें, जो आपको रुचिकर न हो।"

"ऐसा तो वे पहले ही कर रही है। पूर्ण कान्ट्रेक्ट ही मेरी रुचि के विपरीत है। इस पर भी जब एक बार मैं वचनबद्ध हो गया हूँ, तो मैं उस पर आरूढ़ हूँ। अब कान्ट्रेक्ट उस ने तोड़ा तो मैं अपने पति के अधिकार पाने का यत्न करूँगा।"

"यौन-सम्बन्धी अधिकारों के लिए ही तो आप कह रहे हैं न ?"

"इसके अतिरिक्त भी। उदाहरणार्थ मैं चाहूँगा कि वह मेरे साथ घर में रहे। मेरे साथ भोजन करे। जहाँ वह जाय, वहाँ मैं भी जाऊँ। वस्त्र जैसे मैं पसन्द करता हूँ, वैसे पहने। मैं उसको रात के तीन-तीन बजे तक नाच करने की स्वीकृति नहीं दे सकता। होटलों में अपने मित्रों के साथ एक ही कमरे में सोने की स्वीकृति तो कभी दे सकता ही नहीं।"

"वह आपसे छुटकारा पाने के लिए कोर्ट से सहायता माँगेगी।"

"यही तो मैं चाहता हूँ। मैं जो रहस्य वहाँ बताऊँगा, उनके समाचार पत्रों में छपते ही उसका मन्त्री-पद हवा में विलीन हो जावेगा।"

"परन्तु बिना प्रमाण के कोई बात कहनी तो आपको कष्ट में डाल देगी ?"

"मेरे पास, जो कुछ मैं कह रहा हूँ, उसका प्रमाण है। क्या आप देखेंगे ? मैं समझता हूँ कि आप देख लें तो ठीक ही रहेगा। इससे समझौता होने में सहायता मिलेगी।"

"मैं आपका धन्यवाद करूँगा। बताइए आप के पास क्या प्रमाण है इस बात का कि वे किसी भी पुरुष से अनुचित सम्बन्ध रखती हैं ?"

"अच्छी बात, ठहरिये। मैं अपने एलबम उठा लाऊँ।" इतना कह देवीदत्त अपने कमरे में चला गया। इस सब समय रामी वहाँ बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। उसको ब्रजेश का मुख क्रोध से तमतमाता दिखाई दे रहा था। वह किसी दुर्घटना की आशंका करने लगी थी।

देवीदत्त अपने कमरे में से एक बड़ी-सी 'एलबम' उठा लाया। उसने कुर्सी पर बैठ, उसमें से एक तस्वीर निकालकर ब्रजेश के सामने कर दी। ब्रजेश उस चित्र को देख लपककर उठ खड़ा हुआ। वह एलबम को बन्द कर बोला, "यह झूठ है। सरासर कोई ट्रिक (चलाकी) है। ऐसी अनुचित और झूठी फोटो आपके पास नहीं रहनी चाहिए।"

इतना कह उसने एलबम अपनी बग़ल में दबा ली और अविलम्ब अपनी जेब में से पिस्तौल निकाल, देवीदत्त की छाती पर तान दिया।

देवीदत्त हँस पड़ा और बोला, "मेरे पास एक और......।"

ब्रजेश ने उसका वाक्य समाप्त होने नहीं दिया और गोली चला दी। परन्तु रामी उससे अधिक सतर्क थी। उसने पूर्व इसके कि गोली छूटे, ब्रजेश के हाथ को ऊपर उठा दिया।

गोली देवीदत्त के कन्धे के ऊपर से उसके कोट को छीलती हुई निकल गई। ब्रजेश शिकारी था। वह समझ गया कि पहला निशाना चूक गया है। उसने दो पग पीछे हटकर रिवाल्वर को घुमाकर दूसरी गोली चला दी।

इस बार रामी मास्टर साहब के आगे खड़ी हो गई। पहली गोली का शब्द सुन माधो भागा हुआ कमरे में आया और उसने व्रजेश को दरवाजे में खड़े दूसरी गोली चलाते देख, पीछे से ही उसको अपने भुजाओं में जकड़ लिया। इस बार फिर निशाना चूका और गोली रामी को छाती में लगने के स्थान जाँघ में लग गई। इस सयम माधो ने उसको फर्श पर गिरा लिया और उसका पिस्तौल हाथ से छूट गया।

देवीदत्त ने माधो को कहा, "पकड़े रखो इस बेईमान को।" और दूसरे कमरे में जा पुलिस में टेलीफोन कर दिया। यह टेलीफोन रीता ने अपने निर्वाचन-कार्य के लिए लगवाया था और अभी तक लगा हुआ था।

रामी लहू से लथपथ फर्श पर अचेत हो लेट गई। माधो और देवीदत ने व्रजेश के हाथ पाँव-बाँध दिए और रामी को सचेत करने लगे। जब तक पुलिस आई तो रामी सचेत हो चुकी थी। गोली उसकी जाँघ से आर-पार हो गई थी। इस समय तक देवीदत ने एक डाक्टर को भी बुला लिया था और रामी की पट्टी हो रही थी।

एलबम देवीदत्त ने उस कमरे के एक कोने में पड़ी तिपाई पर रख दी। पुलिस रिवाल्वर, दो चली हुई गोलियाँ और व्रजेश को पकड़कर ले गई। देवीदत्त और माधो के प्रथम बयान तो वहीं हो गये। देवीदत्त ने कहा, "यह मुझको धमकाकर मुझ से एक वस्तु जो मेरी स्त्री की सम्पति है, लेना चाहता था। मैं देना नहीं चाहता था। इस पर इसने यह गोली-काण्ड किया है।"

थानेदार ने पूछा, "वह वस्तु क्या है?"

"मैं अदालत में उपस्थित करूँगा। वह एक एलबम है, जिसमें मेरी श्रीमती के अपने मित्रों के साथ फोटो हैं।"

चार

: १ :

मजीद दिल्ली से भागा तो सीधा कलकत्ता पहुँचा। वहाँ वह कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यालय में जा पहुँचा। उन्होंने उसको बंगाली ढंग के कपड़े दिये और एक पार्टी के सदस्य के घर छिपकर रहने का प्रबन्ध कर दिया।

अगले दिन कोटलवाल और जसवन्तसिंह भी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने मजीद को बताया कि मुन्शी सब बक गया है और जसवन्तसिंह को फाँसी का दण्ड हो सकता है। कोटलवाल और मजीद को दस-दस वर्ष का कठोर दण्ड होगा।

इस परिस्थिति पर विचार हुआ तो उनके लिए झूठे पासपोर्ट तैयार करवाये गए। पश्चात् उनको एक जापानी जहाज में बैठाकर, टोकियो के लिए रवाना कर दिया गया। जसवन्तसिंह उनके साथ नहीं गया। वह कलकत्ते में ही रह गया।

बीस दिन में जहाज टोकियो पहुँचा। वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी का एक अधिकारी उनको पार्टी कार्यालय में ले गया। वहाँ इन दोनों पर जिरह की गई और इनके विचारों और प्रोग्राम का पता किया गया। कोटलवाल ने कलकत्ता के अधिकारी का पत्र दिखाया और सब प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने बताया कि अपनी पार्टी का कार्य करते हुए वे एक ऐसे मुकद्दमे में फँस गये थे कि उनको देश छोड़ना पड़ा है। अब उनकी इच्छा बोलशिविक पार्टी के काम करने के ढंग का अध्ययन करना है, जिससे वे अपने अथवा

किसी अन्य देश में पार्टी का कार्य सुचारु रूप से कर सकें। टोकियो से उनको रेल द्वारा जापान के उत्तर में एक छोटे से बन्दरगाह 'ओटारु' में भेज दिया गया और वहाँ से एक कोयला ढोने के स्टीमर द्वारा वे ब्लैडी-वास्टौक पहुँचा दिए गये।

यहाँ पहुँचते ही कोटलवाल और मजीद को ऐसा अनुभव हुआ कि वे किसी अन्य संसार में पहुँच गये हैं।

जापान के लोग बहुत ही सफाई पसन्द करते थे। उज्ज्वल और बेल-बूटेदार कपड़े पहनते थे। इनके मकान विशेष रूप से साफ-सुथरे होते थे। पुराने विचार के हिन्दुस्तानियों की भाँति जूते उतारकर फर्श पर दरी या चटाई बिछाकर बैठते और काम करते थे।

रूस की भूमि पर पाँव रखते ही उनको ऐसा अनुभव हुआ कि वे एशिया छोड़ किसी यूरोप के देश में पहुँच गये हैं। यहाँ लोग और सड़कें व मकान उतने उज्ज्वल और साफ-सुथरे नहीं थे, जितने जापान वालों के थे। इस पर भी उनको वहाँ के लोगों के मुख पर उत्साह और लगन दिखाई देती थी। बन्दरगाह पर और नगर में दुकानों और मकानों में लोग पूर्ण रूप से व्यस्त प्रतीत होते थे। जहाँ जापानियों को देख यह अनुभव होता था कि पूर्ण देश में कोई उत्सव मनाया जा रहा है और लोग हँसते-खेलते उस उत्सव में सम्मिलित हो रहे हैं, वहाँ रूस में लोग गम्भीर, दृढ़ निष्ठावान और जीवन-संघर्ष में लगे हुए प्रतीत होते थे।

कोटलवाल ने देखा और मजीद को अपने मन के भाव बताये, "यहाँ पहुँच मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि मैं किसी जेल से छूटकर आया हूँ। यहाँ का प्रत्येक प्राणी ऐसे लगा हुआ है, जैसे वह अपने घर के कार्य में लगा हुआ हो। मानो उसको अपने प्रयत्न से स्वयं को लाभ व हानि होने वाली है।"

मजीद मुस्कराया और चुपकर रहा। कोटलवाल प्रत्येक वस्तु पर जो वे देखते थे, प्रशंसात्मक टीका-टिप्पणी करता जाता था। ये एक घोड़ागाड़ी में बैठाकर कमिन्ट्रीन के कार्यालय को ले जाये जा रहे थे। कोटलवाल बहुत

प्रसन्न प्रतीत होता था और मजीद उससे अधिक गम्भीर और चुप था। कोटलवाल को जब अनुभव हुआ कि मजीद कुछ कह नहीं रहा तो उसने पूछा, "कौमरेड मजीद! तुम आज इतने चुप क्यों हो?"

"मुझको यहाँ समालोचना करने को कुछ दिखाई नहीं देता। जो-कुछ मैं स्काटलैण्ड की राजधानी ऐडनबर्ग में देखा करता था, वही परन्तु उससे बहुत घटिया, मुझको यहाँ दिखाई देता है। मुझको लोग काम करते तो दिखाई देते हैं परन्तु वे किसी अदृश्य भय से दब रहे प्रतीत होते हैं।"

"कौमरेड! तुम स्वयं कुछ निराशा में दब रहे प्रतीत होते हो।"

"हाँ! यदि रीता साथ होती तो यह सब कुछ इतना शोकमय न लगता। टोकियो में और विशेष रूप से जापानी गाड़ियों में, जापानी औरतें मुस्कुराती और कूदती-फाँदती दिखाई देती थीं। यहाँ तो औरतें और मर्द सब एक जैसे दिखाई देते हैं, जैसे किसी की अर्थी के साथ, उसको दफ़न करने जा रहे हों।"

कोटलवाल हँस पड़ा। उसने कहा, "इसका शोक तो मुझको भी है कि रीता हमारे साथ नहीं है। इस पर भी संसार औरतों के अतिरिक्ति भी तो है और मैं उसी अंश की ओर देख रहा था।"

वे जब कमिन्ट्रीन के कार्यालय में पहुँचे तो अविलम्ब उन पर जिरह आरम्भ हुई। एक अंग्रेजी समझ सकने वाला दुभाषिया वहाँ उपस्थित था। वह उनसे प्रश्न करने वाले की बात बताता था और उनकी बात रूसी भाषा में उसको लिखाता था। उनके घर की अवस्था, उनकी योग्यता और वह घटना, जिसके कारण उनको हिन्दुस्तान से भागना पड़ा था। सब पूछ-कर लिख ली गईं और पश्चात् उनको उसी भवन के एक कमरे में रख दिया गया।

विश्राम करने के पश्चात्, जब वे घूमने जाने वाले थे, एक जी० पी० यू० (रूसी खुफिया पुलिस) का व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी की आज्ञा हाथ में लेकर, वहाँ पहुँच गया। आज्ञा अंग्रेजी में लिखी थी। मजीद ने आज्ञा पढ़ी और कोटलवाल के हाथ में दे दी। कोटलवाल ने पढ़कर सुनाया,

"आप दोनों सज्जनों ने जो बयान दिये हैं, वे हम जाँच-पड़ताल के लिए भारतवर्ष भेज रहे हैं। हमारे गुप्तचर वहाँ की प्रत्येक संस्था में उपस्थित हैं और जब तक उन द्वारा आपकी कहानी का समर्थन न हो, तब तक आपके विषय में हम कुछ निश्चय नहीं कर सकते। इस कारण मैं आप दोनों को यह राय देता हूँ कि आप अपने कमरे से बाहर, बिना यहाँ के 'चीफ आफ दी 'जी० पी० यू०' की आज्ञा के न जायँ।"

मजीद ने उस व्यक्ति से, जो पत्र लाया था, पूछा, "कौमरेड! क्या आप अंग्रेजी पढ़-लिख सकते हैं?"

"हाँ!" उसका उत्तर था। उसने कहा, "मैं आप लोगों को घुमाने-फिराने और अन्य आवश्यक बातों के बताने के लिए नियुक्त हुआ हूँ।"

"हम आपके अधिकारी का धन्यवाद करते हैं।"

कोटलवाल ने पूछा, "क्या हम आपके कैदी हैं?"

"नहीं! इस पर भी आप एक विदेश से आये हैं। यहाँ आपको बिना रोकटोक के घूमने की स्वीकृति नहीं मिल सकती। यह देश ऐसा ही है।"

दोनों कुछ देर तक एक-दूसरे का मुख देखते रहे। अन्त में मजीद ने कहा, "अच्छी बात है। चलिये साथी! हमको तनिक इस नगर की सैर करा दीजिये।"

जब वे तीनों उस मकान से निकले तो सब कामकाज में लगे हुए लोग, उनको देख अपना काम छोड़कर, उनकी ओर देखने लगे। मजीद ने यह परिवर्तन देखा और कोटलवाल को कहा, "अपने इस साथी के कारण हम दर्शनीय हो गये हैं।"

"मैं भी देख रहा हूँ कि अब सब हमारी ओर ऐसे देखने लगे हैं कि मानो उनको करने को कुछ काम ही नहीं रहा।"

मजीद और कोटलवाल हिन्दुस्तानी में बातचीत कर रहे थे। इस पर उनका संरक्षक उनका मुख देखने लगा। मजीद उसके मुख पर चिन्ता की रेखाएँ देख, उस से अंग्रेज़ी में पूछने लगा, "आप हमारे मुख पर क्या देख

रहे हैं ?"

"आपकी भाषा समझने का यत्न कर रहा हूँ।" कोटलवाल ने उसको सन्तुष्ट करने के लिए कहा, "यह भाषा हिन्दुस्तानी है। हम आपस में इसी भाषा में बातचीत करने का अभ्यास रखते हैं। मेरे मित्र कह रहे थे, 'यह नगर बहुत सुन्दर है।' मैंने कहा था कि, 'वहाँ हमारे हिन्दुस्तान में ऐसा साफ और सुन्दर नगर देखने को नहीं मिलता।'

उनके संरक्षक ने उनके इन प्रशंसात्मक उद्गारों की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "कौमरेड्ज़! मैं आपको एक सम्मति देता हूँ। आप ऐसी किसी भाषा में बातचीत न करें, जो मैं नहीं समझता। अन्यथा आपका यह कार्य सोवियेट रिपब्लिक के विरुद्ध, कोई षड्यन्त्र करना समझा जायगा।"

इस बात को सुन मजीद खिलखिलाकर हँस पड़ा। कोटलवाल गम्भीर हो चुप कर गया। मजीद ने उस संरक्षक से पूछा, "आपका शुभ नाम क्या है ?"

"कौमरेड निकोलाईवास्की।"

"कौमरेड निकोलाईवास्की! हम कम्युनिस्ट हैं। अपने देश से इसी कारण निकाले गये हैं कि हम कम्युनिज्म में विश्वास रखते हैं। हम अपने देश में समझते थे कि यहाँ पर मजदूरों का राज्य है और सब संसार के मजदूर एक हैं। ऐसी अवस्था में हम रूस के इस मजदूरों के राज्य के विरुद्ध षड्यन्त्र नहीं कर सकते।"

"यह ठीक है। परन्तु हम किसी के कहने मात्र पर विश्वास नहीं करते। इस समय दुनिया के प्रायः देशों में बोरजिया राज्य स्थापित है। इस कारण हम दुनिया के सब आदमियों को बोरजिया समझते हैं, जब तक कि वे अपने को मजदूर सिद्ध न कर दें।"

"हम प्रत्येक प्रकार की परीक्षा देने के लिए तैयार हैं।"

"तो सब से पहली परीक्षा यह है कि मेरे सामने केवल अंग्रेजी में बातचीत करें, अन्यथा दूसरी भाषा को समझने के लिए किसी और की नियुक्ति मेरे स्थान पर हो जावेगी।"

इस पर कोटलवाल, जो यह सब वार्तालाप सुन रहा था, कहने लगा, "यह ठीक तो है। हम पर देखरेख रखने वाला यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो अंग्रेजी भी जानता हो और हिन्दुस्तानी भी, तो हमको लाभ ही है। आप की किसी दूसरे काम पर नियुक्ति हो जावेगी।"

"एक तो आपको मुझ जैसा ईमानदार आदमी नहीं मिलेगा। दूसरे मैं आप को यहाँ के विषय में बहुत बातें बता सकता हूँ।"

"आप को क्या लाभ होगा हमारे साथ रहने से ?" मजीद ने व्यंगात्मक भाव बनाते हुए पूछा।

"यह काम उससे अच्छा है, जो मैं पहले करता था।"

"पहले आप क्या करते थे ?"

"मैं मकानों में बिजली लगाया करता था। दिन भर काम करने के पश्चात् दस रूबल नित्य उससे मिलते थे। अब मैं देश-विदेश के यात्रियों के साथ रहता हूँ और उनके साथ रह कर, मैं उन जैसा बढ़िया भोजन और अच्छे होटलों में रहने का अवसर पाता हूँ।"

इस स्वार्थ की बात को सुन दोनों गम्भीर विचार में मग्न हो गए। दोनों बाजार में चले जा रहे थे।

प्रशान्त सागर पर, ब्लेडीवास्टक रूस का एक सुदृढ़ दुर्ग है। वर्ष में छः-सात माह यहाँ बर्फ पड़ती रहती है। इस पर भी सागर समीप होने के कारण, रहने योग्य ऊष्मा यहाँ बनी रहती है। पहाड़ी पर, जो नगर से दो मील के अन्तर पर है, एक सुदृढ़ दुर्ग बना हुआ है और इसमें रूसी सेना की एक बहादुर टुकड़ी रहती है। नगर में ज़ार के काल में तीन व्यापार चलते थे। एक तो रेंडियर रीछों तथा अन्य ध्रुव-प्रदेशों के जन्तुओं के चर्म बिकने को आते थे। दूसरा सागर से मछलियाँ पकड़कर एशियाई रूस के बहुत से भाग में खाने के लिए भेजी जाती थीं। तीसरा साइबेरिया के एक विभाग से सोना एकत्रित कर वहाँ से कुछ देशों को भेजा जाता था। अब सब व्यापार सरकार के अपने हाथ में हो गया है। सब काम करने वाले अपना माल लाकर सरकारी दूकानों में जमा करा देते हैं और वहाँ से

निश्चित दाम ले कर चले जाते हैं। सोने का देश से निकास तो सरकार ने सर्वथा बन्द कर दिया है। मछली की माँग देश में अधिक और निकास कम है। खालें विदेशों में जाती हैं, परन्तु सोवियत सरकार उन देशों से कुछ मँगवाना नहीं चाहती, जहाँ इन खालों की खपत है। परिणाम यह है कि व्यापार सर्वथा बन्द है।

निकोलाईवास्की मजीद और कोटलवाल के साथ चलता हुआ बता रहा था कि जब से जापान वालों ने ब्लेडीवास्टक को विजय किया है, तब से सरकार इस बन्दरगाह पर कुछ अधिक धन व्यय नहीं कर रही। यही कारण है कि यह एक भारी सैनिक सुरक्षा का स्थान बनने के स्थान, अब एक उजड़ा हुआ गाँव रह गया है।

मजीद ने बाजार में चलते हुए अपने संरक्षक से पूछा, "यहाँ कोई रैस्टोरां है या नहीं ?"

"है, परन्तु वहाँ दाम बहुत देना पड़ता है। इस पर भी यदि आप चाहें तो कभी-कभी वहाँ आपको ले जा सकता हूँ।"

"कितना खर्च हो जाता होगा चाय पीने के लिए ?"

"एक रूबल प्रति पीने वाले के लिए।"

"यह तो कुछ नहीं है। इतना तो खर्च किया ही जा सकता है। यदि हमें यहाँ कुछ अधिक दिन तक ठहरना पड़ेगा तो मैं अपनी माँ को लिखकर धन मँगवा सकता हूँ।"

"पर यहाँ सोना आए तो काम बन सकता है।"

"सोने के रूप में ही मँगवाऊँगा।"

"वैसे तो आपको यहाँ लगभग दो मास लग ही जायँगे। यदि इतने समय में कुछ मँगवा सकते हैं तो मँगवा लीजिए।"

दो घण्टा भर भ्रमण कर, वे लौट पड़े और कमिन्ट्रीन के कार्यालय पर, जहाँ वे ठहरे हुए थे, आ पहुँचे।

: २ :

रात के समय जब सब सो जाते थे तो मजीद और कोटलवाल अपनी परिस्थिति पर विचार करने बैठ जाते थे। व्लेडीवास्टक में पहली रात से ही मजीद और कोटलवाल के दृष्टिकोण में अन्तर प्रकट होने लगा।

कोटलवाल तो रूस के इस पिछड़े हुए नगर में पहुँच, यह अनुभव करता था कि वह स्वर्ग के किसी अंश पर पहुँच गया है। मजीद ने कोटलवाल को बताया, "यह कार्यालय कहने में तो इन्टरनेशनल कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यालय है। वास्तव में यह जी० पी० यू० का कार्यालय है और हम इस विभाग में बन्दी हैं।"

"मजीद भाई! यह तो देश की रक्षा के लिए है। जब इनको इस बात का पता चल जायगा कि हम वास्तव में कम्युनिस्ट हैं, तब ये हमारे साथ दूसरा व्यवहार करने लगेंगे। सबसे बड़ी बात खर्चे की है। हमारे पास तो एक पैसा भी नहीं रहा। ये लोग हम पर क्यों खर्चा करें?"

"यदि मैं इंग्लैण्ड अथवा यूरोप के किसी देश में पहुँचता तो घर वालों से रुपया मँगवा लेता। यहाँ से तो हम उनसे सम्बन्ध भी नहीं बना सकते।"

"यह तो है ही। रूस में मजदूरों की सरकार है। दुनिया के सब देश इसको असफल बनाने का यत्न करते रहते हैं। ऐसी अवस्था में हमको वे सुविधाएँ नहीं मिल सकतीं, जो फ्रांस और इटली में मिल सकती हैं।"

मजीद को कोटलवाल की युक्तियों से सन्तोष नहीं हुआ। यह मतभेद प्रतिदिन बढ़ता ही गया। उनकी रूसी भाषा सीखने में बहुत रुचि थी। वे दोनों तीन घण्टे नित्य एक स्थान पर जाकर सीखने लगे। उनको सबसे बढ़िया भोजन, जो उस नगर में उपलब्ध था, मिल रहा था। रहने को कमरा भी साफ-सुथरा और खुला था, परन्तु सिवाय रात के वे कभी अकेले नहीं छोड़े जाते थे। कोई-न-कोई जी० पी० यू० का कर्मचारी उनके साथ रहता था। वे अपनी इच्छा से न कहीं जा सकते थे, न किसी से सम्पर्क उत्पन्न कर सकते थे। केवल रात के समय जब वे एक-दो घण्टे सो चुकते तो वे उठ बैठते और अँधेरे में धीरे-धीरे हिन्दुस्तानी में बातचीत करते थे।

इस प्रकार एक मास व्यतीत हो गया। हिन्दुस्तान से जो सूचना जी० पी० यू० चाहता था, अभी नहीं आई थी। एक दिन कोटलवाल ने निकोलाईवास्की से कहा, "कौमरेड ! हमारा चित्त दिन-प्रति-दिन एक जैसा जीवन व्यतीत करने से उचाट हो गया है। अपने अधिकारियों से पूछकर, कहीं थिएटर-सिनेमा इत्यादि देखने की स्वीकृति मिलवा दो !"

निकोला ने कहा, "मैं कह दूँगा। कठिनाई यह है कि रात के समय आपके साथ जाने के लिए कोई अंग्रेजी पढ़ा-लिखा आदमी ढूँढना पड़ेगा। अभी आपको स्वतन्त्र घूमने की स्वीकृति नहीं दी जा सकती।"

मजीद ने कहा, "कॉमरेड निकोलाईवास्की ! यह तो हम जानते हैं कि अभी तक हम आपकी सरकार के बन्दी हैं। इसी कारण तो आपसे कहा है कि कोई ऐसा प्रबन्ध हो सके तो पता करना।"

"होगा यह कि मुझे आधी रात तक आपके साथ रहना पड़ेगा। यहाँ अंग्रेजी पढ़ा-लिखा मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है।"

"तो रात को तुम भी सिनेमा-थियेटर देख सकोगे। इसमें हानि ही क्या है ? मनोरंजन-का-मनोरंजन और 'ड्यूटी'-की-'ड्यूटी'।"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैंने अभी नया-नया विवाह किया है और मेरी युवा स्त्री मेरे साथ जाने के लिए हठ करेगी।"

"तो इसमें हानि क्या है ? हमको भी उसकी संगति का लाभ पहुँचेगा। हम उसका भी उतना ही मान करेंगे, जितना आपका करते हैं।"

"वह अंग्रेजी जानती नहीं और आप पर व्यर्थ का बोझा होगा।"

"कॉमरेड ! तुम हमारी चिन्ता न करो।"

जब मजीद ने बहुत आग्रह किया तो निकोला ने अपने अधिकारियों से उनकी बात कही। कठिनाई वही थी, जिसका निकोला को डर था। इनको कभी-कभी पब्लिक थियेटर में ले चलने के लिए उसको कहा गया। वह इस शर्त पर तैयार हो गया कि उसके साथ उसकी नवविवाहिता को भी थिएटर जाने की स्वीकृति और पास मिले। यह साधारण बात थी। स्वीकार कर ली गई।

एक मास के बन्दी जीवन में यह पहला सायंकाल था, जो मजीद ने पसन्द किया। सायंकाल का भोजन कर निकोलाईवास्की दोनों को लेकर अपने घर चला गया। यह एक साधारण-सा, एक कमरे का मकान था। बाहर बरामदे में ही बैठक बनी हुई थी। निकोला की स्त्री ऐना अच्छी-खासी सुन्दर लड़की थी। निकोला पैंतीस वर्ष से अधिक आयु का था और ऐना बीस-इक्कीस वर्ष की। मकान में बिजली नहीं थी। तेल की दो कुप्पियों से प्रकाश हो रहा था। जब ये लोग वहाँ पहुँचे तो ऐना, जिसको इस प्रकार के मनोरंजन के अवसर बहुत कम मिलते थे, प्रसन्नता से उबलती हुई उनके साथ चलने को तैयार खड़ी थी। उसने इनका अपनी भाषा में स्वागत किया, जो ये नहीं समझे। जब निकोला ने समझाया तो मजीद ने उसको कहा कि वह उनकी ओर से अपनी स्त्री का धन्यवाद कर दे।

मकान के लैम्प बुझा और कमरे को ताला लगा, वे चारों चलने के लिये तैयार हो गये। निकोला नगर के बाहर एक निर्धनों की बस्ती में रहता था।

मजीद ने पूछा, "क्या यहाँ भी ताला लगाने की आवश्यकता है?"

"कहाँ नहीं है?"

"पर रूस तो अन्य देशों से भिन्न है। यहाँ सब लोग मजदूर होने चाहिएँ और सब की आवश्यकताएँ पूर्ण होनी चाहिएँ। परिणाम में न तो चोर होने चाहिएँ और न ही ताला लगाने की आवश्यकता।"

निकोला हँस पड़ा और पूछने लगा, "ऐसा कभी किसी देश में हो सका है?"

"हमारे हिन्दुस्तान में आज से डेढ़ हजार वर्ष पूर्व ऐसी अवस्था थी। अब भी ऐसे स्थानों पर, जहाँ यूरोपियन सभ्यता नहीं पहुँची, लोग घरों को ताला लगाने की आवश्यकता नहीं समझते।"

"यह विचित्र बात है। हम तो ऐसी स्थिति की केवल तब ही आशा कर सकते हैं, जब पूर्ण रूप से कम्युनिस्ट विचारधारा व्यवहार में आने लगेगी। उस काल में, जब कम्युनिस्ट विचारों का किसी को ज्ञान भी नहीं था, चोरों का अभाव कैसे हो सकता है?"

"इस पर भी ऐसा था। यह कार्लमार्क्स के जन्म से बारह-तेरह सौ वर्ष पहले की बात है।"

"यह झूठ है। ऐसा हो नहीं सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुओं ने कार्लमार्क्स को झूठा सिद्ध करने के लिए यह झूठ प्रचलित कर दिया है।"

इस समय ऐना तैयार हो उनके साथ चल पड़ी थी। मजीद ने व्यर्थ का विवाद बन्द कर दिया और ऐना को हँसाने के लिए उसने कहा, "हम हिन्दुस्तान के रहने वाले कम्युनिस्ट रूस को अपना तीर्थ-स्थान मानते हैं। आप कार्लमार्क्स के प्रतिपादित सिद्धान्तों को कार्यरूप में ला रहे हैं, इस कारण आप हमारे आदर के पात्र हैं।"

ऐना कुछ समझी नहीं। उसने रूसी भाषा में कहा, "मैं आपकी बात को समझ नहीं सकी।"

यह उत्तर सुन निकोला हँस पड़ा। उसने मजीद को याद दिलाने के लिए कहा, "मैंने आपको बताया था कि यह अँग्रेजी नहीं जानती और आप की बात समझ नहीं सकेगी।"

"कुछ हानि नहीं हुई। श्रीमती जी की बात न समझते हुए भी हमको अलौकिक आनन्द प्राप्त हुआ है। जब श्रीमती जी बोलती हैं तो इनके मोती के समान श्वेत दाँत बहुत भले प्रतीत होते हैं।"

जब निकोला ने अपनी स्त्री को मजीद के शब्दों को समझाया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और मजीद उसको हँसता देखने के लिए खड़ा हो गया।

मजीद ने रूसी भाषा में, जिसके कुछ अक्षर उसने सीख लिये थे, कहा, "औपीं परी करासीं! औपीं परी करासीं!! (बहुत सुन्दर! बहुत सुन्दर!!)"

ऐना ने चलते हुए अपने पति को कहा, "यह प्रशंसा बोर्जिया समाज की सी कृत्रिम और झूठी है या कम्युनिस्ट ढंग की वास्तविक?"

जब मजीद ने उसके कहने का अर्थ समझा तो उत्तर में कहा, "हम

तो बोर्जिया समाज के नहीं हैं। हम से उन जैसे फरेब की आशा क्यों की जाती है? मैं तो आप की स्त्री की सत्य ही प्रशंसा कर रहा हूँ। एक महीने में मैंने इस नगर में इतनी सुन्दर स्त्री नहीं देखी।"

यथार्थ बात यह थी कि उन्होंने इस काल में किसी स्त्री को इतने समीप से देखा ही नहीं था। ऐना ने अपने पति द्वारा मजीद को उस की प्रशंसा के लिए धन्यवाद कर दिया और कहा, "आपके मित्र कॉमरेड निकोलाईवास्की का सौभाग्य है कि उसको ऐसी बीवी मिली है।"

"यह श्रीमती जी की ही कृपा माननी चाहिए।" निकोलाई ने कहा।

जब ये लोग थियेटर में पहुँचे तो इनको सबसे प्रथम पंक्ति में स्थान मिल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि थियेटर में सब उपस्थित लोग नाटक से अधिक इनको देखने लगे। कोटलवाल के साथ ऐना और ऐना के साथ मजीद और उसके साथ निकोलाई बैठ गये। नाटक आरम्भ हुआ। नाटक का सारांश निकोलाई ने मजीद और कोटलवाल को पहले समझा दिया। इस कारण भाषा न समझते हुए भी नाटक का भाव वे समझ रहे थे। नाटक का नाम था 'समाज' और इसमें एक लड़की, जो अपना जीवन समाज-सुधार के लिए दे चुकी थी, बहुत लोगों से विवाह के लिए मांगी गई। उसने देखा कि प्रायः युवक, जो उससे विवाह करने की इच्छा रखते हैं, काम-चोर हैं। वह समाज के लिए अपनी सेवा दे नहीं सकते। एक युवक, जो सधारण रूपरेखा का था और एक लोहे के कारखाने में काम करता था, भी उससे विवाह का इच्छुक था। वह जब भी उससे मिलने आता, कभी अपनी प्रशंसा नहीं करता था और उससे इधर-उधर की बातें ही किया करता था। इसी प्रकार यह भाग-दौड़ कई मास तक चलती रही। लड़की एक अस्पताल में काम करती थी और अपने समय से अधिक समय तक ड्यूटी दिया करती थी।

एक दिन लोहे के कारखाने के अधिकारियों ने उस युवक को, जो साधारण रूपरेखा का था, सबसे अधिक काम करने का इनाम दिया। गाँव में एक सार्वजनिक सभा में उसको सम्मानित किया गया और उस सम्मान के

पश्चात्, वह लड़की उसको मिली और बोली, "क्या तुम मुझसे विवाह करोगे ?"

"विवाह ? हाँ। पर यह कैसे हुआ ? मैंने तो तुमको कभी अपने मन की बात बताई नहीं थी।"

"इस पर भी मैं जानती थी और मैं ऐसे महापुरुष की सेवा, जो समाज का सबसे बड़ा सेवक है, करना अपना कर्तव्य मानती हूँ।"

जहाँ नाटक में सार्वजनिक सभा में उपस्थित जनता ने लड़के को बधाई दी और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की, वहाँ थियेटर में बैठे लोगों ने भी तालियाँ बजा और नारे लगा-लगाकर उस बहादुर युवक की प्रशंसा की। थियेटर में बैठी औरतों ने अपने समीप बैठे पुरुषों का अभिवादन किया। इस उद्गार में ऐना ने मजीद का हाथ पकड़कर चूम लिया। उसका एक हाथ कोटलवाल के हाथ में था। उसने भी इस नाटक की अभिनेत्री की प्रशंसा में, उसका हाथ चूम लिया।

ऐना ने अपना हाथ खींच लिया। मजीद का हाथ उसने पकड़े रखा। मजीद ने फिर वही शब्द कहे, जो वह रूसी भाषा के जानता था, "बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर !!"

ऐना ने कुछ कहा। मजीद ने कुछ नहीं समझा और विस्मय में उसका मुख देखता रहा। इस पर पुनः कुछ कह, मजीद का हाथ फिर अपने होठों तक ले गई और ऐसे भाव में उसकी ओर देखने लगी, मानो वह अपने प्रेम-उपहार मजीद के लिए उपस्थित कर रही है। इस समय निकोलाई उठकर चलने को तैयार हो गया और हाल में प्रकाश हो गया।

: ३ :

रात को मजीद और कोटलवाल में एक और मतभेद का विषय उत्पन्न हो गया। कोटलवाल ने कहा, "कॉमरेड मजीद ! बहुत ही भाग्यशाली हो। रीता का प्रेम तुम्हें मिला था और ऐना का प्रेम भी तुम्हें ही मिल गया है।"

"मैं सत्य ही अपने को भाग्यशाली मानता हूँ, परन्तु इसमें मेरा दोष नहीं। मैंने तुमको भी पूरा अवसर दिया था।"

"देखो मजीद! जैसे तुम यौन-सम्बन्धी भूख से व्याकुल हो, वैसे ही मैं हूँ। इस कारण यदि तुमको इस सम्बन्ध में कुछ भी उपहार मिला, तो मैं उसका हिस्सेदार हूँ।"

"देखो कोटलवाल! तुम पूरा यत्न करना कि वह तुमको अपना प्रेम-उपहार दे। मैं तुमको पूरा अवसर दूँगा।"

"यह पर्याप्त नहीं। अगली बार जब वह थियेटर में जाय तो तुम कोई बहाना कर, घर पर ही रह जाना और मुझको अकेले जाने देना।"

"यह क्यों?"

"केवल इसलिए कि मैं खुली प्रतियोगिता में तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता। मैं तुम्हारी उपस्थिति में सफल नहीं हो सकता।"

"पर मैं ऐसा क्यों करूँ?"

"एक साथी को अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर देने के लिए।"

मजीद को यह मीमांसा समझ नहीं आई। इस पर भी, इस बात पर झगड़ा करने के स्थान वह मान गया। उसने कहा, "बहुत अच्छा कॉमरेड! मैं अपने साथी के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ।"

परन्तु अगले नाटक पर जाने के दिन निकोलाई ऐना को नहीं लाया। मजीद ने कोटलवाल से कहा, "अब इसमें मैं क्या कर सकता हूँ?"

कोटलवाल ने निकोलाई से पूछा, "आज तुम्हारी स्त्री नहीं चलेगी?"

"नहीं।"

"क्यों? उसका स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"कुछ मानसिक विकार उसमें पैदा हो गया था। एक मास-भर, पिछले नाटक देखने के समय से वह कॉमरेड मजीद के गुण गाती रही है। इस भय से कि यह प्रशंसा कहीं मेरे साथ दग़ा करने में सहायक न हो जाय, मैंने उसको साथ ले चलने से न कर दी।"

मजीद एक बूढ़े पति की ईर्ष्या को शान्त करने के लिए हँसकर बोला, "मैं सत्य कहता हूँ कि मेरे मन में तुम्हारी स्त्री के लिए किसी प्रकार के बुरे विचार नहीं थे।"

"यह तो मैं मानता हूँ। मुझको तो उस पर सन्देह हो गया है और उसी को मैं यह शिक्षा देना चाहता हूँ।"

"हम आशा करते हैं कि उसके मन का यह विचार शीघ्र ही दूर हो जायगा।"

तीनों थियेटर हाल में प्रविष्ट हुए तो उनके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उन्होंने देखा कि ऐना पहले ही उनकी सीटों के बीच वाली सीट पर बैठी है।

जब वे वहाँ पहुँचे तो उसने उठकर मजीद और कोटलवाल का स्वागत किया और कहा, "ईर्ष्यालु पति मुझ पर सन्देह कर कि मैं आप में से एक से प्रेम करती हूँ, मुझको साथ नहीं लाया। मैं अपनी जेब से दाम व्यय कर यहाँ आई हूँ, जिससे यह गधा शिक्षा ले सके।"

इस लम्बी वक्तृता को न तो मजीद समझा और न ही कोटलवाल। वास्तव में यह सब बात 'ऐना' ने अपने पति को समझाने के लिए कही थी और उसको यह चिन्ता नहीं थी कि मजीद अथवा कोटलवाल ने कुछ समझा है या नहीं।

निकोलाई का मुख लाल हो गया। मजीद समझ गया कि शायद थियेटर में ही झगड़ा हो जाय। इस कारण उसने निकोलाई को कहा, "यदि आप बुरा न मानें तो आज हम लौट जायँ।"

"हाँ।"

मजीद ने ऐना से हाथ मिलाया और कहा, "मैं पति-पत्नी के झगड़े में पड़ना नहीं चाहता। मेरी इच्छा है कि कॉमरेड से ऐना कोई ऐसा अवसर निकाले, जब हम परस्पर इस मिथ्या विचारों का संशोधन कर सकें।" ऐना समझी नहीं, परन्तु उसने अनुमान लगा लिया कि वे जा रहे हैं। इस कारण बोली, "आप बैठिये और इस गधे को ईर्ष्या की आग से

जलने दें।" और हाथ से उसने मजीद को बैठने का संकेत किया। मजीद कहने के अर्थ को तो नहीं समझा परन्तु उसके संकेत को समझकर, उसने सिर हिलाकर कहा, "आज नहीं फिर कभी।"

निकालोई, जो अपनी स्त्री की बात को भली भाँति समझ रहा था थियेटर से बाहर निकल आया। मजीद और कोटलवाल भी उसके पीछे बाहर आगये। ऐना इस तिरस्कार से क्रोध से लाल हो उनके पीछे चली आई। मजीद को कठिनाई अनुभव हुई कि वह उसको समझा नहीं सकता था। कुछ टूटी-फूटी रूसी भाषा में उसने कहा, "मी मयागें औपयरि।' (हम फिर कभी मिलेंगे) निकोलाई को समझाऊँगा इत्यादि।"

इस दिन के पीछे एक विशेष बात हुई। निकोलाई को किसी दूसरे नगर में किसी काम के लिए भेज दिया गया और एक अन्य अंग्रेजी पढ़े व्यक्ति को उनका संरक्षक बना दिया गया।

मजीद ने इस आदमी से पूछा, "निकोलाईवास्की कहाँ गया है?"

वह अपनी बीवी को लेकर खेबारोवस्क चला गया है। यह अमूर नदी के किनारे एक दस्तकारी का केन्द्र है और वहाँ एक बन्दी-कैम्प है। उसमें उसको भेज दिया गया है।"

मजीद मन में विचार कर रहा था कि वह अपनी इच्छा से गया है या उसको अधिकारियों ने भेजा है? इस जाने में उसकी पत्नी के व्यवहार का भी कुछ हाथ है या यह एक साधारण घटना-मात्र है।

यह नया संरक्षक मजीद इत्यादि पर अधिक कड़ी दृष्टि रखता था। अब उनको घूमने-फिरने की उतनी स्वतन्त्रता नहीं थी, जितनी निकोलाई की संरक्षता में थी। कभी घूमते हुए वे समुद्र-तट की ओर जाना चाहते थे तो संरक्षक कह देता था कि उधर वे नहीं जा सकते।

उनको पुनः थियेटर देखने का अवसर नहीं मिला। उनको थियेटर साथ ले जाने वाला कोई विश्वस्त संरक्षक नहीं था। मजीद इससे ऊब गया था, परन्तु कोटलवाल अभी भी धैर्य से हिन्दुस्तान से सूचना आने की प्रतीक्षा कर रहा था। रात सोने के समय मजीद ने कहा, "हमें यहाँ आये तीन

मास हो चुके हैं। इनको हमारे विषय में हिन्दुस्तान से कोई सूचना क्यों नहीं आई ?"

"दादा, आ जायगी। एक बात हमको समझ लेनी चाहिए कि यह नया-नया राज्य है। इसकी रक्षा की चिन्ता में किसी निर्णय पर पहुँचने में देरी स्वाभाविक ही है। दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है।"

"सोवियट सरकार को बने आज २० वर्ष से ऊपर हो गए हैं और अभी भी इसको तुम एक नई सरकार कहते हो ? बीस वर्ष में तो एक पीढ़ी बदल जाती है। देखो मिस्टर कोटलवाल ! मुझको इस कैद में तो बहुत विचार करने का अवसर मिला है और मेरा विश्वास मार्क्सिज़्म से हट रहा है।"

"चुप ! चुप !! मजीद दादा ! यहाँ दीवारों के भी कान हो सकते हैं।"

"इसीसे मुझको इस देश से घृणा हो रही है।"

"घृणा करो अथवा प्रेम करो। दादा, अपने मन में करो। मुख से मत बोलो।"

"साथी ! मैं इस बनावटी जीवन से ऊब गया हूँ। इससे तो हम हिन्दुस्तान में ही अच्छे थे। कितना ढोंग बना रखा था हमारे साथियों ने इस देश की उन्नत अवस्था का। सब धोखा निकला है। यहाँ की सफाई, सेहत और सुख-सुविधा सब कहने की बातें थीं। ब्लैडीवास्टक पूर्वी रूस का एक समृद्ध नगर है और उसकी हालत देखकर जी मुँह को आता है।"

कोटलवाल ने समझा कि उत्तर देने से मजीद प्रत्युत्तर देता है और वाद-विवाद बन्द नहीं होता। अतएव वह चुप कर गया। इससे मजीद के मन को शान्ति नहीं मिली। उसने अपना कहना जारी रखा, "यह देश स्त्रियों की स्वतन्त्रता का प्रतीक माना जाता है। इस पर भी एक स्त्री को तनिक हँसकर बात करने की स्वीकृति भी नहीं है। ऐना हमारे सामने ऐसे आई, जैसे सिनेमा के परदे पर छाया आ, मुस्कुराकर मिट जाती है। इस नरक-रूपी नगर में तीन मास में किसी औरत से बात करने का भी अवसर नहीं मिला और अभी तो हम बन्दी नहीं हैं। हमने इस देश की सरकार का कुछ बिगाड़ा नहीं।"

जब कोटलवाल ने उसकी बातों का उत्तर देना बन्द कर दिया तो वह कहता-कहता थककर करवट बदलकर लेट गया।

सबसे अधिक कठिनाई यहाँ की शरद् ऋतु के कारण थी। बाजारों और गलियों में बरफ जम गई थी। रातें लम्बी और दिन छोटे हो रहे थे। उनको पढ़ने को 'प्रवदा और 'इजवेस्टिया' मिलता था। मजीद और कोटलवाल अब शब्द-कोष की सहायता से यह समाचार-पत्र पढ़ और समझ सकते थे। इन समाचार-पत्रों में सोवियत सरकार की और स्टालिन की प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता था। कभी कोई बुरा समाचार भी होता था, तो उस पर भी स्टालिन की जयघोष कर दी जाती थी।

एक दिन 'प्रवदा' में समाचार छपा, 'क्रीमिया में किसानों ने संयुक्त-खेती की बात नहीं मानी। वे सोवियत-राज्य के शत्रु मानकर स्टालिन की आज्ञा से शिक्षा दिए जा रहे हैं। 'आई० एन० एफ० ओ० के सेक सोटस' (मुखबर पुलिस) का एक जत्था क्रीमिया में भेजा गया था और उनकी रिपोर्ट पर मिलीशिया पुलिस इन कुलुकों को दण्ड देने के लिए भेजी गई है।'

मजीद को इस समाचार में कोई विशेषता प्रतीत नहीं हुई। समाचार-पत्र पढ़ने से यह प्रतीत होता था कि क्रीमिया में किसानों ने स्टालिन की आज्ञा नहीं मानी और उनसे आज्ञा मनवाने के लिए पुलिस भेजी गई है। बात मजीद के मस्तिष्क से निकल-सी गई थी। परन्तु अगले दिन उसके सामने यह एक अतिभयंकर रूप में उपस्थित हुई।

उनके निवास-स्थान से बाहर जाने को उचित ऋतु नहीं थी। तीन दिन से बरफ पड़ रही थी। रास्ते बन्द थे और इन, दिल्ली की गरम जलवायु में रहने वालों के लिए बहुत ही कठिनाई का समय आ गया था। ये भोजन अपने कमरे में करते थे। इनको अपने को गरम रखने के लिए 'वोडका' पीने के लिए मिलती थी।

लंच का समय हुआ तो नित्य के विपरीत उनका संरक्षक उनके साथ भोजन करने नहीं आया। रसोइया भोजन लाया और दोनों अकेले खाने लगे। इस स्थान पर पहला दिन था, जब इनको बिना संरक्षक की देख-भाल के

भोजन करने का अवसर मिला। मजीद को इसमें कोई रहस्य प्रतीत हुआ। उसने रसोइये से पूछा, "आज कॉमरेड बोरिस नहीं आया?"

"नहीं।"

"क्या बीमार हो गया है?"

"नहीं, वह बाहर अपने कार्यालय में प्रवदा पढ़-पढ़कर रो रहा है।"

"क्या लिखा है प्रवदा में?"

"उसके गाँव को मिलीशिया पुलिस ने गिराकर भूमि के समतल कर दिया है।"

मजीद को प्रवदा में पढ़े समाचार का स्मरण हो आया। क्रीमिया के कुछ गाँवों में मिलीशिया पुलिस भेजी गई थी। उन गाँवों में उनके संरक्षक के गाँव का नाम भी था।

मजीद ने रसोइये को कहा, "जरा संरक्षक महोदय से कहिये कि हमने उनसे एक बात पूछनी है। वे आ जायँ तो उनकी बहुत कृपा होगी।"

भोजन के उपरान्त बोरिस आया और उनके सामने कुर्सी पर बैठ गया। मजीद ने उससे सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "हमको बहुत दुःख है कि आपके गाँव में कुछ गड़बड़ हो गई है।"

वह बोला नहीं और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इस पर मजीद ने बहुत धीरे से पूछा, "क्या समाचार है तुम्हारे लोगों का?"

अन्त में वह रोता हुआ बताने लगा, "मेरे माता-पिता और मेरी बीवी के भाई क्रीमिया में किसान हैं। मैंने पढ़ाई की और मास्को में जाकर पार्टी का सदस्य बन गया। मेरी देश-भक्ति की भावना जाग्रत कर, मुझको जी० पी० यू० विभाग में रख लिया गया। मुझको घर गए आज पाँच वर्ष हो चुके हैं। यहाँ से लम्बी छुट्टी ही नहीं मिलती कि जिससे मैं जाकर अपनी बीवी और बच्चों से मिल सकूँ। आज समाचार आया है कि मिलीशिया पुलिस हमारे गाँव में पहुँच गई है। इसका अर्थ मैं समझता हूँ कि मेरे सब घर वाले मौत के घाट उतार दिये गए होंगे। पाँच वर्ष पहले, जब मैं घर से इधर, पूर्व की ओर आने वाला था, तो मेरी बीवी मुझसे चिपट गई थी और

मुझको छोड़ती नहीं थी। वह कहती थी कि वह उनकी अन्तिम मुलाकात है। मुझको यहाँ लाने वाले जी० पी० यू० के साथियों ने उसको बल-पूर्वक पकड़कर मुझसे पृथक किया था और मुझको धकेल कर रेल के स्टेशन पर ले गए थे। उस समय मैं देश और पार्टी की सेवा की भावना से भर रहा था और मुझको अपनी पत्नी का वह व्यवहार अशिष्टतापूर्ण और देश-द्रोह का प्रतीत हुआ था। परन्तु जब यह समाचार पढ़ता हूँ तो मुझको उसकी याद हृदय में टीस बन कर चुभती है।"

मजीद ने शोक में सिर हिला दिया और उससे सहानुभूति प्रकट की। उसको सुलताना और अम्मी की याद आ गई और अनायास ही उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। बोरिस ने समझा कि ये बन्दी उसके साथ सहानुभूति में शोक मना रहे हैं।

इस पर उसने कुछ और खुल कर बात कर दी, "पाँच वर्ष पहले मैं समझता था कि प्रोलिटेरियेट राज्य के लिए हर प्रकार का त्याग करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। परन्तु धीरे-धीरे इस महकमा में रहते हुए, मुझको ऐसी बातों का पता चला है कि यह राज्य प्रोलिटेरियेट राज्य नहीं, प्रत्युत कुछ लोगों की इच्छा का राज्य है। हम सब लोग एक मशीन के छोटे-छोटे पुर्जे हैं, परन्तु इस मशीन को चलाने वाले स्टालिन और उसके दो चार साथी हैं। पिछले वर्ष स्टालिन के मन में यह भय समा गया था कि ट्राटस्की उसका तख्ता उलट देने का षड्यन्त्र कर रहा है। बस हमारे विभाग को आज्ञा आई कि अढ़ाई लाख ट्रॉटस्की के सहकारियों का पता करो। हमने अपने 'सेक सोट्स' (भेदिया पुलिस) के द्वारा देश-भर में सन्देहात्मक व्यक्तियों की सूची तैयार की। हमने किञ्चित मात्र सन्देह वालों को भी उसमें सम्मिलित कर लिया। इस पर भी सूची एक लाख से ऊपर नहीं गई। जब वह सूची उच्च अधिकारियों को भेजी गई तो बहुत ही कड़ा उत्तर आया। उत्तर था, 'हमको मालूम है कि अढ़ाई लाख देश-द्रोही हैं। इन में एक भी कम नहीं। सूची पूरी की जाय, ऐसी अवस्था में जी० पी० यू० क्या करता ? इसने अढ़ाई लाख की एक सूची बनाई और उस अढ़ाई लाख को

पहले पार्टी से निकाल दिया गया, पीछे उनको लेबर-कैम्प्स में भेज दिया गया। यह १९३७ का 'पर्ज' कहाता है।

"इन अढ़ाई लाख में कम-से-कम दो लाख ऐसे थे, जो किसी प्रकार भी दोषी नहीं कहे जा सकते थे।"

: ४ :

अन्त में वह दिन आया, जब मजीद और कोटलवाल की सुध ली गई। उनको ब्लैडिवास्टक में पहुँचे पाँच मास से अधिक हो चुके थे। वे ब्रेक-फास्ट ले रहे थे कि एक जी० पी० यू० का अधिकारी वहाँ आया और उनको यह आज्ञा सुना गया, "आप की जाँच के पत्र मास्को से आ गए हैं। इस कारण आप को मध्याह्न दो बजे, जी० पी० यू० कार्यालय में पहुँचकर, अपने विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।"

कोटलवाल ने प्रसन्न हो पूछा, "मास्को से? वहाँ हमारे विषय में कैसे समाचार गया?"

"आप के विषय में वहाँ लिखा गया था। वहाँ से हिन्दुस्तान में पूछ-गीछ की गई थी। हिन्दुस्तान से सूचना मास्को गई होगी, जिस पर आप के सम्बन्ध में आज्ञा वहाँ से आ गई है।"

कोटलवाल ने अधिकारी का धन्यवाद किया, मानो यह सब परिश्रम उसने ही किया है। मजीद चुपचाप बैठा रहा। वह मन में विचार कर रहा था कि उसको क्या करना चाहिए। अधिकारी के चले जाने के पश्चात् बोरिस ने, जो मन से जी० पी० यू० के कामों से उचाट हो चुका था, मजीद और कोटलवाल को कहा, "आप दोनों ने मेरे साथ सहानुभूति प्रकट कर मेरे मन को बहुत शान्ति पहुँचाई है। इसका बदला चुकाने के लिए मैं अपने अनुभव के आधार पर एक-दो बातें आप को बताना चाहता हूँ।

"यह न समझें कि हमारा उच्च-अधिकारी, जो आपसे भेंट करने वाला है, आपसे सहानुभूति प्रकट करेगा अथवा आप को कोई अच्छी बात कहेगा। जहाँ तक मैं समझा हूँ, वह आप के विचार जानकर और लिखकर आप

को मास्को के लिए रवाना कर देगा ।

"आप को सरकार की किसी भी बात की समालोचना नहीं करनी चाहिए। अपने साथ व्यवहार पर प्रसन्नता प्रकट कर, अपने देश की सरकार की निन्दा करनी चाहिए। यदि आपसे कोई काम कहा जाय तो इन्कार न करियेगा।

"एक अन्तिम बात मैं आप से और बताता हूँ। मेरी प्रशंसा न करियेगा। जहाँ तक हो सके मुझको क्रूर और निर्दयी कहने का यत्न करिए।"

मध्याह्न के समय बोरिस उनको लेकर जी० पी० यू० के मुख्य कार्यालय में गया। वहाँ थोड़ी प्रतीक्षा करने पर पहले कोटलवाल को और पीछे मजीद को भीतर बुलाया गया।

कोटलवाल से उच्च अधिकारी ने कहा, "तुम्हारे विषय में हिन्दुस्तान से सन्तोषजनक उत्तर आया है। यह भी मालूम हुआ है कि तुम्हारे लिए हिन्दुस्तान लौटना सम्भव नहीं। इस कारण तुम को सोवियट यूनियन का नागरिक मान लिया जाता है।"

कोटलवाल ने कृतज्ञता की मुद्रा बना धन्यवाद किया। इस पर अधिकारी ने अपने शेष वक्तव्य को कहा, "हमारे देश में कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं रह सकता। इस कारण तुमको कोई कार्य करना होगा। बताओ तुम क्या कर सकते हो?"

"मैं अपने देश में पार्टी के 'आर्गनाइज़र' (संघटन) का काम करता था।"

"वैसा काम यहाँ नहीं है।"

"मैं कोई क्लर्क का काम कर सकूँगा।"

"तुम्हारा रूसी भाषा का ज्ञान बहुत कम है। तुम यह नहीं कर सकोगे।"

"मैं कोई भी काम, जो अधिकारी कहेंगे, करने को तैयार हूँ।"

"हमने मास्को यह लिखा है कि तुमको 'कुलैक्टिव फार्म' पर सुपरवाइज़र बनाकर भेजा जा सकता है।"

"मैं यह करने के लिए तैयार हूँ।"

"ठीक है। तुमको यूक्रेन में खारकोव मुख्य-कार्यालय में भेजा जाता है।

तुम अभी जाकर तैयार हो जाओ। ट्रेन सायं पाँच बजे छूटती है।"

कोटलवाल के बाहर आने पर मजीद को भीतर बुलाया गया। अधिकारी ने मजीद को अपने सम्मुख बैठाकर पूछा, "तुम इंग्लिश बार के मेम्बर हो?"

"हाँ।"

"कितने वर्ष इंग्लैण्ड में रहे हो?"

"पाँच वर्ष।"

"इंग्लैण्ड कैसा देश है?"

मजीद के मन में आया था कि वह कह दे कि ब्लैडिवास्टक उसके मुकाबिले में नरक-कुण्ड है, परन्तु बोरिस की बात स्मरण कर बोला, "संसार में नरक से कम नहीं। वहाँ निर्धनता के कारण सब प्रकार के अपराध और पाप खुले बाजार होते हैं।"

"वहाँ की औरतों के विषय में क्या जानते हो?"

"मैं हिन्दुस्तानी होने के कारण, विवाह के बिना किसी औरत को छूना भी पाप समझता हूँ। इसी कारण बच गया था, अन्यथा वहाँ रईसों की लड़कियाँ, धन देकर भोग करवाती हैं।"

अधिकारी हँस पड़ा। फिर पूछने लगा, "तुम हिन्दुस्तान में एक धनी बाप के बेटे हो?"

"हाँ, परन्तु मेरे बाप ने मरने पर अपनी सब जायदाद मेरी माँ के नाम लिख दी थी। मुझको एक पाई नहीं मिली।"

"तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिए दो सौ अँग्रेजी पौंड भेजे हैं।"

मजीद अन्यमनस्क भाव में बैठा रहा। इस पर अधिकारी ने पूछा, "तुम क्या कर सकते हो?"।

"मैं 'स्कॉलर' हूँ। कोई भी लिखने-पढ़ने का काम कर सकूँगा।"

"तुम्हारे लिए आज्ञा मिली है कि तुमको सोवियट यूनियन का नागरिक माना जाता है और बाकू में 'ऑयल रिफाईनरी' में हेड-क्लर्क बनाकर भेजा जाता है।"

"मैं सोवियट सरकार का कृतज्ञ हूँ। मैं जी-जान लगाकर इस देश की, जो अब मेरा देश है, सेवा करूँगा।"

"अब तुम जाकर तैयार हो जाओ। तुमको अस्तराखान भेजा जा रहा है। गाड़ी पाँच बजे छूटती है।"

बोरिस इनको वापस निवास-स्थान पर ले आया और इनको कहने लगा कि उसको भी आज्ञा हुई है कि वह यूक्रेन में कुलैक्टिव फार्म्ज़ पर काम करने जाय। उसको आज्ञा-पत्र मिल गया है। वह कोटलवाल के साथ ही जायगा।"

"मेरे साथ कौन जायगा ?" मजीद ने पूछा।

"मुझको मालूम नहीं। जिसने जाना होगा, स्वयं आपसे मिलने आयगा।"

जब बोरिस अपना सामान बाँधने चला गया तो कोटलवाल ने अपनी खुशी का प्रदर्शन करते हुए कहा, "एक बात तो मन-पसन्द की हो गई है कि हम सोवियट यूनियन के नागरिक बन गये हैं।"

"हाँ ! और किसी भी दिन उसी प्रकार 'पर्ज' किये जा सा सकेंगे, जैसे पिछले वर्ष अढ़ाई लाख यहाँ के नागरिक, बिना मुकद्दमा इत्यादि के लेबर कैम्प्ज़ में भेज दिये गए थे।"

"पर हम कुछ करेंगे ही नहीं, जिससे पुलिस की दृष्टि में चढ़ जायँ।"

"तो क्या तुम समझते हो कि उन अढ़ाई लाख ने कोई देश-द्रोह किया होगा ? देखो कोटलवाल ! सबसे बुरी बात तो यह हुई है कि हम दोनों एक-दूसरे से पृथक्-पृथक् हो रहे हैं। मैं तुमको एक बात बताऊँ ? किसीसे कहना नहीं। जब से मैंने अपने को तुमसे पृथक् होने की आज्ञा सुनी है, मेरे मन में खुदा परवरदिग़ार से अपने गुनाहों की मुआफी माँगने की बात कई बार आ चुकी है। जब मैं बहुत छोटा था तो अपने वालिद-शरीफ़ के साथ बैठ नमाज़ पढ़ा करता था। उस वक्त मेरे मन में एक अजीब किस्म की खुशी पैदा हुआ करती थी। आज मुझको बार-बार वह याद आती है और मैं उसको अपने दिल में नहीं पाता। मेरे मन में आता

है कि उसी तरह आज फिर नमाज़ पढ़ूँ तो शायद वह खुशी हासिल हो सके।"

कोटलवाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने उठकर मजीद की पीठ ठोंकी और कहा, "इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि खुदाका ख्याल ही इन्सान को भीरु बना देता है। छोड़ो इस बात को। न खुदा है न भगवान्। ये सब वहम की बातें हैं। मैं तो अपने को खुशकिस्मत समझता हूँ कि मेरा पिता कभी न स्वयं मन्दिर जाता था न ही मुझको कभी वहाँ ले गया था। इस कारण ऐसी मन की दुर्बलता मेरे में कभी पैदा नहीं हुई।"

मजीद जब से कालेज में दाखिल हुआ था, तब से ही नास्तिक हो गया था और इस परिवर्तन को अब चौदह वर्ष से ऊपर हो चुके थे। वह स्वयं बहुत हैरान था कि क्यों यह बीस वर्ष पुरानी बात बार-बार उसके मन में आ रही है।

बुद्धि से वह खुदा के अस्तित्व को नहीं मानता था। यह तो कोई पुराने संस्कार जाग्रत हो पड़े थे। एक बात वह समझ रहा था कि कोटलवाल, चाहे कैसा भी आदमी क्यों न हो, है अपना। वह दग़ा नहीं दे सकता और वह भी उससे पृथक् हो रहा है।

: ५ :

एक जी० पी० यू० की वैन में बैठाकर, उनको ब्लैडीवास्टक रेल के स्टेशन पर पहुँचा दिया गया। वहाँ मजीद के साथ एक नवीन संरक्षक कर दिया गया। यह जे० डालिन था। यह पैन्शन पाने वाला फौजी अफसर, साठ वर्ष की आयु का, छः फुट दो इंच ऊँचा और सुदृढ़ शरीर रखने वाला था।

पूरे साइबेरिया पर बरफ़ पड़ी हुई थी। वायु का तापमान शून्य से बीस डिग्री नीचे जा चुका था। मजीद और कोटलवाल को ओवरकोट और कम्बल दे दिये गए थे और परिचय होने के पश्चात् डालिन मजीद को लेकर एक डिब्बे में बैठ गया। बोरिस कोटलवाल को लेकर दूसरे डिब्बे में।

मजीद् ने कहा भी, "हम एक ही डिब्बे में क्यों नहीं बैठ सकते ?"

"ऐसी ही आज्ञा है।"

"किसकी ?"

"हमारे अधिकारियों की।"

मजीद् समझ गया कि अभी तक वे जी० पी० यू० की देख-रेख में हैं। उसने पूछा, "कॉमरेड डालिन ! क्या मैं अब भी बन्दी हूँ ?"

"मैं अपने अधिकारियों की बातों पर टीका-टिप्पणी नहीं कर सकता। मैं यह जानता हूँ कि मुझको तुम्हें भाग नहीं जाने देना। यह आज्ञा तुम्हारे ही लाभ के लिए भी हो सकती है। इस ऋतु में साइबेरिया में भागकर तुम जीते नहीं बच सकते।"

"तो क्या लोग इस यात्रा को करते हुए भागने का यत्न भी करते रहते हैं ?"

"हाँ ! जब किसी एक बन्दीगृह से किसी दूसरे बन्दीगृह में बदले जाते हैं, तब वे भागने का यत्न करते हैं। परन्तु तुम तो यहाँ एक बालक के समान हो। तुम्हारी अवस्था ऐसी नहीं कि तुम अपना बुरा-भला समझ सको। इस कारण हमारी सरकार ने एक अनुभवी संरक्षक तुम्हारे साथ कर दिया है।"

मजीद के मन की अवस्था विचित्र थी। उसके मन में यह विश्वास हो गया था कि रूस का नागरिक होते ही रूस का बन्दी बन गया है और न जाने कहाँ ले जाया जा रहा है।

गाड़ी कुछ देरी से चली। इस ऋतु में आसपास सब अँधेरा रहता है। दोपहर के समय जो धीमा-सा सूर्य का प्रकाश था, वह भी इस समय लोप हो गया था। गाड़ी रेल के स्टेशन से निकली तो ऐसा प्रतीत हुआ कि अन्धकार सागर में घुस गई है। डालिन ने डिब्बे की खिड़कियों के पर्दे चढ़ा दिए, जिससे बाहर की बर्फानी वायु भीतर न आ सके। डिब्बे में धीमा सा प्रकाश एक बिजली लैम्प से हो रहा था। मजीद् के कमरे में अन्य कोई यात्री नहीं था। इस रेलगाड़ी पर यात्रा करने वाले यात्री आये थे,

परन्तु मजीद के साथी को देखकर वहाँ आकर बैठने का कोई साहस नहीं कर सका। परिणाम यह हुआ कि मजीद और उसका संरक्षक दोनों डिब्बे में अकेले थे।

तीन घण्टे की यात्रा के पश्चात् गाड़ी ठहरी। एक बहुत ही साधारण-सा स्टेशन था। यहाँ उनके लिए रेलगाड़ी के साथ की केन्टीन से भोजन का प्रबन्ध किया गया। मजीद, उस भोजन से भी, जो ब्लैडिवास्टक में उनको खाने को मिलता था, सन्तुष्ट नहीं था और रेलगाड़ी में तो खाना बहुत ही घटिया था। काली रोटी थी, जिसमें से एक विशेष प्रकार की गन्ध आती थी। माँस की, जो न तो घोड़े का प्रतीत होता था, न ही बैल का, एक प्लेट रोटी के साथ आई और बस। साथ गरम पानी और बहुत ही हलकी वोडस का एक जग।

मजीद के लिए ग्रास निगलना कठिन हो रहा था, परन्तु यह जान कि यात्रा में इससे अच्छा प्रबन्ध हो नहीं सकता, चुप था। उसने डालिन से पूछा, "वह अपने साथी से मिल सकता है क्या?"

"इस बात की स्वीकृति नहीं है।"

यह अन्तिम प्रहार था, जिसने उसके मन को उस पथ से एकदम नीचे उतार दिया, जिसका वह राही दस-बारह वर्ष से था। वह समझ गया कि वह बन्दी है। शायद घटिया खाना भी इसी कारण मिला है और अब वह आजीवन रूसी सरकार का काम करने के लिए अवैतनिक दास बन गया है। वह विचार करता था कि ऐसा क्यों किया गया है। उसने रूसी सरकार का कुछ भी नहीं बिगाड़ा था। इस समय उसको पिछले वर्ष के 'पर्ज' की कहानी, जो बोरिस ने उसे बताई थी, स्मरण हो आई। इससे उसके शरीर में कँपकँपी होने लगी।

उसने अपना बिस्तर खोल, अपने को कम्बलों में लपेट लिया और लेट गया। डालिन ने कहा भी, "अभी रात नहीं हुई।"

"कामरेड! यहाँ रात-दिन में कुछ अन्तर नहीं है। साथ ही यहाँ स्वतन्त्र और बन्दी में भी कुछ अन्तर नहीं है।"

डालिन खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसके मस्तिष्क में वोडका चढ़ रही थी। मजीद ने बहुत कम खाया था और वोडका नहीं पी थी। उसके भाग की वोडका भी डालिन ही डकार रह था। उसे हँसता देख, मजीद ने डालिन के मुख पर देखा और पूछा, "क्या मैं गलत कह रहा हूँ?"

"मूल सत्य क्या है, कोई नहीं जानता। मगर एक बात मैं जानता हूँ कि तुम्हारे प्रश्न में कुछ तो तथ्य है। मैं स्वतन्त्र हूँ और शायद तुम बन्दी हो। हम दोनों को एक जैसा खाना-पहरना और यात्रा का टिकट मिला है। तुम और मैं एक समान ही हैं। दिन और रात एक समान ही हैं। यह देश ही ऐसा है।"

इतना कह वह फिर हँसा। मजीद ने समझा कि वह बूढ़ा सिपाई यह सब-कुछ नशे में कह रहा है। इस समय उससे और बातें भी पूछनी चाहिएँ। इस कारण उसने लेटे-लेटे ही कहा, "कॉमरेड! तुम अपने दूसरे साथियों से अधिक समझदार प्रतीत होते हो। बहुत जल्दी तुम मेरे कहने का अभिप्राय समझ गए हो।"

"ये कल के छोकड़े क्या समझेंगे। मेरी बात देखिये। मैं बीस वर्ष की आयु में फौज में भर्ती हुआ था। जार की फौज में हमको इससे बहुत अच्छा खाना मिलता था। लोग निर्धन थे, अपढ़ थे और मूर्ख थे। उनको पढ़ाने का कोई प्रबन्ध नहीं था। मैं कुछ पढ़ा-लिखा था, इस कारण पहले ही वर्ष में उन्नति करने लगा। हमारी रेजिमेंट के कमाण्डर तो मुझ पर बहुत प्रसन्न थे। सन् चौदह में जब जंग छिड़ी तो मुझको युद्ध-क्षेत्र में भेज दिया गया। मैं दो वर्ष के पीछे घर लौटा तो अपने ही घर वालों के विचारों में परिवर्तन देख चकित रह गया। लोग कहने लगे थे कि सब इन्सान बराबर हैं। सबको समान खाने को और पहनने को मिलना चाहिए। जार निर्दयी है। उसको हटा देना चाहिए। मैं पहले तो इन विचारों को सुन चकित हुआ, फिर भयभीत हुआ और अन्त में इन सिद्धान्तों के मानने वाला हो गया।

"दो मास पश्चात्, जब मैं युद्ध-क्षेत्र में गया तो वही बातें, जो मैंने मास्को इत्यादि में देखी थीं अपने साथियों को बताईं। साथियों ने मेरी हँसी

उड़ाई, परन्तु समय आया जब परिस्थिति बदली। फौजियों के बूट मार्च करते-करते घिस गए थे, परन्तु नये बूट नहीं मिल रहे थे। कपड़े फट गये थे और कपड़े बदलने को नहीं थे। बर्फ में कम्बल पुराने होने से सर्दी से रक्षा नहीं कर सकते थे और पहले रोटी घटिया मिलने लगी, फिर कम मिलने लगी और अन्त में फाके होने लगे। पश्चात् सेना में विद्रोह फैल गया।

"अब लोग मेरे पास आकर मुझसे नगरों और देहातों की बातें पूछते और जब मैं कहता कि संसार के युद्ध पैसे वालों की आय बढ़ाने के लिए होते हैं तो सैनिक साथियों को मेरी बात समझ आने लगी।"

"हमने निश्चय किया कि हम युद्ध नहीं करेंगे। बस फिर क्या था, सैनिक घरों को लौट पड़े। मेरी रेजिमेंट के सिपाइयों को वेतन नहीं मिला था, इस कारण हमने मास्को की ओर मार्च कर दिया। मास्को की रक्षा के लिए पुलिस थी परन्तु उसको भी एक वर्ष से वेतन नहीं मिला था। परिणाम यह हुआ कि जब वह पुलिस हमको जार के महल की ओर जाने से रोकने आई, तो हमने नारे लगाए, "हमारा वेतन दो! हमारा वेतन दो!!" पुलिस वाले हमारा विरोध करने के स्थान हमारे साथ सम्मिलित हो गए।

"मास्को में क्रान्ति हो गई। वे लोग, जो जनता को कहते थे कि वे धनियों का धन निर्धनों में बाँट देंगे, नेता बन गए और फिर सरकारी अधिकारी हो गये। जनता ने धनियों को लूटने के लोभ में, इन नेताओं का समर्थन किया और फिर देश-भर के धनियों को लूटा। नई सरकार से हमारी रेजिमेंट ने अपना डेढ़ वर्ष का वेतन माँगा। सरकार के पास धन नहीं था। एक सरकारी अधिकारी ने कहा, "जनता का धन धनियों के महलों में पड़ा है। जाकर ले लो।"

"बस फिर क्या था। हम लोग देहातों की ओर चल पड़े। समूची-की-समूची रेजिमेंट गाँव-गाँव में अपना वेतन वसूल करते हुए जाने लगी। दो महीने के काल में हमने सैकड़ों रईसों के घर लूटे। उनकी स्त्रियों को अपमानित किया और फिर उनको मौत के घाट उतार दिया।"

"इस सब बहादुरी के लिए मुझको सावियेट सेना में नौकरी मिल गई। जब मैं पचास वर्ष का हुआ तो मुझको सेना से पेन्शन दे दी गई और मेरे विचारों और रेवोल्यूशन में सक्रिय भाग के कारण, जी० पी० यू० में भर्ती कर लिया गया।"

अभी डालिन अपनी कथा कह ही रहा था कि मजीद को नींद आने लगी। उसके कम्बल शरीर की गरमी से गरम हो गये थे और वह सो जाने में सुख अनुभव करने लगा था।

जब डालिन को समझ आई कि मजीद सो रहा है, तो उसने मजीद के कन्धे पर जोर से हाथ मारकर जगाया। मजीद को बहुत बुरा प्रतीत हुआ, परन्तु जब डालिन ने कहा कि बिना वोडका पिये सोएगा तो रात ठंड से जकड़ जायगा। मजीद उठ बैठा और थोरी वोडका पीने लगा। मजीद ने एक घूँट पी तो डालिन ने चार घूँट ले ली। इससे डालिन का नशा और तीव्र हो गया और वह खूब खुलकर बातें करने लगा। डालिन ने बताया, "मेरा विवाह एक भले घर की लड़की से हुआ था। रेवोल्यूशन में मुझसे नाराज हो, वह मुझको छोड़ गई। इसको मेरा रईसों को चुन-चुन कर मारते फिरना पसन्द नहीं था।

"मेरे साथियों को सन्देह हो गया कि मेरी स्त्री ह्वाइट-सेना की सहायता कर रही है। उन्होंने उसको पकड़ लिया और गाँव के चौराहे पर फाँसी लटका दिया।"

मजीद कहानी का प्रवाह सुन कांप उठा। उसने पूछा, "यह तुम्हारी आँखों से सामने हुआ था क्या?"

"हाँ।" डालिन की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। उसने कहा, "मेरा उससे बहुत प्रेम था, परन्तु मैं उसको बचा नहीं सका। इसके पश्चात् मैंने अपनी रेजिमेंट का, जो अपना वेतन लूट के माल से वसूल कर भी लूटने में लगी थी, साथ छोड़ दिया। मैं मास्को चला गया और सन् इक्कीस में मुझको सोवियेट सेना में नौकरी मिल गई।"

डालिन जेब से रूमाल निकाल अपनी आँखें पोंछने लगा। मजीद के

मन में विचार आ रहा था कि रेवोल्यूशन में क्या और भी निर्दोष मारे गये थे। इसका उत्तर डालिन ने अपने आप ही देना आरम्भ कर दिया।

"मास्को में भी एक बार जब जनता के मुख में लहू लग गया, तो वे लूटने के लिये पैसे वालों को लूटने लगी। लेनिन ने इस लूट-घसूट में प्रोत्साहन नहीं दिया। इस पर भी लूटने वालों को रोका नहीं। लोग धनियों के लूटने के पीछे सौदागरों को लूटने लगे और जब वे भी समाप्त हो गये तो साधारण पढ़े लिखे लोगों को लूटने लगे। इनसे धन तो कुछ अधिक प्राप्त नहीं होता था, परन्तु वे प्रायः मार डाले जाते थे।"

: ६ :

रेल की यात्रा छः दिन की थी, परन्तु मार्ग में दो दिन तक बहुत वेग से आँधी चलती रही। इस कारण गाड़ी कागास्क स्टेशन पर खड़ी रखी गई। आँधी से रेल की पटरी बरफ से ढक गई थी। इसको साफ करने में दो दिन और लग गये। अतएव छः दिन के स्थान यात्रा में दस दिन लग गये।

पूर्ण यात्रा में किसी यात्री को मजीद के डिब्बे में घुसने नहीं दिया गया। न ही मजीद को कोटलवाल के दर्शन हुए। जब गाड़ी कागास्क स्टेशन पर चार दिन तक खड़ी रही तो मजीद ने डालिन से कहा, "कॉमरेड! मेरे साथी को मुझसे मिलने क्यों नहीं दिया जाता?"

"उसकी गाड़ी बदल चुकी है और वह अब हमारी गाड़ी में यात्रा नहीं कर रहा।" इस समाचार से मजीद को बहुत शोक हुआ, परन्तु वह क्या कर सकता था। इसी स्टेशन पर एक दिन वह अपने डिब्बे की खिड़की चढ़ाये हुए लेटा हुआ था और डालिन वोडका पीकर मस्त लेटा था कि किसी औरत ने खिड़की से भीतर झाँक कर देखा। मजीद ने उस झाँकने वाली की ओर देखा। उसे डिब्बे के लैंप के धीमे प्रकाश में ठीक-ठीक तो पता नहीं चला, इस पर भी कोई जाना बूझा मुख प्रतीत हुआ था। झाँकने वाले ने जब देखा कि भीतर के यात्री उसकी ओर देखने लगे हैं

तो पीछे हट गई।

मजीद विचार करता रहा कि यह कौन हो सकता है। उसको समझ नहीं आया। इस घटना के तीन दिन पीछे गाड़ी बदलनी पड़ी। मजीद और डालिन अपने-अपने कम्बल और बिस्तर उठाये हुए प्लेटफार्म के दूसरी ओर खड़ी गाड़ी में जा बैठे। इस गाड़ी में भीड़ अधिक थी और यत्न करने पर भी डालिन को एकान्त डिब्बा नहीं मिल सका। इन्होंने जाकर अपना सामान सीट पर रखा ही था कि एक और यात्री उसी डिब्बे में आया और उनके सामने सीट पर बैठ गया। ज्यों ही वह बैठा कि मजीद ने पहचान लिया। यह ऐना थी। एक क्षण के लिये मजीद भौंचक्का देखता रह गया। डालिन अपने कम्बल सीट पर रख बिछा रहा था और उसकी पीठ ऐना की ओर थी। ऐना ने देखा और होठों पर उँगली रख, मजीद को चुप रहने का संकेत कर दिया। मजीद को समझ आ गया कि दो दिन पहले जिसको देखा था, यह ऐना ही थी। वह उसको पहचानती है और उसी के साथ यात्रा कर रही है। वह नहीं चाहती कि मजीद उससे अपना परिचय प्रकट करे। क्यों? उसके विचार करने को एक विषय और मिल गया।

डालिन ने बिस्तर ठीक कर लिया था और अपनी सीट पर, जो मजीद के साथ की थी, बैठ गया था। ऐना उसके सामने बैठी थी। डालिन कितनी ही देर ऐना की ओर देखता रहा। ऐना ने उसकी ओर नहीं देखा और इस सब समय वह खिड़की में से बाहर को देखती रही। डालिन ने मजीद के समीप हो कहा, "उस औरत को देखा है तुमने?"

मजीद ने चौंककर उत्तर दिया, "किसको?"

"वह जो सामने की सीट पर बैठी है।"

"क्या है उसको?"

"बहुत सुन्दर है। यदि मैं जवान होता तो.........।"

मजीद मुस्कुराया और चुप कर रहा। डालिन ने कहा, "मेरी इच्छा होती है कि मैं पता करूँ कि वह कहाँ जा रही है।"

"करिये।"

"मैं बाहर जाकर टिकट-चैकर से इसका टिकट देखने को कहता हूँ।"

"देखिये अथवा स्वयं ही इससे बातचीत करने लग जाइये। है क्या? एक औरत ही तो है।"

डालिन हँस पड़ा। दोनों को ब्लैडिवास्टक से चले हुए आठदिन हो चुके थे और इस लम्बी यात्रा में दोनों में एक भारी सीमा तक भेद-भाव मिट चुका था। रेल के डिब्बे में कुछ और लोग भी थे। इस कारण डालिन के बाहर चले जाने पर भी ऐना ने मजीद से बात करने का यत्न नहीं किया।

दो मिनट पीछे स्टेशन स्टाफ का एक आदमी आया और ऐना का टिकट देखने लगा। ऐना ने अपने कागजात दिखाये, जिस पर सन्तोष प्रकट कर वह चला गया। कुछ समय पश्चात् डालिन मुख पर सन्तोष की मुद्रा लिये हुए आकर, अपनी सीट पर बैठ गया। ऐना, जो टिकट चैक करने वाले के चले जाने पर मुस्करा रही थी, डालिन के आने पर खिलखिला कर हँस पड़ी। डालिन विस्मय में उसके मुख पर देखने लगा तो वह गम्भीर हो डालिन से रूसी भाषा में पूछने लगी, "डैडूशका (बाबा)! तुम जी० पी० यू० में हो?"

डालिन बाबा कहे जाने से लज्जा अनुभव करने लगा। फिर पूछने लगा, "क्यों? किस लिये पूछती हो 'डैनि' (बेटी)?"

ऐना का विचार था कि मजीद अभी भी रूसी भाषा नहीं समझता। वास्तव में वह अब न केवल समझने, प्रत्युत कुछ-कुछ बोलने भी लगा था। वह दोनों की बातें समझ रहा था। ऐना ने कहा,

"मेरा एक पति था। वह इसी महकमा में था। वह इस स्थान पर होता, तो ठीक वैसा ही करता जैसा आपने किया है?"

"मैंने क्या किया है?"

"सीधा मुझसे पूछने के स्थान कि मैं कहाँ से आ रही हूँ और कहाँ तक जा रही हूँ, जाकर टिकट चैकर को कष्ट दिया।"

डालिन इस लड़की की चतुराई से प्रभावित तो हुआ, परन्तु वह मन

मैं सोचता था कि अच्छा हुआ है, जो इससे परिचय और बातचीत हो गई। शेष यात्रा रुचिकर रहेगी। इस कारण उनने पूछा, "तुम्हारे पति का क्या नाम था ?"

"निकोलाईवास्की।"

"मेरा विचार है कि मैं उसको जानता हूँ। मैं भी ब्लैडिवास्टक से आ रहा हूँ।"

"सत्य ? मैंने आपको मार्ग में नहीं देखा।"

"मैंने भी नहीं देखा। तो अब निकोलाई कहाँ है ?"

"मैंने उसे तलाक दे दिया है और वह स्वीकार हो गया है।"

"क्यों ? तलाक क्यों दे दिया है ? वह तो बहुत ही भला आदमी है।"

"हाँ ! केवल थोड़ा-सा मूर्ख है।" बात बदलने के लिये उसने पूछ लिया, "यह तुम्हारा साथी कौन है ?"

"हूँ। एक हिन्दुस्तानी कॉमरेड है। इसको रूसी नागरिकता मिल गई है और अब यह अस्तरखान जा रहा है।"

"मैं भी तो वहीं जा रही हूँ।" इसके साथ उसने एक अर्थ भरी दृष्टि से मजीद की ओर देखा।

मजीद इस दृष्टि से प्रसन्न था। उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि ऐना इतनी दूर उसके लिये ही जा रही है। डालिन ने पुनः बात उसके पति की ओर घुमा दी। "तुम कौनसे राज्य की रहने वाली हो ?"

"मैं तो काकेशस की रहने वाली हूँ, परन्तु कॉमरेड निकोलाई मास्को का रहने वाला था। वह हमारे इलाके में कोलेक्टिव फार्म चलवाने आया था। वहाँ मुझसे प्रेम करने लगा। मैं विवाह पर राजी हो गई। इस पर उसको बदल कर ब्लैडिवास्टक भेज दिया गया। वहाँ मैं उसके पास दो वर्ष तक रही हूँ। वह अकारण मेरी वफादारी पर संदेह करता था। आखिर मैंने उसको छोड़ने का निश्चय कर लिया। वह आजकल "कीव" में है।"

"क्या करता है ?"

"जो कुछ आपके महकमा के लोग करते हैं। उसके कीव चले जाने के पश्चात् मैं कुछ मास ब्लैडिवास्टक में रही। अब मैं छुट्टी लेकर, अपने माता-पिता के पास, जो अस्तरखान में रहते हैं, जा रही हूँ।"

गाड़ी चल पड़ी। वहाँ से तीन दिन का रास्ता था। तीन दिन में ऐना डालिन से भली भाँति हिल-मिल गई। मजीद से भी बातचीत कर लेती थी। समय पाकर उसने मजीद को बताया कि उस रात थियेटर से लौटकर वह निकोलाई के घर नहीं गई। एक होटल में चली गई थी और अगले दिन उसने निकोलाई से तलाक के लिये प्रार्थना-पत्र दे दिया था।

निकोलाई ने जी० पी० यू० के काम से अगले दिन ही छुट्टी ले ली थी और तलाक की डिग्री होते ही वह कीव चला गया था।

मजीद को ऐना एक अच्छी-खासी सुन्दर लड़की मालूम होती थी और अब अपने को उसके तलाक में कारण मान, वह अपने पर गर्व करने लगा था। ऐना ने यह भी बताया कि अस्तरखान में जाकर उस पर से यह देखभाल उठ जायगी और वह बहुत प्रसन्न होगी यदि वह उसको, उसके माता-पिता के घर मिलने आवेगा।

मजीद ने ऐना का पता लिख लिया। अस्तरखान के रेल के स्टेशन पर, जब ऐना डालिन से विदा हुई तो उसने कहा, "डैडूशका! मेरे पिता के घर चाय पीने आइयेगा तो मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

पश्चात् उसने मजीद को भी निमन्त्रण दे दिया।

: ७ :

ब्लैडिवास्टक और साइबेरिया के अन्य नगरों से अस्तरखान अधिक प्रकाशमय और गरम नगर था। वहाँ के लोग अधिक सुन्दर और मिलनसार थे। प्रायः मुसलमान थे परन्तु नवयुवक और युवतियें यूरोपियन ढँग की पोशाक पहनते थे। खुले बाजार, ऊँची इमारतें और बड़े-बड़े पार्क यहाँ बहुत थे। अस्तरखान में पेट्रोल साफ करने का एक बहुत बड़ा कारखाना

था। बाकू के पहाड़ों से जितना पेट्रोल निकलता था, सब अस्तरखान में लाकर साफ किया जाता था। इस तेल साफ करने के कारखाने में पचास हज़ार से ऊपर मज़दूर काम करते थे।

डालिन मजीद को लेकर इस कारखाने के जनरल मैनेजर के पास जा पहुँचा। वहाँ उसके पास मास्को से इसके पहुँचने की सूचना आई हुई थी। इस कारण डालिन से दी चिट्ठी पढ़ते ही मैनेजर ने मजीद से हाथ मिलाया और अँग्रेज़ी में बातचीत करनी आरम्भ कर दी। उसने कहा, "मैं औक्सन हूँ और मुझ को यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि आप इंग्लिश-बार के सदस्य हैं। मैं आपका यहाँ स्वागत करता हूँ। मास्को से तो यह आज्ञा आई है कि आप यहाँ हैड-क्लर्क के रूप में काम करेंगे, परन्तु मैंने उनको लिख दिया है कि असिस्टेन्ट मैनेजर का स्थान खाली है और आप बार के सदस्य होने के कारण इस पदवी के अधिक उपयुक्त होंगे।

"अभी वहाँ से उत्तर नहीं आया। इस पर भी मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इस काम पर नियुक्त हो जायँगे।"

पश्चात् जनरल मैनेजर कॉमरेड मासानी बेग ने मजीद को अभी अपने घर में रहने के लिए निमन्त्रण दे दिया और डालिन को एक कागज पर कुछ लिखकर दे दिया।

कॉमरेड बेग का घर कारखाने से कुछ दूर एक विशाल बंगला था। बंगले के एक कोने में मजीद को तब तक के लिए एक कमरा दे दिया गया, जब तक उसके लिए नियुक्ति की स्वीकृति नहीं आ जाती और उसके लिए बंगला नहीं खाली हो जाता।

बेग मजीद को मोटर में बैठाकर घर लाया और श्रीमती ऐलिस बेग तथा परिवार के अन्य सदस्यों से परिचय करा दिया। मजीद बेग और उसके बच्चों को देखकर जान गया कि उनके शरीर में ईरानियों का रक्त प्रवाहित है। श्रीमती बेग तो कैन्ट की रहने वाली अंग्रेज महिला थी। बेग ने परिचय कराते समय यह भी बताया था, "इनको यहाँ लाने के लिए मुझको दो वर्ष की एक लम्बी चिट्ठी-पत्री करनी पड़ी थी। रूसियों का मन

संसार के सब देशों पर अविश्वास रखता है और समझता है कि अपना भेद यदि छिपाकर न रखा गया तो अन्य षड्यन्त्रकारी देश रूस का तख्ता उलट देंगे।"

मजीद को बेग की एक लड़की, जो अभी सोलह-सत्रह वर्ष की थी, बहुत सुन्दर प्रतीत हुई। सर्वथा बच्ची-सी प्रतीत होती थी और अभी विकसित होती कली-सी ही थी। शर्मीली होने में और बड़ों का आदर करने में तो वह कोई हिन्दुस्तानी लड़की ही कही जा सकती थी।

मजीद अपने कमरे में पहुँच अपने को, ऐसे अच्छे परिवार में पहुँच जाने पर, बधाई देने लगा। उसी रात खाने के पश्चात् बेग और मजीद में ऑक्सफोर्ड से बातें आरम्भ हुईं और रूस और मास्को पर आ पहुँचीं। मिस्टर बेग ने बताया, "मैंने १९१५ में एम-एस० सी० कर पेट्रोल टैकनॉलोजी का विशेष अध्ययन किया। इस विषय की डिग्री मुझको सन् १९१९ में मिली। वहाँ से मुझको ईरान में ब्रिटिश ऑयल कम्पनी में नौकरी मिल गई। परन्तु जब मैं अबादान में पहुँचा तो रूसी सरकार के एजन्ट अपने बाकू के तेल की रिफाईनरी के लिए टेकनिकल स्टाफ की भर्ती कर रहे थे। मैं अस्तरखान का रहने वाला था। इस कारण वे मेरे पास पहुँचे। मैं स्वयं सोशलिस्ट विचार रखता था और मैंने अपने देश की सेवा पसन्द की। ब्रिटिश आयल कम्पनी का काम छोड़ १९२३ में मैं यहाँ आ गया परन्तु मेरी पत्नी ऐलिस को दो वर्ष तक ईरान में रहकर, यहाँ मेरे पास आने की स्वीकृति की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

"यहाँ का प्रबन्ध देख तो अब मुझको यहाँ आने पर शोक प्रतीत होता है। मैंने दिन-रात मेहनत कर बहुत-सी मशीनरी अमेरिका और इटली से मँगवाकर लगवाई और सन् छब्बीस में तेल की नदियाँ बहानी आरम्भ कर दीं। इस पर भी लेनिन प्राईज एक नीपर पर, बंद बनाने वाले युवक इनजानीम को मिला है। खैर छोड़िये इस बात को। तुम बताओ! तुम क्यों इस देश में आये हो? मुझको तो ऐसा विदित था कि हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे युवकों के लिए बहुत काम-धन्दा है।"

"मैं इंग्लैण्ड में ही था, जब मुझको कम्युनिस्ट-साहित्य पढ़ने का अवसर मिला। मैं कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों से बहुत प्रभावित हुआ और फिर जब दिल्ली में पहुँचा तो पार्टी के कुछ नेताओं से मेरा सम्बन्ध बन गया। वहाँ इसी पार्टी का कार्य करते हुए, एक हत्या करने के अपराध में लिप्त हो गया और वहाँ से भाग आया। दिल्ली की कम्युनिस्ट-पार्टी का नेता भी मेरे साथ भागा था, इस कारण पार्टी की ओर से हम झूठे पासपोर्टों का आश्रय ले, जापान और जापान से कोरिया और कोरिया से व्लैडिवास्टक पहुँचा दिये गए। वहाँ पाँच मास से अधिक काल तक लगभग बन्दी की अवस्था में रहे। अब मेरे साथी को यूक्रेन में किसी संयुक्त फार्म पर भेज दिया गया है और मुझको यहाँ।"

"यदि मैं अबादान में एक साधारण इंजीनियर के रूप में भी काम करता तो पाँच सहस्त्र पौण्ड वार्षिक वेतन पाता। यहाँ मेरा वेतन पाँच सौ रुबल मासिक है। उस हिसाब से मैं चार हजार दो सौ रुबल मासिक पाता होता। वहाँ का जनरल मैनेजर दस हजार रुबल के बराबर वेतन पाता है।"

"यह तो होता ही है।" मजीद बोला, "सब पूँजीपति देशों में मेहनत-मजदूरी करने वालों को वेतन कम मिलता है और अफसरों को तथा मालिकों को बहुत अधिक।"

" 'प्रोलिटेरियेट' देश तो संसार में केवल रूस ही है न और यहाँ मजदूरों को मिलने वाला वेतन अबादान में मिलने वाले वेतन से कम है।"

"तो खाने-पीने का सामान यहाँ सस्ता होगा ?"

"यह भी नहीं। गेहूँ, रोटी, कपड़ा सब अबादान से यहाँ महँगा है।"

"तो फिर यह क्यों है ? यहाँ तो सब-का-सब लाभ कारखाने में काम करने वालों का है न ?"

"यही तो विचित्र बात है। कारखाने की आय का पचास प्रतिशत तो सरकार ले जाती है। पूँजीपति इतना लाभ नहीं निकालते। ब्रिटिश ऑयल कम्पनी वाले करोड़ों रुपया तो ईरान सरकार को रॉयल्टी के रूप

में देती है। फिर करोड़ों रुपया अपनी सरकार को इन्कमटैक्स में देती है। कर्मचारियों को वेतन भी अच्छा देती है। इस पर भी, जो दस प्रतिशत लाभ होता है, वह इतना अधिक है कि मालिक मालामाल हो रहे हैं।''

''इसमें कुछ भूल मालूम होती है।'' मजीद ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, ''दो और दो चार ही होते हैं। इससे लाभ भी हो अधिक और खर्चा भी अधिक, यह दोनों बातें हो नहीं सकतीं।''

''एक बात तुम नहीं जानते, तभी इस प्रकार का सन्देह करते हो। हमारे यहाँ भी कारखाने का एक मालिक है। वह मालिक है रूस की सरकार और रूस की सरकार का मतलब है बोलशिविक पार्टी। रूस की पूर्ण जनसंख्या अट्ठारह करोड़ के लगभग है और उसमें 'पर्ज' के पीछे अट्ठारह लाख पार्टी के सदस्य हैं। अर्थात् पूर्ण जनता की एक प्रतिशत जनता बोलशिविक पार्टी में है।

''बोलशिविक पार्टी तो इस्लाम से भी अधिक पक्षपातपूर्ण सिद्धान्त रखती है। बिना अपने सदस्यों के अन्य किसी को उन्नति करने नहीं देती। परिणाम यह होता है कि कारखानों में, कम्पनियों में, सरकारी कार्यालयों में और सेना में, कहीं भी साधारण जनता, जो ९९ प्रतिशत से कुछ ही कम है, कोई अधिकार नहीं रखती। अधिकार केवल बोलशिविक पार्टी के हाथ में होने से अयोग्यों के हाथ में चला जा रहा है और कार्य की श्रेष्ठता मिट रही है।

''मैं पहले पार्टी का सदस्य नहीं बना था। मेरी मेहनत और लगन के होने पर भी सब प्रकार का लाभ, मान और प्रतिष्ठा उनको मिलती थी, जो पार्टी के सदस्य थे। अन्त में मैंने पार्टी की सदस्यता के लिए प्रार्थना कर दी। एक वर्ष की परीक्षा के पश्चात् मुझको पार्टी का सदस्य बनाया गया। उसमें भी मुझको पार्टी के नेताओं की बहुत मिन्नत-खुशामद करनी पड़ी।

''इस कारण उन्नति, मान-प्रतिष्ठा पार्टी के सदस्य होने पर होती है और कर्मचारी दिन-भर पार्टी के हेर-फेर में लगे रहते हैं। काम गौण हो

जाता है।"

"पर कॉमरेड बेग ! एक बात तो आप भी मानेंगे। जब जनता के मन में यह बात बैठ जाती है कि राज्य उनका है, कारखाना, कम्पनियाँ और सब कारोबार उनके हैं, तब जितनी लगन से वह देश के लिए कार्य करती है, उतनी लगन पूँजीपति देशों की जनता में नहीं हो सकती।"

"यह तो ठीक है, परन्तु जब लोगों को यह पता चलेगा कि पार्टी के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य कोई भी लाभ का भागीदार नहीं, तो वही लगन उल्टी होकर देश का सत्यानाश कर देगी।"

"पर यह ऐसा क्यों किया जा रहा है ? पार्टी के सदस्यों के अतिरिक्त सब देशवासियों के साथ समान व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?"

"जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, इसमें मानव-मन का स्वार्थमय स्वभाव ही कारण है। जब तक मनुष्य अधिकार प्राप्त नहीं कर पाता, तब तक वह दया, उदारता, समानता इत्यादि श्रेष्ठ भावनाओं की डुग्गी पीटता रहता है, परन्तु जब वह अधिकारी बन जाता है, तब वह ऐसा प्रपञ्च करने लगता है कि उसका अधिकार कोई दूसरा छीन न सके। यहाँ बोलशिविक पार्टी ही एक पार्टी रह सकती है, जिसका विधान इस मानव त्रुटि का सूचक है।

"स्टालिन ने १६३५ का विधान बनवाया। उसमें राज्य का सर्वोच्च अधिकारी बोलशिविक पार्टी का प्रथम मन्त्री नियत किया और वह जीवन-भर बदला नहीं जा सकता। स्टालिन वह प्रथम मन्त्री है। वही राज्य का सर्वोच्च अधिकारी है और वही बदला नहीं जा सकता। यह उसके अपने बनाये विधान से ही ऐसा है। सेना और पुलिस में केवल बोलशिविक-पार्टी के सदस्य ही लिये जायँगे। अर्थात् राज्य इस पार्टी की अर्थात् इस पार्टी के नेताओं की जागीर हो गई है।

"यह है उस मानव-विकार का परिणाम। जब तक कोई भिखारी होता है, वह भिक्षा मांगता है। जब वह कुछ धन जमा कर लेता है, तो उस धन को अपने पास संचित रखने के लिए सब प्रकार का यत्न करता है। यही भावना राजनीतिक नेताओं में है। इस भावना का घोर कलुषित रूप रूस

में प्रकट हो रहा है।"

मजीद, जब से बोरिस से १६३५ के पर्ज की कथा सुनी थी, विस्मय किया करता था कि किस प्रकार एक स्टालिन-जैसा नेता जनता के अढ़ाई लाख आदमियों को वास्तविक हत्या की आज्ञा दे सकता है। यह आज मिस्टर बेग के विवेचन से सम्भव प्रतीत होने लगा था और ऐसी परिस्थिति के पुनः उपस्थित होने की सम्भावना का ध्यान कर, वह काँप उठा। वह विचार करता था कि क्या वह मार्क्सिज़्म है ? क्या इसी के लिए वह और संसार के लाखों नवयुवक, सांसारिक सुख त्यागकर जीवन की आहुति दे रहे हैं।

"पर क्या पार्टी में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं," मजीद ने मिस्टर बेग से पूछा, "जो इस प्रकार की तानाशाही की निन्दा कर सके।"

"है क्यों नहीं। परन्तु नेता इसके होने को जानता है और वह इतना चतुर है कि विरोधी पक्ष बनने से पूर्व ही 'पर्ज' कर दिया जाता है। ट्रॉटस्की इस पर्ज का अभी तक अन्तिम आखेट है।"

"हिन्दुस्तान में हमको यह बताया जा रहा है कि रूस में यह लोह-आवरण, यह विपक्ष का उन्मूलन, यह लेबर कैम्प्स और कुलुक्स के साथ निर्दयता, केवल वहाँ की विशेष परिस्थिति के कारण है। परिस्थिति सुधारने पर यह एक स्टेट-लैस स्टेट हो जावेगी।"

"देखो मजीद ! यह एक वागाडम्बर है। वास्तव में कार्ल मार्क्स के सब सिद्धान्त कार्यान्वित करने पर असफल सिद्ध हुए हैं। पहली बात तो यह है कि बोर्जिया वर्ग, जिसको नष्ट करने के लिए कम्युनिज़्म को जन्म दिया गया था, कम्युनिस्ट स्टेट स्वयं उत्पन्न कर रही है। अन्तर केवल यह हुआ है कि जो पुराने जागीरदार थे, वह मिटाकर नये जागीरदार, बोल-शिविक पार्टी के नेता, बन रहे हैं। इनकी जागीर भूमि और मकान नहीं, प्रत्युत् नेतागिरी है। जैसे भूमि और मकान अपने मालिकों की सुख सुविधा में कारण थे, वैसे ही इस पार्टी के नेताओं की नेतागिरी, इनके सुख सुविधा में कारण हो रही है। जैसे ज़ार के काल में एक जागीरदार किसी ऐसे को

मरवा डालता था, जो उसकी जागीर को नष्ट करना चाहता था, वैसे ही इस पार्टी के नेता, जो एक बार नेता बन गए, अपने विपक्षी नेताओं को मरवा डालते हैं।"

: ८ :

मजीद के विषय में आज्ञा आई कि उसको हैड क्लर्क ही रखा जाय। इस सब काल में मजीद कॉमरेड बेग की कोठी में रहा और कुछ ही दिनों में वह बेग के परिवार के सब सदस्यों से हिल-मिल गया। बेग की लड़की शीरीं और उसकी पत्नी ऐलिस मजीद के सम्पर्क में सबसे अधिक आ रही थीं। यह स्वाभाविक ही था। घर का सब प्रबन्ध इनके हाथ में था।

ऐलिस भी ऑक्सफोर्ड की ग्रेजुएट थी और बेग से इंग्लैण्ड में ही सम्बन्ध में आई थी। जब बेग ब्रिटिश ऑयल कम्पनी में नौकरी पर गया तो ऐलिस से विवाह हो गया और सन् १६२१ में ही शीरीं का जन्म हुआ।

ऐलिस प्रेम-पाश से बद्ध अपने पति के पास रहती थी, अन्यथा राजनीतिक विचार से तो वह अपना दम घुटता पाती थी। बेग के कहने पर भी वह बोलशिविक पार्टी की सदस्या नहीं बनी। सन् १६२३ और २४ के विरोधी दल के नेताओं की हत्याओं का वृत्तान्त पढ़ तो वह इस पार्टी से घृणा करने लगी थी। सन् १६३५ में हुए 'पर्ज' में अढ़ाई लाख जनता की वास्तविक हत्या का वृत्तान्त पढ़ और गुप्त मुकद्दमों की बातें सुन वह अपने पति से कई बार कह चुकी थी कि वे पुनः इंग्लैण्ड चले चलें तो बहुत अच्छा रहे। परन्तु बेग का कहना था कि जब वे किसी का विरोध नहीं करते और अपने काम को ईमानदारी से करते हैं तो उनके लिए डरने का कारण नहीं है।

ऐलिस बेग से अधिक सतर्क थी और वह किसी से भी राजनीति पर बात नहीं करती थी। परन्तु मजीद के विषय में उसके मन में विश्वास-सा बैठ गया था। इसमें कारण मजीद का, इनके साथ अपने परिवार के विषय में खुलकर बातें करना था। साथ ही शीरीं मजीद से प्रभावित हो रही थी और

उसकी माँ इस बात को अनुभव कर रही थी।

मजीद की आँखों में कुछ ऐसी बात थी कि स्त्रियाँ उस पर विश्वास करती ही थीं। इस कारण जब एक बार मन की धारणाएँ प्रकट हुईं तो फिर होती ही चली गईं। मुख्य कर्मचारी के रूप में मजीद कारखाने में काम करता था और उसका काम करने का समय प्रायः मध्याह्न पश्चात् से सायं दस बजे तक होता था। इस कारण उसका प्रातः का समय, जब कॉमरेड बेग कारखाने में जाता था, घर पर व्यतीत होता था। प्रातः की बेग की चाय तो कारखाने में उसकी पत्नी ले जाती थी और शीरीं मजीद की चाय का प्रबन्ध करती थी।

मध्याह्न का भोजन मजीद ऐलिस के साथ करता था। शीरीं उस समय कालेज गई होती थी। यह समय होता था, जब एलिस से खुलकर बात हो सकती थी।

मजीद के मन में कम्युनिज़्म के विषय में प्रकाश हो रहा था। जहाँ तक रूस के राज्य का सम्बन्ध था, मजीद के लिए कोई विशेष रुचि की बात नहीं रही थी। वह समझने लगा था कि शासन तो शासन ही होता है। हिन्दुस्तान में वह अँग्रेजों का शासन देख चुका था। अन्तर यह था कि रूस में अपने देश की ही एक पार्टी देश पर ऐसे राज्य करती थी, जैसे कोई विदेशीय शासन करे। ऐलिस ने तो कम्युनिज़्म की सिद्धान्तात्मक विवेचना आरम्भ कर दी। एक दिन मजीद ने कहा, "क्या यह व्यवहारिकता नहीं कि आप बोलशिविक पार्टी में भर्ती हो जायँ?"

"आप का अर्थ चतुराई है शायद। जो बात मैं अपने हृदय से ठीक नहीं समझ लेती, उसको मानने का बहाना करना धोखेबाज़ी है। जहाँ शासन व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर अधिकार कर लेता है, वहाँ धोखा-देही होती ही है। मैं यह कभी नहीं कर सकती।"

"परन्तु किसी विपत्ति-काल में पार्टी सहायक जो हो सकती है।"

"पार्टी अपने सदस्यों को सदस्यों से नहीं बचा सकती तो किसी अन्य की सहायता क्या कर सकेगी? देखो कॉमरेड मजीद! कम्युनिज़्म तो स्वयं

ही असफल हो गया है। कार्ल मार्क्स का विचार था कि कम्युनिज़्म के प्रचार से समाज वर्गहीन हो जायगा, सब की आवश्यकताएँ पूर्ण होते ही न कोई चोर रहेगा न झूठा और फिर अन्त में उसका विचार था कि राज्य की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। कम्युनिज़्म के प्रचार से इन तीन बातों में एक भी पूर्ण नहीं हुई और न ही होती दिखाई देती है। मुझको रूस में आए पन्द्रह वर्ष हो गए हैं और इस काल में मैंने यहाँ की सत्तारूढ़ पार्टी को धीरे-धीरे कम्युनिज़्म से दूर जाते देखा है। इसमें मैं कारण यह समझी हूँ कि कार्ल मार्क्स के सिद्धान्त असत्य, अस्वाभाविक और अव्यवहार-युक्त हैं।"

"पर मिसेज ऐलिस! क्या यह सत्य नहीं कि जार के अधीन रूस से आज का रूस बहुत श्रेष्ठ है?"

"मैंने उस समय का रूस देखा नहीं है इस कारण उसके विषय में कुछ कह नहीं सकती। हाँ, इन पन्द्रह वर्षों में जनता को दिन-प्रतिदिन अधिक स्वार्थमय, झूठी और कामचोर हो रहा देखा है। यह सम्भव है कि कोई एक आध व्यक्ति विशेष प्रतिभाशाली यहाँ आ गया हो, परन्तु साधारण जनता तो दिन-प्रतिदिन बुद्धिहीन और विषय-लोलुप होती जाती है।"

एक दिन मजीद से शीरीं ने कहा, "मैं कालेज छोड़ने का निश्चय कर चुकी हूँ।"

"क्यों?"

"मुझको कालेज के युवक और युवतियाँ नहीं भातीं। उनका रहन-सहन मेरे मन के अनुकूल नहीं है।"

"कैसा है रहन-सहन उनका?"

शीरीं का मुख लाल हो गया। उसने आँखें नीची कर कहा, "मैं एक से प्रेम करने लगी हूँ और वे मेरी हँसी उड़ाते हैं?"

"पर तुम्हारी माँ जानती है क्या कि तुम इतनी छोटी आयु में प्रेम जैसी बीमारी में फँस गई हो?"

"हाँ। मैंने अपनी माँ से कभी कोई बात छिपाकर नहीं रखी। मेरी माँ ने डैडी से कभी कोई बात नहीं छिपाई।"

"कौन है वह, जिससे तुम प्रेम करती हो?"

"यदि आपको इस बात के जानने में रुचि है तो माँ से पूछ लीजिये।"

मजीद ने कहा, "मुझको रुचि तो है ही। शीरीं बहुत ही प्यारी लड़की है। उसके भविष्य में किसकी रुचि नहीं हो सकती? पर क्या मैं जान सकता हूँ कि तुम्हारे साथी तुम्हारी हँसी क्यों उड़ाते हैं?"

"आप भी तो यह कहकर हँसी उड़ाने लगे थे कि मैं बीमारी में फँस गई हूँ।"

"तो तुम इसको बीमारी नहीं समझती?"

"मैं जो समझती हूँ उसका वर्णन नहीं कर सकती। कुछ ऐसा है कि यह विचार-मात्र ही मस्तिष्क और शिराओं (नर्व्ज़) को शान्ति प्रदान करता है। डैडी कहा करते हैं कि पन्द्रह और बीस वर्ष की आयु में पैदा हुए विचार मरण-पर्यन्त स्थिर रहते हैं और इस काल में उत्पन्न प्रेम पूर्ण जीवन-भर प्रभाव रखता है।"

"मेरी शुभकामना है कि तुम्हारा प्रेम सफल हो।"

उसी मध्याह्न के समय मजीद ने ऐलिस से शीरीं के विचार कह दिये। इस पर उसने मजीद से कहा, "इस नैतिकताहीन युग में प्रेम और वासना में अन्तर नहीं रहा। यही कारण है कि शीरीं, जो मुझसे मेरे युग की बातों को जानकर समझ चुकी है, प्रेम को वासना से भिन्न मानती है। एक त्याग का प्रतीक है और दूसरा स्वार्थ का चिह्न। एक मनुष्य की आत्मा को उन्नत करता है और दूसरी इसको पतन की ओर ले जाती है। मैंने उसकी बात जानकर कह दिया है कि आगामी मास से वह कालिज में न जाए। जितनी शिक्षा उसको चाहिए वह पा चुकी है।"

"मिसेज़ ऐलिस! क्या आप समझती हैं कि शीरीं ऐसे विचारों को लेकर जीवन में सफल हो सकेगी?"

"मैं जिसको सफलता समझती हूँ उसको तो वह अब भी पा चुकी है। मनुष्य-जीवन की परम सफलता तो उसका अपनी इन्द्रियों पर अधिकार प्राप्त करना है। प्रेम के अर्थ यही हैं।"

"मुझको आपके कहने में सन्देह है। वह अभी आयु में इतनी छोटी है कि प्रकृति के वेगों को समझ नहीं सकती। यह नियन्त्रण उन वेगों में टिक भी सकेगा या नहीं, कहना कठिन है।"

ऐलिस हँस पड़ी। उसने कहा, "कॉमरेड मजीद! तुम कभी-कभी बचपन की सी बातें करने लगते हो। मैंने कब कहा है कि उसको यह सफलता जीवन-भर स्थिर रहेगी। कभी-कभी क्रिकट के मैच में पहली पारी में जीती हुई टीम दूसरी पारी में बुरी तरह पराजित हो जाती है। ऐसा जीवन में भी हो सकता है।"

"तो फिर उसके जीवन की सफलता का तो तब ही ज्ञान हो सकता है जब उसका विवाह हो जावे और वह अपने पति के प्रेम को भी पा सके।"

"अभी भी आप नहीं समझे। प्रेम मन की एक भावना है। इसका किसी दूसरे की भावना अथवा व्यवहार से कोई सम्बन्ध नहीं। मानलो शीरीं जिससे प्रेम करती है, वह उसकी परवाह नहीं करता। तो क्या हुआ? दोनों में विवाह नहीं होगा। पर प्रेम तो अप्रेम में बदल नहीं सकता। यह समय और अवसर मिलने पर अपना कार्य करता ही रहता है।"

"और यदि विवाह के पश्चात् पता लगे कि शीरीं के प्रेम का भाजन उससे प्रेम नहीं करता तब क्या होगा?"

"यद्यपि ऐसा बहुत कम होता है। तो भी इस अवस्था में भी वही होगा, जो विवाह न होने की अवस्था में होता है।"

"और मान लो कि शीरीं, जिसको प्रेम समझ बैठी है, वह भ्रम-मात्र ही हो तो?"

"तो उसको अपनी भूल का ज्ञान हो जावेगा और भूल करने से जो होता है वही उसके साथ भी होगा। परन्तु इसके यह अर्थ तो कभी नहीं हो सकते कि मनुष्य इन्द्रियों का दास हो जाय?"

"पर वह है कौन, जिस पर शीरीं परवाना बनने जा रही है?"

"अभी बताना उचित नहीं। अब शीरीं कालिज छोड़ देगी। उसके लिए हम कोई काम ढूँढ रहे हैं। तब शायद उसके प्रेम का पात्र यहाँ

आवेगा तो आपको पता चल जावेगा।"

मजीद इससे कुछ समझ नहीं सका। वह विचार करता रहा कि उस भाग्यशाली को देखना चाहिए, जिससे शीरीं-जैसी सुन्दर और सुशील लड़की प्रेम करने लगी है।

वह उसकी तुलना रीता से करता था। इसके सामने रीता सर्वथा फुहर प्रतीत हुई थी। ऐना को तो वह बिलकुल ही वासना में लिप्त पाता था। कभी-कभी उसको ऐसा भास होता था कि वह स्वयं ही वह भाग्यशाली व्यक्ति है, जिसपर शीरीं की दृष्टि टिकी है। जिस रुचि और तटस्थता से वह उसकी चाय और अन्य सुविधाओं का ध्यान रखती थी, उससे उसके सन्देह को पुष्टि मिलती थी, परन्तु इस कार्य में तत्परता के अतिरिक्त उसने कभी कोई संकेत इस विषय में नहीं दिया था। एक दिन इस रहस्य को उसके मन से बाहर निकालने के लिए मजीद ने यत्न भी किया। वह एक दिन शीरीं के साथ बाजार में कुछ वस्तुएँ खरीदने गया तो जहाँ मजीद ने अपने लिए कुछ सामान खरीदा, वहाँ उसके लिए भी, जो कुछ वह चाहती थी, खरीद लिया। मजीद ने सब दाम अपने पास से दे दिया। पर घर पर पहुँच, शीरीं ने अपने सामान का दाम चैक काटकर दे दिया।

मजीद ने कहा, "शीरीं! इसकी क्या आवश्यकता है?"

"आप ने खर्च किया है और आपको मिलना चाहिए।"

"मैंने और वस्तुओं पर भी तो खर्च किया है?"

"उन वस्तुओं को मैं प्रयोग में नहीं ला रही न।"

"पर यह मैं और तुम की भावना इस समाजवादी देश में और इस अपने परिवार में कुछ शोभा नहीं देती।"

"यह समाजवादी देश है क्या? मुझको इसमें सन्देह है। यहाँ निजकी सम्पत्ति और उस सम्पत्ति से निजका प्रयोग चलता है। यहाँ अपनी सम्पत्ति बढ़ाने के लिए यत्न करना मना नहीं। इस यत्न में धोखा, रिश्वत, सिफारिश इत्यादि सब दूषित उपाय चलते हैं। एक कर्मचारी की व्यक्तिगत बात छोड़ भी दें, परन्तु सरकार की बातों में भी धोखाधड़ी देखकर तो इस देश

को समाजवादी कहना अपने को मूर्ख मानना है ।

"रही परिवार की बात। मैं कैसे समझूँ कि आप इसको अपना परिवार समझते हैं ?

"क्या इसमें भी शीरीं को सन्देह है ?"

शीरीं इस प्रश्न से कुछ घबरा गई। फिर संभलकर कहने लगी, "यह तो आप के विचारने की बात है।"

"मैंने विचार लिया है । मैं आप के परिवार में सम्मिलित होकर अपना सौभाग्य मानूँगा।"

"तो आप पिताजी से बात करिये। वे परिवार के विषय में अपने विशेष विचार रखते हैं।"

"क्या विचार रखते हैं ?"

: ६ :

मजीद जब से अस्तरखान में आया था, कई बार ऐना से मिलने उसके पिता के घर जा चुका था। ऐना का पिता डाक्टर था और अच्छी-खासी प्रेक्टिस रखता था। ऐना परिवार में कुछ अच्छी प्रतिष्ठा नहीं रखती थी। इसका कारण डाक्टर ऐंडरी डेविड, ऐना के पिता ने, एक दिन मजीद को पृथक् में ले जाकर बता दिया। मजीद कई बार वहाँ जा चुका था और परिवार के लोग यह समझने लगे थे कि ऐना का उससे विवाह होगा। एक दिन मजीद ने डाक्टर के क्लिनिक में पहुँच, ऐना के विषय में पूछा। इस पर डाक्टर ने कुछ क्षण तक उसके मुख की ओर देखकर कहा, "तुम ऐना से क्या चाहते हो ?"

मजीद इस असम्भावित प्रश्न से घबरा उठा। वह इसका उत्तर विचार करने लगा, और डाक्टर के सामने कुर्सी पर बैठकर बोला, "मैं स्वयं नहीं जानता। आपकी लड़की जब एक निकोलाईवास्की की पत्नी थी, मुझ को भली प्रतीत हुई थी। उसने भी मेरे में रुचि ली थी। डाक्टर ! मैं आप के प्रश्न का आशय नहीं समझा। क्या आप मेरे यहाँ आने को पसन्द

नहीं करते ?"

"देखो मजीद !" वे इस समय अकेले थे और डाक्टर ने मजीद के समीप होकर बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "तुम परदेसी हो। यहाँ की बातों को अभी समझते नहीं। यहाँ बोलशिविक पार्टी ही सब-कुछ है और उसमें प्रायः मूर्ख और अन्ध पक्षपाती भरे पड़े हैं। कुछ बुद्धिमान लोग भी हैं परन्तु उनकी संख्या कम है और पार्टी के नेता इन मूर्ख अन्धविश्वासी सदस्यों की सहायता से अपनी नेतागिरी चलाते हैं। ये लोग भी, जब किसी के विरुद्ध हो जाते हैं तो उसको मृत्यु-दण्ड दिलवाये बिना साँस नहीं लेते। नेता लोग इनको न नहीं कर सकते। उनकी अपनी प्रतिष्ठा और रक्षा इनके हाथ में होती है। दो वर्ष हुए इस प्रकार नेताओं और मूर्ख सदस्यों ने आपस में मिलकर अढ़ाई लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया था।

"ऐना बोलशिविक पार्टी में एक सदस्या है और पार्टी में उसका बहुत रसूख है। जहाँ उसकी सहायता तुमको लाभ पहुँचा सकती है, वहाँ उससे ईर्ष्या और द्वेष रखने वाले तुम को हानि भी पहुँचा सकते हैं।

"इससे या तो शीघ्र उससे विवाह कर लो और उसको पार्टी के झंझट से बाहर ले जाओ, या उससे मेल-जोल बन्द कर दो।"

मजीद इस प्रकार सचेत किए जाने पर भौचक्का हो देखता रह गया। वह कुछ कहने ही वाला था कि ऐना आ गई। वह अपने पिता और मजीद को इस प्रकार घुल-मिलकर बातें करते देख, दरवाज़े के समीप ही ठहर गई। मजीद ने उसको देखा तो उठकर उससे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा।

ऐना अब भीतर आ गई और दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। पश्चात् ऐना ने अपने पिता की ओर घूमकर कहा, "डैडी ! मम्मी से कह देना कि मैं रात का भोजन घर पर नहीं करूँगी।"

इतना कह वे दोनों बाँह-में-बाँह डाल कर बाज़ार को चल दिए। इस समय एक दुर्घटना हो गई। सामने से ऐलिस और शीरीं आती दिखाई दीं। स्वाभाविक रूप में मजीद उनसे बात करने ठहर गया। ऐलिस ने पूछा, "आप किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त हैं ?"

"नहीं। क्यों क्या बात है?"

"हम कुछ खरीदने जा रहे हैं और आप यदि साथ चल सकें तो ठीक रहेगा।"

मजीद ने ऐना से क्षमा माँगी और ऐलिस और शीरीं के साथ चल पड़ा। ऐना जल-भुनकर कोयला हो गई। वह वहाँ खड़ी मन में कुढ़ती हुई, मजीद को उनके साथ जाते देखती रही।

जब ऐलिस इत्यादि कुछ दूर निकल गये तो ऐलिस ने बताया कि म्यूनिच में हिटलर और चेम्बरलेन में समझौता हो गया है। इसके परिणाम-स्वरूप पश्चिमी यूरोप में पूँजीपतियों का गुट्ट बन जायगा। इससे युद्ध रूस के विरुद्ध चलेगा। कॉमरेड बेग को मास्को से आज्ञा आई है कि वह पैट्रोल साफ करने के कारखाने का पूर्ण माल, गाड़ियों में लादकर यूराल पर्वत की तराई में भेज दें।

"इस आज्ञा से हमारा यह अनुमान है कि युद्ध समीप आ गया है। इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन, इटेली, जर्मनी और पोलैण्ड एक ओर तथा रूस दूसरी ओर। यदि यह हुआ तो यह सोवियेट राज्य-संघ विनाश को प्राप्त होगा। परन्तु उससे पहले एक बहुत बड़ा संघर्ष होगा और उसमें कोई नहीं कह सकता कि कितने लोगों की आहुति देनी पड़ेगी। ऐसी परिस्थिति में हम अपना कर्तव्य निश्चित करना चाहते हैं।

"कॉमरेड बेग देश पर आक्रमण होने की अवस्था में देश का साथ देंगे। मैं उनको छोड़कर, यहाँ से कहीं जा नहीं सकूँगी। इस कारण हमको बच्चों की चिन्ता है। हम दोनों बाजार आते समय आपके विषय में विचार कर रहे थे। उस समय आप क्या करना चाहेंगे?"

मजीद समस्या के इस प्रकार उसके सामने रखे जाने पर गम्भीर विचार में लीन हो गया और उसने केवल यही कहा, "मैं इसका उत्तर अभी नहीं दे सकता। मुझको भी इस देश की नागरिकता मिली है। अच्छा या बुरा जैसा भी यह देश है, मैं इसके लिए लड़ूँगा। इस पर भी मैं उत्तर अभी नहीं दे सकता। कॉमरेड बेग से राय कर ही बता सकूँगा।"

इससे ऐलिस का मुख उतर गया। शीरीं की आँखें डबडबा आईं। मजीद उनकी इस अवस्था में कारण नहीं जान सका।

कुछ और सामान खरीद वे घर लौट आये। बेग कारखाने में बहुत व्यस्त था। इस कारण वह घर नहीं आया और मजीद समय होने पर कारखाने में पहुँच गया। वहाँ बेग ने उसको देखा तो अपने कार्यालय में बुला लिया। जब दोनों कार्यालय में पहुँचे तो बेग ने कार्यालय का दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और मजीद को समीप बैठाकर कहा, "तुम्हारे विषय में मास्को से पत्र आया है कि तुम्हें मैनेजर जैसे उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य पर नियुक्त नहीं किया जा सकता और तुम क्लर्क रहोगे। तुमको स्मरण होगा कि मैंने पुनः तुम्हारे लिए लिखा था। ऐसी अवस्था में मैं, तुम्हारा यहाँ से किसी अन्य देश में चला जाना, उचित समझता हूँ।"

"इससे इतनी बड़ी बात का विचार आपने कैसे कर लिया है?"

"मैं यहाँ के विधि-विधान को जानता हूँ, तभी यह बात कहता हूँ। मेरे मास्को में लिखने पर कि मजीद को उप-मैनेजर बनाया जाय, उत्तर आने में एक वर्ष लग गया। मैं इसमें यह कारण समझता हूँ कि मास्को वालों ने यहाँ पार्टी-कार्यालय से पूछा होगा और पार्टी-कार्यालय में अवश्य कोई ऐसा भी है, जो तुम्हारा विरोध करता है। मैं नहीं जानता कि ऐसा कौन है, परन्तु है अवश्य, अन्यथा निर्णय में इतना समय न लगता। कोई झूठा आरोप तुम पर लगाया गया है। उसमें जाँच हुई होगी और जाँच का परिणाम यह है कि तुमको किसी उत्तरदायित्वपूर्ण स्थान पर नियुक्त नहीं किया जा सकता। जहाँ पार्टी में विरोधी हों, वहाँ रहना तक उचित नहीं।"

मजीद कोडाक्टर ऐंडरी डेविड का कहना स्मरण हो आया। उसने कहा था कि ऐना पार्टी में भारी प्रतिष्ठा रखती है। या तो उससे विवाह कर लूँ या उससे मेल-जोल बन्द कर दूँ। डाक्टर के इस सचेत करने वाले वाक्यों का स्मरण कर मजीद काँप उठा। उसने ऐना की पूर्ण कथा बेग को सुना दी और फिर डाक्टर के सचेत करने वाले शब्द भी सुनाये। तदनन्तर कहा, "यहाँ की बोलशिविक पार्टी में वही मेरी परिचित है।"

"वह तुमसे विवाह करना चाहती है क्या ?"

"वह अवश्य इस प्रकार का विचार रखती होगी। वास्तव में वह मेरे पीछे-पीछे ही ब्लैडिवास्टक से यहाँ आई है।"

"तो यदि शान्ति से रहना चाहते हो तो उससे विवाह कर लो।"

"मेरा ऐसा कभी भी विचार नहीं था और न ही अब है। ब्लैडिवास्टक में मैं केवल विनोद के लिए उसको एक बार 'सुन्दर' कह बैठा था। इसके अतिरिक्त मैंने उसको कभी इस भावना से नहीं देखा।"

"तो मजीद ! मेरी राय मानो। यहाँ से शीघ्रातिशीघ्र भाग जाओ। अन्यथा यहाँ के लक्षण कुछ अच्छे प्रतीत नहीं होते।"

"अजब मुसीबत है। मेरा चित्त यहाँ से जाने को नहीं करता और इस बदकार औरत के कारण मेरा यहाँ रहना कठिन हो रहा है।"

"तुम चले जाओ, मेरी यही राय है। मैं तुमको आज एक और बात बताता हूँ। अस्तरखान में एक कोई है, जो तुम्हारी जान के भय की बात सुन, रो-रोकर आँखें खराब कर रही है।"

"सत्य ?" उसको शीरीं की आँखों के आँसू याद आ गए। "पर वह कौन है ? कॉमरेड !"

"देखो, किसी से कहना नहीं। शीरीं तुम से बहुत प्रेम करने लगी है। जब से उसने तुम्हारे विषय में मास्को वालों का विचार सुना है, वह रो-रोकर पागल हो रही है। मैंने एक योजना बनाई है, जिससे तुम रूस से बाहर निकल सकते हो। किसी भी दूसरे देश में चले जाना। वहाँ तुम यहाँ से अधिक मानयुक्त जीवन व्यतीत कर सकोगे।"

"अगर शीरीं मेरे साथ जाने के लिए तैयार हो, तो मैं जाने के लिए तैयार हो सकता हूँ।"

"तो ठीक है। यह बात किसी से कहना नहीं। मैं अपने बच्चों को यहाँ से भेजने का प्रबन्ध कर रहा हूँ। तुम उनको जहाज में चढ़ाने जाओगे और वहाँ से तुम्हारे गुम हो जाने का प्रबन्ध कर दूँगा।"

अगले दिन बेग के कहने के अनुसार मजीद ऐना से मिलने गया। जब वह वहाँ पहुँचा, ऐना अपने पिता के क्लिनिक में से बाहर निकल रही थी। उसने ऐना से मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया और पिछले दिन के एकाएक चले जाने के लिए क्षमा माँगने लगा। ऐना ने हाथ नहीं मिलाया और उसकी बात को सुनने लगी। मजीद कह रहा था,

"ऐना! क्षमा करना। कॉमरेड बेग की बीवी को मैं न नहीं कर सका। वह मेरा अफसर है और उस पर ही मेरी तरक्की निर्भर है।"

"बस, या कुछ और भी कहना चाहते हैं आप?"

"मैं वापस घर बहुत देरी से पहुँचा था और रात की मेरी ड्यूटी थी, इस कारण इस समय से पहले नहीं आ सका।"

"अच्छी बात है। अब आप यहाँ न आया करिये। मेरी सगाई एक सैनिक से हो गई है और वह बहुत ही ईर्ष्यालू है। उसको किंचित् भी सन्देह हुआ कि तुम उसकी होने वाली पत्नी के आगे पीछे घूमते हो, तो वह 'ड्यूअल' की चुनौती दे देगा।"

"पर मैं तो तुम से विवाह का प्रस्ताव करने आया हूँ।"

"विवाह? बहुत खूब।"

"मैं कल ही प्रस्ताव करने वाला था, परन्तु काम में विघ्न पड़ गया था।"

"अब तो देरी हो गई है। अब तुम यहाँ से चले जाओ।"

इतना कह ऐना मुख ऊपर उठाये चल दी और मजीद उसको जाते हुए देखता रह गया। जब रात के समय बेग ने ऐना की बात सुनी तो उसको और भी चिन्ता लग गई और उसने अपनी योजना को और भी कम कर दिया।

मास्को से उसके बच्चों को जलवायु-परिवर्तन के लिए स्वीकृति मँगवाना शीघ्र नहीं हो सकता था। इस कारण उसने अपनी योजना बदल डाली। उसने दो तीव्रगामी घोड़ों का और एक पथ-प्रदर्शक का प्रबन्ध कर दिया। कैस्पियन सागर के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर जाकर, पहाड़ों में

से ऐसे गुप्त मार्ग थे, जिनपर जाने से, बिना पूछ-गीछ के, ईरान की सीमा में जाया जा सकता था। पथ-प्रदर्शक पाँच सौ रुबल पर शीरीं और मजीद को ले जाने के लिए तैयार हो गया। सब तैयारी गुप्त रूप में होने लगी।

शुक्रवार को मध्याह्न के समय अस्तरखान से तीनों को जाना था। पथ-प्रदर्शक के पास अपना घोड़ा था। शीरीं और मजीद के लिए घोड़े खरीद लिये गए थे। पानी की बोतल और रोटी के डिब्बे के अतिरिक्त और कोई सामान नहीं रखा गया था।

ठीक दो बजे मध्याह्न पश्चात् घोड़े कोठी में लाये गए और शीरीं और मजीद सैर करने के बहाने कोठी से निकले और घोड़ों पर चढ़ने ही वाले थे कि पुलिस के दो वैन, जिनमें एक दर्जन से ऊपर पुलिस वाले थे, कोठी में घुस आये और मजीद को घेर कर खड़े हो गए। पुलिस के अधिकारी ने मजीद को वारंट दिखाया और उसको पुलिस वैन में बैठा कर ले गया।

शीरीं बहुत ही यत्न से अपने को वश में रख सकी और पुलिस तथा मजीद के चले जाने पर अचेत हो, वहीं गिर पड़ी। बेग और ऐलिस उसको उठा कर भीतर ले गये और सचेत करने लगे।

शीरीं बीमार हो गई और डाक्टर ऐंडरी डेविड की चिकित्सा में रख दी गई।

बेग ने तुरन्त मास्को को मजीद के पकड़े जाने के विषय में लिखा और आशा प्रकट की कि उसके मामले की जाँच की जायेगी और उससे न्याय होगा।

ऐंडरी डैविड से शीरीं की चिकित्सा कराने का एक उद्देश्य यह भी था कि उसकी सहानुभूति प्राप्त कर, ऐना से मजीद को छुड़ाने का यत्न किया जावे। इस प्रयोजन से एक दिन शीरीं ने मजीद से प्रेम की बात और ऐना के इर्षा से मजीद के विरुद्ध कार्यवाई करने की बात कह ही दी।

"ओह!" डाक्टर अवाक मुख खड़ा रहा। बहुत देर तक विचार कर डाक्टर ने कहा, "शीरीं! मैं जानता हूँ कि मजीद का दोष केवल यह है कि वह ऐना से विवाह करने के लिए तैयार नहीं हो सका, परन्तु तुम को

स्मरण रखना चाहिए कि यदि तुमने स्वयं फाँसी पर नहीं लटकना हो तो अपना प्रेम उससे प्रकट करना छोड़ दो। वह अब जीता हुआ बचकर नहीं आ सकता। उससे किसी प्रकार का भी सम्बन्ध रखने वाला, देशद्रोही माना जायेगा।"

"पर जब आप उनको निर्दोष मानते हैं तो ऐना से कहकर उनको छुड़ाने का यत्न क्यों नहीं करते?"

"तो क्या तुम समझती हो कि ऐना उसके निर्दोष होने को नहीं जानती? वह सब कुछ जानती है और इस पर भी ऐना के यत्न से ही वह राज्य के रहस्यों को विदेशियों के पास बेचने के अपराध में पकड़ा गया है।"

शीरीं की यह क्षीण-सी आशा भी समाप्त हो गई। अब उसने स्वस्थ हो जाने के लिए यत्न करना आरम्भ कर दिया। दृढ़ संकल्प कर लेने पर क्या कुछ नहीं किया जा सकता? एक सप्ताह के भीतर ही वह स्वस्थ हो गई और फिर मजीद के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए पार्टी के अन्य सदस्यों से मेल-मुलाकात पैदा करने लगी।

पैट्रोल साफ करने के कारखाने के जनरल मैनेजर के लिए भी मजीद पर लगाये आरोपों से पृथक् रहना कठिन हो गया। उस पर भी चार्ज-शीट लग गया और उससे उन आरोपों का उत्तर माँगा गया।

बेग ने बहुत ही योग्यता से सब आरोपों का उत्तर लिखकर भेजा। इस पर भी पार्टी की अस्तरखान की शाखा को बेग पर देखभाल रखने की आज्ञा आगई।

ऐलिस यह सब नाटक देख, अपने पति बेग से नित्य आग्रह करने लगी कि उनको रूस छोड़ देना चाहिए। बेग यह जानता था कि उसको न तो इस समय कारखाना छोड़ने की स्वीकृति मिलेगी और न ही रूस छोड़ने की। वे वहाँ से भाग सकते थे, परन्तु इसके लिए बहुत ही होशियारी की आवश्यकता थी। शीरीं और मजीद के साथ जाने वाले पथ-प्रदर्शक पर बेग का विश्वास नहीं रहा था। उसका विचार था कि मजीद के जाने का समय तो उसने ही पार्टी वालों को बताया होगा।

सबसे बड़ी समस्या शीरीं की थी। वह मास्को जाने का यत्न कर रही थी। वह मज़ीद की वकालत करने जाना चाहती थी। एक दिन शीरीं ने अपनी माँ से कहा,

"मम्मी! मुझको मास्को जाने का परमिट मिल गया है। वहाँ पर रहने का भी प्रबन्ध हो गया है।"

"कैसे यह सब कर सकी हो तुम?"

"मैंने पार्टी के सदस्यों से मिलकर पहले यह जानने का यत्न किया कि ऐना के कौन-कौन शत्रु हैं। उनसे मिलकर मैंने अपनी कथा बताई। एक कॉमरेड विशिन्सकी, जो पहले भी मजीद के पक्ष में था, मेरी सहायता करने के लिए तैयार हो गया है। उसने मेरे पासपोर्ट का और फिर मास्को में ठहरने का प्रबन्ध कर दिया है। साथ ही कॉमरेड मोलोटोव, विदेश-मन्त्री तथा कॉमरेड बेरिया, गुप्तचर-विभाग के उच्च अधिकारी के नाम पत्र भी दिये हैं। विशिन्सकी का कहना है कि उसकी इन दोनों से घनी मित्रता है।"

शीरीं की बात जब बेग ने सुनी तो उसने स्वयं साथ जाने का निश्चय कर लिया।

अपने काम से छुट्टी ले, वह शीरीं को साथ ले मास्को जा पहुँचा। बेग का अपना भी कुछ परिचय था। उसने उस परिचय की सहायता से मजीद का पता करने का यत्न किया। इधर शीरीं कॉमरेड मोलोटोव से मिली। पहले तो कुछ कठिनाई हुई, परन्तु एक युवा लड़की की चमकदार आँखें परिचय-पत्रों से अधिक सहायक हुईं और सैक्रेटरी ने मोलोटोव से शीरीं की भेंट का प्रबन्ध कर दिया।

शीरीं एक पर-पत्र पहले ही तैयार कर ले गई थी। इसमें उसने मजीद के विषय में और ऐना द्वारा उसके विरोध का कारण लिखा था और उसके बचाने में हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना की थी। साथ ही उसने विशिन्सकी का पत्र मोलोटोव को दे दिया।

मोलोटोव, जहाँ मजीद के मामले से प्रभावित हुआ, वहाँ शीरीं के सुन्दर

मुख से भी मोहित हो गया। उसने इस मामले में सहायता का वचन दिया।

शीरीं कॉमरेड बेरिया से भी मिली और वैसा ही पर-पत्र उसने उसकी जानकारी के लिए भी दिया।

बेरिया ने तुरन्त अपने सैक्रेटरी को बुलाकर जाँच करने का आदेश दे दिया। इस जाँच का परिणाम बेरिया ने दो-तीन दिन में शीरीं को, उस पते पर, जहाँ वह ठहरी हुई थी, बताने का वचन दिया।

: ११ :

जैसे कोई हलुवा खाने जा रहा हो और वह एक ग्रास मुख में डालने ही वाला हो और ठीक उसी समय कोई उसके मुख पर चपत लगाकर उसका हलुवा छीन ले और उसको नीम-सा कड़ुवा पदार्थ खाने पर विवश करे, तो जो अवस्था उसके मन की होती है, वैसी ही मजीद की हुई।

शीरीं से विवाह का निश्चय और फिर रूस-जैसे अनिश्चित भविष्य वाले देश से छुटकारा पाने की आशा मन में बैठ जाने पर, मास्को की भूमि के नीचे बनाये गए कैदखानों में ले जाये जाने का दुःख मजीद को इतना हुआ कि वह तीव्र ज्वर से पीड़ित हो गया। उसको रात के बारह बजे रेल के ऐसे डिब्बे में से, जिसकी सब खिड़कियाँ पूर्ण यात्रा में बन्द रखी गई थीं, निकाल कर, एक चारों ओर से बन्द वैन में बैठाकर, मास्को के जी० पी० यू० विभाग के बन्दीगृह में ले जाया गया। वह तीव्र ज्वर से पीड़ित था। वास्तव में मजीद को रेल की गड़-गड़ से ही यह पता चल रहा था कि वह किसी रेलगाड़ी में है। मोटर की बर्र-बर्र से उसको पता चल गया कि वह किसी मोटर-वैन में, किसी नगर की सड़क पर ले जाया जा रहा है और फिर किसी सुरंग में से गुजरने के सर-सर के शब्द से उसने अनुमान लगाया कि वह किसी इमारत के तयखाने में है। अन्यथा वह कुछ भी देख नहीं सकता था। एक समय एक स्थान पर पहुँच कर, उनका वैन खड़ा हुआ और उसके समीप बैठे कान्स्टेबलों ने उसको बाहों से पकड़कर गाड़ी से बाहर निकाला। गाड़ी से बाहर निकल, उसने अपने को एक मार्ग पर खड़े पाया, जो चारों

ओर से ढपा हुआ था। गाड़ी से निकलते ही उसको एक दरवाजे में ले जाया गया, जो उस मार्ग की एक दीवार में बना था। दरवाजे पर पाँच-छः बन्दूकची खड़े थे।

दरवाजा एक सुरंग का आरम्भ था और मजीद को बाँहों से पकड़कर ले जाने वाले कान्स्टेबल, उसे सुरंग में धक्के देते हुए ले गये। उसमें बिजली के लैम्पों का धीमा प्रकाश था, जिससे मजीद देख रहा था कि उस सुरंग की दीवारों में कोई दरवाजा नहीं था। लगभग २०० पग जाने पर वे लोग घूम गये। सुरंग भी घूम गई थी। घूमते ही सामने सीढ़ियाँ दिखाई दीं। वे सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। पचास-साठ सीढ़ियाँ चढ़ने पर, वे एक और बरामदे में पहुँचे, जिसकी दोनों दीवारें और छत भी बिना किसी खिड़की के अथवा दरवाजे के थीं। पचास पग इस बरामदे में जाने पर दाहिने हाथ की ओर एक दरवाजा था, जो लोहे की सीखचों का बना था। सीखचों के पीछे दो संरक्षक बन्दूकें लिये खड़े थे। मजीद और उसको पकड़कर ले जाने वालों के वहाँ पहुँचते ही सीखचों के किवाड़ खोले गए और मजीद और उसको पकड़े हुए कान्स्टेबल, इस दरवाजे में प्रविष्ट हुए।

कुछ दूर जाने पर वे एक स्थान पर पहुँचे, जो गोलाकार था और उसके चारों ओर छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं। इनके दरवाजे भी लोहे के सीखचों से बने थे। उन कोठरियों में बन्दी भरे पड़े थे। मजीद को वहाँ आया देख, सब सीखचों के पीछे आ खड़े हुए और बिजली के धीमे प्रकाश में, जो वहाँ था, उसको देखने लगे।

बारह नम्बर की कोठरी खोली गई और मजीद को उसमें धकेल दिया गया। बाहर से दरवाजा बन्द कर उसे ताला लगा, सब लोग वहाँ से चले गए। उस गोलाकार सेहन में, जिसके चारों ओर ये कोठरियाँ बनी थीं, एक संरक्षक खड़ा था। सेहन के ऊपर भी छत थी, जिसमें कोई खिड़की अथवा रोशनदान नहीं था। कोठरियों में लैम्प नहीं थे। इस कारण मजीद को, भीतर जाकर ही पता चला कि कितनी बड़ी कोठरी है।

कोठरी छः फुट लम्बी, छः फुठ चौड़ी प्रतीत होती थी और उसमें

आठ आदमी पहले उपस्थित थे। नवां मजीद था। मजीद को भीतर धकेला गया, वास्तव में यह कहना चाहिए कि उसको एक भरे हुए थैले में ठूँसा गया था। जब खिड़की का दरवाजा बन्द कर कान्स्टेबल चले गए तो मजीद, जो कोठरी के साथियों के साथ अपने को बगलगीर होता पा रहा था, यह जान चकित रह गया कि वे किसी प्रेमवश नहीं प्रत्युत् स्थानाभाव के कारण, उनसे बगलगीर किया जा रहा था। दूसरी बात जो उसको अनुभव हुई, वह वहाँ पेशाब की तीव्र दुर्गन्ध थी। वह मन में सोचने लगा कि यह स्थान अस्थायी रूप में कुछ मिनटों अथवा घण्टों के लिए, उसको वहाँ ठहरने के लिए दिया गया है। वह अभी विचार कर ही रहा था कि उसकी कोठरी के साथियों ने उससे प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये।

"क्या नाम है?"

"मजीद।"

"कहाँ से आ रहे हो?"

"अस्तरखान से।"

"तुम कोई विदेशी प्रतीत होते हो?"

"मैं हिन्दुस्तान से भागा हुआ साथी हूँ। अब रूस का नागरिक हूँ।"

"किस अपराध में पकड़े गये हो?"

"नहीं जानता।"

"तुम सोवोगे कैसे? यहाँ तो पहले ही हम सो नहीं सकते।"

"तो तुम यहाँ सोते भी हो?"

"हाँ सोते भी हैं, खाते भी हैं और टट्टी-पेशाब भी यहीं पर करते हैं।"

मजीद स्तब्ध रह गया। एक ने उसको नंगे फर्श पर बैठाया और सब वहाँ बैठ गये। मजीद के मुख से निकल गया, "यह अमानुषीय है।"

"हाँ, यह बोलशिविक ढंग का व्यवहार है।"

"पर मैं तो बीमार हूँ।"

"तो जल्दी छुट्टी पा जाओगे।" उन आठ में से एक कह रहा था, "मौत की कृपा तुमको इन जल्लादों की गोली से बचा देगी।"

"मौत ! मैंने कोई बुरी बात नहीं की।"

"ठीक है। हम में से किसी ने कोई अपराध नहीं किया। हम कम्युनिस्ट क्रान्ति करने वाले हैं और आज भी कम्युनिस्ट विचारधारा को मानते हैं।"

मजीद को कॉमरेड बेग का कथन स्मरण हो आया। उसने कहा था कि कार्लमार्क्स के सब सिद्धान्त व्यवहार में लाने पर व्यर्थ के सिद्ध हुए हैं। अब इन लोगों को कम्युनिस्ट विचारधारा पर विश्वास रखने वाला मान, उसने कहा, "तो आप यह तो जान गये हैं कि रूस में राज्य कम्युनिस्ट विचारानुकूल नहीं है।"

"बिलकुल नहीं।"

"तो क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि कम्युनिस्ट विचारधारा एक व्यावहारिक बात नहीं है ?"

"कार्लमार्क्स ने लिखा है कि वर्गहीन-समाज की स्थापना ही मनुष्य-जाति का कल्याण करने में समर्थ है। उसका यह भी कहना था कि समाज व्यक्ति से ऊँचा है। उसके लिए व्यक्ति को त्याग करना ही पड़ेगा।"

"परन्तु कॉमरेड स्टालिन, जो आज जीवित है, उसके सिद्धान्तों को इस समय कार्य में लाने के योग्य नहीं मानता। तुम भी क्यों नहीं मान जाते।"

इस पर एकने किसी साथ बैठे के कान में कहा, "यह कोई जासूस मालूम होता है। इसके साथ बात करनी ठीक नहीं।"

मजीद ने सुन लिया। मजीद से बातें करने वाले ने भी सुन लिया। अतएव दोनों चुप कर गये। मजीद ने बात बदलकर पूछा, "यहाँ समय का ज्ञान कैसे होता है।"

एक साथी ने उत्तर दिया, "इसकी आवश्यकता क्या है ? एक मैले के कीड़े को समय जानने में क्या प्रयोजन हो सकता है ?"

इस पर भी समय का ज्ञान रोटी बाँटने के समय होता था। इसका

अभिप्राय यह होता था कि बारह घण्टे व्यतीत हो गये। इसीसे कुछ कैदी, अपने उस बन्दीगृह में लाये जाने के दिन गिन रहे थे। एक ने बताया, "मुझको यहाँ आये तीन मास हो गये हैं। पर अब तो अवस्था सहन से बाहर हो रही है।"

मजीद का ज्वर वहाँ की बदबू और अन्य और भी अधिक कठिनाइयों के कारण उतरने लगा था। उसको पसीना आने लगा। वे लोग भूमि पर बैठे थे और उस अवस्था में भी वे कठिनाई अनुभव कर रहे थे। स्थान केवल बैठने लायक था।

जब अँधेरे से आँखें परिचित हुईं, तो मजीद ने देखा कि कोठरी के एक कोने में पेशाब-टट्टी के लिए स्थान बना था। सफाई के लिए और पीने के लिए एक ही घड़ा पानी का था और पानी लेने के लिए एक ताम-चीनी का जग पड़ा था।

सब अपने-अपने विचार में लीन थे और एक-दूसरे की चिन्ता नहीं कर रहे थे। मजीद इस चुप्पी को अतिभयंकर बात मान, पूछने लगा, "क्या आप लोग इस प्रकार चुप बैठे, महीनों निकाल रहे हैं?"

"हम सब अपनी-अपनी बातें बता चुके। अब किसी के पास कुछ बताने को नहीं। तुम बताओ कुछ बात।"

मजीद ने इस अँधेरे में समय व्यतीत करने के लिए अपना इतिहास बताना आरम्भ कर दिया। हिन्दुस्तान में कम्युनिस्ट पार्टी और उसका कार्य काश्मीर में, मजीद ने बताया। उसने अनुभव किया कि वहाँ उपस्थित इस बात में सर्वथा रुचि नहीं ले रहे हैं। इस कारण वह चुप कर गया। उसने टाँग लम्बी की तो वह एक सोये हुए बन्दी के सिर पर लगी। इस समय एक और ने बाँह फैलाई तो वह उसके मुख पर लगी। लड़ाई से कुछ बनता दिखाई नहीं देता था। इस कारण जैसे-कैसे भी हुआ, वह एक-दूसरे के ऊपर सो रहे थे। मजीद यात्रा की थकावट के कारण और ज्वर उतरने के कारण, नींद अनुभव करने लगा था। इस कारण वह लेटने का यत्न करने लगा। एक के पैर पर उसका सिर गया और दूसरे के सिर पर

उसकी टाँगें। वे प्रायः दो-दो तीन-तीन इकट्ठे लेट रहे थे। सब के कपड़े बदबू कर रहे थे परन्तु पेशाब और टट्टी की बदबू से उनकी घ्राण-शक्ति लोप हो चुकी थी और वह अब कपड़ों की बदबू को अनुभव नहीं करते थे।

: १२ :

दिन-पर-दिन व्यतीत होते गये। कभी कोई उन में से बाहर ले जाया गया तो उसके स्थान पर कोई दूसरा लाकर ठूँस दिया गया। एक दिन, मजीद का अनुमान था कि एक मास व्यतीत हो जाने पर, उसको कोठरी से बाहर निकाला गया और जिस ओर से वह लाया गया था, उसी ओर को ले जाया गया। सीढ़ियाँ उतरने के स्थान, उसको एक दूसरे बरामदे में ले जाकर और ऊपर की सीढ़ियों पर चढ़ने को कहा गया। इतने दिन तक अंगों से काम न ले सकने के कारण, वह सीढ़ियाँ चढ़ने में कठिनाई अनुभव करने लगा था। इस पर भी वह पीछे से धकेला जाता हुआ ऊपर चढ़ रहा था। बीस सीढ़ियाँ चढ़ने पर वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित एक कमरे में पहुँचा। उसे यह प्रकाश से प्रकाशित कमरा बहुत ही विचित्र प्रतीत हुआ। इस पर भी उसके पास समय नहीं था कि वह इसका आनन्द-भोग करने के लिए, वहाँ एक क्षण के लिए भी ठहर सके। उसको ले जाने वाले संरक्षक उसे एक बग़ल के कमरे में ले गए। यहाँ मध्यम आयु का एक व्यक्ति, एक बड़ी-सी मेज़ के पीछे एक कुर्सी पर बैठा था। उसके पीछे एक लड़की एक पृथक् मेज़ पर एक टाइप राईटर के सामने लिखने को तैयार बैठी थी।

जब मजीद उस कमरे में दाखिल हुआ तो उस कुरसी पर बैठे व्यक्ति ने मजीद को एक कुर्सी पर बैठने के लिए संकेत कर दिया। जब वह बैठ गया तो उस व्यक्ति ने कहा, "मैं जी० पी० यू० का चीफ़ हूँ। तुम्हारे पर अभियोग के काग़जात मेरे पास आये थे। मैंने उनके अनुसार पूरी-पूरी जाँच की है और तुम पर ये अपराध सिद्ध होते हैं :

"एक, तुमने सोवियेट सरकार को उलटने के षड्यन्त्र में भाग

लिया है।

"दो, इस मतलब के लिए तुमने एक विदेशी सरकार से सम्पर्क स्थापित किया है।

"तीन, उस विदेशी सरकार को तुमने तेल शुद्ध करने के कारखाने के नक्शे भेजने का यत्न किया है।

"मैंने तुम्हारे विषय में साक्षी ली है। ऐना, मैक्सवीनी और डेविड ने तुम्हारे विरुद्ध साक्षी दी है। इससे ये आरोप तुम्हारे विरुद्ध सिद्ध हो चुके हैं और तुमको मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हुई है।

"मैंने तुमको इस कारण बुलाया है कि यदि तुम अपना अपराध मान जाओ और उसके लिए क्षमा-याचना करो तो तुम्हारा मृत्यु-दण्ड बदल कर, चौदह वर्ष का लेबर-कैम्प में दण्ड, किया जा सकता है।"

मजीद उस नरक-कुण्ड से निकलकर, इस स्वच्छ वायु में पहुँचने पर, अपने में एक विशेष आनन्द और उत्साह अनुभव करने लगा था। परन्तु जब उसने अपनी अनुपस्थिति में अपने पर हुए मुकद्दमे और उसके परिणाम को सुना तो वह स्तब्ध रह गया। उसका मस्तिष्क ठुन हो गया। उसको ज्ञान ही नहीं रहा कि वह क्या है, कहाँ है और यह सब कुछ वह जागृत अवस्था में सुन रहा है अथवा स्वप्न देख रहा है। उसके मुख का रंग उड़ गया और माथे पर पसीने की बूँदें छलकने लगीं।

जी० पी० यू० के चीफ़ ने देखा और मेज़ पर रखी घंटी बजाई। एक संरक्षक भीतर आया, तो चीफ़ ने कहा, "एक ग्लास ठंडा पानी लाओ।"

पानी आया तो मजीद को पीने को दिया गया। चीफ़ ने कहा, "आराम से अपनी परिस्थिति को समझो और मेरी राय मान लो।"

मजीद ने पानी पिया तो उसके चित्त को शान्ति हुई। उसको अपनी अवस्था का ज्ञान हो गया। एक अन्तिम आशा उसके मन में थी। वह यह कि इतना बड़ा साम्राज्य चलाने वाले कुछ तो युक्ति की बात करेंगे। इस कारण उसने कहा,

"कॉमरेड! यह मुकद्दमा मेरी अनुपस्थिति में हुआ है। मेरे पर

चार्जशीट लगाये बिना हुआ है। मुझको, मेरे विरुद्ध साक्षी करने वालों पर जिरह करने का अवसर दिये बिना और अपनी सफाई देने का अवसर दिये बिना हुआ है। इस कारण यह मुकद्दमा धोखा है। मैं इसके विरुद्ध अपील करना चाहता हूँ।"

"वह हो चुकी। सुप्रीम कोर्ट के सामने तुम्हारे काग़ज़ उपस्थित किये गए थे और वहाँ भी इस निर्णय का समर्थन हुआ है।"

"पर यह मुकद्दमा कैसे हुआ ? अपराधी को पता भी नहीं और यहाँ मुकद्दमा हो गया, अपील हो गई और अन्तिम निर्णय भी हो गया। यह अन्याय है, अवैधानिक है और मैं कॉमरेड स्टालिन के सम्मुख अपना मुकद्दमा ले जाना चाहता हूँ।"

"देखो मजीद ! पागलों की-सी बातों से तुम अपना मामला और बिगाड़ लोगे।"

"मैं यह निवेदन कर रहा हूँ कि यह मुकद्दमा कहा ही नहीं जा सकता। अपराधी को किसी भी दशा में, अनुपस्थिति में सब कुछ कर दिया और दण्ड भी दे दिया। श्रीमान् जी ! यह निर्णय सुनाने की भी क्या आवश्यकता है ? सीधा फाँसी पर ही क्यों नहीं लटका दिया ?"

"मुझसे इन कानूनी बातों पर झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। देखो तुम को समझाने के लिए कहता हूँ, 'कोड ऑफ क्रिमिनल जस्टिस' की धारा १३के अनुसार और 'किरोव' की हत्या के पश्चात् दी गई डिग्री के अनुसार, राज्य-विरोधी अभियोगों में, न तो अपराधी के, न ही उसके वकील के उपस्थित होने की आवश्यकता है।

"मैं तो यह कह रहा हूँ कि देश के विधानानुसार तुम अपराधी सिद्ध हो चुके हो, तुमको मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है। अब यदि तुम अपना अपराध मान लो और उसके लिए क्षमा की याचना करो, तो दयालु स्टालिन तुमको जीवन-दान दे सकता है।'

"यदि मैं न मानूँ तो ?"

"तो अभी तो तुमको उसी कोठरी में भेज दिया जायगा, जहाँ से तुम

आये हो और अधिकारी निर्णय करेंगे कि तुमको कब और कहाँ फाँसी पर लटकाया जाय।"

"इसी समय मुझको मृत्यु-दण्ड क्यों नहीं दे दिया जाता?"

"यह मेरे अधिकार से बाहर की बात है।"

इतना कह चीफ़ उठ खड़ा हुआ और उसने मेज़ पर रखी घंटी बजाई। जब संरक्षक आये तो उसने आज्ञा दी, "इसको कोठरी नम्बर १० में ले जाओ।"

संरक्षकों ने मजीद को बाँहों से पकड़ा और उसको घसीटकर कमरे से बाहर ले गये। उसी गोलाकार सेहन में कोठरी नम्बर दस का दरवाज़ा खोला तो एक बन्दी लुढ़ककर बाहर गिर गया। संरक्षक ने अन्य बन्दियों से पूछा, "क्या हुआ है इसको?"

"खड़ा खड़ा मर गया है।" भीतर से आवाज़ आई।

"तो बैठ जाता।"

"बैठने को स्थान कहाँ है?" इतना कहते-कहते शेष बन्दी कोठरी से बाहर निकल आये और सेहन में हाँफते हुए लेट गये। संरक्षकों ने अपने पिस्तौल तान लिये। परन्तु वे लोग पिस्तौल से डर नहीं रह थे। एक के मुँह से निकला, "दस दिन से खड़े हैं। टट्टी-पेशाब खड़े-खड़े ही हुआ है।"

एक दूसरे ने कहा, "अब पाँच दिन से तो टट्टी-पेशाब भी बन्द है!"

सेहन के बाहर खड़े एक संरक्षक को भेजा गया कि वह जाकर पूछकर आये कि क्या किया जाय। कोठरी, जिसमें से ये लोग बाहर आये थे, अति बदबू कर रही थी और मैला जहाँ-तहाँ बिखरा होने के कारण फर्श पर कीड़े चल रहे थे।

मजीद और संरक्षक वहीं खड़े चीफ की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके देखते-देखते बारह में से, जो कोठरी में से निकले थे, तीन और मर गये। एक निकला ही मरा हुआ था।

मजीद का मस्तिष्क यह सब कुछ देखकर पागल हो रहा था।

वह सोच रहा था कि इस चीफ को गोली से मार डाले। फिर विचार करता था कि इससे क्या होगा। यह साक्षात् नरक है। यहाँ से भाग जाना चाहिए। अपना काल्पनिक अपराध मान लेना चाहिए। कुछ भी हो यहाँ रहना ठीक नहीं।

इस समय वही अधिकारी, जो मजीद से अपराध मानने के लिए कह रहा था, आया और बारह-के-बारह बंदियों को भूमि पर लेटे हुए देख बोला, "जाओ डाक्टर को बुलाओ और इनकी रिपोर्ट तैयार करो।"

पश्चात् मजीद की ओर देखकर बोला, "इसको इसी कोठरी में बंद कर दो।"

मजीद ने तुरन्त कहा, "मैं अपराध स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ।"

"ठीक है।"

"पर मुझको यहाँ से निकाला जाय। अभी निकाला जाय।"

चीफ ने संरक्षकों की ओर देखकर कहा, "इसको कार्यालय में ले आओ।"

कार्यालय में मजीद को टाईप किये हुए तीन कागज दिखाये गए। तीनों पर एक ही बात लिखी थी। मजीद ने पढ़ा :

"मैं, मजीद हिन्दुस्तान से निर्वासित और रूस में नागरिक माना हुआ, अब अस्तरखान का रहने वाला और पेट्रोल डिस्टिल्लरी अस्तरखान का हैड-क्लर्क यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अँग्रेजी दूतावास का भेदिया हूँ। मैं कारखानों को हानि पहुँचाने के विचार से रूस में आया था और इस कारण अस्तरखान डिस्टिल्लरी के प्लैन और नक्शे अँग्रेजी दूतावास में भेज रहा था। मैंने सोवियत राज्य संघ के साथ धोखा और द्रोह किया है। मैंने प्रोलिटेरियेट के क्रान्ति-कार्य को हानि पहुँचाई है। मैं अपने इस घृणित-द्रोह के कार्य से लज्जित हूँ। मैं पश्चाताप करता हूँ और ऐसा काम फिर कभी न करने का वचन देता हूँ। मैं स्टालिन न्यायकर्ता, दयालु, इस देश के महान् व्यक्ति से क्षमा याचना करता हूँ।"

जब मजीद पढ़ चुका तो उससे कहा गया कि नीचे हस्ताक्षर कर दो।

मजीद की आँखों के सामने चक्कर आ रहे थे। उसको सब-कुछ उलटा दिखाई देने लगा था। उसको हिचकिचाते देख, चीफ ने कहा, "इसके नीचे अपने हाथ से लिखो, 'मैंने यह बयान जो अपनी चैतन्यावस्था में दिया है, टाईप होने के पीछे पढ़ लिया है। इसके प्रत्येक शब्द को अपना कहा हुआ मान, अपने हस्ताक्षर कर रहा हूँ।' नीचे हस्ताक्षर कर दो।"

मजीद ने संरक्षकों की ओर देखा और मन में कोठरी का दृश्य स्मरण कर, उक्त बात लिखकर हस्ताक्षर कर दिये।

तीनों कागज़ों पर हस्ताक्षर हो जाने के पीछे, चीफ ने कागजात भली-भांति देखे, तीनों के हस्ताक्षर मिलाए और उनको अपनी मेज़ के दराज़ में रखकर आज्ञा दी, "मजीद को कैन्टीन में ले जाकर साफ कपड़े और भोजन दो।"

: १३ :

कॉमरेड बेग और शीरीं को एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी का द्वार खटखटाते हुए एक सप्ताह व्यतीत हो गया था और अतुल प्रयत्न करने पर भी उनको मजीद का खुर-खोज नहीं मिला। शीरीं विशिन्सकी के एक मित्र के घर ठहरी हुई थी और बेग होटल में।

पिता और पुत्री दोनों दिन में एक बार होटल में मिल लेते थे और एक-दूसरे के कार्य की प्रगति का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। एक सप्ताह के प्रयत्न पर निराश हो दोनों होटल में चाय पी रहे थे कि एक व्यक्ति उनकी मेज के समीप खड़ा हो, एक खाली कुर्सी की ओर संकेत कर बोला, "क्या मैं एक प्याला चाय के लिए अपने को आप का मेहमान बना सकता हूँ?"

बेग हँस पड़ा। इस बात ने, लंदन हाईड पार्क में चरित्रहीन औरतों के अपने-आप दूसरों के महमान बनने की याद दिला दी थी। वह कई ऐसे मेहमानों को वहाँ चाय-पानी पिला चुका था। उन दिनों की बात याद कर, उसने कहा, "मुझको बहुत प्रसन्नता होगी।"

वह व्यक्ति साठ वर्ष की आयु के लगभग प्रतीत होता था। उसके कपड़े

फटे-पुराने और पाइप, जो वह अपने हाथ में लिये हुए था, बहुत पुराना प्रतीत होता था। उसने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "मैंने प्रातःकाल से चाय नहीं पी। इसलिए नहीं कि मेरे पास दाम नहीं, प्रत्युत् इस कारण कि मैं इस देश में निर्धन बना रहना ठीक समझता हूँ।"

बेग को स्मरण हो आया कि वह लन्दन में नहीं, प्रत्युत् रूस और मास्को में है। यह कहा जाता था कि मास्को में पूर्ण जनता की एक तिहाई गुप्त-चर-विभाग से सम्बन्ध रखती है। वह स्वयं अति गुप्त-कार्य से वहाँ आया हुआ था। इस कारण वह सतर्क हो गया और सावधानी से बोला, "मैं समझता हूँ कि आपकी नीति बहुत ठीक है।"

"पर आप मेरी नीति का अनुकरण नहीं करते। आपके वस्त्र देखकर मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि आप जार के जमाने के जमींदार हैं।"

"मैं जमींदार कभी नहीं रहा। मैं सरकारी नौकर हूँ और नौकरी में होने के कारण, मुझको अच्छे कपड़े पहनने पड़ते हैं। साथ ही वेतन अच्छा मिलता है और धन को जमा करने में लाभ नहीं समझता।"

"परन्तु आप बेकार भी तो हो सकते हैं। आप पर पुलिस का सन्देह भी तो हो सकता है। आपको अपनी जान बचाने के लिए भागना भी तो पड़ सकता है।"

"ऐसी परिस्थिति मेरे अपने किसी अपराध के कारण तो होगी नहीं। मैं अपराध करूँगा ही नहीं। इस पर भी यदि मेरे भाग्य में यह सब कुछ बदा है, तो फिर मैं कर ही क्या सकता हूँ? मेरे लिए दुःख और क्लेश मिटेगा नहीं।"

"आप क्रान्तिकारी प्रतीत नहीं होते?"

इस समय चाय आ गई और वह वृद्ध महाशय प्याला उठा पीने लगा। बेग ने भी चाय पीते हुए कहा, "आज रूस में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं, जो क्रान्तिकारी न हो। किसी के पास विकास को चलाने के लिए अवकाश ही कहाँ है?"

"परन्तु कुछ लोग हैं, जो कौन्टर रैवोल्यूशनरी (क्रान्ति के विरोधी) कहे

जाते हैं।"

"यह सब व्यर्थ की बात है। ए, बी को क्रान्ति का विरोधी कहता है और बी, ए को। वास्तव में दोनों-के-दोनों ही विरोधी नहीं हैं। दोनों एक-दूसरे की निन्दा इस शब्द से, इस कारण करते हैं कि जनता क्रान्ति को एक सुन्दर वस्तु मानती है और जब एक जनता को दूसरे के विरुद्ध करना चाहता है, तो क्रान्ति-विरोधी का नाम उसको दे देता है।"

वह वृद्ध हँस पड़ा। उसने प्याले में से एक सुरकी भरकर अँग्रेजी में बेग के समीप हो कहा, "आप इंग्लैण्ड में शिक्षा पाये प्रतीत होते हैं?"

बेग ने उत्तर नहीं दिया, इस पर उस आदमी ने कुर्सी से ढासना लगाकर कहा, "मैं भी लन्दन में पढ़ा हूँ। १९१७ की क्रान्ति के समय मैं इंग्लैण्ड में था। कई प्रकार के यत्न कर मैं १९२३ में मास्को में आ सका और यहाँ कर्मलीन के अस्पताल में चिकित्सा के लिए नियुक्त हुआ था। पीछे....पीछे....," उसने फिर आगे झुककर कुछ कहा, "मैं यह हूँ।"

बेग ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया और अन्यमनस्क भाव में उसका मुख देखता रहा। उसने चाय का प्याला समाप्त कर लिया और उठकर मुख बेग के समीप ले जाकर कहा, "मैं डॉक्टर लैबरोस्की हूँ।"

इतना कह उसने बेग से हाथ मिलाया। शीरीं की ओर देखकर, मुस्कराकर सिर हिलाया और जाने के लिए लौट पड़ा। वह एक पग भी नहीं गया था कि फिर लौटकर शीरीं के समीप मुख ले जाकर कहने लगा, "बेरिया जो-कुछ कहेगा, उसमें कुछ भी सत्य नहीं होगा। घबराना नहीं।"

वह घूमा और होटल के डाईनिंग हॉल की भीड़-भार में विलीन हो गया।

"यह कौन था? डैडी!"

"यह मेरा एक पुराना परिचित है। मैं इसको फांसी दिया गया समझता था। यदि यह अपना नाम नहीं बताता, तो मैं पहचान नहीं सकता था। क्या कहता था तुमको?"

"कहता था कि बेरिया की बात पर विश्वास नहीं करना।"

"क्या बात बेरिया ने कही है ?"

"कल उसने बुलाया है।"

"तो वह कुछ सूचना तुमको देने वाला है।"

"इसके कहने पर विश्वास करूँ, तो यही प्रतीत होता है।"

अगले दिन जब शीरीं बेरिया के कार्यालय में प्रवेश करने लगी तो उसको एक पुरुष दूर, उसकी ओर पीठ किये हुए खड़ा दिखाई दिया। उसको ऐसा समझ आया कि वह लैबरोस्की ही है। इस समय उससे मिलने के लिए अवसर न देख, वह कार्यालय में चली गई। सूचना भेजने पर बेरिया ने उसको भीतर बुला लिया और कहा,

"शीरीं ! मुझको बहुत शोक है कि मैं तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकता। तुम्हारा प्रेमी एक विदेशीय सरकार का गुप्त-एजेण्ट है। उसने यह अपने एक बयान में स्वीकार भी कर लिया है। ऐसी अवस्था में केवल यही नहीं कि मैं उसको छोड़ नहीं सकता, प्रत्युत् कोई भी नागरिक उससे सहानुभूति रखकर, अपने को देश-द्रोही सिद्ध करना नहीं चाहेगा।"

"उसने मान लिया है कि वह किसी विदेशीय सरकार से सम्पर्क रखता था ?"

"हाँ ! इंग्लैण्ड की सरकार से।"

"यह बात मानी नहीं जा सकती।"

"केवल इसलिए कि तुम सर्वथा निरीह बालिका हो। तुम दुनिया के रंग-ढंग नहीं समझती। क्या तुम उसके हस्ताक्षर पहचानती हो ?"

"हाँ, पहचान सकती हूँ।"

"तो यह देखो।" उसने उन तीन काग़जों में से एक निकालकर दिखाया, जिस पर मजीद ने हस्ताक्षर किए थे। शीरीं मजीद के हस्ताक्षर पहचान स्तब्ध रह गई। उसने पूर्ण बयान पढ़ा। नीचे मजीद के अपने हाथ से लिखा हुआ भी पढ़ा और मजीद के हस्ताक्षर भी देखे। यह सब कुछ देख, उसके सिर में चक्कर आने लगा। अब अपने सिर को मेज पर रख कर चुपचाप आँसू बहाने लगी।

बेरिया ने उसको कुछ देर तक अपने मन के उद्‌गारों का प्रदर्शन करने दिया। पश्चात् उसने कहा, "देखो लड़की! यदि तुम वास्तव में इस देश और कम्युनिज़्म की नीति से प्रेम करती हो तो तुमको ऐसे देश-द्रोहियों से घृणा करनी चाहिए। तुमको इस प्रकार के क्रान्ति के विरोधियों को चौराहे पर खड़े होकर गालियाँ देनी चाहिएँ। यही तुम्हारा कर्तव्य है। यही एक सच्चे मज़दूर का कर्तव्य है।

"अब तुम जाओ। मैं इतनी बात और किसी से नहीं करता। यह केवल तुम्हारा सौन्दर्य है, जिसको मैं सोवियट रिपब्लिक की एक अद्वितीय सम्पत्ति समझता हूँ, जिस कारण मैंने तुमको समझाने का यत्न किया है। इस अमूल्य निधि को मैं व्यर्थ में नाश होने नहीं देना चाहता।"

इस समय तक शीरीं को कुछ ज्ञान हुआ। उसको लैबरोस्की का कथन स्मरण हो आया। इस कारण उसने कहा, "कॉमरेड! मुझको पूर्ण विश्वास है कि आपको धोखा हुआ है। कॉमरेड मजीद ऐसा नहीं है।"

"तो तुम उसके हस्ताक्षर को भी नहीं पहचानती?"

"यह बात नहीं। हस्ताक्षर कराने के लिए परिस्थिति उत्तरदायी हो सकती है। क्या मैं उससे मिल सकती हूँ?"

"केवल एक ही उपाय है। मैं तुमको देश से दग़ा करने के अपराध में पकड़ लूँ और तुम्हारे इस अपराध करने के साक्षी मिल जायँ और तुमको फिर फाँसी पर लटका दिया जाय, तो नरक में तुम दोनों मिल सकते हो।"

"तो उसको दण्ड दिया जा चुका है?"

"हाँ। साथी स्टॉलिन ने उसको क्षमा नहीं किया।"

शीरीं का पूर्ण शरीर मृतप्राय हो गया। वह उठी परन्तु उसकी टाँगों ने जवाब दे दिया और वह लुढ़ककर भूमि पर गिर पड़ी। बेरिया ने घण्टी बजाई। संरक्षक भीतर आए और बेरिया से संकेत पा, अचेत शीरीं को उठा कर ले गये।

शायद इसी दिन और इसी समय ब्लैडीवास्टक के बन्दरगाह में एक जहाज़ के एक केबिन में पचास कैदियों में एक मजीद भी बैठा अपने भाग्य

को कोस रहा था। वह अपनी माँ के कहने, 'मजीद अब शादी कर लो और सुख की ज़िन्दगी गुज़ारो' से लेकर रीता के साथ विनोद के जीवन तक और फिर वहाँ से भागते हुए जापान, कोरिया, ब्लैडीवास्टक, अस्तर-खान और शीरीं की मीठी-मीठी बातों तक अपने पूर्ण जीवन को स्मरण करता हुआ, अपनी वर्तमान अवस्था पर विचार करता था। यह क्या है ? क्या यह प्रगति है ? क्या यह मानवता है ? अथवा क्या इससे मनुष्य-समाज का भला होने वाला है ? इन प्रश्नों के मन में उठने पर वह सिर हिलाने लगता था।

केबिन में बैठने-मात्र को ही स्थान था। अब तो उसको बैठे-बैठे सोने और अन्य प्राकृतिक क्रियाओं के करने का अभ्यास हो गया था। सब कैदी धैर्य से अपने काले भविष्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह जहाज नागेव को जा रहा था और कैदी कोलीमा की सोने की खानों को।

: १४ :

शीरीं को स्मेलिंग साल्ट सुँघाकर सचेत किया गया और फिर थोड़ी शराब पिलाकर चलने योग्य बना दिया गया।

जब वह जाने को तैयार हुई, तो कॉमरेड बेरिया आया और शीरीं से हाथ मिलाकर बोला, "अब आपको उस काले सम्बन्ध का, जो मजीद से आपका था, ध्यान मन से निकाल देना चाहिए। वह भूल थी, जिसको भूल जाना चाहिए। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। आप यदि सरकारी होटल में सायं चाय का निमन्त्रण स्वीकार करें, तो मैं बहुत प्रसन्न हूँगा। मैं शायद आपके लिए मास्को में कुछ काम बता सकूँ। यहाँ रहने से, जहाँ आप उस सब वातावरण से बाहर आ जायँगी, जिसमें मजीद का आपसे सम्बन्ध हुआ है, वहाँ साथ ही यहाँ नये-नये लोगों से आपका परिचय होगा। नये विचारों से आपका मन उन्नत होगा और जीवन के नये उद्देश्य आपके सामने बन जायँगे।"

शीरीं ने केवल यह कहा, "धन्यवाद ! आज नहीं। फिर किसी दिन।

आप मेरे ठहरने का स्थान तो जानते हैं। कल या किसी अन्य दिन आप मुझको लिखकर निश्चय कर लीजिएगा।"

बेरिया ने हाथ मिलाया और शीरीं वहाँ से निकल आई।

जब वह ट्राम में सवार हो विशिन्स्की के मित्र के घर की ओर चली तो उसको पैदल चलने के स्थान पर लैबरोस्की जाता दिखाई दिया। इस पर उसको विस्मय हुआ। क्या वह उसकी रक्षा के लिए इधर आया हुआ है अथवा क्या वह भी जी० पी० यू० पुलिस में है।

सायं की चाय का समय हुआ तो वह उस होटल में जा पहुँची, जहाँ उसका पिता चाय पीने आया करता था। आज लैबरोस्की पहले ही उसके पिता के पास बैठा हुआ था। उसके मन में यह सन्देह हो रहा था कि वह उसके मामले में विशेष रुचि ले रहा है।

वह आई तो सिर हिलाकर उसने शीरीं का अभिवादन किया। जब वह बैठ गई तो लैबरोस्की ने उसको कहा, "मैं विश्वस्त सूत्र से यह जान गया हूँ कि मजीद इस समय ब्लैडीवास्टक में है और वहाँ से नौगीब बन्दरगाह को ले जाया जाने वाला है। वहाँ से उसको कोलीमा की सोने की खानों को ले जायँगे।"

"बेरिया ने कहा है कि उसको फाँसी दे दी गई है।"

"मैंने कल कहा था कि उसके कहने पर विश्वास न करना।"

"तो किसके कहने पर विश्वास करूँ और फिर क्यों करूँ ?"

"देखो शीरीं। कॉमरेड बेग मेरे मित्र हैं। मैं ऐसी अवस्था में हूँ कि कुछ आप लोगों की सेवा कर सकूँ। इस कारण कई दिन के विचार के पश्चात् कल मैंने तुम्हारे पिता से भेंट की और आज मैंने सब कहानी बता दी है। मजीद ने क्यों वह अपराध स्वीकार कर लिया है, जो उसने किया भी नहीं ? साथ ही आज बेरिया की यह नीति है कि जहाँ तक सम्भव हो, वह किसी को भी फाँसी का दण्ड नहीं दिलवाता। सोवियट सराकर को कम वेतन पर मज़दूरों की बहुत भारी संख्या में आवश्यकता है। इस कारण सब स्थानों पर पार्टी की शाखाओं को यह आज्ञा भेजी जा चुकी है कि सब

सन्देहात्मक व्यक्तियों को फँसाया जाय। उन पर झूठ-मूठ का मुकद्दमा कर, उनको लम्बी कैद का दण्ड दे दिया जाता है। उनको डरा-धमकाकर, उनसे अपराध, जो उन्होंने शायद ही किया होता है, स्वीकार करवा लिया जाता है। पश्चात् उनको साइबेरिया में नये खुल रहे लेबर कैम्पों में भेजकर, बहुत कम खर्च पर पूरी मजदूरी करवाई जाती है।

"उनके सम्बन्धियों को यह कह दिया जाता है कि उनको मृत्यु-दण्ड हुआ है। उनको अपराध-स्वीकृति पत्र दिखाकर सम्बन्धियों को उनके विरुद्ध कर दिया जाता है और ऐसा वातावरण पैदा कर दिया जाता है कि वे उस कहे जाने वाले देश-द्रोही के चले जाने से सन्तोष और शान्ति अनुभव करने लगते हैं।

"इन लेबर-कैम्पों से बहुत-कम लोग जीवित लौटते हैं, इस कारण बन्दी के सम्बन्धियों को मृत्यु-दण्ड की बात बताकर बन्दी के मरने से पहले ही शान्त कर दिया जाता है। यदि कोई बचकर आ जाय, तो उसके सम्बन्धी उसके अपराध-स्वीकार-पत्र की बात स्मरण कर उसके विषय में झगड़ा करने के स्थान, मुक्त बन्दी को घर तक में घुसने नहीं देते।"

शीरीं ने पूछा, "तो आप के विचार में मजीद की यही कथा है?"

"केवल विचार नहीं। प्रत्युत् निश्चय यह विदित है कि मजीद नोगीव बन्दरगाह को ले जाया जा रहा है। हमारा एक साथी भी उसके साथ है। मैंने दोनों का परिचय करवा दिया है। अब मेरा कहना यह है कि यदि कुछ रुबल का प्रबन्ध कर दिया जाय तो मेरे साथी दोनों को छुड़ाने का यत्न कर सकते हैं।"

शीरीं चुप कर गई। वह अपने पिता और लेबरौस्की की ओर बारी-बारी से देख रही थी। वास्तव में उसके मन में एक नवीन आशा जाग्रत हो गई थी। बहुत देर तक चुप रहने के पश्चात् तीनों ने चाय पीनी आरम्भ कर दी। चाय पीते हुए भी तीनों अपने-अपने विचारों में मस्त रहे। जब चाय समाप्त हुई तो मेज से उठते हुए बेग ने धीरे से लेबरौस्की को कहा, "आप की बात का उत्तर मैं शीरीं से राय कर कल दूँगा। मैं आपको कल

लंच के समय यहीं मिलूँगा।"

अगले दिन उसी स्थान पर शीरीं लैबरोस्की की प्रतीक्षा में बैठी थी। बेग वहाँ पर नहीं था। बैरा आया तो उसने लंच का आर्डर दे दिया। लंच परस दिया गया और लैबरोस्की नहीं आया। शीरीं ने खाना आरम्भ कर दिया। प्रति क्षण वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह नहीं आया। खाना समाप्त हुआ और उसने बिल दे दिया। पश्चात् वह उठकर अपने ठहरने के स्थान की ओर चल पड़ी। उस का विचार था कि लैबरोस्की के साथ कोई दुर्घटना हो गई है। इससे अति निराश-मन वह निवास-स्थान की ओर चल पड़ी थी।

आज चाय के समय उसको क्रैमलीन के होटल में बेरिया ने निमन्त्रण दिया हुआ था, इस कारण वह घर पहुँच कपड़े बदलकर क्रैमलीन की ओर जाने वाली थी। जब वह घर पहुँची तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। उसके कमरे में विशिन्स्की, जिसने उसको अस्तरखान में परिचय-पत्र दिया था, बैठा था। उसके पास लैबरोस्की और मालिक मकान बैठे थे। शीरीं ने विशिन्स्की के आने के विषय में पूछा, "कब आये हैं और कैसे आना हुआ है?"

उत्तर मालिक मकान ने दिया, "इनको मैंने मजीद के ब्लैडीवास्टक भेजे जाने की सूचना भेजी थी। साथ ही हमारा एक साथी ग्रोमाव भी उसीके साथ उधर भेजा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा पत्र पहुँचने से पूर्व ही आप इधर चल पड़े थे। तुम्हारे आने के पश्चात् मैंने फिर एक पत्र लिखा था। उसके उत्तर में साथी विशिन्स्की यहाँ ही चले आये हैं। लैबरोस्की को आपके विषय में मैंने ही बताया था और कई दिन के विचारोपरान्त हम ने निश्चय किया कि आपसे बातचीत कर ली जाय। यदि आप के पिता पाँच हजार रुबल का प्रबन्ध कर सकें तो लैबरोस्की अपनी जिन्दगी खतरे में डालने को तैयार है। कॉमरेड ग्रोमोव हमारा एक बहुत ही आवश्यक साथी है। उसके लिए हम सब कुछ करने को तैयार हैं।"

शीरीं ने लैबरोस्की की ओर देखकर कहा, "मैं आपकी होटल में

प्रतीक्षा करती रही हूँ। मुझ को डर लग गया था कि कोई दुर्घटना न हो गई हो।"

"वह होनी होगी तो होगी। मैंने आज तक इस बात की चिन्ता नहीं की। मुझ को मृत्युदण्ड मिले आज पाँच वर्ष हो चुके हैं। मेरी मृत्यु का समाचार 'प्रवदा' में छप चुका है। इस कारण लैबरोस्की तो पकड़ा जा नहीं सकता। इन पाँच वर्षों में मास्को के जी० पी० यू० के प्रायः सब लोगों को मैं पहचानता हूँ। उनमें कई मेरे साथी भी हैं। वे मुझको जेल और हवालात के समाचार दिया करते हैं। हम स्टालिन और बेरिया का राज्य हटाना चाहते हैं। दोनों अति निर्दयी, स्वार्थी और अभिमानी हैं।"

"मैं कॉमरेड विशिन्स्की के भारी अहसान में दबी हुई हूँ। इसी कारण अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध, मैं यहाँ रह गई हूँ और आपको यह रकम अपने पास से दे दूँगी। पिताजी का नाम इसमें नहीं आना चाहिए। वास्तव में उनको इस प्रकार के कामों में विश्वास नहीं है।"

"कम-से-कम पाँच सहस्र रुबल चाहिएँ।"

"मैंने अपनी माँ को पत्र लिखा है। वे अपने और मेरे भूषण बेच कर इतने रुबल शीघ्र ही भेज देंगी।

: १५ :

नौगीब बन्दरगाह पर जहाज खड़ा हुआ, तो कैदियों को जहाज के कैबिनों से निकालकर, जहाज के तख्ते पर खड़ा कर दिया गया। गणना की गई। पाँच हजार पाँच सौ बीस थे। रजिस्टर देखा गया और गिनती ठीक पा, दो-दो की पंक्तियों में जहाज से किनारे पर उन्हें उतारा गया।

मजीद इन में था। उसका साथी जिसके साथ उसका हाथ बँधा था ग्रोमोव था। दोनों के हाथ, एक का दाहिना दूसरे के बायें से बँधा था। दोनों जब किनारे पर खड़े हुए तो बातें करने लगे। मजीद ने कहा, "इस वीरान स्थान पर कौन हमारी सहायता करेगा?"

"लैबरोस्की पर विश्वास रखो। इस समुद्र के मार्ग से तो जाना नहीं हो

सकेगा। हमें पूर्ण साइबेरिया की यात्रा पैदल करनी पड़ेगी।"

"मैं तो स्वतन्त्रता प्राप्त करते-करते मर जाना पसन्द करूँगा। यह गुलामी मुझसे नहीं हो सकती। कितनी विचित्र बात है। मैंने कोई अपराध नहीं किया। मुझसे जबरदस्ती लिखवा लिया है कि मैंने भारी अपराध किया है। अब मुझको बन्दी बना इस बरफानी जगह पर भेज दिया है। यह जबरदस्ती हमारे देश में नहीं की जाती और न हम सहन कर सकते हैं। यदि तो एक-दो मास के भीतर छूट गया तो छूट गया, नहीं तो मैं आत्मघात कर लूँगा।

ग्रोमोव ने कहा, "मुझको पूर्ण विश्वास है कि हमको छुड़ाने का यत्न किया जायगा। लैबरोस्की स्वयं इसी कैम्प में से छूटकर गया था। उसने मुझ को सन्देशा भेजा है कि हम शीघ्र ही छूट जायँगे।"

काले आटे की सूखी रोटी का एक-एक टुकड़ा सब को पकड़ा दिया गया और आज्ञा हुई कि कैदी खालें और पन्द्रह मिनट में काफिला कोलीमा की ओर चल देगा।

यह जुलाई का महीना था, परन्तु भूमि पर बरफ जम रही थी। यह बरफ कितनी गहरी होगी, कहा नहीं जा सकता। मनुष्य के इस देश में आने के पूर्व से बरफ जम रही है। गरमी की ऋतु में भी यह नहीं पिघलती।

इस बरफ पर पाँच सौ मील चलकर कोलीमा पहुँचना था। पैदल डेढ़ मास से ऊपर की यात्रा थी और एक मास के लिए खाने का सामान, काली रोटी, नमक-मिर्च और एक प्याला, जिसमें जल गरम कर पिया जा सके, सबको दे दिया गया।

साढ़े पाँच हजार आदमी चार-चार की पंक्तियों में कोलीमा की सड़क पर चल पड़े। सबको चमड़े के कपड़े दे दिये गए थे। उन कपड़ों में मुँह-सिर ढाँपे हुए वे छप-छप पावों के शब्द के साथ चले जा रहे थे। लगभग दस किलोमीटर नित्य चलना होता था। रात को चमड़े के कपड़ों में ही नंगी बरफ पर सोना पड़ता था।

पहले दस दिन तो निर्विघ्न समाप्त हो गए। ग्यारहवें दिन कठिनाई आरम्भ हुई। रात से ही बहुत वेग से वायु बहने लगी थी। रात को तो

बन्दी तीन-तीन चार-चार इकट्ठे कम्बलों में सिकुड़कर पड़े रहे। प्रातःकाल उनको चलने के लिए कहा गया तो उनके लिए चलना कठिन हो गया। भूमि पर खड़ा होना सम्भव नहीं था। वायु का वेग सौ मील प्रति घण्टा से कम नहीं था। खड़े होते ही वे वायु के साथ दक्षिण को बहा ले जाये जाते थे। इस समय भी दो-दो बन्दी परस्पर बन्धे हुए थे और वायु के वेग से दो-दो के जोड़े खुले मैदान में बिखड़ गए। पंक्तियों में चलना असम्भव हो गया और संरक्षकों के लिए उनको रक्षा में रखना कठिन। इस पर इस क़ाफ़िले के कमान्डेण्ट ने खतरे का बिगुल बजा दिया और सब क़ैदियों को एक स्थान पर एकत्रित होने की आज्ञा दे दी गई। क़ैदियों ने इकट्ठे होने का यत्न आरम्भ कर दिया, परन्तु यह सुगम नहीं था। कुछ लोग, जो मार्ग से दूर भटक गए थे, उन पर संरक्षकों ने गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। जिस-जिस को गोली लगी वह वहीं घायल हो गिर पड़ा। बहुत से मारे गए।

मजीद और ग्रोमोव ने जब आज्ञा सुनी तो भूमि पर लेट गए और रींग-रींगकर मार्ग की ओर आने लगे। परिणाम यह हुआ कि वे न तो सड़क से दूर भटके और न ही उन पर गोली चलाई गई।

उस दिन वहाँ से आगे नहीं जाया जा सका। सायंकाल सब घायलों और मृतों को तथा बन्दियों को एकत्रित कर गिनती की गई। लगभग पाँच सौ मारे गए थे। इन में से, जो घायल चल सकने के योग्य नहीं थे, उनको रात के समय गोली मार कर मार डाला गया। इस प्रकार पाँच हजार पाँच सौ बीस में से चार हजार सात सौ अस्सी के लगभग शेष रह गए। मृत शवों से चमड़े के कपड़े उतार लिये गए और उनको बरफ में दबा दिया गया।

अगले दिन प्रातःकाल वायु का वेग कम हो गया और काफिला आगे को चल पड़ा। साधारण रूप में भी भोजन अपर्याप्त और यात्रा अति कठिन होने के कारण दिन-प्रतिदिन रोगी बढ़ते जाते थे और चिकित्सा का कोई प्रबन्ध न होने से रोगियों में से दस-बीस मरते ही रहते थे।

इस दिन सायंकाल को वायु का वेग फिर बढ़ने लगा। इस कारण पाँच किलोमीटर चलकर पुनः ठहरना पड़ा। इसी प्रकार चलता रहा।

डेढ़ मास की यात्रा के पश्चात् वे लगभग आधे मर चुके थे और आधों में फिर आधे बीमार और थकावट से चूर-चूर हो चुके थे। अभी कई दिन की यात्रा शेष थी। मजीद को थकावट के कारण ज्वर हो रहा था। ग्रोमोव वैसे तो स्वस्थ था, परन्तु चलने में बिल्कुल असमर्थ था।

संरक्षकों ने जब प्रातः चलने का बिगुल बजाया तो मजीद ने हिलने से ना कर दी। ग्रोमोव भी लेटा रहा। उसने कह दिया कि अब चलने की शक्ति नहीं रही।

"तो गोली से मार डाले जाओगे।" कप्तान का कहना था।

"ठीक है मार डालो।" मजीद ने कह दिया, "गोली से मर जाना इस मुसीबत से आसान है।"

"और तुम?" उसने गोमोव से पूछा।

"मैं तो चल सकता ही नहीं। मारो या रखो, जैसे मन करे करो।"

इस पर संरक्षकों ने परस्पर विचार-विनिमय किया और यह निश्चय किया गया कि काफिले को दो भागों में बाँट दिया जाय। जो चल सकते हैं, उनको रवाना कर दिया जाय और जो थक गए हैं, उनको दो दिन आराम करने के लिए रहने दिया जाए। चलने योग्य नौ सौ के लगभग लोग थे। शेष पन्द्रह सौ के करीब वहाँ पर ही रह गए

इस काफिले में जान की हानि बहुत हुई। कोलीमा नदी के तट पर पहुँचते-पहुँचते साठ प्रतिशत मर चुके थे। कोलीमा की बस्ती के गवर्नर ने काफिले के गवर्नर से पूछा भी कि इतने क्यों मर गए। उसने बताया कि ऋतु बहुत खराब थी। आँधी, वर्षा और फिर लेना नदी में बाढ़ बहुत लोगों को बहाकर ले गई। गवर्नर काम करने वालों की कमी से बहुत कठिनाई में था। इस कारण उसने एक लम्बे पत्र में वहाँ की कठिनाइयों का, वहाँ पर चिकित्सकों के अभाव का और भोजन की दुर्व्यवस्था का उल्लेख कर और अधिक काम करने वाले माँगे।

मजीद और ग्रोमोव अपने काफिले से पाँच दिन पीछे पहुँचे। पहुँचते ही उनकी डॉक्टरी परीक्षा करवाई गई। डॉक्टर ने मांस का शोरबा देने

का विधान कर दिया।

इससे दोनों में बल आने लगा। बल आने के साथ ज्वर चला गया और उनके पाँव, जो निरन्तर पैंतीस दिन तक चमड़े के बूटों में बन्द रहने के कारण गल गये थे, ठीक होने लगे। दिन-प्रतिदिन मृत्यु-संख्या बढ़ने से गवर्नर को चिन्ता लग रही थी कि कहीं काम ही बन्द न हो जावे।

: १६ :

कोलीमा के मुख्य स्थान पर तो अब तक पक्की इमारतें बन गई थीं। उनमें अफसर लोग और लकड़ी के छाजनों में बन्दी लोग रहते थे। कालीमा को चारों ओर से काँटेदार तारों के घेरे में लपेटा हुआ था। इस घेरे के बाहर प्रति सौ पग के अन्तर पर एक संरक्षक रहता था। दिन में और रात में संरक्षक बदले जाते थे। अफसरों और संरक्षकों को रहने को पक्के मकान और खाने को मांस-रस तथा सफेद रोटी मिलती थी और बन्दियों को काले आटे की रोटी, नमक मिर्च और गरम चाय मिलती थी। यात्रा से तो भोजन मात्रा और प्रकार में अच्छा था। इस पर भी परिश्रम करने वाले के लिए पर्याप्त नहीं था। इस कारण बन्दियों को अपने समय की कैद भुगतने के पहले ही संसार से छुटकारा मिल जाता था।

मजीद और ग्रोमोव इस समस्या को समझते थे। ग्रोमोव को लैब-रोस्की ने सब बातें बता दी थीं और उसको यह भी बता दिया था कि संरक्षकों को प्रसन्न रखने से वे अच्छा भोजन प्राप्त कर सकेंगे। ऐसा करना अत्यावश्यक था। उनको भागने को अवसर मिलने पर अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना था।

मजीद ने तो गवर्नर से मिलकर, अपने पढ़े-लिखे होने का परिचय दिया और कहा कि यदि आधा समय खान का काम और आधे समय क्लर्की का काम लिया जाय तो वह अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। वह जीवन-भर के लिए बन्दी है। उसने छूटकर जाना नहीं, इस कारण यदि उसका जीवन लम्बा होगा तो समाज को ही लाभ होगा।

ग्रोमोव बहुत सुन्दर गाना गाता था। इस प्रकार दोनों को हलका काम मिल गया। प्रायः रात के समय ग्रोमोव अफसरों की क्लब में गाने जाता था और वह अपने साथ मजीद को भी ले जाता था। वहाँ उनको अच्छी प्रकार की शराब मिल जाती थी। मजीद की राय से ग्रोमोव थोड़ी-थोड़ी करके शराब अपने रहने के शैड में लाने लगा। एक बड़ी बोतल में उसको जमा करना आरम्भ कर दिया। यह सब वे इस आशा में कर रहे थे कि किसी दिन उन्होंने भागना है। इसके साथ उन्होंने एक बात और की। गवर्नर का पी० ए० क्लब में अपना रिवाल्वर बाँधकर आया करता था। कमर में गोलियों की बैल्ट भी रखता था। एक दिन ग्रोमोव ने उसको शराब पीने के लिए बहुत उकसाया। वासनामय गीत सुना-सुनाकर उसको इतना उत्तेजित किया कि वह अपने को शान्त रखने के लिए शराब की बोतल पर-बोतल पीता गया और अन्त में वह वहीं क्लब में अचेत हो गया।

मजीद उसको उठाकर उसके घर ले गया। ग्रोमोव साथ था। मजीद ने समय देख, उसका रिवाल्वर निकाल लिया और उसकी गोलियों की बैल्ट उतार ली।

ग्रोमोव इन दोनों वस्तुओं को लेकर एक स्थान पर बरफ के नीचे दबा आया। दोनों परमिट के आश्रय से, जो इनको मिली हुई थी, कैम्प में से बाहर क्लब तक आते-जाते थे।

इस रात वे दोनों बहुत देरी से लौटे। प्रश्न पूछे जाने पर इन्होंने बताया कि गवर्नर के पी० ए० बीमार थे और उसकी सेवा में रहे हैं।

अगले दिन पी० ए० महोदय के रिवाल्वर की खोज की गई। वह क्लब में नहीं मिला। मजीद और ग्रोमोव से पूछ-गीछ की गई। उन्होंने बताया कि जब वे उठाकर ले जा रहे थे, वह उसके पास नहीं थी। उनकी तलाशी ली गई, परन्तु उसका पता नहीं चला।

उस समय तक शीत ऋतु आ गई थी। रातें ध्रुव के प्रकाश से बहुत ही सुहावनी प्रतीत होने लगी थीं। यह प्रकाश जब होता था, तो तीन-तीन

चार-चार घण्टा रहता था और बीच-बीच में मिट भी जाता था। उस समय घटाटोप अँधेरा हो जाता था। प्रायः दिन और रात में कुछ अन्तर नहीं रहा था। इन दिनों कभी-कभी बरफ़ का तूफान भी आ जाता था। उस समय कैम्प से बाहर निकलने का प्रश्न ही नहीं रहता था।

एक दिन वे आफिसर क्लब से लौट रहे थे कि एक आदमी मजीद के साथ चलता हुआ, उसके हाथ में एक काग़ज़ का टुकड़ा दे गया। मजीद ने वह काग़ज़ अपनी चमड़े की पतलून में ठूँस लिया।

ग्रोमोव प्रायः कैम्प से क्लब को और क्लब से कैम्प को आता-जाता हुआ गाया करता था। इससे सब जान जाते थे कि क्लब समाप्त हो गई और कैम्प की बुलबुल चली आ रही है। कैम्प के संरक्षक प्रायः उससे परिचित थे।

शैड में पहुँच ग्रोमोव ने पूछा, "साथी क्या था?"

"एक सन्देश है।"

प्रकाश करने के लिए ग्रोमोव ने सिगरेट निकाला और उसको सुलगाने के लिए माचिस जलाई। मजीद ने पढ़ा। केवल दो पंक्तियाँ लिखी थीं। "कल रात के समय क्लब के पीछे, रसोई-घर के पास। लैवरोस्की।"

"अच्छी बात है," ग्रोमोव ने कहा, "हम बरफ़ के सागर में कूदने जा रहे हैं।"

"मर जायँगे, तब भी ठीक है।"

"नहीं, मरेंगे नहीं। हमको रिवाल्वर और कारतूस निकाल लेने चाहिएँ।"

"कल क्लब जाने से पहले कर लूँगा।"

बहुत बात करने के लिए अवसर नहीं था। उन्होंने शराब, जो शैड में बरफ़ के नीचे दबा रखी थी, निकाल ली और उसको अपने बिस्तर में लेकर सो रहे। बरफ़ में दबे रहने के कारण शराब जम गई थी अब बिस्तर में शरीर की गरमी से पिघल गई। प्रातः उन्होंने थोड़ी-थोड़ी पी और नदी के तट पर काम करने चले गये। आधा दिन वहाँ काम किया और

मध्याह्न का भोजन करने शैड में चले आए।

एकाएक ध्रुव का प्रकाश विलीन हो गया। मजीद ने यह सुअवसर जान, अपना कैम्प के बाहर जाने का परमिट लिया और चल पड़ा। संरक्षक ने पूछा,

"कहाँ जा रहे हो, इस समय ?"

"गवर्नर साहब के बँगले में उनकी स्त्री ने बुलाया है। आज रात क्लब में एक विशेष प्रोग्राम होने वाला है।"

मजीद घटाटोप अँधेरे में गवर्नर के बँगले में पहुँचा और उसके भीतर जाने के स्थान, उस ओर को लौट गया, जिधर उसने रिवाल्वर छिपाया हुआ था। एक चाकू, जो उसने क्लब से चुरा रखा था, निकाल बरफ़ खोदनी आरम्भ कर दी। शीत ऋतु के कारण एक और बरफ़ की मोटी तह, उसके ऊपर जम गई थी, परन्तु ध्रुव प्रकाश मिट जाने से, मजीद को खोदने को पर्याप्त समय मिल गया। उसको छः फुट की गहराई तक खोदना पड़ा। दोनों वस्तुओं को निकालकर, उसने रिवाल्वर और कारतूस तो पतलून की जेब में रख लिये और बैल्ट को गड्ढे में फेंक दिया। यह कर, वह गवर्नर के बंगले में चला आया। वहाँ पहुँच उसने गवर्नर से भेंट के लिए प्रार्थना कर दी और अपने शैड में चला आया।

सायंकाल के समय ग्रोमोव और मजीद क्लब में जा पहुँचे। कुछ काल तक वहाँ बातें कर, जब ग्रोमोव अपना चाहता गाना गाने लगा तो मजीद उठकर रसोईघर के समीप आकर खड़ा हो गया। वह वहाँ पहुँचा ही था कि एक आदमी उसके समीप आकर खड़ा हो गया। आने वाले ने पूछा, "साथी कहाँ है ?"

"भीतर है।"

"बुलाओ।"

"अभी सम्भव नहीं। कुछ देर में वह आ सकेगा।" जब क्लब के लोग खाने लगे तो ग्रोमोव गाना गा रहा था। जब लोग शराब पीने लगे तो वह पेशाब करने का बहाना कर, बाहर चला आया और रसोईघर के पीछे

मजीद से जा मिला। अब वे दोनों वहाँ मिले साथी के साथ चल पड़े। वे एक फर्लांग के लगभग गए होंगे कि वहाँ अँधेरे में दो 'स्लेज' खड़ी मिलीं। लैबरोस्की उनमें स्वयं उपस्थित था। वह ग्रोमोव से मिला और फिर मजीद से कहने लगा, "शीरीं यहाँ से बीस किलोमीटर के अन्तर पर एक ऐस्कीमो के कैम्प में प्रतीक्षा कर रही है।"

इस समाचार से मजीद में असीम स्फूर्ति आ गई। वह कैम्प की सब सख्तियों को भूल गया। सब स्लेजों में चढ़ गए। मजीद लैबरोस्की के साथ और ग्रोमोव दूसरी में बैठ गया।

इस समय एकाएक ध्रुव प्रकाश प्रकट हो गया। बरफ़ में खड़ी स्लेजें दूर से दिखाई देने लगीं। लैबरोस्की ने स्लेज भगा दी और दक्षिण की ओर चल पड़ा। उनके पीछे-पीछे दूसरी स्लेज थी। लैबरोस्की ने मजीद को बताया कि वे अवश्य देख लिये गए होंगे और अभी-अभी उनके पीछे शिकारी कुत्ते छोड़ दिये जायँगे। अब जीवन-मरण का समय आ गया है, इस कारण अपने पूरे साहस से काम लेना चाहिए।

मजीद ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर कहा, "मेरे पास यह और सौ के लगभग कारतूस हैं।"

"कहाँ पा गये हो इनको तुम?"

"वहीं कैम्प में।"

"मेरे पास भी एक है। पर हमारे दूसरी स्लेज वालों के पास कुछ नहीं।"

"तो उनको आगे निकल जाने दें। हम पीछे से उनकी रक्षा करेंगे।"

"ठीक है।"

लैबरोस्की ने हाथ के संकेत से पिछली स्लेज को आगे निकल जाने दिया और अपनी को उनके पीछे कर लिया। दोनों कुतुबनुमा हाथों में लेकर दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे। पाँच मिनट के भीतर ही दूर से गोली चलने का शब्द हुआ और उनको ऐसा अनुभव हुआ कि बरफ़ पर सैकड़ों छप-छप के शब्द उनके समीप आते जाते हैं। लैबरोस्की ने मजीद

से कहा, "अपना रिवाल्वर भर लो। मैंने अपना भर रखा है।"

दोनों स्लेज पूरे वेग से जा रही थीं, परन्तु उनका पीछा करने वाले समीप और समीप आते जाते प्रतीत होते थे। मजीद स्लेज के बीच पीछे की ओर मुख कर बैठ गया और रिवाल्वर तान, आरहे कुत्तों को देखने लगा। कुत्तों के पीछे पाँच स्लेज थीं; परन्तु उनको खेंचने वाले बारहसिंगे दुर्बल थे। वे स्लेजें धीरे-धीरे पीछे रहती जाती थीं। इसपर भी कुत्ते भागने वाली स्लेजों के समीप आते जाते थे।

सबसे आगे का कुत्ता स्लेज के पास पहुँचा, तो उसपर चढ़ने को लपका। मजीद तैयार बैठा था। उसने गोली चला दी। यह कुत्ते की छाती पर लगी और वह स्लेज के नीचे भूमि पर गिर गया। इसपर भी कुत्तों ने पीछा नहीं छोड़ा। मजीद ने एक-एक कर बीस कुत्तों को गोली का निशाना बनाया। अभी एक दर्जन के लगभग और थे, परन्तु अपने मालिकों को बहुत पीछे रह गया देख, वे भी ढीले पड़ गये।

लैबरोस्की ने कुत्तों को पीछे रहते देख कहा, "आधा काम हो गया है। शेष के लिए मंजिल पर पहुँचकर विचार करेंगे।"

लगभग बीस किलोमीटर आने पर उनको एक एस्किमों की बस्ती मिली। यहाँ चमड़े के खेमे बरफ़ पर गाढ़े हुए थे। ये एक ही परिवार के लोग थे और इस स्थान के जन्तुओं को पकड़, उनकी खालों का व्यापार करते थे।

स्लेजों के वहाँ पहुँच जाने पर शीरीं एक खेमे में से निकल आई और स्लेजों को पहचान उत्सुकता से मजीद से मिली। मजीद ने उसको अपनी भुजाओं में समेट, उसका मुख चुम्बन कर लिया।

पाँच

: १ :

ब्रजेश को जमानत पर छुड़ाने का बहुत यत्न किया गया। प्रान्त की अँग्रेजी सरकार कांग्रेस को बदनाम करने का अवसर पा, ब्रजेश को छोड़ने के स्थान रीता को भी पकड़ बैठी।

देवीदत्त के पुलिस में बयान तो हो ही गये थे कि ब्रजेश एक एलबम माँगता था, जिसमें रीता के अपने मित्रों के साथ फोटो थे। वह एलबम न देने पर ब्रजेश ने उसको मार डालने का यत्न किया था।

पुलिस ने रीता को इस आधार पर पकड़ लिया, परन्तु हाईकोर्ट में प्रार्थना करनेपर, पचास हजार की जमानत पर वह छूट गई। इसका प्रमाण नहीं था कि ब्रजेश ने यह हत्या करने का यत्न रीता के कहने पर किया था।

रीता छूटकर नैनीताल वापिस नहीं आई। वह लखनऊ में ही रह गई। इस पर भी इस मुकद्दमे की धूम समाचार-पत्रों में इतनी मची कि रीता का मन्त्रीपद हवा में विलीन हो गया। कांग्रेस मन्त्रिमण्डल बना, परन्तु रीता का नाम उसमें नहीं था।

रामी, बरेली अस्पताल में पहुँचा दी गई थी और वह वहाँ ठीक हो रही थी। डाक्टर राधाकृष्ण को इस घटना के विषय में समाचार-पत्रों द्वारा ही विदित हुआ था। 'स्टेट्स-मैन' में मोटे अक्षरों में यह समाचार छपा, 'हसबैंड आफ एन एम० एल० ए० शौट ऐट।' नीचे समाचार था। डाक्टर समाचार पढ़ अवाक् रह गया। दो दिन पीछे समाचार मिला कि

रीता पकड़ ली गई है और उसको जमानत पर छुड़ाने का यत्न हो रहा है। इस यत्न के सफल होने में दस दिन लग गये। डाक्टर रीता को मिलने गया और वहाँ से लौटते समय बरेली अस्पताल में रामी को भी मिला। रामी का घाव अभी पूर्ण रूप से भरा नहीं था। इस पर भी कोई विषमता उत्पन्न नहीं हुई थी। अस्पताल के डाक्टरों का कहना था कि एक सप्ताह में वह हस्पताल से छुट्टी पा सकेगी।

डाक्डर ने रामी को कहा, "अब तुम्हारा क्या विचार है ?"

"किस विषय में, पापा ?"

"कहाँ रहना चहती हो ?"

"जहाँ पहले रहती थी।"

"मुझको यह बताया गया है कि तुम आरम्भ से ही देवीदत्त के पास रहती थी। शायद तुम ही सब झगड़े की जड़ हो।"

रामी चुप रही।

"इससे बहुत बदनाम हो गई हो।" डाक्टर ने कहा।

"मैं यही चाहती थी। मेरी ऐसी ही योजना थी।"

"मेरा कहा मानो। दिल्ली चली आओ। किसी के पास बैठकर, अपना जीवन शान्ति से व्यतीत करो।"

"आपकी सम्मति पर विचार करूँगी।"

"कहो तो तुमको ले जाने के लिए मोटर भेज दूँ।"

"आप इतना कष्ट क्यों करेंगे ? हूँ तो मैं आपकी नौकरानी ही। मैं रेलगाड़ी से चली आऊँगी।"

"कुछ चिन्ता नहीं। मेरे पास तुम्हारे कुछ रुपये रखे हैं। वे मैं विमल की माँ के सामने तुमको दे देना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि तुम्हारा कहीं विवाह हो सके तो ठीक है।"

रामी चुप रही। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

वह जब दिल्ली आई तो उसको उसका पुराना कमरा खाली करवा दिया गया। कमली से रामी का पत्र-व्यवहार चलता रहता था। उसको विदित

था कि उसका विवाह नहीं हुआ। इस पर भी उसके देवीदत्त के घर में रहने पर, वह उसको कँवारी नहीं मानती थी। दिल्ली में वह उससे मिलने आई और उससे कहने लगी, "देखो रामी! जो कुछ हो चुका है, उसके पश्चात् कोई यह नहीं कह सकता कि तुम कँवारी हो। इस कारण यह झूठी आशा लगा रखना कि विमल आकर नीला के स्थान तुमसे विवाह कर लेगा, मिथ्या है।"

"काकी! आप ठीक कहती हैं। परन्तु मैं यदि विवाह नहीं कर रही तो इस कारण नहीं कि मैं विमल को कुछ दिखाना चाहती हूँ। यह तो मेरे अपने मन के सन्तोष के लिए है। इस सन्तोष के साथ-साथ यदि विमलजी मिल जाते हैं तो कोई हानि नहीं। इस पर भी यह मुख्य उद्देश्य नहीं।"

"तो तुम विवाह नहीं करोगी?"

"अभी तक तो विचार नहीं।"

"तो बदकारी का जीवन व्यतीत करने को चित्त चाहता है?"

डाक्टर, जो सदा स्पष्टवादी रहा था, रामी से कहने लगा, "तुम विमल और नीला के विवाह को कैसा समझती हो?"

"बहुत अच्छा सम्बन्ध है। इस पर भी इसके विषय में किसी प्रकार की सम्मति देना मेरा काम नहीं। यह परस्पर उन दोनों के सोचने-समझने की बात है।"

"यदि तुम उसको अच्छा समझती हो तो इसके बनने में तुमको सहायता तो देनी चाहिए न?"

"वह तो मैं कर ही रही हूँ। मैं शीघ्र ही दिल्ली से चली जाऊँगी।"

"केवल-मात्र चले जाने से कुछ नहीं हो सकता। तुम विवाह कर लो तो बात बन सकती है।"

"आपका अभिप्राय यही है न कि विमलजी समझें कि मेरा विवाह हो चुका है और अब उसको मेरे प्रति वचनों के पालन की आवश्यकता नहीं?"

"तुमने यह बात झूठ बोलकर करनी चाही थी। कुछ समय तक यह

चल गया, परन्तु यह बहुत काल तक नहीं चल सका। अन्त में सत्य प्रकट हो गया।"

रामी चुप रही। उसने कुछ काल तक विचारकर उत्तर दिया, "आप मुझसे अपने प्यार और सहानुभूति की बहुत भारी कीमत माँग रहे हैं। वास्तव में आप एक स्त्री के लिए किसी पुरुष की पत्नी बनना एक साधारण-सी बात समझते हैं, तभी ऐसा करने को कह रहे हैं। आपके परिवार के एहसान के नीचे दबी हुई आपको न नहीं कर सकती।"

इसके पश्चात् उसने चिरकाल तक विचारकर कहा, "आप मास्टरजी को बुला दीजिए। मैं उनसे विचारकर कोई निर्णय कर सकूँगी।"

स्वरूपरानी और कमली ने समझा कि बात बन गई है। उनका विचार था कि वह मास्टर देवीदत्त से विवाह करने को राज़ी हो गई है। विपरीत इसके डाक्टर राधाकृष्ण ने अपनी डायरी में लिखा, "रामी विमल के अतिरिक्त किसी अन्य से विवाह नहीं करेगी। वह कुछ करने जा रही है। वह क्या है, कहना कठिन है। इस पर भी वह विवाह तो प्रतीत नहीं होता। मुझको भय है कि कहीं आत्म-हत्या न कर ले।"

मास्टर देवीदत्त डाक्टरजी के टेलीग्राम पर चला आया। दिल्ली में आकर उसको पता चला कि किस लिए बुलाया गया है। जब डाक्टर राधाकृष्ण ने पूर्ण समस्या उसके सामने रखी तो वह खिल-खिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, "आपको न तो मैं कोस सकता हूँ, न ही आपको शिक्षा दे सकता हूँ। आप आयु में, शिक्षा में और अनुभव में मुझसे बड़े हैं। इस पर भी मुझको आपकी सब बातें बच्चों-सी प्रतीत होती हैं। रामी आपके और मेरे मुकाबिले में एक अनपढ़ छोकड़ी ही तो है; परन्तु उसके काम विचारशीलों के लिए एक विचित्र समस्या उपस्थित करते हैं। मैं तो उसको समझ नहीं सका।

"जब से मैंने होश सम्भाला था, मैं समाज की वर्तमान समस्याओं पर विचार करता रहा हूँ। मैंने इमोसा, इजाया, प्लेटो, सुकरात, अरस्तु, ईसा, मुहम्मद, वर्जिल, टॉमस मूर, कार्ल मार्क्स और एंजिल इत्यादि कई

फिलासफरों को पढ़ा है और समझने का यत्न किया है। उन सबके प्रभाव को इस रामी ने अपने आचरण से मिथ्या सिद्ध कर दिया है।

"मैं तो इस लड़की से विवाह करने के लिए तैयार था, पर अब मैं समझता हूँ कि उसको इस बात के लिए कहना अन्याय हो जायगा। कोई समय था कि मैं अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए कोई भी उपाय प्रयोग करने के लिए उद्यत रहता था। पर अब अन्याय और अत्याचार के अर्थ समझने लगा हूँ और साधनों में उनको सम्मिलित करना नहीं चाहता।"

डाक्टर ने देवीदत्त की बात सुनकर, उसे केवल यह कहा, "तुम रामी से इस विषय पर बात कर लो और पीछे अपनी धारणा बताना।"

: २ :

देवीदत्त रामी से एकान्त में मिला। रामी ने उसको देख कहा, "तो आप आ गए हैं?"

"हाँ, पता लगा है कि तुमने बुलाया है।"

"इसलिए बुलाया है कि एक धनी-मानी पढ़ा-लिखा व्यक्ति एक निर्धन भिखारी की लड़की के आत्म-अभिमान को तोड़ना चाहता है। आप क्या करने को कहते हैं?"

देवीदत्त ने इन शब्दों में छिपी मन की वेदना को अनुभव किया और केवल यह कहा, "मैं इस पाप में भागीदार नहीं हूँगा रामी!"

"तो क्या मैं आप के पास पहले की भाँति रह सकती हूँ?"

"तुमने मेरे लिए वह कुछ किया है, जो मैं जीवन-भर भूल नहीं सकता। इस कारण तुम जैसे भी रहना चाहोगी, रह सकोगी। परन्तु मैं एक बात पूछता हूँ कि तुम इस प्रकार छिपकर क्यों रहती हो? जो तुम नहीं हो, वह क्यों बनना चाहती हो? झूठ अधिक काल तक छिपा नहीं रह सकता। तुम उसके प्रचार में सहायक क्यों होती हो?"

"मैं विमल और नीला के सम्बन्ध में बाधा बन खड़ा होना नहीं चाहती।"

"यही तो पूछ रहा हूँ, कि क्यों?"

"मैं विमल से प्रेम करती हूँ और उसकी उन्नति में बाधा बनना नहीं चाहती ?"

"तुमने उसको उन्नति करने का अवसर तो दे दिया है। अधिक-से-अधिक तुम उनके समीप न रहकर कहीं दूर जा बसो, परन्तु छिपकर अथवा वह बनकर, जो तुम न हो, न बनना चाहती हो, रहना तो पाप हो जावेगा। यह तुम्हारा अपने साथ अन्याय हो जावेगा।"

रामी विचार करती रही और चुप रही। उसे चुप देख देवीदत्त ने अपना कथन जारी रखा, "मैं तुम को एक बात और बता देना चाहता हूँ। विमल और नीला का विवाह होगा ही, कोई नहीं कह सकता। जो बात सन्दिग्ध है, उसके लिए तुम अपनी आहुति क्यों देती हो ?"

रामी को देवीदत्त की बात में युक्ति प्रतीत हुई। इस पर भी वह सब कुछ जानती हुई डाक्टरजी के सम्मोहन प्रभाव में, जो उनके सुहृदयपूर्ण व्यवहार से बना था, विचर रही थी। वह उनको न नहीं कर सकती थी। इस कारण उसने कहा, "आप का कहना सर्वथा सत्य है। मैं तो विमल के अतिरिक्त किसी से प्रेम नहीं कर सकती। परन्तु एक समय था, जब आप प्रेम को एक मिथ्या भावना मानते थे और वासना-तृप्ति को ही मुख्य बात समझते थे। उस समय मैं आपको गलत कहती थी। परन्तु अब इस परिस्थिति में, यदि मैंने अपना शरीर किसी के अधीन करना ही है, तो फिर आप ही सही। आप जाने-बूझे तो हैं।"

रामी की आँखें तरल हो गई थीं। देवीदत्त ने यह देखा, समझा और सिर हिलाकर न कर दी। उसने भर्राये स्वर में कहा, "मैं अब वह नहीं रहा रामी ! मेरे सब पूर्व-विश्वास शिथिल हो गए हैं और नवीन धारणाएँ बन रही हैं।

"मैं समाज-सुधार के लिए बल-प्रयोग को हानिकर मानने लगा हूँ। मेरे मन में यह धारणा बन गई थी कि मैं बहुत फिलासफरों को पढ़ चुका हूँ और सब कुछ समझ गया हूँ। अब मेरे मन में अपनी समझ-बूझ पर सन्देह उत्पन्न हो गया है। मैं दूसरों की बातों को सुन, उन पर मनन करने

लगा हूँ। मैं भाग्य, जिसके अर्थ हैं पूर्व जन्म और उत्तर जन्म, को मानने लगा हूँ। यही कारण है कि मैं धोखा-धरी से समय पर काम निकालने को न केवल व्यर्थ प्रत्युत् अकल्याणकारी मानने लगा हूँ।

"मैं सिद्धान्तों से कार्ल मार्क्स का अनुयायी था, परन्तु उक्त परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वह मुझ को उस व्यक्ति की भाँति प्रतीत होने लगा है, जो अन्धेरे में मार्ग ढूँढ़ता हुआ, खाई में गिर पड़ा हो···।"

रामी ने बात बीच में ही काटकर कहा, "मास्टर जी, इन सब बातों का मेरे साथ क्या सम्बन्ध है ? मैं तो आप जितनी पढ़ी-लिखी नहीं और आप के मन में चल रहे वादविवाद को न तो समझती हूँ और न समझने की आवश्यकता मानती हूँ। मेरा मार्ग तो सरल और सीधा है। अपने इष्टदेव की सेवा करनी है। वह सेवा उसकी उन्नति में सहायक होकर हो सकती है। पापा और मम्मी कह रहे हैं कि मेरा विवाह कर लेना विमल के मार्ग को साफ़ कर देगा। मैं तो यह समझना चाहती हूँ।"

"मैं यही कह रहा था। मैं समझता था कि तुम मुझ से झूठ-मूठ का विवाह कर मेरे साथ, जैसे हम पहले रहते रहे हैं, वैसे अब विवाह की ओढ़नी ओढ़कर रहना चाहती हो। यदि मैं विवाह के पश्चात् शरीर का भोग माँगू तो तुम संसार के अन्य प्राणियों से मुझको श्रेष्ठ मानती हो। यही न ?"

रामी ने उत्तर नहीं दिया, परन्तु उसके आँसुओं की अविरल धारा उस के मन के आशय को बता रही थी। देवीदत्त ने कुछ काल तक उसको इस धारणा को समझने का अवसर दिया। पश्चात् कहा, "मेरे कहने का अर्थ यह है कि मैं तुम को अपनी बहन मानता हूँ। इस कारण न तो तुम से विवाह करूँगा और न ही कभी पति के अधिकार माँगूगा। साथ ही मेरा तो यह कहना है कि तुम इस प्रकार का झूठ-मूठ का विवाह करो ही क्यों ? फिर तुम में और रीता में अन्तर ही क्या रह जावेगा ? उसने भी तो अपनी एक महत्वाकांक्षा के लिए झूठ-मूठ का विवाह किया है और तुम भी वही करने के लिए कहती हो। उसने अपने जीवन का महल झूठ के आधार पर

खड़ा करना चाहा है, जो प्रकृति ने गिराकर रखकर दिया है। क्या तुम भी यही कुछ चाहती हो?"

इसने सब समस्या का विश्लेषण कर दिया। रामी ने अब दूर क्षितिज के समीप एक आशा की किरण देख, उत्साहित हो पूछा, "तो आप मुझको क्या करने को कहते हैं?"

"छोड़ो इस कोठी को। इसने रीता उत्पन्न की है। यह नीला का निर्माण कर रही है, जिसके भविष्य के विषय में कहना कठिन है। यह कोठी अब तुमको रीता के मार्ग पर धकेलना चाहती है।

"डाक्टरजी के लिए मेरे मन में आदर है, परन्तु वे शुद्ध वैज्ञानिक-मात्र हैं। वर्तमान विज्ञान अभी वास्तविकता से बहुत दूर प्रतीत होता है। यह 'ग्रोपिंग इन दी डार्क' के अतिरिक्त कुछ नहीं। यही कारण है कि आत्मा-परमात्मा को प्रयोगशाला की कुठाली में गलाकर, परीक्षण करने वाले डाक्टर साहब मिथ्या मार्ग के राही बन गए हैं।

"मैं उत्तर-काशी में एक को जानता हूँ। तुम वहाँ चली जाओ और अपना निर्वाह करने का यत्न करो। भगवान् तुम्हारा भला करेगा। भाई मान मुझसे सहायता का विश्वास रखो।"

देवीदत्त ने रामी से वार्तालाप का एक शब्द भी डॉक्टर को नहीं बताया। उसने केवल यह कहा, "वह अपना निर्णय कल तक विचारकर आपको बतायेगी।"

डॉक्टर और स्वरूप रानी दोनों इस बात से सन्तुष्ट थे। वे इस समस्या का अन्त एक-आध दिन में देखने की आशा कर रहे थे।

: ३ :

नीला को यह विश्वास हो गया था कि रामी के त्याग की बात विमल को पता चल गई तो वह उसको छोड़ रामी से विवाह कर लेगा। वह दर्पण में अपना मुख देखती थी और रामी से उसकी तुलना करती थी। वह रामी से कई गुना अधिक गौर वर्ण और सुन्दर अपने को पाती थी। साथ

ही अब वह बी० ए० में पढ़ रही थी। रामी का रंग गंदमी और शरीर दुबला-पतला था। वह किसी स्कूल कालिज में पढ़ी नहीं थी, इस पर भी उसके मुख पर एक विशेष प्रकार का ओज था और उसकी चाल-ढाल में एक अद्भुत सौम्यता थी, जिसके सामने उसको अपना सब-कुछ फीका प्रतीत होने लगता था।

जैसे किसी सुन्दर वस्तु के पाने की इच्छा होती है, वैसी ही भावना नीला में विमल के प्रति थी। इसके अतिरिक्त उसके मन में विमल के बिना किसी प्रकार का अभाव प्रतीत नहीं होता था। वह विमल के, उसको अस्वीकार करने पर किस से विवाह करेगी, सोचती रहती थी। एक समय उसका आकर्षण देवीदत्त की ओर था, परन्तु उसको एक निर्धन, कोरा तार्किक मान, उसका विचार छोड़ बैठी थी। कभी वह अपने परिचित लड़कों में एक पर दृष्टि डालती थी और कभी किसी दूसरे पर।

एक तो विमल के विषय में कुछ निश्चय न होने के कारण और कुछ अपने माप-दण्ड से किसी लड़के को उपयुक्त न मानने के कारण वह अनिश्चित मन थी। इतना उसके मन में स्पष्ट था कि बी० ए० पास करने के पश्चात् उसका विवाह होगा। एक धनी बाप की बेटी होने से उसके मन में यह धारणा-सी बैठी हुई थी कि समय आने पर अच्छे-से-अच्छा लड़का उस का पाणि-ग्रहण करने के लिए मिल जावेगा।

जब देवीदत्त दिल्ली आया तो उसके मन में एक बार तो धड़कन उत्पन्न हुई, परन्तु उसकी साधारण पोशाक देख वह दब गई। देवीदत्त रामी से मिलकर कोठी की लान में घूम रहा था और रामी के व्यवहार पर मनन कर रहा था। उसे गम्भीर विचार में देख, नीला ने समझा कि रामी से उसकी कोई बात निश्चय हो गई है। वह उस निश्चय की रूप-रेखा को जानने की उत्सुकता को रोक नहीं सकी। वह देवीदत्त के समीप आकर बोली, "जीजा जी, क्या मैं आप को बधाई दूँ ?"

"किस बात के लिए ? मैंने कौन समर जीती है, जिसकी बधाई देना चाहती हो ?"

"रामी को जीतना, समर जीतने से अधिक नहीं है क्या ?"

"नीला देवी ! तो रामी को जाकर बधाई दो। उसने मुझको जीत लिया है।"

नीला ने समझा कि दोनों के विवाह की बात हो गई है। इससे प्रसन्न हो उसने कहा, "बात एक ही है। विवाह में पति को बधाई दूँ अथवा पत्नी को, क्या अन्तर पड़ता है ? कौन कह सकता है कि किसकी जीत और किसकी पराजय हुई है।"

"बहुत समझदार हो गई हो नीला ! परन्तु जो तुम समझी हो, बात वह नहीं है। विवाह में किसी की भी जीत और पराजय मैं नहीं मानता। उसमें उभय पक्ष बराबर ही रहते हैं। मेरा आशय तो विचारधारा से है। मैं उस अनपढ़ लड़की से हार गया हूँ। उसकी जीवन-मीमांसा मेरी धारणा से श्रेष्ठ सिद्ध हुई है। मैं एक स्कूल मास्टर के मानवीय जीवन से पतित होकर एक वेश्या का पति बन गया हूँ और वह एक भिखारी की लड़की के स्तर से उठकर, अपने चरित्र के कारण, दिल्ली के एक समृद्ध परिवार में त्रास उत्पन्न कर रही है।"

"हम उससे डरते नहीं हैं। यह तो केवल पापा की उदारता और सहिष्णुता है, जो उसको समझा रहे हैं।"

देवीदत्त खिलखिलाकर हँस पड़ा। नीला ने खीजकर पूछा, "आप इसको ग़लत समझते हैं क्या ?"

"नहीं, मैं इसको ऐसा ही समझता हूँ। हँसने में कारण केवल यह है कि रामी इसको ऐसा नहीं समझती। वह समझती है कि यदि वह विवाह नहीं करेगी तो आपके परिवार पर भारी मुसीबत आन पड़ेगी और उसको आपके परिवार की कठिनाई दूर करने में यत्न करना चाहिए।"

"उसके ऐसा करने और सोचने से ही तो मैं उससे घृणा करने लगी हूँ। वह अपने को शायद बहुत सुन्दर समझती है कि उसको देखते ही विमल जी उस पर लट्टू हो जायँगे।"

देवीदत्त हैरान था कि नीला को हो क्या गया है। क्या यह वही

नीला है, जो पिछले वर्ष नैनीताल में उससे सहानुभूति रखती थी और उसके स्नेह की पात्र बन गई थी। वह नीला के आज के व्यवहार को समझ नहीं सका था। उसने उसको अपने मन की बात कहने के लिए और प्रोत्साहन दिया। उसने पूछा, "नीला ! मैं तुम्हारे भावों को भली भाँति समझता हूँ। पर तुम्हारे माता-पिता क्यों उसको विवाह करने के लिए विवश कर रहे हैं ?"

"वे समझते हैं कि उसका घर-घाट तो है नहीं। बिगड़ गई तो जीवन बरबाद हो जावेगा। इस कारण मानवता के नाते वे उसको समझा रहे हैं कि विवाह कर कहीं किनारे लग जाय।"

"विमल के विषय में तो कोई सन्देह नहीं है न ? उसका समाचार तो आता होगा।"

"वे तो मुझको वैसे ही लिखते हैं, जैसे मैं उनकी होने वाली पत्नी हूँ। मुझको उनसे कोई शिकायत नहीं है।"

"तब तो ठीक है। मैं तुमको ऐसा पति पाने के लिए बधाई दिये बिना नहीं रह सकता। मैं आज ही डाक्टरजी से कहूँगा कि रामी पर अपना समय और शक्ति व्यर्थ न गंवाएँ। उसको जाने दें, जहाँ वह जाती है और करने दें, जो कुछ वह करना चाहती है।"

"पर, शायद वह आपके विषय में विचार करते हों ?"

"मेरे विवाह के ? मेरा तो विवाह हो चुका है। आपकी बहन रीता से। अब दूसरा क्या होगा ?"

"पर एक समय तो आप मेरे से विवाह का प्रस्ताव लेकर आये थे।"

"हाँ। वह पागलपन था। अब वह दूर हो चुका है।"

"तो दीदी से आपकी सुलह हो गई है ?"

"सुलह तो नहीं हुई। हाँ, मेरे मन में उसके प्रति जो बहुत-सी मैल थी, वह दूर हो गई है। मैं उस कॉन्ट्रेक्ट को, जो मेरा उसके साथ हुआ था, एक मानयुक्त वस्तु समझता था और उसके पूरा कराने का हठ करता था।

"अब मेरा विचार बदल गया है। मैं उस कॉन्ट्रेक्ट को एक अति-घृणित बात मानने लगा हूँ। मैं उसकी पूर्ति के लिए हठ करना अपने लिए निन्दनीय वस्तु समझने लगा हूँ।"

नीला देवीदत्त की इस कलाबाजी पर चकित रह गई। वह उससे प्रेम करना पागलपन मानने लगा है। वह रीता से अपना विवाह तो मानता है, पर उससे कुछ प्रतिकार माँगना निन्दनीय बात समझने लगा है। इस अपने आश्चर्य को, वह छिपा नहीं सकी। उसने पूछ ही लिया, "बहुत विचित्र है। पर यह कैसे हुआ? यह विचार परिवर्तन कैसे हुआ है?"

"नीला! यह बात अनुभव की है, युक्ति की नहीं। मैं तुम को बताता हूँ, पर शायद समझा नहीं सकूँगा। समझ तो तब ही आवेगी, जब तुम भी कभी वैसी ही परिस्थिति में जा पड़ोगी, जैसी में मैं पड़ गया था।

"मैं मानता था कि मरने के पीछे कुछ नहीं रह जायगा। इस कारण पूर्ण सुख इस जीवन में प्राप्त करने का यत्न करता रहता था; परन्तु जब ब्रजेश ने मुझ पर पहली गोली चलाई और दूसरी के लिए रिवाल्वर ताना, तो मैं ऐसा घबराया कि मैं उसका विरोध करना तो दूर रहा, अपनी मौत सामने खड़ी देख, आँखें मूँद खड़ा हो गया। रामी ने क्या किया और किस प्रकार साहस बाँध गोली के लिए मेरे सामने खड़ी हो, सीना तान दिया, मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह क्या बात थी, जिसने उसको अपनी जान जोखम में डालने के लिए तैयार कर दिया, किस प्रकार उसने अपना सिर मृत्यु के मुख में दे दिया, यह वर्णन से ऊपर है। यह साहस, यह वीरता उसमें कहाँ से आई?

"मैंने जब इस विषय पर विचार किया तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि वह जीवन-मीमांसा, जिसको मैं मानता था, असत्य थी। वास्तविक जीवन की व्याख्या रामी की है, जो जीवन को सत्य मानती हुई भी, इसको त्यागने के लिए सदैव तत्पर रहती है।"

"तो अब आप रामी से विवाह करेंगे?"

"वह मुझको अपना बड़ा भाई मानती है और मैं उसको बहन। ऐसी

अवस्था में मैं उससे कैसे विवाह कर सकता हूँ ? मेरे विचार-परिवर्तन से पहले, मैं उससे विवाह करने का अवसर पाता तो कर लेता। उसकी, अपने विचार से कृत्रिम, भावनाओं को कुचल भी डालता, परन्तु जिनको, तब कृत्रिम भावनाएँ समझता था, वे आज सत्य तथा साकार दिखाई देने लगी हैं।"

नीला के आत्माभिमान को सबसे अधिक ठेस तब पहुँची, जब देवीदत्त ने बताया कि उसका उससे विवाह का प्रस्ताव पागलपन था। वह जानती थी कि उसकी सगाई विमल से हो चुकी है और उसके लिए इस बात की आशंका करने में कोई कारण नहीं कि उसका विवाह विमल से नहीं हो सकेगा। परन्तु वह विमल की बदल देवीदत्त को समझती थी और आज उसका यह कह देना, उसको रुचिकर नहीं हुआ। इससे उसने मास्टर जी से सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "यह तो ठीक है कि आप प्रगतिशीलता छोड़, रूढ़िवाद के कीचर में फँस गये हैं और आपको यह रुचिकर प्रतीत हो रहा है; परन्तु आपका क्या होगा ? आप अब शीघ्र ही विवाह करने की आयु से ऊपर हो जायँगे। यह रामी, जो आपके जीवन को रंगीन किये हुए थी, कहीं विलीन हो जायगी और फिर आपके जीवन का अन्तिम भाग नीरस, शून्य और निःसहाय रह जायगा। मुझको इसका भारी शोक है। पर इस स्वार्थरत संसार में कौन किसी की सहायता कर सकता है ?"

"नीला देवी ! मैं तुम्हारी, मेरे प्रति इस सुहृदयता और सहानुभूति के लिए आभारी हूँ। अब तो यही कह सकता हूँ कि भगवान् निर्बल के सहायक होते हैं।"

: ४ :

रात को बहुत देर तक बातचीत होती रही। नीला के विवाह के विषय में, विमल के आगामी वर्ष पढ़ाई समाप्त करने के विषय में, ब्रजेश के इसी वर्ष बैरिस्टर बन लौट आने के विषय में और रीता के विषय में। किसी ने रामी और देवीदत्त को इस वार्तालाप में घसीटने का यत्न भी नहीं किया। रामी और देवीदत्त इस गोष्ठी में उपस्थित तो थे, परन्तु उन्होंने इस वार्तालाप

में कोई भाग नहीं लिया। जब नींद ने विवश कर दिया तो सब जाकर सो रहे। अगले दिन सबसे पहले जागने वाला डॉक्टर राधकृष्ण था और वह अपने स्वभावानुकूल गुलेल लेकर कोठी की लान में आ गया और किसी कौए इत्यादि का शिकार करने की बात सोचने लगा।

एक-आध गुलेल छोड़ी भी परन्तु सफलता नहीं मिली। इससे उसने गुलेल को अपने नाईट-गौन की जेब में रख, लान में टहलना आरम्भ कर दिया। इस समय स्वरूपरानी भागती हुई आई और बोली, "रामी लापता है। वह अपने कमरे में नहीं है।"

"कहाँ गई है?"

"चौकीदार ने बताया है कि प्रातः पाँच बजे वह अपने कमरे से निकल, कोठी के बाहर चली गई थी और फिर लौटकर नहीं आई।"

"यह अन्तर है रीता और रामी में। एक ही कार्य की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न होती है।"

"आप तो प्रत्येक बात में सिद्धान्तों की विवेचना करने में लगे रहते हैं। समय पर क्या करना चाहिए, कभी विचार नहीं करते।"

"मैं तो समझता हूँ कि मनुष्य अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता। जो कुछ वह करता है, प्रकृति की प्रेरणा से ही करता है। प्रकृति जन्म के वातावरण से बनती है। उस वातावरण में माता-पिता का स्वभाव और उनकी......।"

"फिर वही बात शुरू कर दी आपने। मैं कहती हूँ कि इन विवेचनाओं को छोड़ कार्य करने की सोचिए। आपके मनोवैज्ञानिक परीक्षण बहुत हो चुके। उनके परिणामों को जीवन में भी ढालने का यत्न करिए।"

"तो क्या करूँ?"

"पता करिये कि वह कहाँ ठहरी है। विमल की माँ के घर ठहरने न दीजिए। दिल्ली से बाहर हो तो कोई ऐसा प्रबन्ध करिए कि वह विमल के जीवन में पुनः न आ सके।"

"देखो रानी! मैंने रीता को ठीक मार्ग पर लाने का यत्न किया था।

क्या परिणाम हुआ है ? इस छोकड़ी को भी मैं अपने विचार मार्ग पर लाने का यत्न कर रहा था। इसका परिणाम रीता से भिन्न होने पर भी मेरी योजना के अनुसार नहीं हुआ। इस पर भी तुम कहती हो तो यत्न कर दूँगा।"

देवीदत्त को जब पता चला तो वह चिन्ता प्रकट करता रहा। नीला ने सुना तो वह प्रसन्न थी। उसका विचार था कि जितना रामी भाग-दौड़ करेगी, उतनी ही बदनाम होगी।

मध्याह्न के भोजन के समय देवीदत्त ने नैनीताल लौट जाने की स्वीकृति माँगी। उसका कहना था, "मुझको बहुत शोक है कि मैं आपकी योजना में सहायता नहीं दे सका।"

"कोई कुछ नहीं कर सका।" डाक्टर का कहना था।

"इसका अर्थ यह नहीं क्या कि हमारा कार्य करने का ढंग ही ग़लत है ?"

"यही तो मैं समझा हूँ। हमने रामी के वातावरण को सुधार दिया था और शेष हमको प्रकृति पर छोड़ देना चाहिए था।"

"केवल वातावरण ही की बात नहीं। यदि यही होती तो रीता से क्या अधिक अच्छा अवसर रामी को मिला था ? मैं समझता हूँ कि बीज में भी कुछ विशेषता रही है।"

"बीज ? क्या मतलब है तुम्हारा ?" डाक्टर ने सतर्क हो पूछा।

"मेरा अभिप्राय आत्मा से है, जो पिछले जन्म के संस्कारों को और उस जन्म में, उससे भी पहले जन्मों के संस्कारों को लेकर आता है। इस जन्म का वातावरण भी कार्य करता है, परन्तु बीज तो पीछे से ही आता है।"

स्वरूपरानी ने बात बदलकर पूछा, "फिर कब आइएगा ?"

"जब आप बुलायेंगे।"

"रीता का कोई समाचार मिल रहा है क्या ?"

"हाँ उसका सन्देश आया था। वह अपना 'एलबम' वापिस माँगती है।"

"तो आपने क्या उत्तर भेजा है ?"

"कोर्ट में मेरे बयान हो जाने के पीछे ही वह दिया जा सकता है।"

"तो आप कोर्ट में उसको उपस्थित करने का विचार रखते हैं ?"

"मैं जो बयान पुलिस में और मजिस्ट्रेट के सामने दे चुका हूँ, वही तो सैशन कोर्ट में दूँगा। यदि पुलिस ने या ब्रजेश के वकील ने एलबम देखने का हठ किया तो दिखाऊँगा और यदि इस विषय में दोनों ने एलबम देखने की माँग नहीं की, तो अपने-आप उपस्थित नहीं करूँगा।"

"वह एलबम है कहाँ ?"

"मेरे एक मित्र के घर पर रखा है। आपको शायद यह पता नहीं कि कुछ दिन हुए मेरे घर में सेंध लगाकर चोरी करने का यत्न किया गया था। मेरे सब सन्दूक, अलमारियाँ, मेज़ों के डैस्क तोड़कर एलबम ढूँढने का यत्न किया गया था और उसके वहाँ न पाने पर देवी जी की मांग आई थी कि मैं उसे वापस कर दूँ।"

"कोई आपका उसके साथ समझौता नहीं हो सकता ?"

"हो सकता है। पर समझौता तो देवीजी से होना है न ? वह न तो स्वयं मिलने आती हैं और न ही कोई ऐसे लक्षण प्रतीत होते हैं कि वह समझौता कर उसका पालन करेंगी।"

"कैसे लक्षण आप देखना चाहते हैं ?"

"जब तक कोई कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों पर विश्वास रखता है, तब तक वह यह भी मानता है कि साधन गौण हैं और साध्य मुख्य। वे तो अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए प्रत्येक प्रकार का कार्य करने को तैयार रहती हैं। सामयिक कठिनाई को पार करने के लिए देवीजी कोई भी समझौता अथवा वचन दे सकती हैं। उनका पालन तो उनकी आवश्यकता पर निर्भर होगा न कि वचन पालन करने के विचार से।"

"इस पर भी समझौते के बिना संसार चल नहीं सकता।"

"ठीक है। परन्तु यह तो आप भी मान लेंगे कि मेरा संसार रीता के बिना चल रहा है और चल सकेगा।"

देवीदत्त नैनीताल पहुँचा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। रीता उसके घर में ठहर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। जब वह रिक्शा से उतर रहा था तो नौकर ने आकर सूचना दी, "दीदी जी आई हुई हैं।"

"कौन दीदी जी?"

"श्रीमती रीता देवी जी, जो निर्वाचन लड़ी थीं।"

"क्या कहती थीं?"

"कुछ नहीं। अपना कमरा खुलवाकर रहने लगी हैं।"

देवीदत्त कुछ क्षण तक वहीं खड़ा विचार करता रहा। पश्चात् रिक्शा से सामान उतरवा, मकान पर चढ़ गया। रीता सीढ़ियों पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। देवीदत्त उसका मुख देखता रह गया। बात रीता ने आरम्भ की, "दो दिन से आपकी प्रतीक्षा हो रही है।"

"किस ज्योतिषी ने कहा था कि देवी जी एक ग़रीब हैडमास्टर की प्रतीक्षा करें?"

"मैं ज्योतिष और ज्योतिषियों पर विश्वास नहीं रखती। मैं तो अपने मन की प्रेरणा से आई हूँ।"

"अच्छी बात है। क्या मैं जान सकता हूँ कि देवी जी का मन क्या कहता है?"

"आइये बैठिये, फिर मन की बात भी कहूँगी। इसी के लिए तो आई हूँ।"

देवीदत्त ने अपना कमरा खुलवाकर, उसमें अपना बिस्तर रखवाया। पश्चात् नौकर से चाय लाने के लिए कह, बैठक में बैठ गया। जब रीता बैठ गई तो देवीदत्त ने पूछा,

"हाँ! तो अब फरमाइये कि इस गरीब-खाने को पवित्र करने में क्या उद्देश्य है?"

"क्या मैं यहाँ अब नहीं रह सकती? यह घर मेरा अब नहीं रहा क्या?"

"देखिये रीता देवी! आपका विवाह मुझसे एक कॉन्ट्रैक्ट था। वह

कॉन्ट्रैक्ट आपने तोड़ा है। अभी तक कोई नया वचन-पत्र हुआ नहीं, इस कारण आप और मैं परस्पर कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते और इस घर में आपके रहने का अधिकार मैं समझता नहीं।"

"क्या वह पुराना कॉन्ट्रैक्ट पुनर्जीवित नहीं हो सकता?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"कारण स्पष्ट है। मैं वह नहीं रहा और आपका भीतर, जिस भाँति प्रकट हुआ है, वह विश्वास योग्य नहीं है।"

"मेरा भीतर कैसा प्रकट हुआ है, जो विश्वास योग्य नहीं है?"

"आपने अकारण वचन भंग किया है। आपने मेरी हत्या का आयोजन किया है। ये सब बातें मेरी छोटी बुद्धि में कुछ जँची नहीं। फिर मैं उस कॉन्ट्रैक्ट में अब कोई गुण नहीं समझता।"

"तो क्या आप मुझको तलाक दे देंगे?"

"वह हिन्दू-विधि से विवाह में होता नहीं।"

"तो मैं आपकी विवाहिता हूँ न?"

"हाँ, परन्तु असती होने से विवाहिता के अधिकारों से शून्य।"

"मैं केवल एक अधिकार माँगती हूँ और वह यह कि मैं आपकी विवाहिता हूँ और इस घर में रह सकूँ।"

"यह घर तो मेरा है नहीं। मैंने भाड़े पर लिया हुआ है। भाड़ा आगामी वर्ष की फरवरी के अन्त तक का दिया हुआ है। यदि आप इस घर में रहने का हठ करेंगी तो मैं मकान छोड़ किसी अन्य स्थान पर चला जाऊँगा। परन्तु इस प्रकार हठ करने का परिणाम आप जानती हैं। अभी ब्रजेश का मुकद्दमा कोर्ट में चलने जा रहा है। आपका उसमें क्या सम्बन्ध है, वह मैं बता सकता हूँ।"

"इसी कारण तो मैं आपसे नया समझौता करने आई हूँ। इस नये समझौते में क्या-क्या शर्तें होंगी, उनका अनुमान आप पहले ही क्यों लगाने लगे हैं? इस में यह बात भी हो सकती है कि हम पृथक्-पृथक् रहें और

एक-दूसरे का कभी मुख न देखें। इस समझौते में यह बात भी हो सकती है कि मैं अपने को आपकी पत्नी न कहूँ अथवा कोई भी ऐसी शर्त हो सकती है, जिसको हम दोनों स्वीकार कर लें। मैं चाहती हूँ कि हम यत्न तो करके देखें कि हम किसी बात पर सहमत हो सकते हैं या नहीं ?"

देवीदत्त हँस पड़ा। इस समय नौकर चाय ले आया था। रीता ने चाय लेकर बनानी आरम्भ कर दी। जब चाय का प्याला बना, रीता ने देवीदत्त के सामने रखा तो देवीदत्त ने उसको रीता की ओर बढ़ाकर कहा, "आप पीजिये।"

"मंगवाई तो आपने थी।"

"हाँ, परन्तु आपके लिए।"

"मैं तो आपके आने से कुछ काल ही पहले पीकर हटी थी।"

"तो और पी लो। देखो रीता! मैं तुम्हारे हाथ की बनी चाय नहीं पीऊँगा। मुझको प्रतिक्षण भय लगा हुआ है कि तुम मुझको विष देकर मार डालोगी।"

रीता के माथे पर त्योरी चढ़ गई; परन्तु शीघ्र ही अपना क्रोध पीकर बोली,

"आप मुझसे यह आशा करते हैं क्या ?"

"जो उद्देश्य-पूर्ति के लिए सब प्रकार के साधन प्रयोग करने में विश्वास रखता है, उससे यह आशा करनी स्वाभाविक ही है।"

"वह तो राजनीतिक क्षेत्र की बात है। उसको आप निज के जीवन में कैसे घटा सकते हैं ? हत्या करने वाले को स्वयं भी तो फाँसी चढ़ जाने का भय होता है।"

"जब कोई मनुष्य पाप करता है, तो वह समझता है कि पुलिस उसको पकड़ नहीं पायेगी। यही बात तो ब्रजेश के मन में थी, जब उसने मुझ पर पिस्तौल ताना था। यही बात प्रत्येक चोर, डाकू और हत्यारे के मन में होती है।"

"पर मैं आपको वचन देती हूँ कि मैं ऐसी कोई बात नहीं करूँगी।"

"मुझको तुम पर कोई विश्वास नहीं। हाँ, तुम यह बताओ कि इस नवीन समझौते में तुम मुझसे क्या चाहती हो। मैं तुम से समझौता करना नहीं चाहता, इस कारण मैं तुमसे कुछ भी शर्त नहीं माँगता। इसपर भी यदि तुम्हारी माँग युक्तियुक्त हुई तो मैं मान जाऊँगा। यह एक-तरफा समझौता होगा। तुम्हारे सिर पर कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। मैं यदि कोई वचन दूँगा तो उसका पालन करूँगा।"

रीता देवीदत्त के कहने पर चिन्ता अनुभव कर रही थी। वह यह मानती थी कि जब तक कोई किसी कठिनाई में फँस नहीं जाता, वह किसी भी शर्त के पालन के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। वह अभी तक किसी भी ऐसी बात को पकड़ नहीं सकी थी, जिससे देवीदत्त, अपनी मान-मर्यादा को उसके हाथ में समझे। वह चाहती थी कि जैसे उस एलबम के कारण वह उसके पंजे में है, वैसे ही उसकी कोई दुर्बलता वह पकड़ ले तो बात बन सकती है। इसी बात का विचारकर उसने कहा, "मुझको एक रात का अवसर दीजिये, जिससे मैं अपने मन में निर्णय कर सकूँ कि मैं आपसे क्या चाहती हूँ।"

देवीदत्त ने उठते हुए कहा, "तो क्या तुम कल तक अपने मन की बात कह सकोगी?"

"तो आप जा रहे हैं?"

"हाँ, होटल में ठहरने। मैंने आपकी एक बात अस्वीकार कर दी है कि मैं उसी छत के नीचे नहीं रहूँगा, जिसमें आप रहती हैं।"

इतना कह देवीदत्त ने नौकर को आवाज दी और जब वह आया तो बोला, "मेरा बिस्तर और सूटकेस जो अभी आया है, उठाकर नीचे ले चलो। मैं मिनर्वा होटल में ठहरने जा रहा हूँ।"

रीता मुख देखती रह गई और देवीदत्त, अपना बिस्तर उठवाकर मकान के नीचे उतर गया।

रीता के मुख से निकल गया, "भीरू।" उसने समझा कि मौत के भय से भागा जा रहा है। यदि इसमें दम होता तो वह इससे भय खाती। इस विचार के आने पर उसके मन में अभिमान समा गया। वह अपने को एक साहसी वीरांगना समझने लगी।

अब वह अपने मन में योजना बनाने लगी कि उसको क्या माँगना चाहिए। सब बातें, जिनके देवीदत्त से स्वीकार हो जाने पर वह सुरक्षित हो जाती, उसने विचारकर एक कागज़ के टुकड़े पर लिखीं। वह मन में विचार कर रही थी कि इस भीरु को तनिक डरा देना चाहिए। डर जाने से वह सब बातें मान जायगा। फिर इसको अपने वचन पर आरूढ़ रखने के लिए एक स्थायी भय उसके मन में जमा देना चाहिए। वह भय क्या होना चाहिए, और किस प्रकार उसके मन में भय उत्पन्न करेगी यह भी उसने विचार कर लिया था। यह सब योजना विचारते और बनाते सायंकाल हो गई। उसने नौकर को आवाज दी, "माधो! माधो!!

"चाय लाओ।"

"मास्टर जी कह गए हैं कि दूध-चीनी आदि के लिए पैसे आपसे ले लूँ।" माधो ने आँखें नीचे किए कह दिया।

"बहुत पाजी है, तुम्हारा मास्टर।"

माधो मुस्कराकर चुप कर रहा। इससे आग-बबूला हो रीता घर से निकल गई। जाते हुए वह कह गई, देखो, "मैं दस बजे लौटूँगी। दरवाजा बन्द कर कहीं सो नहीं जाना।"

वह सीधी मिनर्वा होटल में गई। वहाँ देवीदत्त चाय पी रहा था। वहाँ उसके साथ मेज पर बैठ, बैरे को चाय का आर्डर दे, देवीदत्त से बोली, "श्रीमान स्वामी जी महाराज! क्या अब आप अपनी पत्नी को चाय-पानी देने से भी न कर रहे हैं?"

"तो माधो ने तुमको बता दिया मालूम होता है। मैंने ही उसको कहा था। एक ग़रीब मास्टर, उस पर पत्नी मिली तो एक बोझा और पत्नी के

पिता मिले तो दूसरा बोझा। डाक्टर साहब ने दिल्ली बुलाया था, परन्तु एक पाई खर्चे के लिए नहीं दी। पत्नीजी घर में आई हैं और सब चीनी-चाय-आटा-दाल समाप्त कर दिया। आखिर इस गरीब मास्टर की पाकेट कितनी लम्बी हो सकती है ? उसकी भी सीमा है।"

"तो आप दिल्ली गये थे ? क्या मैं जान सकती हूँ कि किस मतलब के लिए गये थे ?"

"क्यों नहीं। जैसे मेरे साथ धोखा कर आप जैसी श्रीमती मेरे गले बाँध दी गई हैं, वैसा ही धोखा देकर, मुझको रामी के गले बाँधने का प्रबन्ध होनेवाला था। पर रीता ! रामी तुम और मुझसे चतुर निकली। वह परसों रात चुपचाप कहीं भाग गई है और तुम्हारे पिता का परीक्षण उस पर नहीं चल सका।"

"तो रामी दिल्ली में थी ?"

"हाँ ! डाक्टर साहब के बंगले में। वे उसको प्रेरणा दे रहे थे कि वह विवाह कर ले और मुझको उपयुक्त पति मान, वहाँ बुलाया गया था, परन्तु उनकी योजना सफल नहीं हुई।"

चाय आई तो रीता पीने लगी। देवीदत्त ने अपना कहना जारी रखा, "ऐसा प्रतीत होता है कि डाक्टर साहब तथा आपकी मम्मी जी के अन्तरात्मा में यह बात बैठ गई है कि उन्होंने विमल और रामी के बीच नीला को खड़ाकर अच्छा नहीं किया। इस कारण वे विमल के विलायत से लौटने के पूर्व ही रामी को कहीं किसी के गले में बाँध देना चाहते थे।"

"यही तो हिन्दू-समाज में दोष है। माता-पिता लड़कियों के लिए वर ढूँढते-फिरते हैं और प्रायः उनका चुनाव ग़लत होता है।"

"नहीं, यह बात नहीं देवीजी ! एक समय था कि मैं भी यही समझता था परन्तु अब मेरे मन में प्रकाश हो गया है और मैं यह समझने लगा हूँ कि तुम्हारे माता-पिता, माता-पिता के नाते अपने बच्चों के विवाह की बात नहीं कर रहे, प्रत्युत् एक धनी-मानी होते हुए बच्चों पर अपने अधूरे विज्ञान के परीक्षण कर रहे हैं।"

"उन्होंने अपने परीक्षणों की कीमत आपको दे दी थी। पन्द्रह हजार नकद आपको मिला था।"

"हाँ। वे शायद अब भी रामी से विवाह करने की कीमत मुझको दे देते। इस बार रामी ने और मैंने बिकना स्वीकार नहीं किया। नीला को विमल के गले में बाँधने का दाम भी उन्होंने दे दिया है। परन्तु देवी जी! मनुष्य बिकने वाला प्राणी नहीं है। बिकते वे हैं, जो मानव-कलेवर में पशु-पन रखते हैं।"

"तो पहले आपमें पशुपन था?"

"निस्सन्देह। मैं तुम्हारा सुन्दर शरीर और तुम्हारे पिता की चाँदी को देख विचलित हो गया था। इस बार मुझमें मानवता ने झगड़ा किया और वह पशुपन पर विजय पा गई।"

रीता हँस पड़ी। वह मन में सोच रही थी कि क्या मानवता भीरुपन का दूसरा नाम है।

चाय समाप्त हो चुकी थी। उसने बैरा को कहा, "मास्टरजी के हिसाब में लिखा देना।" वह उठकर बोली, "ताल तक घूमने नहीं चलियेगा?"

"नहीं। मैं यात्रा से थका हुआ हूँ। अब सोना चाहता हूँ।"

"तो रात को भोजन नहीं करियेगा?"

"नहीं। दिन का भोजन बहुत देरी से किया है। अब रात को नहीं खाऊँगा।"

"तो होटल वालों को कह दो कि जब मैं आऊँ तो खिला दें।"

"मैं उनको मना करने जा रहा हूँ कि मेरे हिसाब में आपको मत खिलाएँ।"

रीता फिर हंसी और बोली, "अच्छी बात है रात फाका रहेगा।"

"फाके की नौबत क्यों आवेगी? कोई ब्रजेश-जैसा अक्ल का अन्धा और गाँठ का पूरा मिल जायगा।"

"अच्छी बात है, तो कोई ब्रजेश ढूँढती हूँ। पर इस बार उसका निशाना नहीं चूकेगा।"

देवीदत्त हंस पड़ा और हंसकर बोला, "ब्रजेश का अपमान मत करो देवी जी ! उसका निशाना तो ठीक था, पर किसी दूसरे ने गड़बड़ कर दी थी। एक बार रामी ने और दूसरी बार माधो ने। नहीं तो वह महाशय तो हम दोनों को जहन्नुम में भेज चुका था।"

"तो इस बार रामो और माधो आप की सहायता नहीं कर सकेंगे।"

"पर एक और है, जो रामी और माधो को साधन बनाये हुए था। वह तो अब भी मेरे साथ रहता है।"

"उससे भी निपटा जा सकता है।"

इतना कह रीता चली गई। देवीदत्त को भयभीत करने के लिए उसने प्रयत्न जारी कर दिया था। उसका विचार था कि इस वार्तालाप के पश्चात् देवीदत्त को रात-भर नींद नहीं आवेगी।

अगले दिन, जब देवीदत्त उससे बातचीत करने आया तो वह उसकी आँखों में रात का अनिद्रापन देखना चाहती थी। उसने पूछा, "सुनाइये रात कैसे बीती ?"

"जैसे सदैव बीतती है। देवीजी को रोटी मिली या नहीं ?"

"बात यह है कि पुलिस से चलाए मुकद्दमे पर सब रुपया खर्च हो गया है। ब्रजेश एक सहारा था। जब आवश्यकता होती थी, उसके द्वारा प्रबन्ध हो जाता था। उसके हवालात में होने के कारण कुछ भी तो आय का साधन नहीं रहा। कल मेरे पास एक फूटी कौड़ी नहीं थी। इस कारण अभी तक कुछ नहीं खाया।"

"मुझको बहुत शोक है। परन्तु यह बात तो तुम ने बताई नहीं थी। मैंने समझा कि दबाव डालकर देवीजी भोजन करना चाहती हैं। खैर, छोड़ो इस बात को। अभी होटल में चलते हैं और भोजन करते हैं।"

"तो चलिए। मैं तो भूख से व्याकुल हो रही हूँ।"

देवीदत्त मुस्कराया और दोनों होटल में जा पहुँचे। वहाँ एकान्त में भोजन मँगवा खाने लगे। खाते हुए देवीदत्त ने पूछा, "अब बताओ। किस लिए आई हो ?"

"एक कारण तो आप को पता लग ही गया है। मेरे पास पैसा समाप्त हो गया है।"

"तो उसके लिए तुम मेरे पास क्यों आई हो? मेरे पास क्या रखा है? अढ़ाई सौ रुपया महीना में मैं तुम्हारा भारी खर्चा सहन कैसे कर सकूँगा?"

"तो मैं कहाँ जाऊँ?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूँ? जब तुम ने वचन-भंग किया था, तब ही तुम को ऐसी परिस्थिति का भी अनुमान लगा लेना चाहिए था।"

"तो आप मुझको वेश्या-वृत्ति करने के लिए विवश करना चाहते हैं?"

"इस विषय में तुम मेरी पत्नी हो ही नहीं। मुझ को तुम्हारे इस प्रकार जीविकोपार्जन करने पर ईर्ष्या नहीं होती।"

"पर मैं अपने जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ करने के लिए आई हूँ। मैं पूर्ण रूप से आप की पत्नी बनकर रहना चाहती हूँ।"

"मुझ को तुम पर विश्वास नहीं आता।"

"कैसे विश्वास दिला सकती हूँ?"

"यह बातों से नहीं हो सकता। इसके लिए जीवन का सुधार करो।"

"यही करने यहाँ आई हूँ।"

"यहाँ तुम्हारे लिए स्थान नहीं है।"

"आप विचित्र आदमी हैं! तनिक मेरी ओर देखो, देश की उच्च कोटि की सुन्दर स्त्रियों में से एक हूँ और उसका भी आप तिरस्कार कर रहे हैं?"

"तिरस्कार नहीं देवी! मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे प्रति तुम्हारा तिरस्कार समाप्त हुआ है या नहीं।"

"तो अपने सामने ही रखकर तो देख सकेंगे।"

"नहीं, मेरे सामने रहने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हारे प्रत्येक कार्य को देख रहा हूँ। जब मुझ को सन्तोष हो जायगा, मैं स्वयं जाकर तुम को ले आऊँगा।"

"और तब तक के लिए खाने-पीने का प्रबन्ध?"

"तुम्हारी मैम्बरी का अलाउन्स जो है।"

"वह क्या है ? आठ रुपये प्रति दिन मिलता है और वह भी वर्ष में केवल एक सौ बीस-तीस दिन ही तो असेम्बली बैठेगी और सब मिल मिलाकर वर्ष में एक हजार रुपये से अधिक नहीं होगा।"

"तो इसी के लिए इतना झगड़ा किया था ?"

"चुनाव तो मान-प्रतिष्ठा के लिए लड़ा गया था, न कि धनोपार्जन के लिए। कुछ, जो होने वाला था, वह ब्रजेश की मूर्खता से मलिया-मेट हो गया है।"

"उस मूर्खता में तुम्हारा भाग नहीं है क्या ?"

"गोली चलाने में नहीं।"

देवीदत्त ने हंसकर पूछा, "इसके अतिरिक्त और क्या चाहती हो ?"

"वह एलबम मुझ को दे दीजिए।"

"उसके विषय में मैं बता चुका हूँ।"

"मुकद्दमे में अपने बयानों में मेरा नाम मत लीजिये।"

"आप पुलिस के वकील से कह दीजिए कि मुझसे कोई ऐसा प्रश्न न करे, जिसके उत्तर में तुम्हारा नाम आना आवश्यक हो।"

"पुलिस पर मेरा क्या अधिकार है ?"

"तुम शासक-पार्टी की सदस्या हो। तुम जो चाहो कर सकती हो।"

"मैं बदनाम हो चुकी हूँ।"

"इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"यदि मुझको यहाँ रहने की स्वीकृति मिले, तो मैं आपके लिए बहुत-कुछ कर सकती हूँ।"

"क्या ?"

"शिक्षा-मन्त्री को कहकर आपकी उन्नति का प्रबन्ध कर सकती हूँ।"

"तो ऐसा करो कि तुम किसी अन्य प्रोफेसर, हैडमास्टर इत्यादि की उन्नति करवा दो और वह तुमको कुछ-न-कुछ सहायता दे ही देगा।"

"पर आप क्यों नहीं करते ?"

"मुझको तुम्हारे द्वारा उन्नति की आवश्यकता नहीं। जो कीमत तुम मेरी उन्नति के लिए दोगी, वह मुझको बहुत अधिक प्रतीत होती है।"

"मुझको कुछ कीमत नहीं देनी पड़ेगी।"

"तो पहले ही दे चुकी होगी। शायद तुम इसको अनुभव ही नहीं करती। कारण तुमने इसको कभी अपनी वस्तु माना ही नहीं।"

"तो फिर क्या निश्चय किया है आपने?"

"किस विषय में?"

"एलबम के विषय में।"

"अभी नहीं दे सकता।"

"अपने बयान में मेरे नाम के विषय में?"

"अपने-आप कुछ नहीं कहूँगा।"

"मेरे आपके घर रहने के विषय में।"

"अभी नहीं। मुकद्दमा समाप्त हो लेने दो। तब तक अपने व्यवहार को ठीक करो, तब ही हमारा सम्बन्ध पुनः बन सकेगा।"

"आपने मुझको बहुत निराश किया है। इस बार मैं पूर्ण रूप से आपके अधीन होकर रहने आई थी।"

"यह ठीक है, परन्तु रीता! जो कुछ तुम कहती हो, उसको परीक्षा करने का अवसर भी तो दो न।"

"उसी के लिए तो आई थी।"

"यह तो परीक्षा का परिणाम हो सकता है।"

"एक बात आप भूल रहे हैं। जब सिंहनी को चारों ओर से घेर लिया जाय और उसके लिए मार्ग न छोड़ा जाय, तो वह घातक आक्रमण करने के लिए विवश हो जाती है।"

"मैं यह जानता हूँ देवीजी! परन्तु एक बात तुम्हारे समझने की है। वह यह कि मैंने तुम्हारा मार्ग रोका नहीं है। तुमको सब ओर जाने की पूर्ण स्वतन्त्रता दे रखी है। यदि कोई प्रतिबन्ध है, तो अपने पर है, तुम्हारे पर नहीं। इस पर भी यदि सिंहनी आक्रमण करेगी तो उसका प्रतिकार करने

की क्षमता मुझमें है।"

रीता को कुछ नहीं मिला। देवीदत्त का अनुमान ठीक था कि वह एलबम लेने आई थी। शेष सब असत्य भाषण था।

: ६ :

मुकद्दमा आरम्भ हुआ। ब्रजेश पर आरोप था कि उसने देवीदत्त की हत्या करने का प्रयत्न किया है और रीता पर आरोप था कि उसने हत्या में सहायता अथवा प्रोत्साहन दिया था। ब्रजेश ने अपना कसूर मान लिया और रीता को बचा लिया। उसका बयान था कि देवीदत्त अपनी स्त्री रीता से रुपया ऐंठता रहता था। वह रीता देवी का मित्र है। वह देवीदत्त को समझाने गया। बातचीत के बीच देवीदत्त ने उसको एक एलबम दिखाई, जिसमें उसकी स्त्री, रीता के अपने मित्रों के साथ नग्न-चित्र थे। वे चित्र रीतादेवी की सम्पत्ति थी। देवीदत्त ने उसको चुरा लिया था और उन चित्रों को रुपया ऐंठने के लिए प्रयोग करना चाहता था। इस पर उसको क्रोध आ गया और उसने दो गोली चला दीं। एक गोली का निशाना व्यर्थ गया। रामी ने, जो देवीदत्त की रखेल है, उसके हाथ को हिला दिया था। दूसरी गोली चलने के समय रामी देवीदत्त के सामने खड़ी हो गई। परन्तु माधो, देवीदत्त के नौकर ने उसे पकड़कर हिला दिया। गोली रामी की छाती में लगने के स्थान, उसकी जाँघ में जा लगी।

रीता का बयान हुआ। उसका कहना था कि यह सत्य है कि देवीदत्त उससे रुपया ऐंठता रहता था। उसने ब्रजेश को कहा था कि वह इसको समझावे। इस पर भी उसका यह मतलब नहीं था कि वह इसकी अथवा किसी अन्य की हत्या करे। वह और कुछ नहीं जानती।

सरकारी वकील ने पूछा, "देवीदत्त ने कभी तुमसे कहा है कि यदि तुम रुपया नहीं दोगी, तो वह एलबम दिखायगा।"

"वह मुझसे रुपया माँगता रहता था।"

"तुम्हारी आय का स्रोत क्या था?"

"यह मैं बताने की आवश्यकता नहीं समझती।"

"वह एलबम किसकी सम्पत्ति है ?"

"मेरी है।"

"उसमें के चित्र वास्तव में तुम्हारे हैं ?"

"जब मेरे पास थी, उसमें के चित्र मेरे थे।"

"वह चित्र, जिसको देखकर ब्रजेश को क्रोध आ गया था, तुम्हारा ही था क्या ?"

"मैं नहीं कह सकती कि कौन चित्र उसने देखा था।"

"देखिये। यदि आपने टाल-मटोल कर उत्तर दिये, तो हम वह एलबम यहाँ मँगवाकर, कोर्ट में उपस्थित करने की माँग करेंगे।"

"मैं समझती हूँ कि इन प्रश्नों की आवश्यकता नहीं। इनका हत्या के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।"

इस पर कोर्ट ने सरकारी वकील से कहा, "आप इस एलबम के विषय में प्रश्न पूछकर, क्या सिद्ध करना चाहते हैं ?"

"श्रीमान् ! प्रत्येक कार्य के पीछे कुछ उद्देश्य होता है। ब्रजेश का क्या उद्देश्य था इस हत्या करने के यत्न में, और उस उद्देश्य में रीता को क्या लाभ होने वाला था, इस लाभ को रीता देवी चाहती थी अथवा नहीं और यदि चाहती थी तो उसने इस हत्या करने में प्रोत्साहन दिया होगा, इन प्रश्नों के सुलझ जाने पर रीता देवी का इस कांड में भाग लेने का पता चल जायगा।"

कोर्ट ने एलबम के विषय में प्रश्न पूछने की स्वीकृति नहीं दी। इस पर सरकारी वकील ने रामी और देवीदत्त को बयान देने के लिए बुलाया। रामी का पता देवीदत्त से मिल गया था। वह उत्तर काशी में थी। वहाँ से वह बयान देने के लिए आई। रामी ने वह सब वार्तालाप, जो ब्रजेश और देवीदत्त में हुई थी, बता दी और कहा कि एलबम उठाकर ले जाते समय, देवीदत्त के कहने पर कि इसकी नकल उसके पास है, ब्रजेश ने गोली चला दी। पर सरकारी वकील ने रीता और देवीदत्त के परस्पर सम्बन्ध के विषय में

प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये। रामी ने उस पर प्रकाश नहीं डाला। उसका कहना था, "पति-पत्नी के सम्बन्ध घनिष्ठ और गुप्त होते हैं। कोई दूसरा इस विषय में कल्पना ही कर सकता है, निश्चय से नहीं जान सकता। अनिश्चित बात को मैं अपनी साक्षी में कहना नहीं चाहती।" रीता की आय के विषय में भी प्रश्न पूछा गया। रामी का उत्तर था, "मैं नहीं जानती। जब वह अपने पति के घर में रहती थी, तब उसकी आधी आय प्रति मास बँटवा लेती थी।"

"निर्वाचन का व्यय किसने दिया था?" उससे पूछा गया।

"मैं नहीं जानती।"

"कितना व्यय हुआ होगा?"

"हजारों रुपये हुए होंगे। मुझे ठीक हिसाब का पता नहीं।"

देवीदत्त से उसके रीता से सम्बन्ध के विषय में पूछा गया, तो उसने विवाह की रात की बातचीत से ब्रजेश के गोली चलाने तक के दिन तक अपने परस्पर सम्बन्ध का वर्णन कर दिया।

"आप अपना आधा वेतन क्यों देते थे?"

"इस कारण कि कभी उसको भी आय होगी तो वह भी आधा बाँट-कर देगी। मैं उसकी अनियमित आय के विषय में कुछ नहीं जानता था और मैंने उसमें से कभी भाग नहीं माँगा था; परन्तु जब वह मन्त्री बनने की आशा करने लगी तो मैंने अपने कॉन्ट्रैक्ट के अनुसार आधे वेतन की मांग की थी, परन्तु मैंने धमकी नहीं दी।

"एलबम का प्रश्न तो तब उठा था जब ब्रजेश ने मेरी बातों पर सन्देह किया और कहा था कि मैं उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। यह एल-बम रीता के कमरे में खुली रखी थी। एक दिन मैंने देखी तो उठाकर अपने कमरे में रख ली। इससे मेरा आशय स्पष्ट था कि वह मेरे विरुद्ध कभी कोई कार्यवाई करेगी तो मैं उस पर अपना अधिकार रख सकूँगा।"

"आप वह एलबम कोर्ट में उपस्थित करना चाहते हैं?"

"मैं उसकी आवश्यकता नहीं समझता।"

इस प्रकार एलबम का प्रश्न टल गया। इस पर भी रीता के चरित्र की भारी निन्दा हो गई। वह कांग्रेस-क्षेत्रों में बहुत बदनाम हो गई। वही लोग, जो उसके आगे-पीछे भँवरों की भाँति घूमते रहते थे, उससे बात करना तक भी छोड़ बैठे।

कोर्ट ने निर्णय दे दिया। ब्रजेश को दस वर्ष का कठोर दण्ड हुआ। रीता के विषय में यह निश्चय नहीं हो सका कि उसका हत्या कराने में किसी प्रकार का भी हाथ था, इस कारण उसको आरोपों से मुक्त कर दिया गया।

देवीदत्त और रामी, ब्रजेश और रीता तथा देवीदत्त और रीता के परस्पर सम्बन्धों पर कोर्ट ने प्रकाश नहीं डाला। कोर्ट ने इस विषय को मुकद्दमे से असम्बद्ध समझ छोड़ दिया।

रामी को अपने विरुद्ध कुछ न कहते हुए देख, रीता ने रामी का धन्यवाद कर दिया। रामी ने कहा, "रीता दीदी! धन्यवाद की आवश्यकता नहीं। मैंने प्रण लिया है कि अनृत नहीं बोलूँगी। इस कारण जो कुछ मैं जानती थी, वही कह दिया है।"

"कुछ भी हो तुमने और मास्टरजी ने मुझको बचा लिया है।"

"दीदी! क्या किसी के बचाने अथवा फँसाने से कोई बचता-फँसता है? अपने कर्म इसमें प्रधान कार्य करते नहीं क्या? मेरा तो इतना ही कहना है कि यदि ऐसे कर्मों से बच सको तो बच गई समझो, अन्यथा हमारे किये से कुछ होगा नहीं।"

रीता हँस पड़ी और बोली, "अब अधिक होशियारी से बात किया करूँगी।"

रामी मुस्कराकर चुप कर रही। देवीदत्त, जो समीप ही खड़ा सुन रहा था, बोल उठा, "यह ठीक है कि जंगल की आग की भाँति बदनामी फैलती है, परन्तु जब बदनामी की बात हो ही नहीं तो फिर यह फैलेगी क्यों? सब समय रामी-जैसी सहायक मिल नहीं सकेगी।"

"बदनामी से मैं नहीं डरती। यह तो 'प्रोपेगैण्डा' से दूर हो सकती

है। जनता की स्मरण-शक्ति बहुत दुर्बल होती है। जिसको आज वह देवता समझती है, कल उसी को दैत्य समझने और कहने लग जाती है। झूठ या सत्य, दोनों के लिए प्रचार की आवश्यकता होती है। मुझको डर है, पुनः मुकदमे में फँस जाने का। इससे सतर्क रहने का यत्न करूँगी।

देवीदत्त हँस पड़ा और बोला, "रस्सी जल गई है, पर बल नहीं जले। इतना कुछ होने पर भी तुम्हारी दूषित मनोवृत्ति मिटी नहीं। नेक होने से कोई नेक हो सकता है। क्या प्रचार से काला सफेद हो जाता है?"

: ७ :

रामी ने समझा था कि जीवन की हलचल से छुट्टी मिल गई। उत्तर-काशी में शान्ति से जीवन व्यतीत करने का अवसर मिल सकेगा। देवीदत्त के एक शिष्य का मकान वहाँ था। वह स्वयं तो अलमोड़ा में रहता था और मकान वहाँ बन्द रहता था। उसमें से एक कमरा उसको मिल गया। उसने डाक्टर राधाकृष्ण से अपना रुपया जो कान्हू उसको दे गया था, मंगवा लिया। देवीदत्त भी कुछ-न-कुछ मासिक भेज देता था, इससे भोजन-वस्त्र का निर्वाह होता रहता था। शेष वह वहाँ भगवान् का भजन करती हुई, अपने अच्छे समय की प्रतीक्षा करने लगी।

शीतकाल में तो वहाँ आबादी बहुत-कम हो जाती थी। दो-चार पण्डों के मकान और बीस-तीस दुकानदारों के घर बसे रह जाते थे।

सब से अधिक भीड़भाड़ उन दिनों होती थी, जब लोग बद्रीनारायण की यात्रा के लिए वहाँ से गुज़रते थे। रामी इतना कम घर से बाहर निकलती थी कि उसका वहाँ रहना, सिवाय उस दुकानदार के, जो उसको रसद पानी देता था और कोई अनुभव भी नहीं करता था। कभी कोई नवयुवक पण्डा उसकी युवा-अवस्था के कारण विस्मय-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता था, परन्तु कुछ ऐसा तेज उसके मुख पर था कि देखने वाला, अपने को उससे बहुत निकृष्ट अनुभव कर उसके चरणों की ओर देखने लगता था। रामी स्वयं भी अपने इस प्रभाव को अनुभव कर रही थी और वह समझती थी

कि जीवन-संघर्ष समाप्त हुआ और वह अब शान्ति से आत्मोन्नति में लगी रह सकेगी।

परन्तु समय के भँवर ने फिर उसके चारों ओर घूमना आरम्भ कर दिया और वह अपने पाँव उखड़ते अनुभव करने लगी।

रूस और जर्मनी का समझौता हो गया और जर्मनी ने पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। इंग्लैण्ड और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके साथ ही भारत सरकार ने भी जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी।

जब रूस ने आधे पोलैण्ड पर अधिकार कर लिया तो बिना युद्ध-घोषणा के, रूस की भी फ्रांस, इंग्लैण्ड, भारत और अन्य मित्र-राष्ट्रों से युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई।

परिणाम स्वरूप मित्र-राष्ट्रों के नागरिकों को, जो रूस में थे, पकड़कर बन्दी बना लिया गया था। लाखों पोल-निवासियों को कन्सेन्ट्रेशन कैम्पों में भेजा गया और सैकड़ों की संख्या में फ्रेंच, इंग्लिश और भारतीयों को भी कैद कर लिया गया। इस पकड़-धकड़ में कोटलवाल भी पकड़ लिया गया।

इसकी प्रतिक्रिया भारत में भी हुई और पहले जर्मन और इटली-निवासी पकड़ लिए गये। पीछे रूसी और कम्युनिस्ट भी पकड़े गए। कम्युनिस्ट पार्टी ने यह प्रस्ताव किया था कि भारत सरकार को जर्मन के विरुद्ध युद्ध-घोषणा नहीं करनी चाहिए और भारतीयों को जर्मन के विरुद्ध किये जाने वाले प्रयत्नों में सहयोग नहीं देना चाहिए। इसके परिणाम-स्वरूप कम्युनिस्ट पार्टी अवैध घोषित की गई और भारत सरकार ने मुख्य-मुख्य कम्युनिस्टों को पकड़कर बन्दी बना लिया।

रीता जब बहुत बदनाम हुई और कांग्रेसियों ने उससे सम्पर्क कम कर दिया तो वह पुनः कम्युनिस्ट पार्टी में सक्रिय भाग लेने लगी थी और अब इस नवीन परिस्थिति में वह भी पकड़ ली गई।

मजीद लैबरोस्की और शीरीं के प्रयत्नों से सोवियट सरकार की धांधली से बचकर, कोलीमा से भाग निकला और एक एस्कीमो-परिवार की सहायता

से उत्तरी-चीन की सीमा के भीतर पहुँच गया। उत्तरी चीन में च्यांग काई-शेक के विरुद्ध विद्रोह हो रहा था। इस कारण शीरीं और मजीद एक चीनी मन्दिर में सिर छिपाकर पड़े रहे। वहाँ दोनों का विवाह हो गया। दोनों ने मन्दिर में बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली और वहाँ के नागरिक बन रहते रहे।

जापान के चीन पर आक्रमण के प्रसार पर दोनों को, मन्दिर छोड़ अन्य सहस्रों चीनियों के साथ तिब्बत की ओर भागना पड़ा। बड़ी-बड़ी नदियों को पार करते हुए, सैकड़ों मील की मरुभूमि में से पैदल चलते हुए, पहाड़ों और घाटियों को लाँघते हुए शीरीं और मजीद लाहसा पहुँच गए। यहाँ पहुँच उन्होंने सुख का सांस लिया। वहाँ से अपने रूस में अनुभवों को, एक पत्र में लिखकर मजीद ने अपनी माँ को भेज दिया।

सुलताना मजीद के भारत से चले जाने पर अपने पति-सहित अपनी माँ के घर में रहती थी। पत्र उसने पढ़ा और अपनी माँ को सुनाया। सुलताना ने अपने पति से मजीद के हिन्दुस्तान में आने पर उसकी रक्षा के प्रश्न पर विचार किया। उसका पति और स्वसुर भारत सरकार के उच्च पदाधिकारी थे। उनके प्रयत्न से सरकार मजीद के भारत में आने पर कोई कार्यवाही न करने के लिए राजी हो गई।

सुलताना ने लाहसा में मजीद को एक पत्र लिख दिया, जिसमें भारत-सरकार के आश्वासन का समाचार भेज दिया और सन् १९४० के मध्य में मजीद लाहसा से केलिम्पोंग और वहाँ से दिल्ली आ पहुँचा।

मजीद को दिल्ली में आकर रीता और कम्युनिस्ट पार्टी के भाग्य का पता चला। वह यत्न कर रीता से लखनऊ-जेल में मिलने गया। वहाँ रीता ने अपनी प्रसन्नता, जहाँ इस बात पर प्रकट की कि उसका एक पुराना मित्र भारत में लौट आया है, वहाँ इस बात पर भी अपने उद्गार प्रकट किये कि वह एक ऐसे देश में रहकर आया है जो मानव-समाज की आशाओं का प्रतीक है। उसने इस विषय में कहा,

"कॉमरेड को मैं बधाई दिए बिना नहीं रह सकती, क्योंकि वह कम्यु-

निस्टों की सब भावी आशाओं के निर्माता-देश का भ्रमण कर आया है।"

"इससे क्या होता है? यह भी वैसा ही देश है, जैसा कोई भी संसार का अन्य देश हो सकता है।"

"वहाँ आपने कम्युनिज्म को कार्य-रूप में चलते देखा होगा?"

मजीद खिलखिलाकर हँस पड़ा। रीता मुँह ताकती रह गई। जब मजीद ने इस पर प्रकाश न डाल, बात बदलनी चाही तो रीता ने हँसने का कारण पूछा, जिस पर मजीद ने कहा, "रीता देवी! कहावत सुनी है या नहीं कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं। हिन्दुस्तानी, अँग्रेजों के राज्य में भी, रूसियों से, उनका अपना राज्य होने पर भी, बदरजहा बेहतर (बहुत श्रेष्ठ) हैं। यहाँ मैं तुमसे मिलने आ सका हूँ। वहाँ मैं लगभग इसी अपराध के लिए पकड़ा गया। मैं स्वप्न में भी यह नहीं विचारकर सकता था कि मेरा कोई मित्र मुझसे जेल में मिल सकेगा।

"बाई दी वे। तुम लोग एक कमरे में कितने रहते हो?"

"मैं अपने कमरे में अकेली रहती हूँ। जब कभी साथियों से मिलना होता है तो मिल सकती हूँ।"

"कितना बड़ा कमरा है वह?"

"बारह फुट लम्बा-चौड़ा होगा।"

"ग़ज़ब है। तुमको मालूम होना चाहिए कि मैं बारह अन्य क़ैदियों के साथ एक कमरे में बन्द था, जो छः फुट लम्बा छः फुट चौड़ा था और इसी कमरे में बारह आदमी टट्टी-पेशाब करते थे और एक महीना-भर से ऊपर तक हम सब इसमें बन्द रहे।"

"क्या छत्तीस मुरब्बा फुट में बारह आदमी? असम्भव है। ऐसा नहीं हो सकता। तुम लोग तो उसमें बैठ भी नहीं सकते होगे और फिर सोते कैसे होगे?"

मजीद मुस्कराता रहा। मुलाकात का समय समाप्त हो गया और वह जेल से बाहर चला आया। भारत के जेलों की वह बहुत निन्दा सुन चुका था, परन्तु मास्को के जेल की बात स्मरण करके तो वह समझता था

कि दासता में बद्ध भारत रूस से बहुत अच्छा है।

राजनीति ने फिर पांसा पलटा। जर्मन ने बिना सूचना दिये रूस पर आक्रमण कर दिया और रूस ने जर्मन के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। इंग्लैंड और फ्रांस रूस के मित्र हो गए और भारत के कम्युनिस्टों ने जेल के भीतर से ही यह एलान कर दिया कि भारत को युद्ध में इंग्लैंड, फ्रांस और रूस की सहायता करनी चाहिए।

इस एलान को मजीद और शीरीं ने पढ़ा और कम्युनिस्टों की इस कलाबाज़ी पर खिल-खिलाकर हँस पड़े। मजीद अपने पिछले कामों को स्मरण करके तो रो पड़ा। शीरीं के, इसका कारण पूछने पर मजीद ने बताया, "ये प्रसन्नता के आँसू हैं शीरीं! एक समय था कि मैं भी इन मूर्खों की मण्डली में था। मैं अब अपने को भाग्यवान समझता हूँ कि मैं इन में नहीं हूँ। मेरे मन में प्रकाश हो चुका है।"

इस काल में मजीद को डाक्टर राधाकृष्ण से भी मिलने का अवसर मिला। उसने डाक्टर साहब को रीता से जेल में मुलाकात की बात बताई। डाक्टर ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा,

"वह तुम ही हो, जिसने उसको उधर का मार्ग दिखाया है।"

मजीद की आँखें झुक गईं। उसने धीरे से कहा, "डाक्टर साहब, आपका गिला वाजिब (उचित) है! मैं इस जुर्म का मुर्तकिब (पाप का भागी) हूँ और मैं अपने काम के लिए शर्मिन्दा हूँ। लेकिन वह तो मुझसे भी आगे भाग गई थी। मैं पीछे ही रह गया था।

"मैं उससे विवाह करने के लिए तैयार था। मैंने उसकी बहुत मिन्नत खुशामद भी की थी, परन्तु उसने शादीशुदा जिन्दगी से अवारा की जिन्दगी पसन्द की। मैं हैरान हूँ कि ऐसा वह क्यों करती रही थी?"

"मैंने उसका विवाह एक स्कूल के हैडमास्टर से कर दिया था। वह भी कम्युनिस्ट विचार का पढ़ा-लिखा नवयुवक था, परन्तु उससे भी उसकी नहीं पटी। उसके पति के मन पर रीता के व्यवहार की ऐसी प्रतिक्रिया हुई है कि वह अब कम्युनिज़्म का घोर विरोधी हो गया है।"

इस समाचार से मजीद के मन में देवीदत्त से मिलने की इच्छा उत्पन्न हुई और सितम्बर मास में, जब वह शीरीं को लेकर नैनीताल की सैर कर रहा था, देवीदत्त से मिलने चल पड़ा।

समय पाकर, रविवार के दिन वह शीरीं को साथ लेकर मास्टर के घर जा पहुँचा।

वर्षा ऋतु में रामी प्रायः नैनीताल आ जाया करती थी। इस ऋतु में उत्तर-काशी रहने योग्य नहीं रहता था। जब मजीद ने दरवाजे पर से घण्टी का बटन दबाया तो माधो नीचे आया और मजीद का कार्ड लेकर रामी के कमरे में जा पहुँचा। मास्टर साहब दो दिन के लिए बरेली गये हुए थे।

रामी मजीद का कार्ड पढ़, माधो से कहने वाली थी कि वह कह दे कि मास्टर साहब घर पर नहीं हैं, परन्तु मजीद के नाम के साथ मिसेज मजीद का नाम, हाथ से लिखा पढ़, रुक गई। उसके मन में अभिलाषा उत्पन्न हुई कि मजीद की पत्नी की सूरत तो देख ले। इस कारण वह स्वयं मजीद को मास्टर साहब की अनुपस्थिति के बारे में सूचना देने दरवाजे पर चली आई।

मजीद ने उसको नहीं पहचाना। रामी पहिचान गई। उसने शीरीं को देखा और उसके सौन्दर्य को देख चकित रह गई। वह बहुत ही भोली-भाली प्रतीत होती थी। रामी ने सिर हिला तथा मुस्कराकर उनका अभिवादन कर कहा, "मास्टर साहब घर पर नहीं हैं। कल तक लौट आने की आशा है।"

मजीद ने कहा, "हमारा कार्ड उनको दे दीजियेगा। हम कल या परसों फिर पता करेंगे।"

इससे रामी समझ गई कि मजीद ने उसे नहीं पहचाना। इस पर वह गम्भीर हो बोली, "उनके आते ही दे दूँगी।"

"आप क्या, मास्टर साहब की पत्नी हैं?" मजीद ने झिझकते हुए पूछा। डाक्टर राधाकृष्ण ने उसको रीता की सौकन के विषय में कुछ नहीं

बताया था।

"जी नहीं।" रामी ने कहा।

जब मजीद और शीरीं लौटने लगे तो शीरीं ने टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में पूछ लिया, "आपका नाम हम जान सकते हैं क्या ?"

"हाँ! आपके पति मुझको जानते हैं, परन्तु भूल गये हैं। मेरा नाम रामी है।"

मजीद ने कहा, "रामी ?" और वह स्मरण करने लगा। रामी ने उसे स्मरण कराने के लिए कह दिया, "रहीमन को तो आप भूल नहीं सकते।"

"ओह !" मजीद आश्चर्य में देखता रह गया। फिर खिलखिला-कर हँस पड़ा और बोला, "तुम ? तुम यहाँ कैसे रहती हो ? ठीक स्मरण आ गया। तुम रीता की नौकरानी के रूप में यहाँ आई होगी और जो वैक्यूम रीता के जेल में जाने पर बन गया था, भर रही हो।"

रामी हँस पड़ी और बोली, "मैं क्या हूँ, यह आप समझ नहीं सकते।"

"कुछ भी हो। तुमने रीता से बदला खूब लिया है।"

रामी के ओष्ठ हिले और उसके मुख से बहुत धीमी आवाज़ में निकल गया, "लाल बुझक्कड़।"

इस पर भी उसने उनको कुछ नहीं कहा। केवल पूछा, "तो आप फिर मिलने आवेंगे ?"

"रामी ! हमको चाय का निमन्त्रण दोगी ?"

"मैं तो आपकी पुरानी नौकरानी हूँ। आज्ञा करिये। आइये।" इस पर उसने शीरीं को एक अँग्रेज़ औरत समझ अँग्रेजी में कह दिया, 'मैडेम ! कम इन एण्ड ग्रेस दिस हम्बल एबोड बाई टेकिंग ए कप आफ टी। इट शैल गिव मी दी ग्रैटेस्ट प्लेज़र।"

रामी को अँग्रेजी बोलते देख, मजीद और भी आश्चर्य करने लगा। शीरीं जो अँग्रेजी समझती थी, रामी के निमन्त्रण को स्वीकार कर, मजीद

की बाँह-में-बाँह डाल मास्टर साहब के घर में घुस गई।

: ८ :

दो दिन पीछे देवीदत्त बरेली से लौटा तो रामी ने मजीद के विषय में बताया। देवीदत्त ने उनको होटल में, जहाँ वे ठहरे हुए थे, मिलकर रात के भोजन का निमन्त्रण दे दिया। रामी अभी नैनीताल में ही थी और इस भोजन पर उपस्थित थी।

शीरीं देवीदत्त के गम्भीर स्वभाव से बहुत प्रभावित हुई और जब उसने रीता की पूर्ण कथा सुनाई तो दाँतों तले उँगली देने लगी। "यह औरत साक्षात् शैतान का अवतार है।" ऐसा उसका कहना था।

"परन्तु शीरीं डीयर! क्या यह सब कुछ उस 'फिलौसोफी' का परिणाम नहीं है, जिसको आधारशिला बनाकर कार्ल मार्क्स ने अपनी आर्थिक व्यवस्था बनाई थी?" मजीद ने कहा।

देवीदत्त का कहना था, "विचित्र बात यह है कि उसके सिद्धान्त नवयुवकों को बहुत प्रभावित करते हैं। मुझको तो ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के सरल स्वभाव युवक और युवतियाँ इन विचारों के प्रवाह में बह जायँगे।"

"देखिए मास्टर साहब। मैं आपको एक बात और बताता हूँ। इस्लाम सिद्धान्त रूप में हिन्दू फिलौसोफी से बहुत ही घटिया है। इस पर भी इसका प्रभाव हिन्दुस्तान में ऐसा हुआ है कि एक भारी संख्या में हिन्दू मुसलमान हो गये हैं। किसी विचार की उन्नति इस बात की सूचक नहीं कि वह श्रेष्ठ है, प्रत्युत् इस बात को प्रकट करती है कि उस विचार के लोग कितने संगठित हैं। इस्लाम एक संगठन है और राजनीतिक शक्ति से इस संगठन ने लाभ उठाया है। इसी प्रकार कम्युनिस्ट सिद्धान्त जैसे हैं सो हैं, पर इन सिद्धान्तों के साथ इसके प्रवर्त्तकों ने एक संगठन का निर्माण किया है, जो इसके प्रचार में सफल हो रहा है।"

"क्या संगठन की प्रेरणा, सिद्धान्तों की श्रेष्ठता से नहीं मिलती?"

"नहीं! यह आवश्यक नहीं। संगठन झूठी अथवा सच्ची आशा की प्रेरणा से बनता है। यह उतने दिन तक रहेगा, जितने दिन तक आशा बनी रहेगी। आशा को बनाये रखने के लिए निरन्तर प्रचार और लौह-आवरण पर्याप्त हैं। कोई भी राज्य कम-से-कम कुछ काल तक इन दोनों साधनों से जनता को भ्रम में रख सकता है। धन और सेना की शक्ति इन साधनों के बनाये रखने में सफल हो सकती है परन्तु वह वैसे ही असफल होगा, जैसे भारत में इस्लाम हुआ है।"

देवीदत्त तो पहले ही कम्युनिस्ट विचारों से उचाट हो चुका था। वह अनुभव कर चुका था कि सब मनुष्यों में समानता न हो सकती है, न होनी चाहिए। वह जानता था कि मनुष्य प्रकृति से काम का चोर है। शक्ति-अनुसार कार्य का सिद्धान्त नहीं चल सकता क्योंकि, किसी की शक्ति के अनुमान लगाने का मापदण्ड न होने से सब काम-चोर हो जायेंगे। किसी मनुष्य को अपनी पूर्ण शक्ति से काम करने की प्रेरणा तो तब ही मिल सकती है जब कार्य के अनुसार फल का सिद्धान्त माना जाय।

देवीदत्त ने अपने सन्देह मजीद को बताते हुए कहा, "मजीद साहब, आप कुछ समय तक तो रूस में कम्युनिज़्म को कार्य करता देख आये हैं। क्या वहाँ सब मनुष्य स्वेच्छा से अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं?"

मजीद हँस पड़ा। उसने कहा, "इस बात के जानने का कि अपनी इच्छा से कोई कितना कार्य करता है, समय ही नहीं आया। कारण स्पष्ट है कि प्रायः मेहनत-मज़दूरी करने वाले, फौजी संगीनों की नोक पर अपनी शक्ति से अधिक कार्य कर, अपने जीवन को समय से पूर्व समाप्त करते रहते हैं।"

देवीदत्त काँप उठा। उसने कहा, "मैं ऐसा ही समझता था। यदि कोई पैसे वाला वेतन देकर उचित से अधिक कार्य कराता है, तो राज्य सेना के बल से मज़दूरों से उचित से अधिक कार्य करा सकता है। पैसे वाले को तो कभी मज़दूर धमका अथवा समझा-बुझा भी सकते हैं, पर राज्य को तो कोई कुछ कह ही नहीं सकता। राज्य के पास देश की पूर्ण सम्पत्ति और शक्ति होने से मज़दूर बेचारा विवश हो जाता है।"

"हाँ। इसके साथ ही रूस की सरकार बदली नहीं जा सकती। वहाँ का विधान ऐसा है कि बोलशिविक पार्टी के अतिरिक्त दूसरी राजनीतिक पार्टी बन ही नहीं सकती। अर्थात् जो लोग एक बार नेता बन गए, वे राज्याधिकारी होने से पुलिस और फौज के अधिकारी हो जाते हैं और उनका विरोध करने वाला फाँसी चढ़ा दिया जाना स्वभाविक है।"

"इस पर भी एक बात तो माननी ही पड़ेगी।" देवीदत्त का कहना था, "कि रूस उन्नति कर रहा है।"

"हाँ! सैनिक-संगठन और सैनिक उपक्रमों के उत्पादन में और इन पर पूर्ण जाति की स्वतन्त्रता और सुख-सुविधा का बलिदान करके।"

मजीद को रीता के व्यवहार का पता चला तो वह उससे घृणा करने लगा। देवीदत्त को रूस की भीतरी बातों का ज्ञान हुआ, तो कम्युनिज़्म पर उसके मन में उठ रहे संशयों को समर्थन मिला।

शीरीं इस सब समय रामी से बातें करती रही। शीरीं को रामी की जीवन-कथा का पता चला तो उसने पूछा, "पर यह बात समझ में नहीं आई कि तुम क्यों अपने प्रेमी के दूसरी पत्नी पाने में सहायक बन रही हो?"

उसका सरल उत्तर था, "प्रेमी के प्रेम को पाने के लिए, उसकी स्वतन्त्रता के क्षेत्र को सीमित करना उचित नहीं मानती। प्रेम आत्मा की वस्तु है और आत्मा स्वतन्त्रता का जिज्ञासु है। इसकी स्वाभाविक जिज्ञासा को छीनकर, कैसे उसका प्रेम उपलब्ध हो सकता है।"

"पर इसमें तो तुम्हारा जीवन-ध्येय प्राप्त किये बिना समाप्त हो सकता है।"

"जीवन? आत्मा मरती नहीं। यह जीवन तो आत्मा के विराट् जीवन का एक बहुत ही छोटा-सा भाग है। मरने के पश्चात् पुनः अवसर मिल सकते हैं कि प्रेमी के प्रेम की प्राप्ति हो सकती है।"

इससे शीरीं समझ सकी कि किस प्रकार एक आदमी किसी दूसरे की सेवा में मौत से भी सामना करते हुए हँस सकता है।

उस दिन मजीद और शीरीं घर लौटे तो उनको विचार करने को भारी

सामग्री मिल गई। मजीद ने अपनी वकालत आरम्भ कर दी थी और उसने परिश्रम से अपना कार्य आरम्भ किया था। इस पर जब उसको अपने रूस में जाने से पूर्व के जीवन का स्मरण हुआ तो पश्चाताप करने लगा। वह मन में विचार करता था कि कितना व्यर्थ का काम वह कर रहा था।

: ६ :

मजीद और शीरीं अभी नैनीताल में ही थे कि देश-भर में कम्युनिस्टों को छोड़ने के समाचार आने लगे। सरकार के साथ कम्युनिस्ट पार्टी का समझौता हो गया था कि वे मज़दूर-वर्ग को युद्ध-कार्य में लगाये रखेंगे।

कम्यूनिस्ट नेताओं ने जेल से निकलते ही घोषणा कर दी, "चूँकि इंग्लैण्ड और रूस अब मित्र हैं और रूस का युद्ध इंग्लैण्ड का युद्ध हो गया है, इस कारण हमको अब सरकार को सहयोग देना चाहिए। यह जनता का युद्ध है। इसमें जनता को सहयोग देना चाहिए।"

रीता भी जेल से निकली तो सीधी नैनीताल पहुँची। जेल में वह अपना स्वास्थ्य ठीक नहीं रख सकी थी। नैनीताल में वह स्वास्थ्य-लाभ करने आई थी। वह भी उसी होटल में ठहरी, जिसमें मजीद और शीरीं ठहरे थे। वह जानती थी कि देवीदत्त के घर में उसका स्थान नहीं।

मजीद यह तो आशा कर रहा था कि रीता छूट जायगी परन्तु उसको यह कभी भी आशा नहीं थी कि वह छूटते ही नैनीताल पहुँचेगी और उसी होटल में आकर ठहरेगी, जिसमें वे ठहरे हुए थे।

मजीद ने उसे अपना सामान होटल में लाते देखा तो उसको साधारण रूप में छूटने पर बधाई दी और फिर शीरीं को लेकर देवीदत्त से मिलने चला गया।

रीता कुछ दिन तो इधर-उधर अपने पुराने परिचितों के आगे-पीछे भागती रही और मजीद से मिलने का अवकाश नहीं पा सकी। अपने आने के छः-सात दिन पीछे वह निश्चिन्तता अनुभव करने लगी और एक दिन मजीद के कमरे में आकर बोली, "शीरीं बहन! तुम तो न जाने कहाँ

घूमती रहती हो। कभी मिलती ही नहीं।"

शीरीं ने कह दिया, "दिन-रात तो आपके कमरे में ताला लगा रहता था। किस प्रकार आप से मिलते ?"

"अच्छा अब मैं निश्चिन्त हो गई हूँ। सरकारी अफसरों से एक काम था। उसी के होने में इतने दिन लग गये।"

"एक कम्युनिस्ट को सरकारी अधिकारियों से क्या काम हो सकता है ?"

"अब तो कम्युनिष्ट पार्टी सरकार की नीति का समर्थन करती है। बात यह है कि इंग्लैण्ड की पराजय रूस की पराजय है। इस कारण इंग्लैण्ड और रूस दोनों एक ही नौका में हैं। नौका को डूबने नहीं देना, अन्यथा रूस गया तो फिर कम्युनिज़्म का खुर-खोज नहीं मिलेगा।"

"तुम ठीक कहती हो रीता !" शीरीं ने बात में अपनी बात कह दी, "परन्तु इसके ठीक होने में कारण यह नहीं कि रूस इसमें सम्मिलित हो गया है, प्रत्युत् इसमें कारण यह है कि एक ओर इंग्लैण्ड एक प्रजातन्त्रात्मक देश है। दूसरी ओर हिटलर और स्टालिन पूर्ण रूप में तानाशाही चला रहे हैं। हमें प्रजातन्त्रात्मक सत्ता का समर्थन करना है। इसी में मानवता पनप सकती है।"

"वही मैं करने जा रही हूँ। यू० पी० सरकार के होम सेक्रेटरी ने मेरी योजना स्वीकार कर ली है। उसने फौजी अफसरों से भी राय की है और दो-चार दिन में ही कार्य आरम्भ करने वाली हूँ। मैंने अपनी योजना के लिए पचास हजार मासिक सहायता माँगी है और एक-दो दिन में कम्युनिस्टों की एक प्रबल टुकड़ी यहाँ एकत्रित हो, फौजी भर्ती का कार्य करेगी।"

"तो तुम अब रिक्रूटिंग ऑफिसर बन गई हो। मैं तुमको इस बात के लिए बधाई देती हूँ।"

"हमारा मतलब इस प्रकार से रूस की सत्ता को बचाना है।"

"बहुत देशभक्त हो तुम। अपने देश के विषय में भी कभी विचार किया है ?"

"जब यहाँ कम्युनिस्ट राज्य बन जायगा, तब इसके विषय में भी विचार कर लेंगे। इस बात के लिए हमें रूस की रक्षा करनी है।"

शीरीं इस प्रकार की मानसिक अवस्था पर बहुत दुःखी थी।

एक दिन रीता बहुत प्रसन्न थी। वह कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं की बैठक लेकर आई थी। उसमें उसने अपने विचारों की रक्षा और प्रसार के लिए, उनको समझा-बुझाकर कुमायूँ की पहाड़ियों में घुसकर भरती करने के कार्य को चलाने के लिए कहा था और सब कार्यकर्ता कुमायूँ के हल्का को आपस में बाँटकर, इसमें जाने के लिए तैयार हो गये थे।

इससे वह अपने कार्य में अग्रसर हो रही थी। सरकार की ओर से स्वीकृत धन की पहली किश्त पचास हजार उसको मिल गई थी।

रीता जब मीटिंग से लौटी तो मजीद को अकेला देख, उसके पास आ गई और पूछने लगी, "शीरीं कहाँ गई है?"

"वह और रामी दोनों आज 'स्नो व्यू' देखने गई हैं। अपने साथ खाने का सामान ले गई हैं। सायंकाल तक लौटने का विचार रखती हैं।"

रीता ने अवसर देख, मजीद के समीप बैठकर पूछा, "यह शीरीं कैसी लगी है?"

"मुझको बहुत प्यारी प्रतीत होती है।"

"मुख कुछ, आवश्यकता से अधिक छोटा प्रतीत होता है।"

"इस पर भी बहुत सुन्दर दिखाई देता है।"

"मुझको कुछ बुद्धू-सी प्रतीत हुई है।"

मजीद चुप रहा। रीता ने समझा कि प्रहार आवश्यकता से अधिक कठोर हो गया है। इस कारण उसने अपने कहने को कुछ युक्तियुक्त बनाने के लिए कह दिया,

"बात भी ठीक है। पुरुष मूर्ख स्त्रियों को ही पसन्द करता है। वे ही उस के भोग की सामग्री बिना किसी उपहार के बन सकती हैं।"

मजीद ने रीता को अपने कहने में प्रोत्साहन देने के लिए कह दिया, "पर मैंने तो तुमको भी पसन्द किया था।"

"और मैंने भी आपकी इच्छा पूर्ण की थी।"

"मेरी इच्छा तो तुमसे विवाह करने की थी।"

"मेरा आपकी पत्नी न बनने में कारण यही था कि मैं सदैव के लिए मूर्ख नहीं बन सकी। एक दौरा था मूर्खता का, वह निकल गया तो पुनः स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की लालसा जाग उठी।"

"परन्तु यह मूर्खता का दौरा तो फिर भी आता रहा है?"

"हाँ। इस पर भी यह बीमारी स्थायी कभी नहीं हुई।"

"कुछ भी हो। जब यह बीमारी होती है, तो बहुत पुरलुत्फ़ (आनन्द-प्रद) होती है।"

"यही तो इस बीमारी के लक्षण हैं।" रीता ने कहते हुए मजीद का हाथ पकड़कर अपने गाल पर रख लिया। मजीद के मन में आया कि उसके मुख को चूम ले, परन्तु इसी क्षण शीरीं का स्मरण हो आया। उसका सुन्दर, छोटा-सा मुख उसकी आँखों के सामने घूमने लगा। वह सँभल गया। उसने बहुत धीरे से अपना हाथ खींच लिया और कहा, "तो क्या फिर वही बीमारी का दौरा सिर चढ़ने लगा है?"

"कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।"

"पर मैं अपने को सब तरह से तन्दुरुस्त पाता हूँ।"

इतना कह मजीद उठ खड़ा हुआ और पूछने लगा, "आपका अब आगे का क्या कार्यक्रम है?"

"किस विषय में?"

"यही भर्ती करने के विषय में।"

"मैं यहाँ से बरेली जारही हूँ और वहाँ रिक्रूटिंग सैन्टर खोलूँगी। इस प्रकार यू० पी० के सब जिलों में काम करना है। मेरा विचार है कि केवल यू० पी० से एक लाख सिपाई भर्ती हो जाने चाहिएँ।"

"कब बरेली जा रही हो?"

रीता ने उसको उत्तर नहीं दिया। उसने मजीद का हाथ पकड़, अपनी ओर खींचकर, उसे अपने पास बैठाने का यत्न किया। इस पर मजीद

ने कहा, "हम कल यहाँ से जा रहे हैं और मैं शीरीं के लिए कुछ भेंट खरीदने जा रहा हूँ।"

रीता ने अपना बैग खोलकर, उसमें सौ-सौ रुपये के नोटों का एक बंडल दिखाते हुए कहा, "भेंट खरीदने के लिए कुछ रुपया चाहिए तो ले सकते हैं। बताइए कितना चाहिए?"

मजीद वासना से उसकी आँखों में सुर्खी और फूलती नासिकाएँ देख रहा था। वह डर गया कि कहीं उसकी बीमारी की छूत उसको भी न लग जाय। इस कारण उसने कहा, "नहीं, मुझको रुपये की आवश्यकता नहीं। अम्मी ने खर्च के लिए काफी दे रखा है।"

"तो मुझ से भी कुछ ले सकते हैं। मेरे पास बहुत है।"

"नहीं रीता! यह सब कुछ ठीक नहीं है। तुम यहाँ से चली जाओ। तुम बीमार हो।"

रीता ने अन्तिम यत्न करने के लिए, उठकर सामने खड़े हो कहा, "आप वे सब दिन भूल गए हैं जब..................।"

मजीद को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके शरीर में आग लग उठी है। वह देख रहा था कि पग-पग पर वह ढलवान पर से नीचे खिसकता जाता है। वह अभी मन में विचार कर ही रहा था कि रीता ने उसको आलिंगन करने के लिए अपनी भुजाओं में ले लिया। एक क्षण के लिए तो मजीद परास्त हो गया, परन्तु उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सीढ़ी से फिसल रहा है। इससे अपने मन को दृढ़ कर, उसने रीता से कहा, "ठहरो रीता! इस प्रकार नहीं। इधर बैठो, मुझको कमरे का दरवाजा बन्द कर लेने दो।"

रीता ने समझा कि उसकी विजय हो गई। इससे सन्तुष्ट हो, उसने सोफा पर बैठते हुए कहा, "तो दरवाजा बन्द कर दीजिये।"

मजीद दरवाजा बन्द करने के बहाने कमरे के दरवाजे के समीप आया और इतने में अपने मन को दृढ़ कर, कमरे से बाहर निकल गया। रीता मुख देखती रह गई।

वह पाँच मिनट तक उसके लौटने की प्रतीक्षा करती रही। जब वह नहीं

आया, तो अपना बैग उठा, गरदन झुकाये अपने कमरे में चली गई।

: १० :

रामी और शीरीं 'स्नो व्यू' देखकर सायं चार बजे लौटीं। वे होटल के कमरे का दरवाजा चौपट खुला देख, वहाँ पर मजीद को न पा चकित खड़ी रह गईं। रामी ने कहा, "नीचे कहीं मैनेजर से बात करने गए होंगे।"

"पर ऐसे दरवाजा खुला तो वे कभी छोड़कर जाते ही नहीं।"

"कुछ कारण होगा इसमें। आयेंगे तो पूछेंगे।"

यह विचार कर दोनों बैठ गईं और बैरा के लिए घण्टी बजाई कि चाय ले आय। वे अभी चाय पीने ही लगी थीं कि मजीद आया और बैठते हुए बोला, "प्रिय शीरीं! हम कल यहाँ से जा रहे हैं।"

"पर मैं तो रामी बहन के साथ कल 'वाटर फॉल' देखने का प्रोग्राम बना चुकी हूँ।"

"मेरा विचार है कि रामी बहन हम को दिल्ली वापिस जाने की स्वीकृति दे देंगी।"

अब शीरीं और रामी को ऐसा अनुभव हुआ कि मजीद कुछ चिन्तित है। रामी ने पूछ ही लिया, "भाई जान! क्या बात है? कमरा खुला छोड़ कहाँ चले गए थे आप?"

"यहाँ, इस कमरे में कोई डर का कारण उत्पन्न हो गया था।"

"क्या था?" शीरीं ने चिन्ता अनुभव कर पूछा।

"एक भूत और मैं भाग गया।"

शीरीं मजीद के समीप बैठ, उसके माथे पर हाथ रखकर देखने लगी कि वह कहीं बीमार तो नहीं हो गया। उसको मजीद का यह कहना, उन्माद के लक्षण प्रतीत हुए थे। रामी मजीद के मुख पर देखती रही। उसको कुछ-कुछ समझ आया तो हँस पड़ी।

शीरीं इस हंसने का अर्थ नहीं समझ सकी। रामी ने अपना संशय

निवारण करने के लिए पूछ लिया, "भाई जान ! उस भूत को कहीं पीटना तो नहीं पड़ा ?"

"भूत ? क्या मतलब है आप का ?" शीरीं ने अपने पति को सब प्रकार से स्वस्थ देख पूछा।

" 'घोस्ट' इसका अर्थ तो शीरीं ! समझती हो न। यह कई वर्ष के पश्चात् किसी गुप्त कन्दरा में से छिपा हुआ निकल आया और उसने मुझ को इतना भयभीत किया कि मैंने यहाँ से भाग जाना ही उचित समझा।"

शीरीं को डर हो गया कि मजीद का मस्तिष्क खराब हो रहा है। परन्तु रामी को मजीद के कहने का अर्थ समझ आ रहा था। इस कारण उसने पूछा, "अब तो आप को वह भूत इस कमरे में दिखाई नहीं देता न ?"

"नहीं। मेरे चले जाने के पीछे वह चला गया प्रतीत होता है। पर वह फिर यहाँ आ सकता है।"

"मेरी सम्मति है कि आप लोग तुरन्त दिल्ली लौट जायँ। सत्य ही वह बहुत भयंकर जन्तु है।"

इस पहेली को जब शीरीं नहीं समझी, तो रामी ने कहा, "यदि आप टैक्सी से अभी जाना चाहें तो रात की गाड़ी पकड़ सकेंगे। मेरी सम्मति है कि आप को चला जाना चाहिए।"

शीरीं ने चाय छोड़ दी। होटल के नौकर को बुलाकर, बिस्तर बाँधने को कह दिया। जब मजीद अपना सामान बटोर रहा था, तो वह रामी को बहाने से मैनेजर के कमरे में ले गई और मैनेजर को बिल बनाकर कमरे में भेजने को कह, रामी से पूछने लगी, "रामी बहन ! क्या बात है ?"

"मैंने कुछ समझा है, परन्तु यह तो भाई जान स्वयं ही बतायेंगे। उनके मन के रहस्य की बात मुझसे मत पूछो, शीरीं !"

रामी को लगभग विश्वास हो गया था कि रीता ने कुछ गड़बड़ की है। वह जानती थी कि वह सरकारी अधिकारियों से बहुत हिल-मिल रही है, इस कारण वह नहीं चाहती थी कि रीता से व्यर्थ का वैर मोल

लिया जाय।

रामी शीरीं को उसके कमरे में ले आई और उससे बोली, "तो मैं आप के लिए रिक्शा मंगवाती हूँ और नीचे जाने के लिए टैक्सी का प्रबन्ध करती हूँ। आप शीघ्रातिशीघ्र टैक्सी-स्टैंड पर आजाइए, जिससे छः बजे की गाड़ी पकड़ सकें।"

इतना कह, बिना उनके उत्तर की प्रतीक्षा किये, वह होटल से नीचे उतर गई।

उसके चले जाने के पश्चात्, मजीद ने शीरीं से कहा, "रामी बहुत समझदार लड़की है। मैं चाहता था कि तुम से पृथक् में बात करूँ और वह मेरी इच्छा को समझ यहाँ से टल गई है। शीरीं! रीता से मेरा पहले कुछ सम्बन्ध रहा है। उसने आज उस सम्बन्ध को पुनर्जीवित करने का यत्न किया है। मैं हाड-चाम का बना हुआ दुर्बल प्राणी, यहाँ से चले जाने में कल्याण समझता हूँ।"

"आप बहुत ही दुर्बल मन रखते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि आज मैंने बहुत बहादुरी का परिचय दिया है। शैतान से युद्ध में मैं जीत गया हूँ। परन्तु एक बात है। रीता आजकल सरकारी अधिकारियों से मेल-मिलाप रखती है। वह कम्युनिस्ट है और अपने ध्येय की पूर्ति के लिए कुछ भी कर सकती है।

"महात्मा गांधी युद्ध में सहयोग का विरोध कर रहे हैं। मुझको भय है कि मुझसे निराश रीता, कहीं मुझको महात्मा गांधी का अनुयायी कह, तुमसे पृथक् न करवा दे।"

शीरीं सब समझ गई और शेष तैयारी पाँच मिनट में समाप्त कर, नीचे उतर आई।

जब मजीद और शीरीं रिक्शा में अपना सामान लाद रहे थे तो रीता, जो अपने कमरे में बैठी मजीद के कमरे की हलचल को देख रही थी, नीचे उतर आई और मजीद के समीप आ बोली, "तो आप जा रहे हैं?"

"हाँ।"

"क्यों ?"

"मेरे पूर्व-कर्मों का भूत मुझको कष्ट दे रहा है। मैं उससे भागा हुआ जा रहा हूँ।"

"आप ठहरिये ! मैं उस भूत को आपके मन से निकाल दूँगी।"

"मुझको आपकी योग्यता पर सन्देह है। फिर भी कभी आवश्यकता पड़ी, तो आपसे यह काम करवाने का यत्न करूँगा। मैं आपका बहुत आभारी हूँ। अब तो मन यहाँ से ऊब गया है।"

"आप बहुत बेवफा हैं।" रीता ने आँखों में आँसू लाकर कहा। शीरीं सामान गिन रही थी। मजीद ने कहा, "रीता ! तुम नहीं समझतीं क्या कि यह बेवफाई किसी के साथ वफाई की सूचक है ?"

"मैं उससे पहले आई थी।"

"कहाँ आई थी ?"

"तो यह फिर आपको स्मरण कराना होगा ?"

"मुझको स्मरण नहीं क्या ? तुमने विवाह से न क्यों की थी ?"

इस समय रामी एक रिक्शा पर सवार वहाँ आ गई। वह रीता और मजीद को झगड़ते देख हँस पड़ी। शीरीं होटल का बिल देने, होटल के कार्यालय में गई हुई थी। इस कारण रीता ने रामी को हँसते देख कहा, "शट-अप रामी ! यह मजाक नहीं है।"

रामी गम्भीर हो गई और मजीद से बोली, "मैं आपके लिए टैक्सी कर आई हूँ। पेट्रोल डलवाकर टैक्सी अड्डे पर तैयार खड़ी है। यह टैक्सी का नम्बर है और यह पन्द्रह रुपये की रसीद है।"

इस समय शीरीं होटल का बिल चुका बाहर आ गई। मजीद ने कहा, "शीरीं ! रामी को पन्द्रह रुपये दे दो। यह टैक्सी कर आई है।"

रामी और शीरीं एक ओर चली गईं। मजीद ने रीता से कहा, "देखो रीता ! मास्टर साहब से जाकर सुलह कर लो। वह बहुत ही अच्छा आदमी है।"

महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'क्विट इण्डिया' आन्दोलन की चर्चा होने लगी थी। भारत-भर के समाचारपत्र इस पर वाद-विवाद कर रहे थे। भारत के कम्युनिस्ट-नेता इस आन्दोलन का विरोध कर रहे थे। इनके लेख इत्यादि एंग्लो-इण्डियन समाचार-पत्रों में छपते थे और महात्मा गांधी के आन्दोलन का परिणाम यह हो रहा था कि सरकारी क्षेत्रों में कम्युनिस्टों की प्रशंसा हो रही थी और जनता इनके इस कार्य को जानती ही नहीं थी।

१६४२ अगस्त में रीता अपने कुछ साथियों के साथ बलिया जिला में भर्ती का काम कर रही थी। वहाँ उसने रिक्रूटिंग केन्द्र खोल दिया था। केन्द्र के बाहर लिखा था, "जनता के युद्ध में सम्मिलित होने के लिए भर्ती हो जाओ।"

देहात के लोग इस केन्द्र के बाहर कम्युनिस्ट झण्डा, झण्डियाँ लगे देख, वहाँ आते और पूछ-ताछ करते। वहाँ बैठा कॉमरेड उत्तर देता।

देहाती पूछते, "जनता का युद्ध कहाँ हो रहा है ?"

"यूरोप में।"

"तो हमको क्या ?"

"यदि जर्मन की जीत हो गई तो संसार पर शैतान का राज्य हो जायगा। शैतान को घर में आने से पहले ही तबाह कर दो।"

"भर्ती होने से हमको क्या मिलेगा ?"

"पचहत्तर रुपया महीना वेतन। वर्दी, रोटी। बन्दूक चलाने का तरीका और फिर देश-विदेश की सैर।"

"और यदि मर गये तो ?"

"सब नहीं मरते। सौ में से दस से कम मरते हैं। कौन कह सकता है कि वह अवश्य मरेगा ही। मौत तो भाग्य में होगी, तो घर बैठे भी आ जायगी। युद्ध में जाने पर शूरवीरों में नाम लिखाओगे। देश तुमको इज्जत से देखेगा और सरकार पीछे पेन्शन देगी।"

प्रायः लोग भर्ती हो जाते। कभी कोई कांग्रेस की विचारधारा को

जानने वाला आता, तो इनसे लड़कर चला जाता। परिणाम यह हो रहा था कि जहाँ भर्ती जारी थी, वहाँ भर्ती के केन्द्र और कम्यूनिस्ट पार्टी तथा रीता, कांग्रेसी लोगों की आँख में खटकने लगे थे।

नौ अगस्त को विद्युत की भाँति यह समाचार देश-भर में फैल गया कि महात्मा गांधी और अन्य कांग्रेस के नेता बम्बई में पकड़कर कैद कर लिये गए हैं। इस समाचार से देश-भर में आग लग गई। स्थान-स्थान पर हड़ताल हुई और फिर उपद्रव हुए। बलिया में भी हड़ताल हुई। पश्चात् जुलूस निकाला गया। अपार भीड़ थी जुलूस के साथ। सब लोग जोश और नेताओं के पकड़े जाने पर क्रोध से भर रहे थे। लोग नारे लगा रहे थे, "अंग्रेज ! निकल जाओ ! देश खाली कर दो। जंग में नहीं जायेंगे।" इत्यादि।

यह जुलूस फौजी भर्ती के केन्द्र के बाहर से गुजरा। इस दिन रीता केन्द्र में आई हुई थी। उसके साथ कुछ अन्य कार्यकर्ता कॉमरेड भी थे। केन्द्र के बाहर एक 'साईन बोर्ड' लगा था। 'जनता के युद्ध में जनता को सफल बनाने के लिए फौज में भर्ती हो जाओ।'

जुलूस में किसी ने केन्द्र के सामने खड़े होकर नारा लगा दिया, 'जंग में !' सहस्रों उसके पीछे कह उठे, 'नहीं जायँगे।'

नारा लगाने वाले ने कहा, 'भर्ती !' दूसरे कहने लगे, 'नहीं होंगे।'

एक ने दूसरे के कन्धे पर खड़े होकर, भर्ती होने के लिए बताने वाला 'साईन बोर्ड' उतार दिया। साईन बोर्ड कपड़े पर लिखकर बनाया गया था। वह कपड़ा चिथड़े-चिथड़े कर दिया गया।

कुछ लोग भर्ती करने के कार्यालय में घुस गये और वहाँ का फर्नीचर तोड़ने लगे। रीता वहाँ खड़ी यह सब कुछ देख रही थी और क्रोध से उसका मुख लाल हो रहा था। लोग अपना क्रोध मेज-कुर्सियों पर निकाल, वहाँ से जा रहे थे कि मकान की छत पर से कुछ लोगों ने ईंट और पत्थर फेंकने आरम्भ कर दिए। इससे जनता को और भी अधिक क्रोध चढ़ आया। जुलूस वालों ने पहले तो ईंट आदि फेंकने वालों को गालियाँ सुनाईं, फिर

कार्यालय पर आक्रमण करा दिया। कुछ कॉमरेड रीता को छत पर ले गए। यदि वह वहाँ खड़ी रहती तो क्रोध में पागल लोग, उसे मार डालते और उसकी बोटी-बोटी नोच डालते।

छत पर जाकर भी वह भीड़ के क्रोध से बच नहीं सकी। लोगों ने मंत्री करने के कार्यालय को आग लगा दी। पाँच-छः कॉमरेड और रीता छत पर आग से घिर गए। कार्यालय का मकान तीन छत का था और उसके पिछवाड़े वाला मकान दो छत का था। रीता ने, उस दो छत वाले मकान को कूद जाने के अतिरिक्त, बचने का कोई उपाय नहीं देखा। वह उस ओर गई और अपने साथियों सहित कूद पड़ी।

पिछवाड़े वाला मकान खाली पड़ा था। कूदते समय रीता के पाँव में मोच आ गई और उसके लिए चलना कठिन हो गया। उसके साथी उसे उठाकर मकान के नीचे ले गए और वहाँ सब छिपकर बैठे रहे।

भीड़ ने समझा कि ये सब मकान में जल गए हैं। इस विश्वास के साथ भीड़ जिला अधिकारी के बंगले में पहुँची। वह भाग गया। भीड़ ने बंगले को आग लगा दी। इसी प्रकार तहसीलदार को मार डाला और बलिया के प्रबन्ध के लिए एक स्वराज्य कौंसिल बना ली।

रीता तीन दिन तक छिपकर, उसी मकान में पड़ी रही। चौथे दिन रात को वह छिपकर निकली और लंगड़ाती हुई रेल के स्टेशन तक पहुँची। भीड़ ने रेल के स्टेशन को आग लगा दी थी और रेल की पटरी उखाड़ डाली थी। इस कारण रीता ने एक इक्का भाड़े पर किया और वहाँ से बीस मील के अन्तर पर एक रेल के स्टेशन पर, जो चालू था, जा पहुँची। वहाँ से वह बनारस आई और वहाँ अपने पाँव के इलाज के लिए अस्पताल में दाखिल हो गई।

पाँव का एक्स-रे लिया गया और डाक्टरों की राय हुई कि पाँव में पीप पड़ गई है और एक हड्डी टूट गई है। इस कारण पाँव चीर डाला गया और पीप निकालकर पाँव पर हड्डी जोड़ने के लिए पलस्तर लगा दिया गया। हड्डी ठीक जुड़ी नहीं और घाव में फिर पीप पड़ गई। डाक्टरों

की सम्मति हुई कि टाँग काट दी जाय। इस प्रकार दो मास अस्पताल में रहकर, रीता घुटने तक टाँग कटवाकर और अति दुर्बल अवस्था में बाहर निकली। वह इस योग्य नहीं थी कि भर्ती का काम जारी रख सके। साथ ही 'क्विट इण्डिया' आन्दोलन ने परिस्थिति ऐसी कर दी कि कम्युनिस्ट भर्ती करवाने में कुछ अधिक सफल नहीं हुए। कई लाख रुपया व्यय करने पर भी यू० पी० में से दस हजार से अधिक लोग भर्ती नहीं हो सके।

रीता ने सरकारी ग्रान्ट में से काफी रुपया बचा रखा था। वह सब रुपया लेकर लखनऊ में स्वास्थ्य सुधारने के लिए जा बैठी। एक मकान भाड़े का लेकर रहने लगी।

उसके मकान पर कम्युनिस्टों का आना-जाना होने लगा था। उसकी कटी टाँग इस बात का प्रमाण थी कि उसने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारी त्याग किया है और कष्ट सहा है।

डॉक्टर राधाकृष्ण को रीता की बीमारी की सूचना भेजी गई थी परन्तु उसने उत्तर तक नहीं दिया। लखनऊ आकर रीता ने स्वयं पिताजी को लिखा। इसके उत्तर में राधाकृष्ण ने केवल यह लिखा, "विमल विलायत से लौट आया है। ब्रजभूषण अभी वहीं है।"

रीता ने चिट्ठी डालकर पूछा, "नीला का विवाह कब होगा?"

उसका उत्तर आया, "वह लापता है।"

: ५२ :

विमल को सन् १९४१ में लौट आना चाहिए था, परन्तु युद्ध के कारण उसको आने को जहाज नहीं मिला। बहुत यत्न के पश्चात् वह एक जहाज में स्थान पा सका और जनवरी १९४३ में हिन्दुस्तान में पहुँच सका। बम्बई पहुँच, उसने दिल्ली तार दी कि वह दो दिन में पहुँच रहा है।

उसकी तार जब पहुँची तो स्वरूपरानी नीला को बताने उसके कमरे में गई। वह अपने कमरे में नहीं थी। रात के आठ बजे थे और उसको अपने कमरे में होना चाहिए था।

एक घण्टा पीछे स्वरूप रानी पुनः उसका पता करने, उसके कमरे में गई। वह अभी भी वहाँ नहीं थी। डॉक्टर अपने नियमानुसार क्लब गया हुआ था। नीला इस समय तक अवश्य ही घर लौट आया करती थी। इस कारण स्वरूपरानी की चिन्ता बढ़ गई। वह उस की प्रतीक्षा दस ग्यारह और बारह बजे तक करती रही। वह नहीं आई। इस समय डॉक्टर घर पर आया तो स्वरूपरानी ने नीला के विषय में उसको बताया। डॉक्टर नहीं जानता था कि वह घर पर क्यों नहीं आई।

नीला को कालेज छोड़े एक वर्ष से ऊपर हो चुका था और वह कुछ काम नहीं करती थी। वह प्रायः सायंकाल घूमने चली जाया करती थी। डॉक्टर को अब स्मरण हुआ कि कुछ दिन से वह उदास रहती थी, परन्तु इसको एक साधारण बात समझ, उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। आज उसको घर पर न आया देख उसको, उसकी उदासी में कुछ अर्थ समझ आने लगे।

डॉक्टर स्वरूपरानी के साथ उसके कमरे में गया और उसके मन की अवस्था के लक्षण ढूँढने लगा।

नीला की कतार्बें इधर-उधर बिखरी हुई थीं और सामान में भी कोई व्यवस्था नहीं थी। डॉक्टर साहब ने इसको देखकर यह परिणाम निकाला कि वह कई दिन से अपने कमरे और अपनी वस्तुओं की ओर ध्यान नहीं दे रही थी। नीला के कपड़ों का संदूक देखा गया। इसमें से पहनने योग्य कपड़े निकल चुके थे। इसका अर्थ यह था कि वह घर छोड़ने का विचार कर गई है।

इसके पश्चात् किताबों की मेज पर और मेज के दराजों में पड़े कागज-पत्रों की भली भाँति जाँच-पड़ताल होने लगी। कोई ऐसी वस्तु नहीं निकली, जिससे उसके चले जाने का प्रमाण मिले। वह इस विषय में कुछ भी लिख कर वहाँ छोड़ नहीं गई थी।

निराश रात के तीन बजे डॉक्टर और स्वरूपरानी अपने कमरे में जाकर लेट रहे। वे सो नहीं सके।

डॉक्टर मन में सोचता था कि जहाँ रीता मुँहफट थी और अपनी उच्छृ-ङ्खलता तक को बता देती थी, वहाँ नीला चुपचाप रहती थी और उसके घर से चले जाने का सन्देह तक भी उनको नहीं हुआ।

सबसे बड़ी चिन्ता की बात विमल के आने की थी। उनको ऐसा प्रतीत हो रहा था कि विमल उसके इस व्यवहार पर नाराज होकर, अपना उससे सम्बन्ध-विच्छेद समझेगा। वह अपना सब प्रयास विफल जाता सम-झने लगे थे। लगभग चालीस हजार रुपया विमल पर व्यय किया हुआ, निरर्थक सिद्ध होने जा रहा था।

विमल के दिल्ली पहुँचने में दो दिन और एक रात अभी थी। वह अगले दिन शाम को फ्रण्टीयर मेल से आ रहा था अगले दिन प्रातः विमल के हाथ का लिखा, नीला के नाम एक पत्र डाक से आया। डाक्टर ने पत्र खोलकर पढ़ लिया। पत्र अति प्रेमपूर्ण था और उसमें लिखा था कि उसने जहाज में चढ़ते समय सूचना नहीं भेजी। वह व्यर्थ में उनकी चिन्ता बढ़ाना नहीं चाहता था। युद्ध के दिनों में जहाजों में यात्रा अनिश्चित और भय-युक्त तो थी ही। अब वह बम्बई पहुँच, चिट्ठी भेज रहा है और आशा करता है कि वह उसको स्टेशन पर मिलेगी। उसने यह भी लिखा कि वह उसके विवाह पर भेंट में देने के लिए बहुत-सी वस्तुएँ लाया है और आशा करता है कि वह उनको पसन्द करेगी।

इस प्रकार के आनन्द से पूर्ण उत्सुकता-भरे और प्रेममय पत्र के उत्तर में नीला का यहाँ न होना, डाक्टर को असह्य हो उठा। वह रो पड़ा। ब्रजेश इंग्लैण्ड में ही सेना में भर्ती हो जर्मन से लड़ने के लिए इरिटीरिया में चला गया था और उसके युद्ध की समाप्ति से पूर्व लौटने की कोई आशा नहीं थी।

दिन-भर डाक्टर नीला के परिचितों और सहेलियों के घरों में चक्कर काटता रहा और उसका पता करने का यत्न करता रहा। सायंकाल हो गया और नीला का पता नहीं चला। अगले दिन डाक्टर ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवा ही दी। समाचार-पत्रों में विज्ञापन दिलवा दिया और वह

अपना काम-धन्धा छोड़ घर पर बैठ रहा।

स्टेशन पर विमल को लेने के लिए स्वरूपरानी गई। विमल ने जब केवल मम्मी को प्लेटफार्म पर खड़े देखा, तो उसका माथा ठनका। गाड़ी से उतरते ही पहला प्रश्न उसने नीला के विषय में पूछा। स्वरूपरानी ने झूठ बोल दिया कि वह काश्मीर घूमने गई हुई है।

घर पर पहुँचकर, डाक्टर साहब को उदास और बहुत ही दुर्बल देख, उसे बहुत चिन्ता हुई। उसने डाक्टर साहब से उनके कष्ट के विषय में पूछा। डाक्टर का कहना था, "मुझको बहुत कष्ट है। तुम आज आराम कर लो। इस विषय पर कल बात करेंगे।"

विमल उसी रात अपनी माँ से मिलने गया। कमली अपने पुत्र को सब प्रकार से योग्य और स्वस्थ देख बहुत प्रसन्न हुई। लाला घनश्याम का देहान्त हो चुका था और उसका सबसे बड़ा लड़का लालाजी का काम-धन्धा देखता था। विमल के आने पर कमलो को बहुत प्रसन्नता हुई और उसने पूछा,

"अब तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कब तक होगा?"

"माँ! मेरा तो विचार था कि एक-दो दिन में ही होगा, पर पता चला कि नीला काश्मीर गई हुई है और उसको तार भेजा है। आशा है कि एक सप्ताह में लौट सकेगी और फिर विवाह की तिथि निश्चय होगी।"

"काश्मीर? वह कब काश्मीर गई है?"

"एक सप्ताह से ऊपर हो चुका है।"

"क्या कह रहे हो विमल? मैंने उसको आज सायंकाल कनॉट प्लेस में घूमते देखा है।"

"माँ! कोई और होगी। मुझको डाक्टर जी ने स्वयं बताया है कि वह काश्मीर गई है।"

कमली आँखें मलने लगी और बोली, "शायद मेरी आँखों की ज्योति मन्द पड़ गई है। वे लोग भी क्या समझते होंगे। कनॉट प्लेस में मैं सायंकाल घूमने गई थी। वहाँ एक युवक के साथ वह खड़ी दिखाई दी। मैं

उसके पास जाकर बोली, 'बेटी नीला ! ठीक हो ?' उसने उत्तर दिया, 'माँ ठीक हूँ।' इतना कह उसने उस युवक की ओर देखा और फिर मेरी ओर देखकर कहा, 'अच्छा माँ फिर मिलूँगी।' और वह चली गई।

"देखो कितनी भूल हो गई है मुझसे। वे मेरी हँसी उड़ाते होंगे कि पागल औरत सब लड़कियों को बेटी बनाती फिरती है।"

"फिर क्या हुआ माँ ? बेटी ही तो बनाया है न ?"

बात समाप्त हुई। विमल अपने बहन-भाइयों से मिलकर कोठी लौट आया। अगले दिन डाक्टर बिस्तर से नहीं निकला। विमल ने डाक्टर की बीमारी का निदान करना चाहा, पर बीमारी कोई होती तो पता चलता। डाक्टर ने कहा, "विमल बेटा ! मैं तुमको अपनी बीमारी के विषय में स्वयं अपनी रिपोर्ट दूँगा।"

इस पर विमल इधर-उधर की बातें करने लगा। रात अपनी माँ से मिलने की बात बताते हुए, उसने माँ के कनॉट प्लेस में किसी लड़की को नीला समझ, उसको बुलाने की बात बताई, साथ ही यह भी बताया कि माँ की दृष्टि दुर्बल हो गई है।

परन्तु इस समाचार को सुन डाक्टर के माथे पर पसीने की बूँदें टपकने लगीं और उसका दिल बैठने लगा। विमल ने डाक्टर को देखा और पूछा,

"डैडी ! यह क्या है ?"

"यही तो कष्ट है विमल !"

"तो आपको 'हार्ट-ट्रबल' (हृद्‌रोग) है ?"

डाक्टर अपने मन को दृढ़ करने में लगा था। पश्चात् अपने को काबू में कर कहने लगा, "अपनी माँ को कहना कि मुझको मिले। उससे काम है।"

विमल ने बताया कि वह एक-दो दिन में जायगा तो कह देगा।

डाक्टर को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसने तुरन्त स्वरूपरानी को कमली के घर नीला के विषय में सब बातचीत जानने के लिए भेजा।

स्वरूपरानी गई और पता कर आई कि वह कहाँ मिली थी। युवक की रूप-रेखा कैसी थी और पीछे वह किधर चले गये थे।

कमलो को इस पूछ-ताछ से संदेह हो गया, तो स्वरूपरानी ने सब बात बता दी और उससे मिन्नत कर कहा कि वह अभी किसी से कुछ न बताये। विमल से भी नहीं।

उसी दिन से नई दिल्ली के सब प्रमुख स्थानों पर खोज आरम्भ हुई। डाक्टर साहब को इस समाचार से स्फूर्ति मिल गई और वह दिन-भर नई दिल्ली के चक्कर काटने लगा।

इस बीच में रीता के पत्र आये और उनको उत्तर दे दिया गया। एक सप्ताह के अनथक प्रयत्न के पश्चात् डाक्टर ने नीला को पृथ्वीराज रोड एक कोठी में खड़े देखा। डाक्टर ने अपनी मोटर, जिसमें वह दिन-भर घूमा करता था, लौटा ली और उसको कोठी में ले गया। नीला अभी भी लान में खड़ी फूलों की क्यारियों का निरीक्षण कर रही थी। डाक्टर ने मोटर से उतर नीला को आवाज़ दी। नीला ने पिता को देखा और धीरे-धीरे चलती हुई, पिता के पास आकर खड़ी हो गई। उसने कहा, "डैडी! मार्निङ्ग।"

डाक्टर ने कहा, "तुमको ले जाने के लिए मोटर लाया हूँ।"

"कहाँ ले चलने के लिए?"

"अपने घर।"

"मेरा घर अब यह है। मैंने सरदार सोहनसिंह के सुपुत्र सरदार मोहनसिंह से विवाह कर लिया है। अब उनसे पूछे बिना, अपनी माँ के घर नहीं जा सकती।"

"पर यह तुमने क्या किया है? हमसे पूछा तक भी नहीं?"

"ज़रूरत नहीं समझी। मैं दो महीने हुए बालग़ हो गई थी। मैंने और उन्होंने स्पेशल मैरेज ऐक्ट के अनुसार प्रार्थना-पत्र दिया था। कोर्ट ने नोटिस जारी किया था और किसी ने आपत्ति नहीं की। सो आज दस दिन हो गये हैं। हमारा विवाह हो गया है।"

"विमल को भारी निराशा होगी। वह एक सप्ताह से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।"

"उसने बहुत देरी कर दी थी। अब उससे कह दीजिये रामी से विवाह कर ले।"

डाक्टर अवाक् मुख खड़ा देखता रह गया। नीला कुछ देर पिता के कहने की प्रतीक्षा करती रही। जब वह कुछ नहीं कह सका तो बोली,

"आपका स्वास्थ्य ठीक प्रतीत नहीं होता। आप आराम करिये। यदि माताजी आकर निमन्त्रण देंगी, तो उनके जमाई के साथ आऊँगी।"

डाक्टर ने अनुभव किया कि उसकी टाँगें सत्ताहीन हो रही हैं। इस कारण वह मोटर में जा बैठा और ड्राइवर से बोला, "ले चलो।"

जब मोटर कोठी में पहुँची तो डाक्टर बहुत ही दुर्बल हो गया था। उसका दिल बैठता जाता था। विमल को पता चला तो उसने कोरामीन का इंजेक्शन लगा दिया।

डाक्टर साहब को उठाकर उनके कमरे में ले जाया गया। वहाँ उनको आराम करने को कहा गया।

उसी सायंकाल डाक्टर ने कमली को बुला भेजा और विमल को भी बुला लिया। उनको उन्होंने नीला की सब बात बता दी और कहा, "मैंने अपनी ओर से विमल के लिये सब प्रकार की सहायता दी है परन्तु इस योजना को पूर्ण नहीं कर सका।"

विमल इस कथा को सुन स्तब्ध रह गया। वह बिना एक भी शब्द कहे, उठकर अपने कमरे में चला गया। कमली उसके पीछे, उसके कमरे में पहुँची और उसको सान्त्वना देने लगी। विमल का कहना था,

"माँ! मुझको सोचने और समझने दो। मैं कल तक अपने व्यवहार का निर्णय तुमको और डाक्टर साहब को बता दूँगा।"

कमली गई तो स्वरूपरानी आई और पूछने लगी, "विमल बेटा! अब क्या होगा?"

"मम्मी! मैं अभी कुछ नहीं कह सकता। क्या जानना चाहती हो

कि मेरे मन में पहली बात क्या आई थी ? मेरे मन में रह-रहकर यह बात आ रही है कि डाक्टर साहब की पिस्तौल लूँ और नीला को गोली से मार डालूँ। परन्तु मैं इसको पशुपन समझता हूँ।"

: १३ :

डॉक्टर ने नीला के विषय की खोज मास्टर देवीदत्त को भी भेजी थी। नीला के लापता होने का समाचार सुन वह दिल्ली चला आया। रीता भी टाँग में बरागन दबाये दिल्ली आ पहुँची।

देवीदत्त ने डाक्टर साहब की कोठी में ठहरना उचित नहीं समझा। वह फतेहपुरी के एक होटल में ठहर गया। रीता तो कोठी में चली आई थी।

बिमल अपने भावी व्यवहार का निश्चय कर चुका था। वह निश्चय उसने डाक्टर साहब को एक पत्र द्वारा लिख भेजा। उसमें उसने लिखा था—

'पूज्य डैडी ! मैं आपके एहसान के नीचे इतना दबा हुआ हूँ कि इस कठिनाई के समय में भी, अपनी ओर से आपकी प्रत्येक आज्ञा के पालन का आश्वासन दिये बिना नहीं रह सकता।

'मैं जानता हूँ कि आपको नीला के किसी अपरिचित व्यक्ति से विवाह कर लेने से निराशा हुई है। परन्तु ऐसा तो होता ही है। लड़कियाँ दूसरों के घरों में जाती ही हैं। इसमें निराशा होने की कोई बात नहीं। मुझको अवश्य निराशा हुई थी, परन्तु अब मैं इस दुःखद घटना के प्रभाव पर विजय प्राप्त कर चुका हूँ। मेरी हार्दिक कामना है कि नीला सुखी रहे और फले-फूले। मैं जो कुछ भी उसको भेंट देने के लिए लाया हूँ, शीघ्रातिशीघ्र पहुँचा दूँगा। वे सब वस्तुएँ उसके लिए ही हैं। उसको मिलनी ही चाहिएँ।

'आपने मुझ पर बहुत धन व्यय किया है। मैं इसको वापस करने का यत्न करूँगा। मेरा विचार है कि सब गिनकर मुझसे एक प्रोनोट लिखा

लिया जाय और मैं, कितना भी समय क्यों न लगे, पाई-पाई चुका दूँगा।

'मेरी विनीत प्रार्थना है कि आप नीला और उसके पति को सम्मान से घर बुलाइए और उनको परिवार में उचित स्थान दीजिए।

'आपको इस घटना को विरक्ति के भाव में लेना चाहिए। जो-कुछ होता है, भले के लिए ही होता है।'

बन्द लिफाफा डाक्टर को मिला तो उस समय उसके पास स्वरूपरानी और रीता बैठी हुई थीं। पत्र, जब पढ़कर सुनाया गया तो रीता ने उसका समर्थन कर दिया। विमल के इस पत्र ने डाक्टर के मन को शान्ति दी और बात लगभग निश्चित् सी हो गई।

इसी समय देवीदत्त वहाँ आ पहुँचा। उसको पूर्ण परिस्थिति से परिचित कराया गया, तो उसने सन्तोष प्रकट किया। एक घण्टा-भर इधर-उधर की बातें कर, वह जाने के लिए तैयार हो गया। इस समय डाक्टर ने पूछा, "कहाँ पर ठहरे हो, देवीदत्त ?"

"रीगल होटल में।"

"यहाँ क्यों नहीं आये ?"

"मैं मन में सोचता हूँ कि आपको कष्ट क्यों दूँ ? मेरा-आपका सम्बन्ध, जिसके द्वारा था, वह उसने ही तोड़ दिया है।"

"वट ?" डाक्टर ने कुछ उद्विग्न होकर पूछा। "सम्बन्ध टूट नहीं सकता। यह बिगड़ सकता है।"

"बिगड़ा सम्बन्ध तो टूटे से भी खराब होता है।"

"ठीक। परन्तु टूटा जुड़ नहीं सकता और बिगड़ा सुधर सकता है।"

"डैडी !" रीता ने बात बीच में ही काटकर कहा, "मनुष्य सुधरते और बिगड़ते हैं, परन्तु पत्थर तो वैसे-के-वैसे ही रहते हैं।"

देवीदत्त हँस पड़ा और बोला, "यही तो मैं कहने लगा था। सुधरते वे हैं, जो बिगड़े हों। परन्तु जो लोग जन्म से ही विकृत साँचे में ढले हों, उनके सुधरने की आशा नहीं होती। रीता देवी सुधर नहीं सकीं।"

"मैं तो एक समय आपके पास प्रायश्चित के भाव में पहुँची थी, परन्तु

आपने ठुकरा दिया था।"

"तभी तो तुम मजीद से सहवास करने की इच्छा करने लगी थीं।"

"यह रामी ने बताया मालूम होता है?"

"नहीं, मजीद ने स्वयं बताया था।"

"वह उस छोकड़ी के पीछे लट्टू हो रहा है।"

"हाँ! इसी कारण रीता देवी की ओर उसकी दृष्टि नहीं गई। पर यह तो एक पृथक् बात है। मैं तो यह कह रहा था कि देवीजी परीक्षा में असफल रही हैं। इससे मैं उनको अपनी स्त्री नहीं समझता और उनके पिता को अपना स्वसुर नहीं मानता।"

"तो यहाँ आये किस लिए हो? किसने बुलाया है तुमको?" डाक्टर खीझकर बोला।

"मैं नीला के विषय में चिन्तित था। एक बार उसको पसन्द करने का पागलपन किया था। उसी नाते उसके भले-बुरे के जानने के लिए इच्छा बनी रहती है।"

"अच्छी बात है। आप जा सकते हैं।"

इस पर भी जाने से पूर्व वह विमल से मिलने गया और उससे इंग्लैण्ड के विषय में जानकारी प्राप्त कर, उसके अपने विषय में पूछने लगा, "नीला के विवाह की बात तो आपने सुन ली है?"

"हाँ। मुझे इस बात का भारी शोक है कि मुझको यहाँ पहुँचने में देरी हो गई और उसको कोई दूसरा उड़ाकर ले गया है।"

देवीदत्त मुस्कराकर बोला, "मैं समझता हूँ कि यह ठीक ही हुआ है। जिसमें प्रतीक्षा करने के लिए धैर्य नहीं, उससे विवाह-जैसा सम्बन्ध नहीं बना, तो कुछ हानि नहीं हुई।"

"ठीक है। परन्तु कोई स्त्री धैर्य से प्रतीक्षा कर भी सकती है क्या? आज के काल में तो यह असम्भव ही प्रतीत होता है।"

"सत्य का बीज नष्ट नहीं होता विमल!"

देवीदत्त विमल को रामी के विषय में कुछ कहने जा रहा था। परन्तु

यह विचार कि इस विषय में कुछ कहने का उसका अधिकार नहीं, चुप कर रहा। उसने केवल यह कह दिया, "खोज करो विमल! सत्य मिल जायगा।

"अच्छा, अब मैं जा रहा हूँ। इस घर में मेरा अब कुछ काम नहीं रहा। मैं यहाँ अब आने के लिए कोई प्रयोजन नहीं देखता। सो कभी नैनीताल आना तो दर्शन देना।"

इतना कह देवीदत्त विदा हो गया। विमल के मन में रामी का विचार था, परन्तु उसको यही विदित था कि वह भी धैर्य से प्रतीक्षा न कर सकने के कारण, किसी पुरुष के साथ भाग गई थी। इस कारण उसने बलपूर्वक उसको मन से निकाल रखा था।

कमली को विदित था कि रामी का विवाह नहीं हुआ, परन्तु यह विचारकर कि कई वर्ष तक वह देवीदत्त के घर रही है, वह सती-साध्वी नहीं हो सकती। कम-से-कम संसार नहीं मानेगा। इस कारण उसने रामी के विषय में विमल से बातचीत नहीं की।

कुछ दिन पश्चात् नीला और मोहनसिंह को निमन्त्रण भेजा गया और दोनों डाक्टर साहब से परिचय प्राप्त करने आये।

मोहनसिंह, सरदार सोहनसिंह, सरकारी ठेकेदार का लड़का था। दोनों का परिचय रीता द्वारा हुआ था और कुछ ही दिनों में परिचय मित्रता और प्रणय सम्बन्ध में बदल गया। पश्चात् नीला ने कहकर 'स्पेशल मैरेज एक्ट' के अनुसार विवाह कर लिया।

अब मोहनसिंह अपने श्वसुर से मिलने आया। डाक्टर साहब ने उनकी आवभक्त की। उनको बहुत बढ़िया भोजन दिया गया और जब वे जाने लगे तो डाक्टर ने बीस हज़ार रुपये का एक चैक मोहनसिंह को दिया। विमल ने नीला को दो सन्दूकों में, वे सब वस्तुएँ, जो उसके लिए लाया था, दे दीं।

नीला ने सब सामान देखा और विमल का धन्यवाद करते हुए कहने लगी, "मेरी राय मानो तो इनमें से कुछ सामान अपनी स्त्री के लिए

रख लो।"

"अब मैं विवाह नहीं करूँगा।"

"क्यों? रामी से कर लो न।"

"क्यों मेरे साथ हँसी करती हो नीला? जाओ मेरी कामना है कि तुम सुखी रहो और पुत्र-पौत्रों का सुख देखो।"

नीला हँस पड़ी।

"क्यों? मैं सदैव तुम्हारे साथ भाई समान व्यवहार करता रहा हूँ। बीच में पाँच-छः साल हम को पति-पत्नी होने का विचार मस्तिष्क में रखना पड़ा। पर मैं समझता हूँ कि वह भूल थी। वह कृत्रिम-सम्बन्ध था। सो नहीं रहा। अब तो तुम को प्रसन्नता अनुभव करनीं चाहिए।"

नीला बैठ गई और कहने लगी, "विमल! तुम को मेरे दूसरे स्थान पर विवाह कर लेने से निराशा तो नहीं हुई।"

"दुःख तो हुआ था। पीछे अपने मन के भावों का विश्लेषण करने पर मैं यह समझ पाया हूँ कि वह दुःख नहीं था, प्रत्युत् ईर्ष्या थी। तुमने मेरा तिरस्कारकर एक कम पढ़े-लिखे को पसन्द किया। मैं समझता हूँ कि तुमको पूर्ण रूप से प्रसन्न होना चाहिए।"

नीला ने गम्भीर निःश्वास लिया और यह कह वह उठ पड़ी, "हैप्पीनैस इस संसार में कहीं है क्या?"

"और कहीं हो चाहे न हो, परन्तु तुमको 'अनहैप्पी' होने में कोई कारण नहीं।"

"आप नहीं जानते।" इतना कह नीला ने मुख मोड़ लिया और धीरे-धीरे दरवाजे से बाहर हो गई।

विमल मुख देखता रह गया।

: १४ :

रामी और शीरीं कई बातों में सहमत थीं। इस कारण जब तक मजीद नैनीताल में रहा, तब तक दोनों नित्य मिलती रहीं। एकाएक

रीता के दूषित व्यवहार से प्रभावित हो मजीद और शीरीं दिल्ली चले गये। उनके जाने पर रामी भी उत्तर-काशी चली गई।

रामी रीता के व्यवहार पर मनन करती हुई नैनीताल से गई थी और ज्यों-ज्यों वह उसके आचरण पर विचार करती थी, उसे रीता पर दया आती थी। यह ठीक था कि वह धारा-सभा की सदस्या बन गई थी और अब सरकार की ओर से भारी धन की सहायता लेकर, फौज के लिए भर्ती कर रही थी। परन्तु क्या यही जीवन की सफलता है ?

इस पर उसके मन में यह विचार उठा कि यदि यह सफलता नहीं तो और क्या है ? वह अपने जीवन से उसके जीवन की तुलना करती थी। यदि वह जीवन में सफल नहीं हुई तो क्या वह स्वयं सफल हुई है। रामी सोचती थी कि रीता ने विवाह किया है, वह विवाह कर नहीं सकी। रीता एक धनी बाप की बेटी होकर लाखों अपने पर व्यय कर चुकी है। अपने पिता से, अपने मित्रों से, अपनी पार्टी से और अब सरकार से धन पा रही है। यदि यह कहा जाय कि वह सोने में लोट-पोट हो रही है (Rolling in Gold) तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस पर भी, जब मजीद नैनीताल से जाने के लिए रिक्शा के समीप खड़ा था और रीता उससे बातचीत कर रही थी, तब उसके मुख पर निराशा, दुःख और अन्तर्वेदना स्पष्ट दिखाई दे रही थी। तो क्या यह सफलता है ?

इसके विपरीत वह अपने मन में विचार कर रही थी कि उसको क्या कष्ट, दुःख अथवा अभाव है। वह यह जानती थी कि उसका विवाह नहीं हो सका था, परन्तु यह अब दुःखदायी नहीं रहा था। विमल के विलायत चले जाने पर तो वह कभी-कभी अपने यौन-सम्बन्धी अभाव पर व्याकुल हो उठती थी, परन्तु अब सात-आठ वर्ष के प्रयत्न से वह इस कष्ट को भूल गई थी। अब उसका इस ओर कभी ध्यान भी नहीं जाता था। इस काल में उसने अंग्रेजी और हिन्दी भली भाँति पढ़ ली थी और स्वाध्याय को विस्तृत कर लिया था। साथ ही देवीदत्त की संगत का उसके मन पर भारी प्रभाव पड़ा था। उसने इसके सम्मुख एक नवीन संसार खोल दिया था

वह जब तक कम्युनिज़्म के सिद्धान्तों को मानता रहा, तब तक तो रामी को उससे बचने के लिए घोर यत्न करना पड़ता था; परन्तु धीरे-धीरे उसका विश्वास उन सिद्धान्तों से उठता गया और रामी अपने को, उसके घर में सुरक्षित ही नहीं पाती थी, प्रत्युत् उसके विस्तृत ज्ञान से लाभान्वित भी होती रही।

रीता वैसी-की-वैसी थी। ग्यारह वर्ष पूर्व उसने उसको मजीद से सहवास करते देखा था। अब उसने उसे पुनः मजीद के लिए व्याकुल होते देखा था। तब रीता के मुख पर सन्तोष था। इस बार उसके मुख पर असन्तोष और दुःख विराजमान था। क्या यह सफलता है?

इस बार, जब वह नैनीताल से जाने लगी तो देवीदत्त ने उससे कहा, "मैं समझता हूँ कि विमल किसी भी दिन लौट सकता है?"

"मुझको इसमें न तो उत्सुकता है, न ही प्रसन्नता अनुभव होती है।"

"क्यों?"

"मैंने अपना कर्तव्य-पालन कर दिया है और बस। आगे मेरा अधिकार नहीं।"

"यदि तुम कहो तो मैं विमल से सम्पर्क उत्पन्न कर, उसको वास्तविक परिस्थिति से परिचित कर दूँ?"

"मैं इसको उचित नहीं समझती। यह काम आपका नहीं है।"

"तो क्या तुम्हारे इस काम के लिए भगवान् स्वर्ग से आवेगा?"

"पर दादा! इसकी आवश्यकता ही क्या है? यदि मेरा विमल से विवाह इस जन्म में नहीं हो सकेगा, तो क्या अनर्थ हो जावेगा? प्रेम एक आवश्यक वस्तु है। विवाह तो शारीरिक सम्बन्ध का सूचक है। नहीं हो सकेगा तो न सही। वास्तव में नीला का शरीर मुझसे अधिक गौर-वर्ण, अधिक सुन्दर और अधिक सुडौल है। वह उनकी पत्नी बनने के अधिक योग्य है। तो फिर उससे उनका विवाह होना ही चाहिए। मेरा प्रेम उनसे है, यही पर्याप्त है।"

देवीदत्त इस मानसिक अवस्था को पराजित अवस्था समझता था।

उसने उसको कहा भी कि यह 'डिफीटिज़्म' है, परन्तु रामी ने इसको ऐसा नहीं माना। उसने कहा, "नहीं दादा ! यह मेरी पराजय नहीं, प्रत्युत् विजय है।"

"विजय ? किस पर ?"

"अपनी इन्द्रियों के विषयों पर। देखिए अनेकों से कम स्वादिष्ट भोजन मुझको प्राप्त होता है। यूँ तो पेट भरने-मात्र को ही तो पाती हूँ। इस पर भी मुझको असन्तोष नहीं होता। इस प्रकार यदि यौन-सम्बन्धी तृप्ति नहीं होती, तो असन्तोष में कुछ कारण नहीं।"

वह जब उत्तर-काशी में पहुँची तो पूर्ण रूप से प्रसन्न और सन्तुष्ट थी। उसके मन में अब यह जानने की भी लालसा नहीं रही थी कि विमल कब हिन्दुस्तान लौटता है और उसका नीला से विवाह कब होता है। वह अपनी दिनचर्या में ऐसे लग गई, मानो उससे बाहर कोई है ही नहीं।

जनवरी के महीने में देवीदत्त का पत्र उसको मिला। इसमें उसने नीला के भाग जाने और विमल के लौट आने का समाचार भेजा। रामी ने इसका उत्तर नहीं दिया।

पश्चात् देवीदत्त का एक पत्र और आया। उसमें उसने अपने दिल्ली जाने और वहाँ विमल से मिलने का वृत्तान्त लिखा। यह भी लिखा कि नीला ने किसी अन्य से विवाह कर लिया है। इसके साथ ही उसने रीता से रीगल होटल में भेंट का वृत्तान्त भी लिखा। उसने लिखा, 'जब मैं डॉक्टर साहब का तिरस्कार पा, अपने होटल में, जहाँ ठहरा था, आया और नैनीताल लौटने की तैयारी करने लगा तो रीता आ पहुँची। उसने आते ही कहा, "आपने मजीद के विषय में बात पिताजी से क्यों कही थी ?"

"केवल इसलिए कि उनको पता चल जाए कि मैंने तुमसे सम्बन्ध क्यों तोड़ा है।"

"आपने मुझको बहुत बदनाम किया है। उस एलबम की कथा तो अभी लोग भूले नहीं और नवीन कहानी सुनानी आरम्भ कर दी है।"

"तो क्या यह झूठ है ?"

"झूठ-सत्य का निर्णय करने वाले आप कौन हैं ? मैं आपको इस सबका फल दूँगी। जो-कुछ आपने मुझसे किया है, उस सबका फल आपको भुगतना पड़ेगा।"

"मैंने क्या किया है ? जो-कुछ तुम हो, अपने ही किये से हो।"

"यदि आप एलबम ब्रजेश को नहीं दिखाते, तो उसे क्रोध नहीं आता और वह गोली नहीं चलाता। न मुकद्दमा चलता, न मेरी बदनामी होती और मैं मिनिस्टर बन जाती। अब मैं गांधीजी के अनुयायियों में होकर जेल में होती, न कि कम्युनिस्टों के कैम्प में जाकर यह टांग कटवाती। अब आपने यह नई बात चलाई है। मैं दिल्ली पिताजी से मेल-मेलाप पैदा करने आई थी और वे आपकी बात सुन इतने दुःखी हुए हैं कि मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं कर रहे।

"मेरा जीवन आपने बरबाद किया है और मैं कह रही हूँ कि मैं आपको न घर का रहने दूँगी न घाट का।"

'देखो रामी, मैं अब विमल को, तुम्हारे विषय में सब रहस्योद्घाटन करने का विचार रखता हूँ। एक तो मैं उसको सीधी बात नहीं बता सकता। उस को विश्वास नहीं आयेगा। दूसरा, उसके मन की अवस्था का भी ध्यान रखना है और उसको जानने के लिए भी उससे पत्र-व्यवहार बनाना पड़ेगा।

'तुम अब न मत करो। इसमें तुमने कुछ नहीं करना। यदि उसकी तुम से मिलने की इच्छा हुई, तो वह तुम्हारे पास आएगा। जब आएगा तो जो उचित समझना करना। परन्तु पहले देवी जी के दर्शन की लालसा तो भक्त के मन में जागने दो।'

रामी ने इसका भी कुछ उत्तर नहीं दिया और वह अपने नित्य के कर्म में लगी रही। वह कभी विचार करती थी कि क्या यह अफीम का नशा है, जिस कारण वह अपने विषय में कोई प्रयत्न भी करना नहीं चाहती ? इस पर भी वह अनुभव करती थी, कि जो-कुछ भी है, वह अत्यन्त आनन्दप्रद है। उसका मस्तिष्क सतर्क था। वह प्रत्येक समस्या का विश्लेषण भली भाँति

कर लेती थी और उसकी विमल के विषय में निष्क्रियता मस्तिष्क की प्रेरणा पर थी न कि शरीर की शिथिलता के कारण।

देवीदत्त रामी को बीस रुपये मासिक भेजता था। एकाएक वह सहायता आनी बन्द हो गई। उसने इसका कारण पूछा तो कुछ उत्तर नहीं आया।

: १५ :

विमल ने चिकित्सा-कार्य डॉक्टर राधाकृष्ण के साथ आरम्भ कर दिया था। वह नवीन ज्ञान की प्राप्ति कर आया था और अभी युवक ही था। इस कारण डाक्टर साहब के रोगी विमल की परीक्षा के लिए, उससे राय करते रहते थे।

विमल जिस उत्साह से दिल्ली आया था, वह शीतल हो गया था। दिन-भर काम करने के पश्चात्, जब रात को वह पलंग पर लेटता था, तो जीवन की निस्सारता पर घण्टों विचार करता रहता था। वह रामी के विषय में भी कभी विचार करता था, परन्तु उसके ज्ञात व्यवहार से वह यही परिणाम निकालता था कि वह एक पशु थी। ज्यूँ ही सज्ञान हुई, अपना साथी पा भाग गई। सबसे विचित्र बात यह थी कि उसके विषय में कोई उसको कभी कुछ नहीं कहता था।

इस प्रकार उसको दिल्ली आए तीन मास व्यतीत हो गए थे। देवीदत्त का एक पत्र आया। उसमें उसने लिखा, 'प्रिय विमल जी !

'बताइये आपके विवाह का कुछ प्रबन्ध हो रहा है या नहीं। मैं शायद आप को यह प्रश्न न लिखता, परन्तु यहाँ कोई आया है और वह आपके विवाह के विषय में पूछता था। नीला की कथा तो मैंने उसको बता दी है और उससे उसको भारी दुःख हुआ है। आगे आप के विवाह के विषय पर उसने पूछने को लिखा है।

साथ ही उसने मुझको कहा है कि मैं आपको उसकी सादर वन्दना लिख दूँ। वन्दना भेजने वाली और आप के विवाह के समाचार के विषय में पूछ-ताछ करने वाली एक रामी है। मैं समझता हूँ कि आप उसको भूले

नहीं होंगे ।'

पत्र का उत्तर विमल ने दिया, 'रामी क्या करती है ? उसके बाल-बच्चे कितने हैं ? उसका घर वाला क्या करता है ? उसको किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट तो नहीं ।

'यद्यपि रामी के व्यवहार से मुझको सन्तोष नहीं हुआ था, इस पर भी जब सब संसार ही उलटे मार्ग का गामी है, तो उस बेचारी को क्या कहूँ ? मेरी स्नेह-युक्त नमस्कार उसको देना और कहना कि अब मैं कुछ-कुछ अपना कमाने लगा हूँ । कभी दिल्ली आये तो अपने बाल-बच्चों सहित आए । मैं उससे नाराज नहीं ।'

इसका उत्तर देवीदत्त ने पुनः दिया, 'रामी के बाल-बच्चे और उसके घर वाले की क्या बात कर रहे हो विमल ? उसने कब विवाह किया था और जब विवाह नहीं किया तो बाल-बच्चे कैसे हो जाते ?

'वह तो बेचारी निर्धनता का जीवन, किसी की स्मृति में व्यतीत कर रही है ।

'मुझको यह जानकर अति हर्ष हुआ है कि आपने कार्य आरम्भ कर दिया है और आप कुछ पैदा भी करने लगे हैं ।'

यह पत्र विमल के मन में उथल पुथल मचाने वाला था । क्या देवीदत्त उसको धोखा देना चाहता है ? अथवा क्या किसी और ने उसको धोखा दिया है ? वह इसकी जाँच करना चाहता था । क्या डॉक्टर जी को रामी के विषय में कुछ भी पता नहीं । उन्होंने उसका कभी जिक्र नहीं किया । क्या इसमें भी कोई रहस्य है ?

इस समस्या को सुलझाने के लिए उसने अपनी माँ को बुला भेजा और उससे रामी के विषय में पूछा । कमली का उत्तर था, "उसका विवाह तो नहीं हुआ प्रतीत होता । वह किसी के साथ भागी जरूर प्रतीत होती है, परन्तु ऐसा लगता है कि उसको भगाकर ले जाने वाला, उसे नैनीताल में छोड़ गया था । पश्चात् वह मास्टर देवीदत्त के पास कई वर्ष तक रही है । रीता और देवीदत्त का झगड़ा रहता था । इस कारण हम सबका विचार है

कि वह मास्टर साहब की अविवाहित पत्नी बनकर रही है।

"पीछे वह उसको छोड़ गई प्रतीत होती थी। उसका किसी को पता नहीं था कि वह कहाँ है। अब फिर वह मास्टर साहब के पास आ गई होगी और उन्होंने उसको तुम्हारे गले मढ़ने का यत्न किया प्रतीत होता है।"

विमल उसके जीवन का यह अनुमानित विवरण सुन बहुत दुःखी हुआ। यह ठीक था कि भूल उसने की थी, परन्तु रीता ने तो अनेकों भूलें की थीं इस बेचारी का जीवन निर्धनता में व्यतीत हो रहा है और रीता अभी भी शान से नेता बन घूमती है। इस प्रकार विचारकर उसने देवीदत्त को लिखा।

'पूज्य मास्टर जी। मुझको आपके पत्र का अर्थ समझ नहीं आया। आपने लिखा है कि रामी का विवाह ही नहीं हुआ। उसने स्वयं मुझको लिखा था कि उसने अलमोड़ा के एक युवक से विवाह कर लिया है। मुझे आपको उसके बाल-बच्चों पर अचम्भा प्रकट करना विस्मयजनक प्रतीत हुआ है। इस पर भी यदि वह आर्थिक कष्ट में है, तो वह पुनः कोठी में आकर नौकरी कर सकती है। मैं उसकी डाक्टर साहब से सिफारिश कर दूँगा। मेरा विचार है कि वे मेरे कहने पर मान जायेंगे।'

देवीदत्त इस पत्र की आशा करता था। इस पत्र-व्यवहार का सबसे कठिन समय अब आया था। इसका देवीदत्त ने उत्तर दिया, 'प्रिय विमल! मुझ को भारी शोक है कि तुम उसके विषय में ऐसा समझते हो। वह पत्र किस ने लिखा था और क्यों लिखा था, जाँच-पड़ताल का विषय है।

'न तो मैंने, न ही रामी ने आप से आर्थिक सहायता के लिए लिखा है। यह ठीक है कि यदि वह आपकी विवाहिता होती तो इस आर्थिक कष्ट में न होती। वह आपकी नौकरी करने आवे, सो मैं उसको लिख रहा हूँ। वह आज यहाँ नहीं है। यदि वह आपके यहाँ काम करने पर राज़ी हो गई, तो वह आ जावेगी और आशा करता हूँ कि आप विवेक से काम लेंगे।'

यह पत्र लिख देवीदत्त ने रामी को एक पत्र लिखा। उसने उस पत्र में कहा, 'मैंने तुम्हारे उनके पास जाने के लिए भूमि तैयार कर दी है। शेष

तुम्हारे अधीन है ।'

रामी अभी विचार कर ही रही थी कि देवीदत्त की मासिक सहायता बन्द हो गई । वह विचार कर रही थी कि उस मास के रुपये आवेंगे तो वह दिल्ली जावेगी । रुपये आये नहीं और वह जा नहीं सकी । पन्द्रह दिन तक प्रतीक्षा कर, उसने पत्र लिखा, परन्तु उत्तर की प्रतिक्षा करती रही और वह नहीं आया ।

जिस दिन देवीदत्त ने रामी को अन्तिम पत्र लिखा था । उसी रात पुलिस आई और देवीदत्त को 'डिफेन्स आफ इण्डिया एक्ट' के अधीन पकड़कर ले गई । आरोप यह था कि वह सरकार के विरुद्ध कांग्रेसी भूम्यान्तर्गत कार्य-कर्ताओं में है । उसको पकड़कर फतेहगढ़ जेल में भेज दिया गया । उसकी नौकरी छूट गई और उसका सब सामान ज़ब्त कर लिया गया ।

रीता की धमकी सफल हुई । उसने ही झूठी सूचना यु० पी० सरकार को दी थी कि नैनीताल में 'सैबोटेज' करने वाला अड्डा देवीदत्त का मकान है ।

विमल भी अपने पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में था । एक दिन 'हिन्दुस्तान-टाइम्स' समाचार-पत्र में यह समाचार छपा कि नैनीताल के सरकारी स्कूल का हैडमास्टर, देवीदत्त एम० ए० एल० टी० सरकार विरोधी कार्यवाई करने के सन्देह में पकड़ा गया है और डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्ज़ तीन के अनुसार फतेहगढ़ जेल में भेज दिया गया है ।

विमल उसके पकड़े जाने पर आश्चर्य करता रह गया । वह स्वप्न में भी उसको ऐसा व्यक्ति नहीं समझता था ।

जिस दिन यह समाचार अखबारों में छपा, उस दिन रीता दिल्ली में थी । वह अपने पिता के घर में नहीं आती थी । प्रायः होटल में ठहरा करती थी । उसने नकली टाँग लगवा ली थी और कुछ लंगड़ाकर चल-फिर सकती थी । वह अभी भी युद्ध की तैयारी में सहायता दे रही थी ।

एक दिन वह नीला से मिलने गई और नीला और उसके पति में वैमनस्य की बात सुन क्रोध से भर गई । रीता ने नीला से पृथक् में पूछा,

"क्या हो रहा है अब ?"

नीला के आँसू निकल गए।

"अरी," रीता ने चिन्ता का भाव बना पूछा, "क्या बात है ?"

"दीदी !" नीला ने कहा, "किसी ने उनसे बता दिया है कि मेरी सगाई विमल से हुई थी और हम एक ही कोठी में रहते थे। इस पर उन को सन्देह हो गया है कि मेरा विमल से अनुचित सम्बन्ध था। यह सन्देह विश्वास में बदल गया, जब विमल ने लगभग तीन-चार हजार रुपये कीमत की भेंट मुझको दी। उसके पीछे वे मेरे पास नहीं आये, आज चार मास होने जा रहे हैं। जब मिलते हैं, तो गाली देते हैं।"

"तो उनको कहकर तलाक क्यों नहीं ले लेती ?"

"वे तो तैयार हो जावेंगे, परन्तु मैं क्या करूँगी ?"

"इस नित्य के गाली-गलौज से तो बच जाओगी और यदि मेरा कहना मानो तो विमल से विवाह हो सकेगा।"

"मुझको इसकी किंचित्मात्र भी आशा नहीं।"

"मुझको तो बहुत आशा है।"

इससे नीला गम्भीर विचार में पड़ गई। उसी दिन रीता मोहनसिंह को इम्पीरियल में चाय का निमन्त्रण दे गई। उनकी कोठी से आने से पूर्व वह एक लिखा कागज मोहनसिंह के चपरासी को दे गई थी।

मोहनसिंह चाय के समय इम्पीरियल में आया, जहाँ रीता उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। बात रीता ने आरम्भ की। उसने चाय बनाते हुए कहा,

"मैं आपके घर गई थी। नीला से आपका व्यवहार कुछ ठीक प्रतीत नहीं हुआ। यदि उसने कुछ कसूर किया है तो बताइए, वह आपसे क्षमा माँग लेगी।"

मोहनसिंह ने रीता के इस प्रकार बातचीत आरम्भ करने पर विस्मय प्रकट किया। उसने कुछ देर विचारकर कहा, "मैंने नीला से यह समझकर विवाह किया था कि वह कुँवारी है। उस दिन आपने, जो कथा बताई थी और फिर विमल ने जो इतना-कुछ उसको दिया है, उससे मेरे मन में

यह बैठ गया है कि वह विमल की पत्नी रही है। अब मेरी तबीयत उससे बात करने को भी नहीं चाहती।"

रीता कुछ देर विचार करती रही और मोहनसिंह चाय पीता रहा। इस समय रीता ने अपने लिए चाय बनानी आरम्भ कर दी। उसे चुप देख, मोहनसिंह ने कहा, "मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मेरा मन ही नहीं मानता।"

रीता ने बहुत विचारोपरान्त धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया। उसका कहना था, "यद्यपि आपका नीला के विषय में इस प्रकार का विचार करना एक भ्रम है, तो भी यदि आप मेरे इस कहने को अस्वीकार करते हों, तो इस दुःखद् समस्या का कोई सुझाव भी तो होना चाहिए?"

"मैं सुझाव क्या दे सकता हूँ। आप इतनी समझदार पढ़ी-लिखी और संसार का ज्ञान रखने वाली हैं। आप ही बताइए कि क्या किया जा सकता है?"

"देखिए मोहनसिंह जी! मैं तो स्वतन्त्र विचार की स्त्री हूँ। पुराने जमाने की वहम की बातों पर मेरा बिल्कुल विश्वास नहीं है। मैं तो यह समझती हूँ कि यदि विवाह सफल नहीं हुआ तो तलाक हो जाना चाहिए।"

"क्या नीला यह चाहती है?"

"वह मूर्ख लड़की कुछ नहीं चाहती। वह तो दिन-रात रोती रहती है।"

"तो उसको मना लो। वह मेरे विषय में कोई आरोप लगाकर, तलाक माँग ले। मैं आपत्ति नहीं उठाऊँगा।"

"पर यह तो आपसे अन्याय हो जावेगा?"

"मेरे साथ अन्याय तो उस दिन हुआ था, जब मैंने उससे विवाह किया था।"

"आपका उसके चरित्र पर सन्देह है। आप आरोप लगा, तलाक माँगिए।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। यदि तो मेरे मन की ग्लानि दूर हो

चार साल रहे हैं।"

"झूठ तो नहीं बोलतीं, दीदी?"

"तुमसे झूठ बोलने में क्या लाभ होगा?"

बात तय हो गई। नीला ने कोर्ट में तलाक के लिए प्रार्थना कर दी। नोटिस जारी हो गया। उसमें केवल एक आरोप था, 'मेरा पति मोहनसिंह मुझको निर्दयता से पीटता है।' मोहनसिंह इस आरोप का उत्तर देने निश्चित तिथि को उपस्थित नहीं हुआ। उस पर डिक्री दे दी गई। नीला मुक्त हो गई।

नीला और विमल मिले। नीला ने अपने किए पर पश्चात्ताप किया और क्षमा माँगी। विमल ने उसको क्षमा कर दिया और उससे विवाह स्वीकार कर लिया।

मोहनसिंह ने वह रुपया, जो डॉक्टर राधाकृष्ण ने उसको दिया था, वापिस कर दिया। नीला विमल की भेंट में दी हुई, सब वस्तुएं उठा लाई।

डॉक्टर साहब ने विमल और नीला को आशीर्वाद दिया और यह निश्चय हो गया कि चुपचाप विवाह हो जाय। नीला के कहने पर ही विवाह हिन्दू रीति-रिवाज से किया जाना निश्चय हुआ।

निश्चित तिथि को कोठी में ही विवाह का आयोजन किया गया। विवाह सायंकाल होना था। दोपहर के समय व्रजभूषण के युद्ध में घायल होने का समाचार आ गया। डॉक्टर ने टेलीफोन से उच्चाधिकारियों से और अधिक वृत्तान्त जानने का यत्न किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि अधिकारियों ने यह स्वीकार कर लिया कि शायद उसकी मृत्यु हो गई है। वह सख्त घायल हुआ था और उसके बचने की आशा नहीं की जाती थी। जाँच-पड़ताल के परिणामस्वरूप कोई सूचना नहीं मिली। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि उसकी मृत्यु हो गई है।

इस समाचार ने विवाह के कार्य पर तुषार डाल दिया। रीता, जो विवाह-कार्य में मुख्य भाग ले रही थी, वहाँ पर ही थी। उसकी सम्मति थी कि विवाह बिना हल्ले-गुल्ले के हो रहा है, इस कारण वह हो जाना

चाहिए।

डॉक्टर राधाकृष्ण अपने बच्चों के जीवन के परिणामों पर विचार कर इस प्रकार गिर पड़ा, जैसे कटा पेड़ गिरता है। वह आराम-कुर्सी पर बैठा, अपने पूर्ण जीवन की निष्फलता पर विचार कर रहा था कि यह सब क्यों हो गया। रीता, नीला और अब ब्रजभूषण।

विमल अपने कमरे में बैठा ब्रजभूषण की मृत्यु के इस अवसर पर समाचार के अर्थ समझने का यत्न कर रहा था। क्या इस सब परिस्थिति के उत्पन्न होने में किसी प्रयोजनयुक्त आयोजन का हाथ है? वह कौन है, जो ऐसा कर रहा है और क्यों कर रहा है? प्रकृति, जिसको वह परमात्मा के स्थान पर अधिष्ठित मानता था, बुद्धि रहित वस्तु थी। उसके कार्यों में किसी प्रयोजन का होना सम्भव नहीं। पर यह है क्या? उसके हिन्दुस्तान में पांव रखने के समय नीला का किसी दूसरे के साथ भाग जाना, अब नीला और उसके पति का झगड़ा होना, तलाक होना और फिर उससे विवाह के अवसर पर नीला के भाई की मृत्यु का समाचार आना। यह क्यों?

उसने मन में निश्चय कर लिया था कि उस दिन विवाह नहीं होगा। विवाह दो सप्ताह तक रुक जाना चाहिए। रीता हठ कर रही थी कि विवाह हो जाना चाहिए।

डॉक्टर राधाकृष्ण और स्वरूप रानी ने कह दिया कि वे विवाह में सम्मिलित नहीं होंगे। इस पर भी रीता और नीला विमल को मनाने उसके कमरे में चली आईं। विमल अपने मन में निश्चय कर चुका था कि विवाह स्थगित हो जाना चाहिए। इस कारण जब रीता ने बताया कि डैडी और मम्मी विवाह होने में आपत्ति नहीं करेंगे, तो उसने कहा, "पर इसकी जल्दी क्या है?"

"मैं चाहती हूं।" रीता का कहना था, "कि विवाह मेरे सम्मुख सम्पन्न हो जाय। मुझको भय लग रहा है कि कोई अन्य विघ्न न पड़ जाय।"

"विघ्न पड़े या न पड़े, यह विवाह आज नहीं होगा।" विमल का दृढ़ उत्तर था। उसने कहा, "दीदी! मैं पशु नहीं हूँ। आज, जो इस परिवार पर इतनी विपत्ति पड़ी है, क्या मैं उसका साझीदार नहीं हूँ। रीता! मेरा निश्चय है कि विवाह पन्द्रह दिन तक स्थगित कर दिया जाय।"

इस पर रीता और नीला विमल से युक्ति करने लगीं। विमल की मां भी आई और विमल से विवाह कर लेने का आग्रह करने लगी। उसका कहना था कि विवाह स्थगित करना अपशकुन माना जाता है। विमल अपने विचार पर दृढ़ था और घर में दो स्थान पर गोष्ठियाँ हो रही थीं। एक कमरे में डॉक्टर राधाकृष्ण और स्वरूपरानी शोकग्रस्त बैठे अपने पूर्ण जीवन के निरर्थक हो जाने पर, मन-ही-मन मनन कर रहे थे। दूसरी ओर विमल अपने कमरे में बैठा था और उसे तीनों औरतें कमली, रीता और नीला विवाह उस दिन हो जाने की प्रेरणा दे रहे थे। ब्राह्मण देवता विवाह के लिए वेदी सजा चुका था। वह भी परिवार पर आई विपत्ति का समाचार सुन चुका था और विवाह कराने में कोई उत्साह नहीं रखता था।

कमली विमल को समझा रही थी। इस समय डॉक्टर साहब का चपरासी आया और बोला, "विमल बाबू! आपसे कोई स्त्री मिलने आई है।"

"क्या चाहती है?"

"मिलना चाहती है।"

"नाम पूछ आओ।" विमल की इच्छा मिलने की नहीं हो रही थी।

"पूछा था। कहती थी, 'कह दो मिल लेंगे।'"

विमल ने झुँझलाकर कहा, "कहो नाम बता दो और काम बता दो, तब मिल सकते हैं। इस समय मेरी तबीयत ठीक नहीं।"

चपरासी नया रखा गया था। वह गया और लौट आया। उसने कहा, "साहब! वह अपना नाम रामी बताती है। कहती है नौकरी करने के लिए आई है।"

"रामी!" विमल अवाक् चपरासी के मुख पर देखता रह गया। रीता के मुख का रंग विवर्ण हो गया। कमली के मस्तक पर भी चिन्ता की रेखाएँ

दिखाई देने लगीं। नीला तो वहाँ से उठकर चली गई। विमल रामी के इस समय आने का प्रयोजन नहीं समझा। उसको, अपने एक देवीदत्त को लिखे पत्र की याद आ गई। उसमें उसने लिखा था कि वह पुनः कोठी में आकर नौकरी कर सकती है। यह स्मरण कर उसने चपरासी को कहा, "उसको ले आओ।"

कमलो ने कहा, "यह चुड़ैल कहाँ से आ गई है?"

"आने दो माँ! वह नौकरी करना चाहती है।"

रामी आई और कमरे के दरवाजे में खड़ी हो गई।

: १७ :

रामी को जब कई मास तक देवीदत्त से भेजा खर्चा नहीं मिला तो वह बनिये से कुछ उधार ले, नैनीताल जा पहुँची। वहाँ जाकर उसको पता चला कि देवीदत्त पकड़ा गया है। वह जिला के कलक्टर से मिली। उससे मास्टर देवीदत्त के विषय में पूछ-ताछ की। डिप्टी कमिश्नर ने देवीदत्त की फाईल मंगवाई और उसमें से पढ़कर उसने कहा, "देवीदत्त मास्टर एक भयंकर क्रान्तिकारी और युद्ध कार्य में विघ्न डालने वाला आदमी है। इसी कारण सरकार ने उसे दो वर्ष के लिए बन्दी बनाया है।"

"यह रिपोर्ट क्या खुफ़िया पुलिस ने भेजी है?"

"मैं यह नहीं बता सकता। हाँ, इतना कह सकता हूँ कि एक बहुत बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्ति ने मुखबरी की है।"

रामी ने कहा, "बहुत ही आश्चर्य की बात है। मैं मास्टरजी को भली भाँति जानती हूँ। यह आरोप सर्वथा असत्य है। क्या इस विषय में कोई चाराजोई नहीं हो सकती?"

"कोई अन्य होता तो मार्ग ढूँढा जा सकता था; परन्तु जिसने मुखबरी की है, वह ऐसा आदमी है कि उसकी रिपोर्ट को रद्द करना सुगम नहीं।"

"पर मैं प्रमाण दे सकती हूँ कि ये आरोप सर्वथा असत्य हैं।"

"तो आप एक प्रार्थना-पत्र दे दीजिए। इस विषय में मैं अपनी ओर से भी कुछ लिख दूँगा।"

"अच्छी बात है।" इतना कह रामी ने धन्यवाद किया। जब वह उठकर जाने लगी तो मजिस्ट्रेट ने उसे बुलाकर समीप बैठाकर कहा, "एक बात मैं आपको बता सकता हूँ। एक शर्त पर कि आपने यह नहीं कहना कि यह समाचार आपको मुझसे मिला है।"

"बताइए। मैं वचन देती हूँ कि इसको इस रूप में कभी नहीं आने दूँगी।"

"आप रीता देवी को जानती हैं?"

"हाँ।"

"बस उसी ने 'सेक्रेटरी टू दी प्रोविंशियल गवर्नमैंएट' को यह सूचना भेजी है।"

"धन्यवाद।" कहकर रामी चली आई। बरेली जाकर एक वकील से प्रार्थना-पत्र लिखवाकर वह कलक्टर को दे गई। उस प्रार्थना-पत्र में उसने एक ढंग से रीता का उल्लेख कर दिया। साथ ही उसने लिखा कि रीता अपने पति से लड़ी हुई है और उसने द्वेष-भाव में यह मुखबरी की है। प्रार्थना-पत्र में रीता और व्रजेश का सम्बन्ध और व्रजेश का मास्टर देवीदत्त को मार डालने के यत्न का भी उल्लेख कर दिया।

कलक्टर ने जब प्रार्थना-पत्र पढ़ा तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसने देवीदत्त का कैरेक्टर रोल तथा उसका स्कूल में व्यवहार, सब लिख दिया। साथ ही उसने रीता और व्रजेश के मुकद्दमे का उल्लेख कर बताया कि यह बदकार औरत चूँकि मास्टर साहब से त्याग दी गई है, इस कारण यह झूठी रिपोर्ट की है।

परिणाम स्वरूप देवीदत्त छोड़ दिया गया। इस सब झगड़े में डेढ़ मास के लगभग लग गया। देवीदत्त आया तो अपने छूटने में रामी के प्रयास की कथा सुन, उसके प्रति बहुत ही कृतज्ञता अनुभव करने लगा।

उस समय देवीदत्त ने रामी को बताया कि विमल उसको लिख चुका

है कि वह डॉक्टर राधाकृष्ण की कोठी में नौकरी पा जायगी। अब उसको वहाँ चला जाना चाहिए और अपनी सफाई अपने मुखसे देनी चाहिए।

रामी उसी दिन दिल्ली पहुँची, जिस दिन नीला का विवाह हो रहा था। विवाह बिना किसी प्रकार के आडम्बर के होना था, इस कारण कोठी में विवाह के कोई लक्षण नहीं थे। जब उसने चपरासी से विमल के विषय में पूछा तो चपरासी ने ब्रजभूषण के निधन का समाचार सुना दिया। इस पर उसने विमल से मिलने की इच्छा प्रकट की। चपरासी उसको ड्रायंग रूम में ले गया। वहाँ वेदी लगी थी और ब्राह्मण उसके पास शोकमुद्रा में बैठा था। चपरासी रामी को वहाँ बैठा, विमल को उसके आने की सूचना देने चला गया। रामी ने पण्डित से पूछा, "यह कोई पूजा हो रही है ?"

"नहीं देवी !" पण्डित ने बहुत दुःखित स्वर में कहा, "नीला देवी का विवाह होना निश्चय हुआ था, परन्तु उसके भाई के युद्ध में मारे जाने के समाचार से शायद अब नहीं होगा।"

"नीला देवी का विवाह किससे हो रहा है ?" रामी ने उत्सुकता से पूछा।

"विमल बाबू से।"

"नीला के पहले विवाह का क्या हुआ है ?"

"तो आप नहीं जानती ? तलाक हो गया है।" शोक का अवसर होने पर भी, पण्डित के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई।

रामी पूर्ण परिस्थिति से, इस वार्तालाप से ही परिचित हो गई। उस के मन में आया कि लौट जाए। परन्तु इस समय चपरासी आया और बोला, "छोटे डाक्टर साहब कहते हैं कि नाम और काम बताओ।"

रामी ने पुनः साहस बाँध कह दिया, "नाम रामी है। नौकरी करने आई हूँ।"

अब वह जाने लगी, तो पण्डित ने रामी के मुख पर विस्मय में देखा और पूछा, "देवी ! कैसी नौकरी करने आई हो ?"

"क्यों ? क्या बात है पण्डित जी ? मुझको नौकरी के लिए डॉक्टर

साहब ने बुलाया है। यह ठीक है कि यदि आज की दुर्घटना का समाचार विदित होता तो मैं कुछ दिन पीछे आती। मैं अब भी चले जाने का विचार कर रही हूँ।"

"अब सूचना भेजी है तो देख हो लो कि क्या उत्तर आता है।"

रामी अभी विचार कर ही रही थी कि चपरासी आया और रामी से बोला, "चलिए, बुलाया है।"

रामी जाने से न नहीं कर सकी। वह विमल के कमरे के दरवाजे पर जा खड़ी हुई। वह, रीता को वहाँ बैठे देख समझ गई कि कोई षड्यन्त्र चल रल रहा है। रीता का मुख रामी को देख निस्तेज हो गया था और यह रामी से छिपा नहीं रह सका। नीला तो रामी को देख क्रोध से लाल-पीली होती हुई, कमरे के बाहर निकल गई। विमल और कमली अवाक् रामी को देखते रह गए। इस चुप्पी को रामी ने तोड़ा। उसने कमली को सम्बोधन कर कहा,

"काकी ! पहिचाना नहीं मुझको ?"

पहिचानने में कोई कठिनाई नहीं थी। वह तो यह विचार कर रही थी कि रामी की उपस्थिति में नीला से विवाह असम्भव हो जायगा और इससे डॉक्टर साहब का ढेरों रुपया देना पड़ेगा।

विमला ने देखा कि रामी के मुख पर विशेष तेज है। उसने शृङ्गार नहीं किया हुआ था। केवल स्वच्छ श्वेत कपड़े पहने थी और न हाथ में चूड़ी थी, न माथे पर बिन्दी। इस पर भी उसको नीला का शृङ्गार युक्त मुख, उसके सामने फीका प्रतीत हुआ था।

कमली ने तो रामी को उत्तर नहीं दिया। विमल ने कहा, "रामी ! तुम आ गई हो ?"

"हाँ ! आपने लिखा था कि नौकरी मिल सकेगी, सो इसी विचार से आई हूँ। व्रज भैया का समाचार यहाँ आकर मिला है। पहले जानती होती तो कुछ दिन ठहरकर आती।"

"कोई बात नहीं। तुम यहाँ ठहरो, मैं सब प्रबन्ध कर दूँगा।" विमल

कहना चाहता था कि नौकरी का प्रबन्ध कर दूँगा, परन्तु उसके मुख से यह शब्द नहीं निकला। रामी-जैसी तेजस्वी स्त्री को नौकरी देगा, उसका मन नहीं माना। वह तो किसी भी परिवार में स्वामिन बनने के योग्य प्रतीत होती थी।

"कहाँ ठहरूँ ? वि····।" वह नाम लेती-लेती रुक गई।

"अपने पुराने कमरे में।"

उसने चपरासी को कह दिया, "यह पिछवाड़े के बरामदे वाले कमरे में ठहरेंगी। नौकर को कहकर खाली करवा दो।"

जब रामी अपने कमरे को देखने गई, तो कमली ने कहा, "बेटा, पुरानी बातों को स्मरण कर, इसको रखना कहाँ तक ठीक है ?"

"माँ ! मैं नहीं जानता। परिस्थितियाँ मुझ को किसी विशेष दिशा में धकेलती हुई ले जा रही हैं। मैं नहीं जानता कि क्या होगा ? तनिक देखो न। नीला कितनी सुन्दर थी, परन्तु रामी के सामने निस्तेज प्रतीत हुई है। और रीता दीदी का मुख देखो न, ऐसा पीला पड़ गया कि काटो तो खून नहीं। क्या बात है रीता दीदी ?"

"इसको कैसे पता चल गया है कि नीला का विवाह हो रहा है ?"

"तो क्या हमने यह विवाह की बात चोरी रखी हुई है ?"

"नहीं, पर जैसा तुम्हारा पहले इससे सम्बन्ध था, उसकी उपस्थिति में, इसका यहाँ इस समय आना अपशकुन प्रतीत होता है।"

"कुछ नहीं होगा दीदी ! मैं नीला से विवाह इसलिए नहीं कर रहा कि मेरा उससे किसी प्रकार का प्रेम है। मैं आप के डैडी की कृपाओं के नीचे दबा हुआ हूँ। नीला से विवाह करने के लिए ही मुझको इतनी भारी सहायता उन्होंने दी थी और मैं इस विवाह से न नहीं कर सकता।"

"तुम बच्चों की-सी बातें करते हो विमल !" कमली ने कहा, "मैं तो समझती हूँ कि आज विवाह होना चाहिए।"

"नहीं माँ !" यह कह विमल उठ, कमरे से बाहर निकल गया। ड्राइंग रूम में पहुँच, उसने पण्डित को विदा कर दिया और स्वयं डॉक्टर साहब के कमरे में चला गया। नीला वहाँ बैठी रो रही थी।

विमल कुछ देर तक वहाँ चुपचाप बैठा रहा। उसकी उपस्थिति में नीला अपनी आँखें पूँछती रही और बोली नहीं। डाक्टर और स्वरूप रानी अपने-अपने विचार में मग्न, चुपचाप बैठे थे। विमल को यह समझ आया कि उसके कारण वे परस्पर विचार विमर्ष, जो वे कर रहे होंगे, नहीं कर रहे। ऐसा विचार कर, वह वहाँ से चले जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। उसे जाता देख, डाक्टर ने पूछा, "विमल जा रहे हो ?"

"शायद मेरी उपस्थिति आपकी बातचीत में बाधा बन रही है।"

"नहीं, बैठो! नीला कह रही है कि रामी आई है।"

"हाँ। मैंने उसको अपनी कोठरी में ठहरने के लिए कह दिया है।"

"वह क्यों आई है ?"

"देवीदत्त ने लिखा था कि उसकी आर्थिक स्थिति अति दुर्बल है और मैंने उसको पुनः यहाँ नौकरी करने के लिए लिखा था।"

"तुम उसको नौकर रखोगे ? तुम नहीं जानते क्या कि वह तुमसे अभी भी प्रेम करती है ?"

"ठीक है डैडी! नीला भी तो मुझसे प्रेम करती है।"

"देख लो! जीवन को सुखी रखने के लिए एक ही प्रेम करने वाला समीप रहना ठीक होता है।"

"पर डैडी! उसको भूखों मरने नहीं दे सकता। रीता दीदी ने कहा था कि देवीदत्त 'डिफेन्स आफ इण्डिया रूल्ज़' के अधीन बन्दी है। उसकी नौकरी छूट गई है और ये उसके आश्रय ही पल रही थी।"

"जवान औरत है। उसे कहीं विवाह कर बैठ जाना चाहिए।"

"यह उसके अपने विचार करने की बात है।"

"तुम्हारा नीला से विवाह कब होगा ?"

"पन्द्रह दिन पीछे। मैंने पण्डित को विदा कर दिया है।" इस कहने ने सब बात निश्चय कर दी।

रामी ने उसी दिन से अपना नियमित काम आरम्भ कर दिया। वह स्वरूप रानी का पलंग लगाने गई और झाड़-फूँक करने लगी तो स्वरूप रानी को संकोच अनुभव हुआ। वह देख रही थी कि रामी, यद्यपि काम अति सुघरता से कर रही थी, परन्तु उसको उसे काम बताते हुए संकोच हो रहा था।

रामी ने कहा, "मम्मी ! लेट जाइए सिर में घी लगा दूँ। आज की दुर्घटना के विचार से ही सिर दर्द करने लगा होगा।"

"नहीं, छोड़ दो काम। जाओ आराम करो।"

अगले दिन वह डॉक्टर राधाकृष्ण का स्टडी रूम साफ करने लगी तो डॉक्टर वहाँ आ गया। एकाएक डॉक्टर के मुख से निकल गया, "नौकर कहाँ गए हैं?"

"पिताजी ! मैं भी तो नौकर हूँ।"

"नौकर ? तुम ! हाँ !........नहीं, रामी ! तुम नौकर नहीं हो सकती। तुम तो अब परिवार का एक अंग हो।"

"मैं इसको आपकी असीम कृपा ही मानती हूँ।"

"तो जाओ, किसी नौकर को कहो कि यह काम करे।"

रामी बाहर चली गई। विमल ने भी उसको काम करने नहीं दिया। पूर्ववत वह परिवार के साथ बैठ कर खाती और उसके एक सदस्य की भांति मान प्रतिष्ठा पाती थी।

रीता कुछ दिन के लिए लखनऊ चली गई थी। उसका विचार था कि वह पुनः आवेगी। तब नीला के विवाह का प्रबन्ध हो जावेगा।

जब घर में रामी को सिवाय नौकरों पर आज्ञा करने के और कोई काम नहीं रहा, तो वह अपना समय अधिक और अधिक अध्ययन और भजन में व्यय करने लगी। एक दिन उसने देखा कि उसके कमरे में उसके लिए छः जोड़े कपड़े रखे हैं। धोती थीं, जिन में दो रेशमी थीं। जम्पर, अंगिया इत्यादि। अभिप्राय यह कि आवश्यकता की प्रत्येक वस्तु थी। तेल साबुन

इत्यादि श्रृंगार का सामान भी था। उसने स्वरूपरानी के पास, वह सब ले जा, वह रखते हुए कहा,

"यह वहाँ भूल से चला गया प्रतीत होता है। किस का है यह ?"

"भूल से नहीं गया। मैंने भिजवाया है।"

"मुझ को इन सब की आवश्यकता नहीं। मेरे पास दो जोड़े कपड़े हैं। ये छः मास तक चलेंगे।"

"देखो रामी ! विमल ने कल कहा था कि तुमको यह सब कुछ चाहिए। वह रुपया भी दे गया था। सो मैंने मंगवा कर, तुम्हारे कमरे में भिजवा दिया था।"

"तो अब विमल जी को कहूँ कि मुझको आवश्यकता नहीं ?"

"हाँ। व्रज के पीछे वही घर का मालिक है। डॉक्टर जी तो सब काम काज से विरक्त हो गए प्रतीत होते हैं।"

"तो मैं उनसे कहूँगी। नौकरानी के लिए इतना कुछ नहीं चाहिए।"

"ठीक है। ओ मक्खन !" उसने नौकर को आवाज दी। जब वह आया तो स्वरूपरानी ने कहा, "ये कपड़े उठा कर बीवीजी के कमरे में छोड़ आओ।"

"माता जी ! अभी रहने दीजिये। मैं अभी पूछ कर बताती हूँ।"

"नहीं, मक्खन ! ले जाओ इनको।"

रामी विमल से मिली और बोली, "आपने इस दासी के लिए इतने कीमती कपड़े मँगवाने को कह दिए हैं ?"

"तो क्या और अधिक कीमत के चाहिएँ ?"

"विमल जी ! निर्धन लोगों से हँसी ठट्ठा नहीं किया जाता। मुझको इनकी आवश्यकता नहीं है।"

"क्यों ?"

"एक नौकरानी को ऐसे कपड़े शोभा नहीं देते।"

"पर तुम नौकरी किसकी करती हो ?"

"इस घर की। बिना वेतन के। बचपन से ऐसा ही कर रही हूँ।"

"तो अब तुम्हारी नौकरी नहीं है। डॉक्टर जी ने कहा है कि तुम उनकी तीसरी लड़की हो और वह तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर रहे हैं।"

"मुझसे राय किये बिना ही ?"

"कहते थे कि वह तुमसे पूछ चुके हैं।"

"पर राय बदल भी तो सकती है ?"

"तो उनसे बात कर लो। वे तो कहते थे कि वे जानते हैं कि तुम्हारी राय नहीं बदली।"

"देखो रामी ! राय बदली होती तो तुम यहाँ आती नहीं।"

"पर देखिए न, नीला का मैं बदल बनना नहीं चाहती।"

"यही तो बात है। नीला बदलती रहती है। उससे मेरी बातचीत हो चुकी है और वह रीता के पास लखनऊ जा रही है।"

"क्यों ? उसके पास क्यों ?"

"वह कहती है कि उसने उसका सर्वनाश किया है। उसने ही मोहनसिंह से उसका परिचय कराया था। और स्पेशल मेरेज एक्ट से विवाह का प्रबन्ध किया था उस समय मेरे शीघ्र लौटने की आशा नहीं थी। नीला का कहना है कि उसने ही उसका मोहनसिंह से झगड़ा कराया है और तलाक की योजना भी उसकी ही है। मेरे साथ नीला के विवाह का प्रबन्ध भी उसने ही किया था। मुझको इस विवाह के लिए तैयार भी उसीने, तुम पर झूठे लांछन लगा कर, किया था। अब नीला से विवाह करने का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता और वह अपने भाग्य को कोसती हुई, उसी के पास जा रही है, जिसने उसके लिए इतना कुछ किया है। रीता ने उसको बुला भेजा है !"

"वह ऐसा क्यों करती है ?"

"जो लोग किसी ध्येय साधन के लिए उपायों की श्रेष्ठता तथा औचित्य की परवाह नहीं करते, वे ऐसा किया ही करते हैं। अब डॉक्टर जी तुम्हारा कन्या दान करेंगे।"

॥ समाप्त ॥